साङ्ख्य-योगदर्शन के पारिभाषिक शब्दों का विश्लेषणात्मक अध्ययन एवं वेब तंत्र का विकास

Sāṅkhya-Yogadarśana ke pāribhāṣika śabdoṃ kā viśleṣaṇātmaka adhyayana evaṃ veba taṃtra kā vikāsa

दिल्ली विश्वविद्यालय की पीएच. डी. (संस्कृत) उपाधि हेतु प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध

शोधकर्त्री

अन्जू (Anju)

शोध-निर्देशक

डॉ. सुभाष चन्द्र (Dr. Subhash Chandra)

सहायक आचार्य

संस्कृत विभाग

दिल्ली विश्वविद्यालय

दिल्ली - 110007

2021

Department of Sanskrit
University of Delhi
Delhi-110007, India
Date : . . 2021

विज्ञप्ति

प्रमाणित किया जाता है कि संस्कृत विभाग, कला संकाय, दिल्ली विश्वविद्यालय की पीएच. डी. (Ph. D.) उपाधि के निमित्त प्रस्तुत "साङ्ख्य-योगदर्शन के पारिभाषिक शब्दों का विश्लेषणात्मक अध्ययन एवं वेब तंत्र का विकास" (Sāṅkhya-Yogadarśana ke pāribhāṣika śabdoṃ kā viśleṣaṇātmaka adhyayana evaṃ veba taṃtra kā vikāsa) नामक यह शोधप्रबन्ध डॉ. सुभाष चन्द्र, सहायक आचार्य, संस्कृत विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली के निर्देशन में लिखा गया है । शोधकर्त्री घोषणा करती है कि यह उसका मौलिक कार्य है । इस शोधकार्य का प्रस्तुतीकरण एवं प्रकाशन सम्पूर्णतः अथवा अंशतः कहीं भी नहीं किया गया है । शोधप्रबन्ध में किसी अन्य ग्रन्थ विशेष का प्रमाण हेतु प्रयोग करने पर उसको संदर्भित किया गया है।

शोधकर्त्री

अन्जू

शोध-निर्देशक

डॉ. सुभाष चन्द्र
सहायक आचार्य
संस्कृत विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय
दिल्ली-110007

विभागाध्यक्ष

प्रो. रमेशचन्द्र भारद्वाज
संस्कृत विभाग
दिल्ली विश्वविद्यालय
दिल्ली-110007

Department of Sanskrit
University of Delhi
Delhi-110007, India

Date : . . 2021

Certificate of Originality

The research work embodied in this thesis entitled "**साङ्ख्य-योगदर्शन के पारिभाषिक शब्दों का विश्लेषणात्मक अध्ययन एवं वेब तंत्र का विकास (Sāṅkhya-Yogadarśana ke pāribhāṣika śabdoṃ kā viśleṣaṇātmaka adhyayana evaṃ veba taṃtra kā vikāsa)** has been carried out by me at the Department of Sanskrit, University of Delhi, Delhi, India. The Manuscript has been subjected to plagiarism checked by **URKUND Software**. The work submitted for consideration of award of Ph.D. is original.

(Anju)
Candidate

Student Approval Form

Name of the Author	**ANJU**
Department	**DEPARTMENT OF SANSKRIT**
Degree	**DOCTOR OF PHILOSOPHY**
University	**UNIVERSITY OF DELHI**
Guide	**DR. SUBHASH CHANDRA**
Thesis Title	**साङ्ख्य-योगदर्शन के पारिभाषिक शब्दों का विश्लेषणात्मक अध्ययन एवं वेब तंत्र का विकास (Sāṅkhya-Yogadarśana ke pāribhāṣika śabdoṃ kā viśleṣaṇātmaka adhyayana evaṃ veba taṃtra kā vikāsa)**
Year of Award	**TO BE AWARDED**

Agreement

1. I hereby certify that, if appropriate, I have obtained and attached here to a written permission/statement from the owner(s) of each third party copyrighted matter to be included in my thesis, allowing distribution as specified below.
2. I hereby grant to the university and its agents the non-exclusive license to archive and make accessible, under the conditions specified below, my thesis, in whole or in part in all forms of media, now or hereafter known. I retain all other ownership rights to the copyright of the thesis. I also retain the right to use in future works (such as articles or books) all or part of this thesis, or project report.

Conditions:

1. Release the entire work access Worldwide	
2. Release the entire work for 'My University' only for **1 year** **2 year** **3 year**	

and after this time release the for **access worldwide**	
3. Release the entire work for 'My University' only while at the same time releasing the following parts of the work (e.g. because other parts relate to publication) for worldwide access. **a) Bibliographic details and Synopsis only.** **b) Bibliographic details, synopsis and the following chapters only.** **c) Preview/Table of Contents/24 page only.**	
4. View Only (No Downloads) (worldwide)	

Signature of the Scholar **Signature and Seal of the Guide**

Place: University of Delhi, Delhi

Date: . . 2021

University of Delhi

Supervisor's Certificate for Exclusion of Self-Published work

Following Ten (10) Research papers based on this research have been published in the International peer reviewed journals and International conference proceedings:

1. Anju and Chandra Subhash. (2019), साङ्ख्य-योग दर्शन में प्रयुक्त पारिभाषिक शब्दों के लिये ऑनलाइन सूचना निष्कर्षण तन्त्र, Research Review International Journal of Multidisciplinary, ISSN: 2455-3085, Volume-04 Issue-06 June-2019.

2. Anju and Chandra Subhash. (2019), साङ्ख्य-योग दर्शन ई-परिभाषाकोश, Language in India, ISSN 1930-2940 Vol. 19:5 May 2019.

3. Anju and Chandra Subhash. (2019), E-Glossary and Search for Technical Terms of Sāṅkhya and Yoga Philosophy, International Journal for Research in Engineering Application & Management (IJREAM), ISSN : 2454-9150 Vol-05, Issue-01, April 2019.

4. Anju and Chandra Subhash. (2019). "साङ्ख्य-योग दर्शन के पारिभाषिक शब्दों के विश्लेषण हेतु वेब तन्त्र का विकास" Veda as Global Heritage Scientific Perspectives. India, New Delhi: Vidyanidhi Prakashan, ISBN: 9789385539695, (pp.123-130).

5. Chandra Subhash, Kumar Vivek and Anju. (2019). "DS-IASTConvert: An Automatic Script Convertor between Devanagari and International Alphabet of Sanskrit Transliteration." International Journal of Research and Analytical Reviews (IJRAR), E-ISSN: 2348-1269 and P- ISSN 2349-5138, Volume 06, Issue 1, February 2019, pp.748-752. Impact Factor: 5.75., UGC Listed: UGC Journal No.43602, **DOI**: http://doi.one/10.1729/Journal.19611
6. Chandra Subhash, Kumar Vivek and Anju. (2018). "Automatic Morphological Derivational Process for Sanskrit using Rule and Example Based Hybrid Approach." International Journal for Research in Engineering Application &

Management (IJREAM), 2454-9150, Volume 04, Issue 08, Nov 2018, pp.00-00. Impact Factor: 5.646., UGC Listed: UGC Journal No. 64077.

7. Anju and Chandra Subhash. (2018). "साङ्ख्य-योग दर्शन परिभाषा डेटाबेस एवं ऑनलाइन खोज" Research Review International Journal of Multidisciplinary, 2455:3085 (Online), Volume 03, Issue 11, Nov 2018, pp.890-894. Impact Factor: 5.214. , UGC Listed: UGC Journal No. 44945.
   DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.1934632
8. Anju and Chandra, Subhash. (2018). Mining of the Technical Terms of Sāṅkhya-Yoga Philosophy. Journal of Emerging Technologies and Innovative Research (JETIR), ISSN 2349-5162, Volume 5:5, pp.66-72. Impact Factor: 5.87. , UGC Listed: UGC Journal No. 63975.
9. Anju and Chandra, Subhash. (2018). Development of Web-Based Dictionary for the Technical Terms of Sāṁkhya-Yoga Philosophy . International Journal of Creative Research Thoughts, ISSN 2320-2882, Volume 6:1, pp.724-728. Impact Factor: 5.97.
10. Chandra, Subhash and Anju. (2017). Puranic Search: An Instant Search System for Puranas . Language in India, ISSN 1930-2940, Volume 17:5, pp.-324-219., UGC Listed: UGC Journal No. 49042.

These published works have been included in the Thesis and has not been submitted for any degree to any University/Institute.

Signature of Student **Signature of Supervisor**

आभार

कोई भी कार्य सृष्टिकर्ता की इच्छा एवं अनुकम्पा के बिना सम्यक् रूप से पूर्ण नहीं हो सकता अतः सर्वप्रथम मैं उस परमपिता परमेश्वर को कोटिशः नमन करती हूँ, जिन्होंने मनुष्य जीवन प्रदान किया एवं निर्विघ्न रूप से शोध कार्य को पूर्ण करने की शक्ति प्रदान की। साथ ही साथ अपने सभी गुरुजनों, माता-पिता, अग्रजों एवं मित्रों को भी हृदय से आभार ज्ञापित करना अपना कर्तव्य समझती हूँ, जिनकी प्रेरणा और सहायता से ही यह शोधकार्य सम्पूर्ण हो सका है।

किसी भी कार्य को पूरा करने के लिए मार्गदर्शन की महती आवश्यकता होती है। शोध में अहम भूमिका निभाने वाले तथा जिनके मार्गदर्शन के अभाव में यह शोध असम्भव था, ऐसे परमश्रद्धेय गुरु डॉ. सुभाष चन्द्र जी को हृदय से नमन करती हूँ। जिनके सम्यक् शोध-निर्देशन में "साङ्ख्य-योग दर्शन के पारिभाषिक शब्दों का विश्लेषणात्मक अध्ययन एवं वेबतंत्र का विकास" नामक विषय पर आधारित शोध उचित रूप से पूर्ण किया गया है। आपका विषय संगणकीय भाषाविज्ञान एवं संस्कृत व्याकरण होने के उपरान्त भी आपने दर्शन से सम्बन्धित मेरे शोधविषय में पूर्ण रूप से निर्देशित किया है। दिल्ली विश्वविद्यालय में साङ्ख्य-योग दर्शन से सम्बन्धित संगणकीय भाषाविज्ञान के क्षेत्र में यह प्रथम शोधकार्य है, जोकि आपके बिना असम्भव था। शोध के समय आपके द्वारा पाठित नवीन विषय संगणकीय भाषाविज्ञान के प्रशिक्षण के साथ-साथ कम्प्यूटर प्रोग्रामिंग का भी ज्ञान बड़ी सरलता के साथ कराया गया। आप सदैव अपने छात्र एवं छात्राओं को ज्ञान के लिये प्रेरित करते हैं तथा आज के ई-लर्निंग युग में संस्कृत ज्ञान कम्प्यूटर से जोडकर संस्कृत के छात्रों के लिये एक नई दिशा प्रदान की है। आपका मित्रवत् व्यवहार एवं प्रत्येक काम को करने के लिये आपका समर्पण अत्यन्त सराहनीय एवं आदरणीय है। अत: समादरणीय गुरुजी को मैं हृदय से आभार व्यक्त करती हूँ।

इसके पश्चात् आदरणीय प्रो. रमेश चन्द्र भारद्वाज, विभागाध्यक्ष, संस्कृत विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय के प्रति हृदय से आभार व्यक्त करती हूँ, जिन्होंने अपने कार्यकाल में मुझे शोध करने की अनुमति प्रदान की तथा जो सदैव विद्यार्थियों के हितैषी रहते हैं। हमारे विभाग की प्रो. पूर्णिमा कौल, प्रो. ओमनाथ बिमली, प्रो. भारतेन्दु पाण्डेय, प्रो. मीरा द्विवेदी, प्रो. सत्यपाल सिंह, प्रो.

दयाशंकर तिवारी, प्रो. रंजन कुमार त्रिपाठी, प्रो. रणजीत बेहरा, प्रो. वेद प्रकाश डिंडोरिया तथा सहाचार्य डॉ. टेकचन्द मीना एवं सहायकाचार्य डॉ. धनञ्जय कुमार आचार्य, डॉ. विजय शंकर द्विवेदी, डॉ. सोमवीर, डॉ. मोहिनी आर्य, डॉ. करुणा आर्य, डॉ. उमाशंकर, डॉ. श्रुति राय, डॉ. बलराम शुक्ल, डॉ. राजीव रञ्जन, डॉ. एम. किशन, डॉ. अवधेश प्रताप सिंह तथा विभाग के प्रत्येक सदस्य के प्रति भी मैं आभार व्यक्त करती हूँ जिनका प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से समय-समय पर अमूल्य मार्गदर्शन, प्रेरणा एवं स्नेह मिलता रहा है।

प्रस्तुत शोध को पूर्ण करने में अपना कीमती समय प्रदान कर सहायता करने तथा शोधप्रबन्ध को सम्पादित करने के लिये अतुल्य एवं अविस्मरणीय योगदान देने के लिये मैं अपने सहपाठी डॉ. विवेक कुमार को हृदय से धन्यवाद करती हूँ। शोधप्रबन्ध को सम्पादित करने के लिये सुमित शर्मा, सन्जू एवं आरूषि निगम को भी धन्यवाद ज्ञापित करती हूँ।

नैतिक प्रोत्साहन एवं स्नेहपूर्ण व्यवहार के लिये शोधप्रबन्ध के समय मेरे शोधनिर्देशक की पत्नी डॉ. निधि सुभाष चन्द्र मैम, (सहायक आचार्य, माइक्रोबायोलॉजी, रामलाल आनन्द महाविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली) को हृदय से आभार ज्ञापित करती हूँ।

मुझे शोध हेतु योग्य बनाने में मेरे माता-पिता एवं बडे भाईयों का हृदय से आभार व्यक्त करना चाहती हूँ जिन्होंने बचपन से ही शिक्षा के महत्त्व से अवगत कराया है तथा जीवन में एक शिक्षक की भूमिका निभाई है भले ही वो नैतिक, समाजिक एवं शैक्षिक हो। साथ ही साथ मैं अपनी बडी बहनों एवं भाभी के स्नेहयुक्त व्यवहार एवं सहयोग हेतु उनका हृदय से आभार व्यक्त करती हूँ। और विशेष रूप से मैं अपने बडे भाई कृष्णकान्त सिंह गौतम (सहायक आचार्य, कम्प्यूटर साइंस, शिवाजी महाविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली) का हृदय से आभार व्यक्त करना चाहती हूँ जिन्होंने समय-समय पर मेरे शोध में कम्प्यूटर से सम्बन्धित समस्याओं का निवारण किया है।

विश्वविद्यालय के उन सभी पुस्तकालय कर्मचारियों तथा विभागीय कार्यालय के सभी कर्मचारियों सुधीर सर, प्रताप सर, मोनिका जी, मयंक जी एवं सन्दीप जी की भी कृतज्ञ हूँ, जिन्होंने पुस्तक प्राप्ति में तथा प्रशासनिक कार्यों में समय-समय पर सहयोग किया। किसी भी कार्य को करने के लिये धन की आवश्यकता होती है, अतः मेरे इस शोध को सम्पन्न करने के लिए जेआरएफ (JRF)

के रूप में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (UGC) ने आर्थिक सहायता प्रदान की। जिसके परिणाम स्वरूप यह कार्य बहुत ही आसान हो गया। इसके लिये मैं यूजीसी का भी आभार प्रकट करती हूँ।

इस शोध के परिणामस्वरूप विकसित वेब आधारित साङ्ख्य-योग पारिभाषिक शब्द सूचना तंत्र नामक सिस्टम संस्कृत विभाग की वेबसाइट http://cl.sanskrit.du.ac.in, दिल्ली विश्वविद्यालय के सर्वर पर उपलब्ध है। जिसका उपयोग इंटरनेट के माध्यम से कोई भी कहीं से कर सकता है। अतः इसके लिए मैं अपने विश्वविद्यालय के कम्प्यूटर केन्द्र की भी आभारी हूँ जिन्होंने इसे होस्ट करने के लिए सभी सुविधाएँ प्रदान की। शोधसमिति का भी आभार व्यक्त करती हूँ जिनकी सहमति से ही इस विषय पर कार्य करने का अवसर मिला और अन्त में प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से सहयोग करने के लिये सभी को हृदय से धन्यवाद देना चाहती हूँ।

Anju

विषय-सूची

आभार ..... i-iii

विषय-सूची ..... iv-x

संस्कृत लिप्यन्तर के लिये अन्ताराष्ट्रीय वर्णमाला(आईएएसटी) ..... xi-xi

बराह सॉफ्टवेयर द्वारा देवनागरी के लिये यूनीकोड में संस्कृत टंकण सहायता ..... xii-xii

ग्रन्थ-संकेततालिका ..... xiii-xiii

परिचय..... 01-05

प्रथम अध्याय..... 06-32

भारतीय दर्शन का संक्षिप्त परिचय एवं साङ्ख्य-योग दर्शन

Brief Introduction of Indian Philosophy and Sāṅkhya-Yoga Philosophy

1. भारतीय दार्शनिक परम्परा (Indian Philosophical Tradition)..... 07-08
2. आस्तिक दर्शन (Orthodox Philosophy) 09-14
3. नास्तिक दर्शन (Heterodox Philosophy)..... 14-19
4. साङ्ख्य-योग दर्शन का परिचय (Introduction of Sāṅkhya-Yoga Philosophy) 20-32

द्वितीय अध्याय..... 33-58

पारिभाषिक शब्द, साङ्ख्य-योगदर्शन के पारिभाषिक शब्दों का परिचय एवं सर्वेक्षण

Technical Term, Introduction of Technical Terms of Sāṅkhya-Yoga and Survey

1. पारिभाषिक शब्द (Technical Term) 33-38
2. साङ्ख्य-योग दर्शन के पारिभाषिक शब्दों का सामान्य परिचय (Introduction of Technical Terms of Sāṅkhya-yoga Philosophy)..... 38-39
3. शोध सर्वेक्षण (Survey of Research)..... 39-58

तृतीय अध्याय..... 59-90
साङ्ख्य दर्शन के पारिभाषिक शब्दों का विश्लेषण
Analysis of Technical Terms of Sāṅkhya Philosophy

1. साङ्ख्यदर्शन के पारिभाषिक शब्दों का संकलन (Collection of Technical Terms of Sāṅkhya Philosophy) 59-60
2. साङ्ख्यदर्शन के पारिभाषिक शब्दों के संकलन का आधार (Basis of Technical Terms collection of Sāṅkhya Philosophy) 60-61
3. साङ्ख्यदर्शन के प्रमुख ग्रन्थ एवं उनके लेखकों का परिचय (Introduction of Main Texts of Sāṅkhya Philosophy and their Writers) 61-69
4. साङ्ख्यदर्शन के पारिभाषिक शब्दों की सूची (List of Technical Terms of Sāṅkhya Philosophy) 70-71
5. पारिभाषिक शब्दों के विश्लेषण का आधार (Basis for analysis of Technical Terms) 71-71
6. पारिभाषिक शब्दों का विश्लेषणात्मक अध्ययन (Analytical study of Terminology)… 72-90

चतुर्थ अध्याय.....91-129
योग दर्शन के पारिभाषिक शब्दों का विश्लेषण
Analysis of Technical Terms of Yoga Philosophy

1. योगदर्शन के पारिभाषिक शब्दों का संकलन (Collection of Technical Terms of Yoga Philosophy) 91-92
2. योग दर्शन के पारिभाषिक शब्दों के संकलन का आधार (Basis of Collection of Technical Terms of Yoga Philosophy) 92-92
3. योगदर्शन के प्रमुख ग्रन्थ एवं उनके लेखक (Introduction of Main Texts of Yoga Philopsophy and their writers) 93-108
4. योगदर्शन के पारिभाषिक शब्दों की सूची (List of Technical Terms of Yoga Philosophy) 108-111

5. योगदर्शन के पारिभाषिक शब्दों के विश्लेषण का आधार (Basis for analysis of Technical Terms of Yoga Philosophy) 112-112

6. पारिभाषिक शब्दों का विश्लेषणात्मक अध्ययन (Analytical study of terminology). 112-129

पञ्चम अध्याय 130-164

साङ्ख्य-योग दर्शन के पारिभाषिक शब्दों के विश्लेषण हेतु वेब तंत्र का विकास एवं परिचय तथा दर्शन से सम्बन्धित उपलब्ध सिस्टम से तुलना

Development and Introduction of Web System for Analysis of Technical Terms of Sāṅkhya-Yoga Philosophy and Comparison with Other Available Systems Related to Philosophy

1. सामग्री एवं संग्रहण पद्धति (Data and Collection Methedology) 130-131

2. डेटा डिजिटलीकरण (Digitization of Data).....131-136

3. सूचना निष्कर्षण पद्धति (Information Extraction Techniques).....136-137

4. साङ्ख्य-योग दर्शन के लिए वेब आधारित सिस्टम का विकास (Development of Web Based System for Sāṅkhya-Yoga philosophy) 137-142

5. साङ्ख्य-योग दर्शन के पारिभाषिक शब्दों के लिए वेब आधारित सिस्टम का परिचय (Introduction to Web Based System for Technical Terms of Sāṅkhya-Yoga Philosophy) 143-147

6. प्रयुक्त संगणकीय प्लेटफॉर्म एवं तकनीक (Used Computational Platform and Techniques).....147-147

7. साङ्ख्य-योग दर्शन के पारिभाषिक शब्दों के लिए वेब आधारित सिस्टम द्वारा विकसित परिणाम का विवरण (Description of the result developed by the Web Based System for the Technical Terms of Sāṅkhya-Yoga philosophy) 147-149

8. साङ्ख्य-योग दर्शन के पारिभाषिक शब्दों के विश्लेषक तन्त्र की विशेषता (Features of Analyser System of Technical Terms of Sāṅkhya-Yoga Philosophy) 150-151
9. दर्शन से सम्बन्धित अन्य उपलब्ध सिस्टम से प्रस्तुत सिस्टम की तुलना (Comparison of this System with other available Systems Related to Philosophy) 152-164
10. परिणाम एवं परिचर्चा (Result and Discussions) 164-164

निष्कर्ष एवं भावी अनुसंधान की संभावनाएँ (Conclusion and Future Directions of Research) 165-166

तालिका.....पृष्ठ संख्या

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची..... 167-185
सन्दर्भसूची (References)..... 167-180
सन्दर्भग्रन्थसूची (Bibliography) 181-185
परिशिष्ट..... 186-237
प्रथम परिशिष्ट..... 186-191
साङ्ख्यदर्शन के पारिभाषिक शब्दों की लक्षण सहित सूची

द्वितीय परिशिष्ट..... 189-208
योगदर्शन के पारिभाषिक शब्दों की लक्षण सहित सूची

तृतीय परिशिष्ट..... 209-229
साङ्ख्यसूत्र के सम्पूर्ण सूत्र

चतुर्थ परिशिष्ट 230-237
योगसूत्र के सम्पूर्ण सूत्र
प्रकाशन सूची..... 238-259
प्रथम प्रकाशन 238-239

Anju and Chandra Subhash. (2019), साङ्ख्य-योग दर्शन में प्रयुक्त पारिभाषिक शब्दों के लिये ऑनलाइन सूचना निष्कर्षण तन्त्र, Research Review International Journal of Multidisciplinary, ISSN: 2455-3085, Volume-04 Issue-06 June-2019.

द्वितीय प्रकाशन 240-241

Anju and Chandra Subhash. (2019), साङ्ख्य-योग दर्शन ई-परिभाषाकोश, Language in India, ISSN 1930-2940 Vol. 19:5 May 2019.

तृतीय प्रकाशन 242-243

Anju and Chandra Subhash. (2019), E-Glossary and Search for Technical Terms of Sāṅkhya and Yoga Philosophy, International Journal for Research in Engineering Application & Management (IJREAM), ISSN : 2454-9150 Vol-05, Issue-01, April 2019

चतुर्थ प्रकाशन..... 244-247

Anju and Chandra Subhash. (2019). "साङ्ख्य-योग दर्शन के पारिभाषिक शब्दों के विश्लेषण हेतु वेब तन्त्र का विकास" Veda as Global Heritage Scientific Perspectives. India, New Delhi: Vidyanidhi Prakashan, ISBN: 9789385539695, (pp.123-130).

पञ्चम प्रकाशन..... 248-249

Chandra Subhash, Kumar Vivek and Anju. (2019). "DS-IASTConvert: An Automatic Script Convertor between Devanagari and International Alphabet of Sanskrit Transliteration." International Journal of Research and Analytical Reviews (IJRAR), E-ISSN: 2348-1269 and P- ISSN 2349-5138, Volume 06, Issue 1, February 2019, pp.748-752. Impact Factor: 5.75., UGC Listed: UGC Journal No.43602, **DOI**: http://doi.one/10.1729/Journal.19611

षष्ठ प्रकाशन..... **250-251**

Chandra Subhash, Kumar Vivek and Anju. (2018). "Automatic Morphological Derivational Process for Sanskrit using Rule and Example Based Hybrid Approach." International Journal for Research in Engineering Application & Management (IJREAM), 2454-9150, Volume 04, Issue 08, Nov 2018, pp.00-00. Impact Factor: 5.646., UGC Listed: UGC Journal No. 64077.

सप्तम प्रकाशन..... **252-253**

Anju and Chandra Subhash. (2018). "साङ्ख्य-योग दर्शन परिभाषा डेटाबेस एवं ऑनलाइन खोज" Research Review International Journal of Multidisciplinary,

2455:3085 (Online), Volume 03, Issue 11, Nov 2018, pp.890-894. Impact Factor: 5.214. , UGC Listed: UGC Journal No. 44945.
DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.1934632

अष्टम प्रकाशन **254-255**

Anju and Chandra, Subhash. (2018). Mining of the Technical Terms of Sāṅkhya-Yoga Philosophy. Journal of Emerging Technologies and Innovative Research (JETIR), ISSN 2349-5162, Volume 5:5, pp.66-72. Impact Factor: 5.87. , UGC Listed: UGC Journal No. 63975.

नवम प्रकाशन **256-257**

Anju and Chandra, Subhash. (2018). Development of Web-Based Dictionary for the Technical Terms of Sāṁkhya-Yoga Philosophy . International Journal of Creative Research Thoughts, ISSN 2320-2882, Volume 6:1, pp.724-728. Impact Factor: 5.97.

दशम प्रकाशन **258-259**

Chandra, Subhash and Anju. (2017). Puranic Search: An Instant Search System for Puranas . Language in India, ISSN 1930-2940, Volume 17:5, pp.-324-219., UGC Listed: UGC Journal No. 49042.

शोधपत्र प्रस्तुतिकरण प्रमाणपत्रसूची 260-264

प्रथम प्रस्तुतिकरण 260-260

Poster entitled "Digitization and Online Search for Terminological Knowledge of Sāṅkhya and Yoga Philosophy" has been presented in International Conference on Sanskrit & Other Indian Languages Technology (SOIL-Tech), School of Sanskrit and Indic Studies, Jawaharlal Nehru University, New Delhi, Feb 15-17, 2019.

द्वितीय प्रस्तुतिकरण 261-261

Paper entitled "साङ्ख्य-योग दर्शन में प्रयुक्त पारिभाषिक शब्दों के लिये ई-कोश एवं ऑनलाइन खोज" has been presented in संस्कृत के बहुआयामी पक्ष एवं बृहत्तर विश्व पर त्रि-दिवसीय राष्ट्रीय सङ्गोष्ठी, संस्कृत विभाग, जामिया मिल्लिया इस्लामिया (केन्द्रिय विश्वविद्यालय), नई दिल्ली, फरवरी 15-17, 2019.

तृतीय प्रस्तुतिकरण 262-262
Paper entitled "साङ्ख्य-योग दर्शन ई-परिभाषाकोश" has been presented in अन्ताराष्ट्रियसङ्गोष्ठी कालिदासकृतिषु मङ्गलभावना, भारती महाविद्यालय, दिल्ली, जनवरी 19-20, 2019.

चतुर्थ प्रस्तुतिकरण..... 263-263
Paper entitled "साङ्ख्य-योग दर्शन के तकनीकी शब्दों का संगणकीय अनुप्रयोग" has been presented in वर्तमान शिक्षा और वेद पर अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी, पी.जी.डी.ए.वी. महाविद्यालय (सांध्य), दिल्ली, अक्टूबर 27-28, 2018.

पञ्चम प्रस्तुतिकरण..... **264-264**
Paper entitled "साङ्ख्य-योग दर्शन के पारिभाषिक शब्दों के विश्लेषण हेतु वेब तन्त्र का विकास" has been presented in *International Conference on Veda: Veda as Global Heritage: Scientific Perspectives* (वेदों की वैश्विक धरोहर : वैज्ञानिक आयाम), *Special Center for Sanskrit Studies, Jawaharlal Nehru University, New Delhi* During, Dec 15-18, 2016.

संस्कृत लिप्यन्तर के लिये अन्ताराष्ट्रीय वर्णमाला(आईएएसटी)

INTERNATIONAL ALPHABET FOR SANSKRIT TRANSLITERATION (IAST)

अ *a*	आ *ā*	इ *I*	ई *ī*	उ *u*
ऊ *ū*	ऋ *ṛ*	ॠ *ṝ*	ऌ *ḷ*	ए *e*
ऐ *ai*	ओ *o*	औ *au*	ं *ṃ*	ः *ḥ*
क् *k*	ख् *kh*	ग् *G*	घ् *Gh*	ङ् *ṅ*
च् *c*	छ् *C*	ज् *J*	झ् *Jh*	ञ् *ñ*
ट् *ṭ*	ठ् *ṭh*	ड् *ḍ*	ढ् *ḍh*	ण् *ṇ*
त् *t*	थ् *th*	द् *D*	ध् *Dh*	न् *n*
प् *p*	फ् *ph*	ब् *B*	भ् *Bh*	म् *m*
य् *y*	र् *r*	ल् *L*	व् *v*	
स् *s*	श् *ś*	ष् *ṣ*	ह् *H*	
क्ष् *kṣ*	ज्ञ् *jñ*	श्र् *śr*		

बराह सॉफ्टवेयर द्वारा देवनागरी के लिये यूनीकोड में संस्कृत टंकण हेतु सहायक तालिका

Unicode Devanagari Input Mechanism through Baraha software (http://www.baraha.com)				
अ (a)	आ (A/aa)	इ (i)	ई (I/ee)	उ (u)
ऊ (U/oo)	ऋ (Ru)	ॠ (RRu)	ऌ (lRu)	ॡ (lRRu)
ए (e)	ऐ (ai)	ओ (o)	औ (au)	अं (aM)
ः (aH)				
क् (k)	ख् (K/kh)	ग् (g)	घ् (G/gh)	ङ् (~G)
च् (c)	छ्(C)	ज् (j)	झ् (J/jh)	ञ् (~j)
ट् (T)	ठ् (Th)	ड् (D)	ढ् (Dh)	ण् (N)
त् (t)	थ् (th)	द् (d)	ध् (dh)	न् (n)
प् (p)	फ् (ph)	ब् (b)	भ् (bh)	म् (m)
य् (y)	र् (r)	ल् (l)		व् (v/w)
स् (s)	श् (S/sh)	ष् (Sh)	ह् (h)	ळ् (Lx)
क्ष् (kSh)	ज्ञ् (j~j)	श्र् (Sr/Shr)		

ग्रन्थ-संकेततालिका

यो.सू.	--	योगसूत्र
व्या.भा.	--	व्यासभाष्य
भो.वृ.	--	भोजवृत्ति
त.वै.	--	तत्त्ववैशारदी
यो.वा.	--	योगवार्त्तिक
सा.सू.	--	साङ्ख्यसूत्र
सा.का.	--	साङ्ख्यकारिका
सा.प्र.भा.	--	साङ्ख्यप्रवचनभाष्य
अनि.वृ.	--	अनिरुद्धवृत्ति
ब्र.सू.	--	ब्रह्मसूत्र
न्या.सू.	--	न्यायसूत्र
वै.द.	--	वैशेषिक दर्शन
न्या.म.	--	न्यायमञ्जरी
त.वै.	--	तत्त्ववैशारदी

परिचय

संस्कृत वाङ्मय में वेद सर्वोपरि हैं। वेद चार हैं और इन चारों वेदों में अथाह ज्ञान विद्यमान है। इस ज्ञान को स्वयं ग्रहण करने व अन्य व्यक्तियों को समझाने के लिए दो प्रयत्न किये गए। प्रथम दर्शनशास्त्र तथा अन्य ब्राह्मण और उपनिषदादि ग्रन्थ। वेद ज्ञान को तर्क से समझाने के लिए छः दर्शन शास्त्र लिखे गए। सभी दर्शन मूलरूप में विद्यमान वेदज्ञान को तर्क से सिद्ध करते हैं। सामाजिक चेतना के अनेक रूपों में से दर्शनशास्त्र भी एक रूप है। दर्शनशास्त्र वह ज्ञान है जो परम सत्य एवं सिद्धांतों और उनके कारणों की विवेचना करता है। दर्शन यथार्थ की परख के लिये एक दृष्टिकोण प्रदान करता है। दार्शनिक चिन्तन मूलतः जीवन की अर्थवत्ता की खोज का पर्याय है। वस्तुतः दर्शनशास्त्र स्वत्व तथा समाज, मानव चिंतन तथा संज्ञान की प्रक्रिया के सामान्य नियमों का विज्ञान है। प्राचीनकाल से ही मनुष्य विचारवान रहा है। उसके यही विचार तथा अनुभव स्थायी रूप लेकर कालान्तर से दार्शनिक विचारों में रूपान्तरित होते चले गए। इन दार्शनिक विचारों पर चिन्तन करने के लिये भारत एवं यूनान नामक दो बड़े केन्द्र निर्मित हुए। इन दोनों केन्द्रों में तत्त्वज्ञान के आधार पर ही दर्शन की परिकल्पना की गयी थी परन्तु भारत में यह परिकल्पना तत्त्वज्ञान के साथ-साथ आत्मज्ञान, मोक्ष आदि के रूप में भी परिलक्षित हो गयी। सामान्यतः दर्शन और फिलॉस्फी (Philosophy) को समानार्थक समझा जाता है किंतु दोनों में भिन्नता स्पष्ट है। फिलॉस्फी शब्द ('फ़िलॉस्'+ 'सोफ़िया') दो ग्रीक पदों के सम्मिलित होने से निर्मित होता है, जिसका अर्थ है - ज्ञान के प्रति अनुराग। दर्शन शब्द 'दृश्' धातु से ल्युट् प्रत्यय से करण अर्थ में निष्पन्न होता है, जिसका अर्थ है - 'देखना'। उपनिषद् में प्राप्त व्युत्पत्ति के आधार पर दर्शन शब्द की 'दृश्येतेऽनेनेति दर्शनम्' व्युत्पत्ति की जाती है। अतः व्युत्पत्तिजन्य अर्थ है – 'जिसके द्वारा देखा जाए वह दर्शन है'। देखने की क्रिया दो प्रकार की होती है – प्रथम द्रष्टा द्वारा और द्वितीय इन्द्रिय द्वारा। द्रष्टा की दर्शन क्रिया से अन्तःकरण का एवं इन्द्रिय से सम्बद्ध अन्तःकरण की दर्शन क्रिया से बाह्य एवं आन्तरिक जगत का ज्ञान होता है। द्रष्टा की दर्शन क्रिया नित्यदृष्टि है तथा इन्द्रिय से सम्बद्ध अन्तःकरण की दर्शन क्रिया अनित्यदृष्टि है। दोनों प्रकार की दर्शन क्रियाओं से ही इस संसार की वस्तु का ज्ञान होता है। भारतीय दर्शन का लक्ष्य यथार्थता का ज्ञान तथा एक ही परमतत्व का साक्षात्कार करना है। योगसूत्र व्यासभाष्य में दर्शन शब्द का यौगिक अर्थ किया है - "एकमेव दर्शनं

ख्यातिरेव दर्शनम्" (व्या.भा.1.4) । जबकि फिलॉस्फी में विभिन्न विषयों का विश्लेषण किया जाता है। अतः पाश्चात्य फिलॉस्फी की अपेक्षा दर्शन में चेतना का होना अनिवार्य है ।

प्रत्येक दर्शन ग्रन्थ सूत्रबद्ध होते हैं जो अपने प्रारम्भिक सूत्र द्वारा उद्देश्य तथा अन्तिम सूत्र द्वारा उस उद्देश्य की पूर्ति व्यक्त करते हैं । प्रत्येक मनुष्य के जीवन का परम लक्ष्य परम आनंद की प्राप्ति करना है, भले ही वह दुःखों से मुक्ति के द्वारा हो या मोक्ष की प्राप्ति के द्वारा मिले । समस्त दर्शनों का उत्पत्ति स्थल वेद ही है परन्तु फिर भी समस्त भारतीय दार्शनिक परम्परा को आस्तिक एवं नास्तिक के भेद से दो भागों में विभक्त किया गया है । इनके विभाजन का आधार वेदों को प्रमाणिक रूप से स्वीकार तथा अस्वीकार करना है ।

किसी भी शास्त्र का अधिगम करने के लिये उससे सम्बन्धित शास्त्र के पारिभाषिक शब्दों का ज्ञान होना अत्यन्त आवश्यक हो जाता है । संस्कृत जगत में प्रारम्भ से ही पारिभाषिक शब्दों के निर्माण और उपयोग का प्रचलन रहा है । ज्ञान की किसी विशेष विधा (कार्य क्षेत्र) में प्रयोग किये जाने वाले शब्दों की उनकी परिभाषा सहित सूची पारिभाषिक शब्दावली (Glossary) या परिभाषाकोश कहलाती है । पारिभाषिक शब्दों का प्रयोग जटिल तथ्यों की अभिव्यक्ति को सहज एवं सुगम बनाने के लिये किया जाता है । जिससे किसी भी शास्त्र का अध्ययन सरलतापूर्वक किया जा सकता है । संस्कृत में कोश परम्परा के अन्तर्गत सर्वप्रथम शब्दावली के रूप में निघण्टु प्राप्त होता है । जिसमें वैदिक शब्दों का संग्रह किया गया है । इस प्रकार के परिभाषाकोश किसी भी ग्रन्थ या शास्त्र को समझने में सहायक होते हैं । भारतीय दर्शन भी विभिन्न प्रकार के पारिभाषिक शब्दों का प्रयोग करता है । जिसका तात्पर्य दर्शन शास्त्र के किसी विशिष्ट अवधारणा को स्थापित करना होता है । परन्तु सामान्य रूप से वही शब्द किसी अन्य अर्थ को बताता है । भारतीय दर्शन से सम्बन्धित मुद्रित पुस्तक के रूप में अनेक पारिभाषिक कोश उपलब्ध हैं । किन्तु विद्यार्थी अथवा अन्य जिज्ञासु पुस्तकाल्य में जाकर पुस्तक के द्वारा अपनी समस्या का समाधान प्राप्त करने की अपेक्षा सूचना प्रौद्योगिकी के इस दौर में ऑनलाइन (Online) ही समाधान की इच्छा रखते हैं और अपने समय को बचाना चाहते हैं । इसी उद्देश्य से प्रस्तुत शोध के द्वारा साङ्ख्य-योग दर्शन में प्रयुक्त पारिभाषिक शब्दों के लिये ई-कोश एवं ऑनलाइन खोज सिस्टम का विकास किया गया है । जिसके माध्यम से इस प्रकार की ज्ञानार्जन सामग्री इंटरनेट के माध्यम से बस एक ही क्लिक में उपलब्ध हो सकती है । यह ऑनलाइन सर्च सिस्टम संस्कृत विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय की वेबसाइट http://cl.sanskrit.du.ac.in पर उपलब्ध है । इस शोध में दोनों दर्शनों से सम्बन्धित कुल 385

पारिभाषिक शब्दों को सम्मिलित किया गया है। जो मुद्रित एवं ऑनलाइन दोनों रूपों में उपलब्ध सभी पारिभाषिक कोशों से सर्वथा भिन्न है। ऑनलाइन रूप में यह शोध एक सिस्टम के रूप में प्राप्त होता है, जिसमें सभी पारिभाषिक शब्दों से सम्बन्धित सूचनाएं विस्तार से प्राप्त होती हैं।

साङ्ख्य-योग दर्शन पर अनेक शोध कार्य सम्पन्न हुए हैं किन्तु साङ्ख्य-योग दर्शन के पारिभाषिक शब्दों के विश्लेषण के लिये एक वेब आधारित कोई भी कार्य आज तक नहीं हुआ है। अतः यह कार्य सर्वथा नवीन कार्य है। इसका मुख्य उद्देश्य कम्प्यूटर के बढ़ते प्रयोग के कारण अपने शोध कार्य को एक नई पहचान तथा स्थान देना है। संस्कृत जगत में दर्शन से सम्बन्धित ऐसा सिस्टम तैयार करना है जिसके माध्यम से साङ्ख्य-योग दर्शन की पारिभाषिक शब्दों से सम्बन्धित समुचित ज्ञान सामग्री उपलब्ध करायी जा सकेगी। जिससे संस्कृत जगत् के दर्शनशास्त्रेच्छु व्यक्ति सरलता से किसी भी समय पुस्तकालय का प्रयोग किये बिना इन दर्शनों में अपनी गति बना सकेगा। यह सिस्टम सूचना प्रौद्योगिकी के आधुनिक युग में साङ्ख्य-योग दर्शन से सम्बन्धित सूचना देने में सक्षम होगा।

शोधप्रबन्ध का संक्षिप्त परिचय (Brief Introduction of Thesis)

प्रस्तुत शोधप्रबन्ध कुल पाँच अध्यायों में विभक्त है। प्रारम्भ में परिचय एवं अन्त में निष्कर्ष, भावी अनुसन्धान एवं संभावनाएं, परिशिष्ट, शोध के समय प्रकाशित शोधपत्रों की सूची एवं शोधपत्र प्रस्तुतीकरण प्रमाणपत्र की सूची आदि को समाविष्ट किया गया है। इस शोध का प्रथम अध्याय 'भारतीय दर्शन का संक्षिप्त परिचय एवं साङ्ख्य-योग दर्शन' है। जिसमें भारतीय दर्शन की परम्परा, आस्तिक दर्शन, नास्तिक दर्शन एवं साङ्ख्य-योग दर्शन का परिचय प्रस्तुत किया गया है। द्वितीय अध्याय 'पारिभाषिक शब्द, साङ्ख्य-योगदर्शन के पारिभाषिक शब्दों का परिचय एवं सर्वेक्षण' में पारिभाषिक शब्द के विषय में चर्चा की गयी है। तदुपरान्त साङ्ख्य-योग दर्शन के पारिभाषिक शब्दों का सामान्य परिचय एवं अन्त में शोधविषय से सम्बन्धित विस्तृत सर्वेक्षण किया गया है।

'साङ्ख्य दर्शन के पारिभाषिक शब्दों का विश्लेषण' नामक तृतीय अध्याय में साङ्ख्यदर्शन के पारिभाषिक शब्दों का संकलन, साङ्ख्यदर्शन के पारिभाषिक शब्दों के संकलन का आधार,

साङ्ख्यदर्शन के प्रमुख ग्रन्थ एवं उनके लेखकों का परिचय, साङ्ख्य के पारिभाषिक शब्दों की सूची, पारिभाषिक शब्दों के विश्लेषण का आधार एवं पारिभाषिक शब्दों का विश्लेषणात्मक अध्ययन आदि विषयों की चर्चा की गई है । इसके अतिरिक्त अन्त में उदाहरण स्वरूप साङ्ख्यदर्शन के दस पारिभाषिक शब्दों का सम्पूर्ण विश्लेषणात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया है । चतुर्थ अध्याय 'योग दर्शन के पारिभाषिक शब्दों का विश्लेषण' में भी योगदर्शन के पारिभाषिक शब्दों का संकलन, योगदर्शन के पारिभाषिक शब्दों के संकलन का आधार, योगदर्शन के प्रमुख ग्रन्थ एवं उनके लेखकों का परिचय, योगदर्शन के पारिभाषिक शब्दों की सूची, पारिभाषिक शब्दों के विश्लेषण का आधार एवं पारिभाषिक शब्दों के विश्लेषणात्मक अध्ययन की चर्चा की गई है । योगदर्शन के सभी पारिभाषिक शब्दों की सूची दी है और साथ ही साथ उदाहरणस्वरूप दस पारिभाषिक शब्दों का विश्लेषणात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है । पञ्चम अध्याय 'साङ्ख्य-योग दर्शन के पारिभाषिक शब्दों के विश्लेषण लिये वेब तंत्र का विकास एवं परिचय तथा दर्शन से सम्बन्धित उपलब्ध सिस्टम से तुलना' नामक अध्याय को अन्तिम अध्याय के रूप में रखा गया है । इस अध्याय में साङ्ख्य-योग दर्शन के पारिभाषिक शब्दों के विश्लेषण के लिये वेब सिस्टम का सचित्र परिचय प्रस्तुत किया गया है । जिसमें सामग्री एवं संग्रहण पद्धति, डेटा डिजिटलीकरण, सूचना निष्कर्षण पद्धति, साङ्ख्य-योग दर्शन के लिए वेब आधारित सिस्टम का विकास, साङ्ख्य-योग दर्शन के पारिभाषिक शब्दों के लिए वेब आधारित सिस्टम का परिचय, प्रयुक्त संगणकीय प्लेटफॉर्म एवं तकनीक, साङ्ख्य-योग दर्शन के पारिभाषिक शब्दों के लिए वेब आधारित सिस्टम द्वारा विकसित परिणाम का विवरण, साङ्ख्य-योग दर्शन के पारिभाषिक शब्दों के विश्लेषक तन्त्र की विशेषता, दर्शन से सम्बन्धित उपलब्ध सिस्टम से प्रस्तुत सिस्टम की तुलना एवं परिणाम एवं परिचर्चा को सम्मिलित किया गया है ।

निष्कर्ष एवं भावी शोध की सम्भावनाएँ :

प्रस्तुत शोध के माध्यम से 'साङ्ख्य-योग पारिभाषिक शब्द सूचना तन्त्र' (Sāṅkhya-Yoga Technical Term Search System) नामक वेब आधारित एक ऑनलाइन सूचना तंत्र का निर्माण किया गया है । जिसमें उपयोगकर्ता साङ्ख्य-योग दर्शन में उपलब्ध पारिभाषिक शब्द को खोज सकता है और उस शब्द का पूरा विश्लेषण देवनागरी लिपि में UTF-8 प्रारूप में प्राप्त कर सकता है ।

प्रत्येक पारिभाषिक शब्द का लक्षण, मूलग्रन्थ तथा प्रकरण ग्रन्थों के अनुसार प्रस्तुत किया गया है। विश्लेषण का आधार भी ये सभी लक्षण ग्रन्थ ही हैं। यह सिस्टम एक प्रबुद्ध सिस्टम है। इस सिस्टम में यूजर को इन्पुट के रूप में मात्र शब्द प्रविष्ट करना होता है। शेष सभी कार्य यथा – पारिभाषिक शब्द की पहचान, उसके लक्षणों का संयोजन तथा विश्लेषण सिस्टम स्वयं करता है। पारिभाषिक शब्द, लक्षण तथा विश्लेषण इनके अलग-अलग डेटाबेस का निर्माण किया गया है। जहाँ से यह सिस्टम सूचना एकत्रित कर सम्पूर्ण प्रक्रिया स्वतः ही करके हमारे समक्ष परिणाम प्रकट कर देता है। अभी तक साङ्ख्य-योग दर्शन से सम्बन्धित इस प्रकार का कोई सिस्टम प्राप्त नहीं होता है। ई-शिक्षण के क्षेत्र में अनेक कार्य देश-विदेश में सम्पन्न हो रहे हैं परन्तु संस्कृत के लिये बहुत ही कम मात्रा में है। अतः निष्कर्ष स्वरूप हम यह कह सकते हैं कि यह एक प्रथम सफल प्रयास है जिससे साङ्ख्य-योग दर्शन से सम्बद्ध ज्ञान भी हम ऑनलाइन प्राप्त कर सकते हैं। प्रस्तुत शोध के माध्यम से विकसित वेब आधारित "साङ्ख्य-योग पारिभाषिक शब्द सूचना तन्त्र" सिस्टम अभी हिन्दी माध्यम में उपलब्ध है। भविष्य में इसी सिस्टम को अन्य प्रमुख भाषाओं जैसे संस्कृत, अंग्रेजी, बांग्ला, पंजाबी आदि में भी विकसित किया जा सकता है। जिस प्रकार साङ्ख्य-योग दर्शन के पारिभाषिक शब्दों के लिये इस सिस्टम का निर्माण किया गया है। ठीक उसी प्रकार अन्य दर्शनों एवं शास्त्रों के पारिभाषिक शब्दों के लिये भी सिस्टम का निर्माण किया जा सकता है।

सूचना प्रौद्योगिकी के इस दौर में प्रत्येक व्यक्ति तत्काल सूचनाएं प्राप्त करना चाहता है। यह ऑनलाइन सिस्टम से ही सम्भव है। इसी उद्देश्य से साङ्ख्य-योग दर्शन में प्रयुक्त पारिभाषिक शब्दों के लिये इस ऑनलाइन खोज सिस्टम का विकास किया गया है। जिसके माध्यम से इस प्रकार की ज्ञानार्जन सामग्री इंटरनेट के माध्यम से बस एक ही क्लिक में उपलब्ध हो सकती है। जिससे कम्प्यूटर एवं ई-लर्निंग के इस वर्तमान परिवेश में संस्कृत के छात्र एवं शिक्षक तथा संस्कृत से इतर लोग भी सरलतापूर्वक साङ्ख्य-योग दर्शन को समझने में समर्थ हो सकें। भारत सरकार ने भी डिजिटल इण्डिया मिशन के फलस्वरूप ऑनलाइन सेवाओं का वर्द्धन किया है। यह सिस्टम इस उद्देश्य को भी पूरा करता है।

प्रथम अध्याय

भारतीय दर्शन का संक्षिप्त परिचय एवं साङ्ख्य-योग दर्शन
Brief Introduction of Indian Philosophy and Sāṅkhya-Yoga Philosophy

दर्शन के बीज प्राचीन काल से ही प्राप्त होते हैं। मानव जाति के आरम्भ से ही दर्शन का आरम्भ माना जा सकता है। इसका सम्बन्ध मानव जीवन से अत्यन्त गहन रहा है क्योंकि मानव जीवन का प्रत्येक पक्ष दर्शन की परिमिति से बाहर नहीं रहा है। सृष्टि के प्रारम्भ से ही मनुष्य के विचार तथा अनुभव स्थायी रूप लेकर कालान्तर से दार्शनिक विचारों में रूपान्तरित होते चले गए। वेदों में निहित कर्म, उपासना और ज्ञान; इन मूल भावनाओं का विकास क्रमशः ब्राह्मणग्रन्थों, आरण्यकों एवं उपनिषदों में दृष्टिगोचर होता है। भारतीय दर्शन में कर्म, उपासना एवं ज्ञान, तीनों को विस्तृतरूप प्रदान किया गया है। प्रारम्भ में दार्शनिक विचारों पर चिन्तन करने के लिये भारत एवं यूनान दो बड़े केन्द्र विकसित हुए। इन दोनों ही केन्द्रों में तत्त्वज्ञान के आधार पर ही दर्शन की परिकल्पना की गयी थी। परन्तु भारत में यह परिकल्पना तत्त्वज्ञान के साथ-साथ आत्मज्ञान, मोक्ष आदि के रूप में भी परिलक्षित हो गयी। सामान्यतः दर्शन और फिलॉस्फी को समानार्थक समझा जाता है किन्तु दोनों में भिन्नता स्पष्ट है। फिलॉस्फी (Philosophy) शब्द 'फ़िलॉस्' (Philos) तथा 'सोफ़िया' (Sophia) इन दो ग्रीक पदों के सम्मिलित होने से बनता है, जिसका अर्थ है - ज्ञान के प्रति अनुराग। दर्शन शब्द का निर्माण 'दृश्' (देखना) धातु से हुआ है, जिसका अर्थ 'देखना' होता है। व्युत्पत्ति के आधार पर दर्शन शब्द की 'दृश्यतेऽनेनेति दर्शनम्' अथवा 'दृश्यतेऽयमिति दर्शनम्' व्युत्पत्ति की जाती है। अतः व्युत्पत्तिजन्य अर्थ है - जिसके द्वारा देखा जाए अथवा जिसे देखा जाए। देखने की क्रिया को द्रष्टा द्वारा एवं इन्द्रिय से सम्बद्ध अन्तःकरण के रूप में प्रस्तुत किया गया है (झा, 2008)।

द्रष्टा द्वारा दर्शन क्रिया का सम्बन्ध अन्तःकरण से है एवं इन्द्रिय से सम्बद्ध अन्तःकरण की दर्शन क्रिया का सम्बन्ध बाह्य एवं आभ्यन्तर जगत् के ज्ञान से है (झा, 2008)। द्रष्टा की दर्शन क्रिया

नित्यदृष्टि है तथा इन्द्रिय से सम्बद्ध अन्तःकरण की दर्शन क्रिया अनित्यदृष्टि है। दोनों प्रकार की दर्शन क्रियाओं से ही इस संसार की वस्तु का ज्ञान होता है। भारतीय दर्शन का लक्ष्य यथार्थता का ज्ञान तथा एक ही परमतत्व का साक्षात्कार करना है। योगसूत्र के व्यासभाष्य में दर्शन शब्द का यौगिक अर्थ किया है - "एकमेव दर्शनं ख्यातिरेव दर्शनम्[1]" (श्रीवास्तव, 2011)। भारतीय दर्शन का लक्ष्य यथार्थता का ज्ञान तथा एक ही परमतत्व का साक्षात्कार करना है। जबकि फिलॉस्फी में विभिन्न विषयों का विश्लेषण किया जाता है। अतः पाश्चात्य फिलॉस्फी की अपेक्षा दर्शन में चेतना का होना अनिवार्य है। भारत में दर्शन का अन्वेषण किसी ऐतिहासिक साक्ष्य पर निर्भर नहीं है। विश्व का आदिग्रन्थ ऋग्वेद स्वयं में एक दर्शन के रूप में प्रतिस्थापित है। परमसत्य का अन्वेषण करना ही भारतीय दर्शन का मूल है। 'आत्मा वाऽरे द्रष्टव्यः श्रोतव्यो निदिध्यासितव्यः'[2] (पोद्दार, 1993) आदि श्रुतियाँ भी इसका समर्थन करती हैं।

1. भारतीय दार्शनिक परम्परा (Indian Philosophical Tradition)

संस्कृत वाङ्मय में वेद सर्वोपरि स्थान रखते हैं। इन वेदों में अथाह ज्ञान विद्यमान है। इस ज्ञान को स्वयं ग्रहण करने व अन्य व्यक्तियों को समझाने के लिए दो प्रयत्न किये गये, प्रथम दर्शनशास्त्र तथा अन्य ब्राह्मण और उपनिषदादि ग्रन्थ। वेद ज्ञान को तर्क से समझाने के लिए छः दर्शन शास्त्र लिखे गये। सभी दर्शन मूल वेद ज्ञान को तर्क से सिद्ध करते हैं। प्रत्येक दर्शन शास्त्र की विषयवस्तु भिन्न-भिन्न हैं और ये दर्शन शास्त्र सूत्ररूप में निबद्ध हैं। प्रत्येक दर्शन ग्रन्थ अपने प्रारम्भिक सूत्र द्वारा उद्देश्य तथा अन्तिम सूत्र द्वारा उस उद्देश्य की पूर्ति व्यक्त करता है। आर्यों की प्राचीनतम ज्ञानराशि 'वेद' में भारतीय दर्शन के विभिन्न चिन्तनों अथवा विचारधाराओं के 'बीज' प्राप्त होते हैं। जिन विचारों पर कालान्तर में ब्राह्मण साहित्य तथा उपनिषद् साहित्य में चर्चा हुई। जो स्पष्ट रूप से 'उपनिषद्-काल' में एक पृथक्-शास्त्र (दर्शन-शास्त्र) का रूप लेने लगा था क्योंकि समस्त आस्तिक दर्शनों का मूल स्रोत उपनिषद् हैं। जिनकी संख्या 108 मानी जाती है तथा उनमें से 11 प्रमुख हैं। इन ग्यारह उपनिषदों में से भी बृहदारण्यक, छान्दोग्य, तैत्तिरीय, कठ, प्रश्न, श्वेताश्वतर एवं माण्डूक्य उपनिषद् महत्त्वपूर्ण हैं। किसी भी भारतीय दार्शनिक परम्परा में अपने कर्म से विमुख होने की शिक्षा नहीं दी गयी है अपितु शुभ कर्म की ओर अग्रसर किया है। जीवन के

[1] व्यासभाष्य.1.4
[2] बृहदारण्यकोपनिषत् 2.4.5

कर्तव्यों से विमुख होने की तनिक भी प्रवृत्ति भारतीय दार्शनिकों को स्वीकार्य नहीं थी[3] (Dasgupta, 1922)।

आस्तिक दर्शन	नास्तिक दर्शन
न्याय	चार्वाक
वैशेषिक	बौद्ध
साङ्ख्य	जैन
योग	
मीमांसा	
वेदान्त	

तालिका 1.1: दर्शन वर्गीकरण

प्रत्येक मनुष्य का अपने जीवन का चरम लक्ष्य दुःखों से मुक्ति प्राप्त करके परम आनंद की प्राप्ति करना है। भारतीय दर्शनों का एक ही लक्ष्य निर्धारित है - अज्ञान से मानव को मुक्त कर उसे ज्ञान तथा मोक्ष प्राप्त करवाना। यद्यपि समस्त दर्शनों का उत्पत्ति स्थल वेद ही है फिर भी समस्त भारतीय दार्शनिक परम्परा को आस्तिक एवं नास्तिक भेद से दो भागों में विभक्त किया गया है[4] (उपाध्याय, 1979)। आस्तिक परम्परा के दर्शन, वेदों को प्रामाणिक रूप में स्वीकार करते हैं जबकि नास्तिक दर्शन वेदों का प्रामाण्य स्वीकार नहीं करते। आस्तिक एवं नास्तिक दर्शनों के वर्गीकरण को तालिका संख्या -1.1 से समझा जा सकता है।

[3] There was not the slightest tendency to shirk the duties of this life. (A History of Indian Philosophy– volume 1, page- 76).

[4] भारतीय दर्शन पृ.- 45

2. आस्तिक दर्शन (Orthodox Philosophy)

हिन्दू दार्शनिक परम्परा में विभिन्न प्रकार के आस्तिक दर्शनों के अलावा अनीश्वरवादी और भौतिकवादी दार्शनिक परम्पराएँ भी विद्यमान रहीं हैं । दर्शनों में षड्दर्शन अधिक प्रसिद्ध और प्राचीन हैं। षड्दर्शनों को 'आस्तिक दर्शन' कहा जाता है । वे वेद की सत्ता को मानते हैं। आस्तिक दर्शन को विचारों की दृष्टि से दो भागो में विभक्त किया जा सकता है, प्रथमतः जो साक्षात् वेदों को ही अपना आधार बनाते हैं, जैसे - मीमांसा दर्शन (वैदिक कर्मकाण्ड) और वेदान्त दर्शन (वैदिक ज्ञानकाण्ड) पर आधारित है । द्वितीय - जो वेदों की प्रामाणिकता को स्वीकार करते हुये नए विचारों को भी सम्मिलित करते हैं, वे दर्शन हैं – साङ्ख्य, योग, न्याय एवं वैशेषिक।

2.1 न्याय दर्शन (Nyāya Darśana)

न्याय दर्शन के प्रवर्तक आचार्य अक्षपाद गौतम हैं । यह वस्तुवादी दर्शन है । देवराज (2003) ने 'न्याय' को परिभाषित करते हुये कहा है कि जिसकी सहायता से किसी सिद्धान्त पर पहुँचा जा सके, उसे न्याय कहते हैं[5] । प्रमाणों के आधार पर किसी निर्णय पर पहुँचना ही न्याय है । यह मुख्य रूप से तर्कशास्त्र और ज्ञानमीमांसा है । प्रमाणों के द्वारा तत्त्व-परीक्षण करना ही न्याय दर्शन का निहितार्थ कहा जा सकता है । इसके अपर नाम आन्वीक्षिकी, तर्कशास्त्र, न्यायविद्या, हेतुविद्या आदि हैं । वात्स्यायन ने न्यायदर्शन के प्रथम सूत्र के भाष्य एवं उद्योतकर द्वारा उनके न्यायवार्तिक में न्यायशास्त्र का उद्देश्य ज्ञान के विषयों का तर्कबुद्धि से आलोचना और अन्वेषण करना किया है – प्रमाणैर्थपरीक्षणम्[6] (राजाराम, 1921; शास्त्री, 2004) । प्राचीन न्याय और नव्य न्याय के भेद से न्यायशास्त्र की परम्परा को दो भागों में विभक्त किया गया है । प्राचीन न्याय के प्रवर्तक आचार्य गौतम हैं। यह प्रमेय पर आधारित है। इसकी भाषा अत्यन्त सरल तथा सुगम है। इसमें स्थूल रूप से विषयों का प्रतिपादन किया गया है। नव्यन्याय का आरम्भ मिथिला के आचार्य गंगेश उपाध्याय के द्वारा तेरहवीं शताब्दी में हुआ है (Guha, 2016) । श्री हर्ष द्वारा रचित 'खण्डनखण्डखाद्यम्' पुस्तक में अद्वैतवेदान्त का समर्थन एवं न्याय दर्शन के कतिपय सिद्धान्तों के

[5] "नीयते विवक्षितार्थः अनेन इति न्यायः" (दर्शन धर्म-अध्यात्म और संस्कृति)

[6] न्यायभाष्य तथा न्यायवार्तिक – 1.1.1

प्रति विरोध व्यक्त किया है । श्रीहर्ष की इसी पुस्तक के विरोध में गंगेश उपाध्याय ने 'तत्त्वचिन्तामणि' की रचना करके नव्यन्याय का निर्माण किया है (शास्त्री, 2006) । इसमें प्राचीन न्याय के विषयों को ही सूक्ष्म रूप से प्रस्तुत किया गया है । न्यायदर्शन में 16 पदार्थ माने गये हैं[7] (Iyer, 1979), जो क्रमशः इस प्रकार हैं - 1. प्रमाण, 2. प्रमेय, 3. संशय, 4. प्रयोजन, 5. दृष्टान्त 6. सिद्धान्त, 7. अवयव, 8. तर्क, 9. निर्णय, 10. वाद, 11. जल्प, 12. वितण्डा, 13. हेत्वाभास, 14. छल, 15. जाति, 16. निग्रहस्थान ।

2.2 वैशेषिक दर्शन (Vaiśeṣika Darśana)

इस दर्शन के प्रवर्तक आचार्य 'कणाद' हैं । वैशेषिक दर्शन में 'विशेष' नाम के पदार्थ का विवेचन किया गया है, इसीलिये इसका नामकरण 'वैशेषिक' रूप में हुआ है । चन्द्रकान्त तर्कालङ्कार ने अपने भाष्य में स्पष्ट रूप से कहा है कि "विशिष्ट तत्वों का समावेश कर उनकी व्याख्या करने के फलस्वरूप इसका नाम 'वैशेषिक' पड़ा (शास्त्री, 2006)" । वैशेषिक दर्शन न्याय दर्शन के काफी समान है किन्तु वास्तव में यह दर्शन एक स्वतंत्र भौतिक विज्ञानवादी, बहुत्ववादी एवं वस्तुवादी दर्शन है । यह दर्शन प्राचीनता की दृष्टि से साङ्ख्यदर्शन के बाद सर्वाधिक प्राचीन है । तदुपरान्त जैन, बौद्ध एवं न्याय दर्शन प्राप्त होते हैं । प्रस्तुत दर्शन को 'सर्वशास्त्रोपकारक' भी माना गया है क्योंकि यह 'पदार्थ-निर्णय' हेतु सक्षम है । वैशेषिक दर्शन में सम्पूर्ण सृष्टि 'भाव तथा अभाव' के रूप में विभक्त है । इनमें 'भाव' को छः प्रकार से विभाजित किया है - द्रव्य, गुण, कर्म, सामान्य, विशेष, एवं समवाय[8] (सिंह, 2000; राजाराम, 1919) । किन्तु सातवें पदार्थ 'अभाव' को महर्षि कणाद पदार्थरूप में स्वीकार नहीं करते हैं (गोयल, 2008) । प्रागभाव, प्रध्वंसाभाव, अत्यंताभाव और अन्योन्याभाव के रूप में अभाव के चार उपभेद किये गये हैं[9] (भार्गव, 2012; मिश्र, 2001) । महर्षि कणाद ने अपने वैशेषिक-सूत्रों में इन्हीं दो तत्वों को विस्तार से विवेचित किया है । यद्यपि

---

[7] 'प्रमाण-प्रमेय-संशय-प्रयोजन-दृष्टान्त-सिद्धान्त-अवयव-तर्क-निर्णय-वाद-जल्प-वितण्डा-हेत्वाभास-छल-जाति-निग्रहस्थानानां तत्त्वज्ञानान्निश्रेयसाधिगमः' इति न्यायस्यादिमं सूत्रम् ।

[8] धर्मविशेषप्रसूताद् द्रव्य-गुण-कर्म-सामान्य-विशेष-समवायानां पदार्थानां साधर्म्य-वैधर्म्याभ्यां तत्त्वज्ञानान्निः श्रेयसम् ॥ (न्या.सू. 4)

[9] अभावश्चर्विधः- प्रागभावः प्रध्वंसाभावोऽत्यन्ताभावोऽन्योन्याभावश्चेति, (तर्कसंग्रह)

अन्नम्भट्ट द्वारा प्रणीत 'तर्कसंग्रह' में सात पदार्थों का विवेचन किया गया है । वह अभाव को भी पदार्थ रूप में सातवाँ पदार्थ स्वीकार करते हैं ।

2.3 मीमांसा दर्शन (Mīmāṃsā Darśana)

√मान् धातु से सन् प्रत्यय करके 'मीमांसा' शब्द की व्युत्पत्ति होती है, जिसका अर्थ है 'जिज्ञासा' (उपाध्याय, 2014) । अन्य शब्दों में मीमांसा का अर्थ किसी वस्तु के यथार्थ स्वरूप का वर्णन करना है । प्रारम्भ में मीमांसा शब्द वैदिक कर्मकाण्ड से सम्बन्धित विषयों की जिज्ञासा के लिये प्रयुक्त होता था किन्तु कालान्तर से किसी भी विषय की समीक्षा करने के अर्थ में इसका प्रयोग होने लगा । मीमांसा, जिज्ञासा तथा समीक्षा पर्यायवाची माने जाने लगे (Sandal, 1999) । मीमांसा को दो भागो में विभक्त किया गया है - पूर्व मीमांसा (मीमांसा) तथा उत्तर मीमांसा (वेदान्त) । जैमिनि मीमांसा के प्रवर्तक माने जाते हैं । वेदान्त बादरायण द्वारा प्रवर्तित है (मिश्र, 2012) । ये दोनों ही अपने विचारों से पूर्णतया वेद पर आश्रित हैं । पूर्वमीमांसा को कर्ममीमांसा भी कहते है क्योंकि यह वेद के कर्मकाण्ड से सम्बन्ध रखता है । कर्ममीमांसा में कर्म से सम्बन्धित विरोधों का निराकरण किया जाता है । ऐसा माना जाता है कि मीमांसा का प्राचीन नाम 'न्याय' है क्योंकि यह तर्क के द्वारा किसी भी गूढ और संदिग्ध विषय का निर्णय करता था । इसलिये मीमांसक ही नैयायिक कहे जाते थे (उपाध्याय, 1977) । मीमांसा का प्रथम सूत्र ही कहता है कि अब धर्म की जिज्ञासा प्रारम्भ करनी चाहिए – "अथातो धर्मजिज्ञासा"[10] और धर्म को कहना ही इसका विषय है[11] (मिश्र, 1867; Sandal, 1999) । मीमांसा दर्शन 16 अध्यायों में विभक्त है । प्रथम 12 अध्याय को 'द्वादशलक्षणी' तथा अन्तिम 4 अध्याय को 'संकर्षण काण्ड' या 'देवताकाण्ड' कहा जाता है । मीमांसा में 2644 सूत्र हैं, जो 909 अधिकरणों में विभाजित हैं । शबरस्वामी द्वारा द्वादशलक्षणी पर एक बृहत् भाष्य लिखा गया है, जो 'शाबरभाष्य' के नाम से प्रचलित है । अपने विचारों के मतभेद से इस दर्शन के तीन सम्प्रदाय हुए - कुमारिल भट्ट का भाट्टमत, प्रभाकर मिश्र का गुरुमत और मुरारी मिश्र का मिश्रमत । लौगाक्षिभास्करकृत अर्थसंग्रह में मीमांसा दर्शन के गूढ़ विषयों का सरल तथा संक्षिप्त स्पष्टीकरण का प्रयास किया गया है ।

---

[10] पूर्वमीमांसा - 1.1.1 .

[11] "धर्माख्यं विषयं वक्तुं मीमांसायाः प्रयोजनम् ।" (मीमांसाश्लोकवार्तिकम्, श्लोक 11)

2.4 वेदान्त दर्शन (Vedānta Darśana)

आध्यात्म शास्त्र के अन्तर्गत वेदान्त दर्शन का स्थान सर्वोपरि है । वैदिक साहित्य का अन्तिम भाग होने के कारण उपनिषद् ही वेदान्त कहे जाते हैं । मीमांसा के ज्ञानकाण्ड भाग को उत्तरमीमांसा या वेदान्त कहा जाता है, जो ज्ञान विरोधी विचारों का निराकरण करता है तथा व्यक्ति को ज्ञानप्राप्ति के मार्ग की ओर प्रेरित करता है । उपनिषद् के विचारों को ही वेदान्त प्रमाण रूप से स्वीकार करते है[12] (श्रीकृष्णदास, 2015; शास्त्री, 2004) । उपनिषद् अनेक हैं और इनमें वेदान्त के विचार पूर्ण रूप से समन्वित न होकर अव्यवस्थित ढंग से प्राप्त होते हैं । अतः बादरायण व्यास ने इन विचारों को एकत्रित करने हेतु ब्रह्मसूत्र की रचना की । जिसे वेदान्त सूत्र, शारीरकसूत्र, शारीरकमीमांसा या उत्तरमीमांसा भी कहा जाता है (मिश्र, 2008; गोयल, 2008) । वेदान्तसूत्र में चार अध्याय तथा प्रत्येक अध्याय के चार पाद हैं । कुल सोलह पादों में लगभग 550 सूत्र निबद्ध हैं । ब्रह्मसूत्र को महर्षि पाणिनि ने अपनी अष्टाध्यायी में 'भिक्षुसूत्र'[13] (जिज्ञासु एवं मीमांसक, 1964) से सम्बोधित किया है क्योंकि ब्रह्मसूत्र भिक्षुओं के लिये उपादेय है । बादरायण ने वेदान्त को इतना सूक्ष्म रूप दे दिया कि यह सरलतापूर्वक ग्राह्य नहीं था । तदुपरान्त इन सूत्रों को समझने के लिये अनेक भाष्यकारों ने भाष्य लिखे और वेदान्त की विभिन्न अवधारणाओं में परस्पर मतभेद के कारण इसके अनेक सम्प्रदाय बन गये । इन विभिन्न सम्प्रदायों में से निम्नलिखित चार सम्प्रदाय प्रमुख माने जाते हैं (शास्त्री, 2014) –

1. शङ्कराचार्य का अद्वैतवाद
2. रामानुज का विशिष्टाद्वैतवाद
3. मध्वाचार्य का द्वैतवाद
4. निम्बार्क का द्वैताद्वैतवाद

अन्य सम्प्रदायों के अन्तर्गत महाप्रभु चैतन्य का अचिन्त्य भेदाभेद तथा वल्लभ का शुद्धाद्वैतवाद भक्तिमार्ग का अनुसरण करते हैं, इसलिये ये भक्तिमार्ग के अनुयायियों में प्रसिद्ध हैं । उपर्युक्त सभी

[12] "वेदान्तो नाम उपनिषत्प्रमाणम्", वेदान्तसार- पृ. 9

[13] पाराशर्यशिलालिभ्यां भिक्षुनटसूत्रयोः, अष्टाध्यायी - 4.3.110

सम्प्रदायों में शाङ्कर का अद्वैतवाद अत्यधिक प्रसिद्ध है (गोयल, 2008) । इसके पश्चात् सभी सम्प्रदायों ने अपने-अपने मतों को युक्तिसंगत सिद्ध करने का प्रयास किया । परिणामस्वरूप मतानुयायियों ने स्वसिद्धान्तों को प्रसारित करने के लिये अनेक टीकाएं लिखीं । अनेकों ने स्वतन्त्र ग्रन्थों व प्रकरण ग्रन्थों की भी रचना की । जिसके फलस्वरूप साहित्य की दृष्टि से वेदान्त अत्यन्त बृहत् हो गया (शास्त्री, 2014) ।

2.5 साङ्ख्य दर्शन (Sāṅkhya Darśana)

भारतीय दर्शन में साङ्ख्य सर्वप्राचीन दर्शन माना जाता है । यद्यपि इसकी उत्पत्ति और विकास से सम्बन्धित अनेक मतभेद प्राप्त होते हैं । इसके प्रणेता के रूप में महर्षि कपिल को स्वीकार किया जाता है । महाभारत, पुराण, चरकसंहिता, धर्मशास्त्र, मनुस्मृति एवं उपनिषदादि में उपयुक्त स्थलों पर साङ्ख्य के सिद्धान्त दृष्टिगोचर होते हैं । अतः इसे सनातन दर्शन कहकर भी सम्बोधित किया गया है[14] (शर्मा, 1999) । विद्वानों द्वारा साङ्ख्य शब्द की व्युत्पत्ति अनेक प्रकार से की गई है। अतः इसके व्युत्पत्तिपरक अनेक अर्थ निष्पन्न होते हैं । सामान्यतः इसके दो अर्थ सर्वमान्य हैं – गणनावाची और ज्ञानार्थक । मनुष्य के भीतर उभर रहे अनेक रहस्यात्मक प्रश्नों के समाधान का अत्यन्त प्राचीन साधन साङ्ख्य ही माना जाता है[15] (Davies, 2000) । साङ्ख्य को द्वैतवादी दर्शन भी कहा जाता है क्योंकि इसमें मुख्यरूप से दो तत्वों को स्वीकार किया गया है, प्रथम - पुरुष तथा द्वितीय - प्रकृति । इन दोनों के संयोग मात्र से महदादि 23 तत्त्वों से लिप्त सृष्टि का निर्माण होता है । सत्कार्यवाद एवं पुरुषबहुत्व इसके दो प्रमुख प्रतिपाद्य विषय हैं । इसका विस्तृत वर्णन इसी अध्याय के अन्त में किया गया है ।

2.6 योग दर्शन (Yoga Darśana)

योग दर्शन के प्रवर्तक महर्षि पतञ्जलि हैं । यह दर्शन समाधिपाद, साधनपाद, विभूतिपाद और कैवल्यपाद नामक चार पादों में कुल 194 सूत्रों में निबद्ध है (दासगुप्ता, 1972; श्रीवास्तव,

[14] सांख्यं च योगं च सनातने द्वे । (महाभारत - 12.349.73)

[15] It is the earliest attempt on record to give an answer. (Hindu philosophy, preface)

2011; Saraswati, 2002) । चित्त या मन की स्मरणात्मक शक्ति की वृत्तियों को सब बुराई से दूर कर, शुभ गुणों में स्थिर करके, परमेश्वर के समीप अनुभव करते हुए मोक्ष प्राप्त करने के प्रयास को योग कहा जाता है (शुक्ल, 1986) । भगवद्गीता में कहा गया है कि बुद्धि से परे आत्मा को जानकर, आत्मा के द्वारा आत्मा को वश में करना अर्थात् स्वयं पर नियंत्रण प्राप्त करना ही योग है[16] (पोद्दार, 2014) । बुद्धि द्वारा आत्मा पर नियंत्रण ही योग दर्शन का प्रतिपाद्य विषय है । योगदर्शन के अनुसार तप (निरंतर प्रयत्न), स्वाध्याय (अध्यात्म – विद्या का अध्ययन) और ईश्वर प्राणिधान (परमात्मा का आश्रय) से योग की सिद्धि हो सकती है[17] (श्रीवास्तव, 2011) । इसका विस्तृत वर्णन अध्याय के अन्त में किया गया है ।

3. नास्तिक दर्शन (Heterodox Philosophy)

मनुस्मृति के अनुसार जो वेदों में आस्था न रखते हुये उसकी निन्दा करें वह नास्तिक कहलाता है – "नास्तिको वेदनिन्दकः"[18] (स्वामी, 1969) । नास्तिक दर्शन के अन्तर्गत आने वाले दर्शनों की विचारधारा के अनुसार दो भागों में बांटा जा सकता है । प्रथम चार्वाक, जो कि नास्तिक दर्शन में अग्रणी है । ये वेदों और उनके अनुयायियों की घोर निन्दा करते हैं । दूसरे बौद्ध और जैन दर्शन, जो संयत रूप से वेदों के मतों से अस्वीकृति व्यक्त करते हैं[19] (उपाध्याय, 1984) ।

3.1 चार्वाक दर्शन

संसार में सभी प्राणी आध्यात्मिक प्रवृत्ति को धारण नहीं करते हैं । कुछ मनुष्य केवल संसार में जो दिखाई देता है उसी को सत्य मानते हुए अपना जीवन यापन करते हैं, ऐसे व्यक्ति स्वतः ही चार्वाक के सिद्धान्तों पर चल पड़ते हैं । इनका मानना है कि जब तक ये जीवन है पूर्णरूपेण सुख से व्यतीत करो भले ही ऋण लेकर घी पीना पड़े क्योंकि मृत्यु के उपरान्त इस देह का पुनरागमन किसने देखा है । अतः जो कुछ है इसी लोक अर्थात् चराचर जगत में है । इसके अतिरिक्त स्वर्ग ,

---

[16] एवं बुद्धेः परं बुद्ध्वा संस्तभ्यात्मानमात्मना ॥ (गीता - 3.43)

[17] तपः स्वाध्यायेश्वरप्रणिधानानि क्रियायोगः।। (योगसूत्र – 2.1)

[18] योऽवमन्येत ते मूले हेतुशास्त्राश्रयाद्द्विजः । स साधुभिर्बहिष्कार्यो नास्तिको वेदनिन्दकः ।। (मनु. 2/11)

[19] भारतीय दर्शन, पृ.- 25

नरक, अपवर्ग, परलोक नहीं है[20] (शर्मा, 2008; सिन्हा, 2012; झा, 2013) । सुख की प्राप्ति के पश्चात् जो अनुभूति होती है वही स्वर्ग है । कण्टक आदि के चुभने से होने वाला दुःख ही नरक है[21] (शर्मा, 2008; चट्टोपाध्याय, 2019) । मनुष्य देह ही आत्मा है तथा मृत्यु ही मोक्ष है[22] (शर्मा, 2001), मानव जीवन के लिए पुरुषार्थ धर्म न होकर केवल काम है[23] (शर्मा, 2001); आदि सिद्धान्त प्राचीन काल से ही प्रचलन में चले आ रहे हैं । चार्वाक दर्शन की प्राचीनता इस बात से सिद्ध होती है कि चार्वाक सिद्धान्त उपनिषद् काल में पूर्वपक्ष के रूप में विद्यमान थे । बौद्ध तथा जैन दर्शनों में भी कई स्थानों पर चार्वाक के सिद्धान्तों का वर्णन प्राप्त होता है । श्रुतिकाल में मनुष्य यज्ञ - उपासना आदि पर अधिक बल देते थे । वैदिक विचारधारा को अस्वीकार करने के कारण चार्वाक को नास्तिक दर्शन की श्रेणी में रखा गया है क्योंकि चार्वाक ने आध्यात्मिक विचारों तथा श्रुतिपरक सिद्धान्तों को पूरी तरह नकारते हुए अपने भौतिकवादी एवं विज्ञानवादी सिद्धान्तों की स्थापना की। उस समय यह विचार प्रचलन में तो आये किन्तु सैद्धान्तिक रूप से प्रतिष्ठा को प्राप्त न कर सके । चार्वाक दर्शन एक साथ सूत्रबद्ध ग्रन्थ के रूप में प्राप्त नहीं होता परन्तु इसके सिद्धान्त भिन्न-भिन्न ग्रन्थों में यत्र-तत्र प्राप्त होते हैं । यह दर्शन इसलिये प्रतिष्ठित होने में असमर्थ रहा क्योंकि इसके अनुयायियों ने चार्वाक दर्शन के सिद्धान्तों को स्थापित करने की अपेक्षा परपक्ष को अपने कुतर्कों द्वारा खण्डित करने में अपना ध्यान केन्द्रित रखा । इनके लिये कोई शास्त्र प्रमाण नहीं था । केवल अपने तर्कों को ही प्रमाण मानते थे । इसीलिये इन्हें वैतण्डिक की श्रेणी में रखा गया । न्यायमञ्जरी के रचयिता जयन्तभट्ट ने भी इसको अप्रमाणिक मानते हुए वैतण्डिक बताया है[24] (शुक्ल, 1986) । चार्वाक को प्राचीनकाल में 'लोकायत' नाम से सम्बोधित किया जाता था[25] (शर्मा, 2001; पाठक, 1965) । माधवाचार्य ने भी लोकायत का व्युत्पत्तिपरक अर्थ "सामान्य जनों का दर्शन" किया है[26] (शर्मा, 2001) । चार्वाक के संस्थापक के रूप में बृहस्पति को स्वीकार किया जाता है, इसीलिये इसका एक अन्य नाम बार्हस्पत्य दर्शन भी है (उपाध्याय, 1984; पाठक, 1965) । चार्वाक दर्शन का मुख्य सिद्धान्त स्वभाववाद है । ये केवल प्रत्यक्ष को ही प्रमाण मानते हैं और पृथिवी, जल, तेज एवं

---

[20] यावज्जीवं सुखं जीवेदृणं कृत्वा घृतं पिबेत् ।
भस्मीभूतस्य देहस्य पुनरागमनं कुतः? ॥ (सर्वदर्शनसंग्रह, पृ. 21)

[21] कण्टकादिजन्यं दुःखमेव नरकः । (सर्वदर्शनसंग्रह, पृ. 8)

[22] मरणमेवापवर्गः । (भारतीय दर्शन की चिन्तनधारा, पृ. 42)

[23] काम एवैकः पुरुषार्थः । (वही)

[24] नहि लोकायते किञ्चित्, कर्त्तव्यमुपदिश्यते । वैतण्डिककथेवासौ, न पुनः कश्चिदागमः ॥ (न्यायमञ्जरी)

[25] भारतीय दर्शन की चिन्तनधारा, पृ. 43

[26] लोकेषु आयतः लोकायतः । (भारतीय दर्शन की चिन्तनधारा,पृ. 44)

वायु; इन चार तत्वों को ही अपनाते हैं। आजकल किसी भी प्रकार के नास्तिक विचारों का पालन करने वालों को चार्वाक कहा जाने लगा है।

3.2 जैनदर्शन

जैनदर्शन अत्यन्त प्राचीन काल से अप्रत्यक्ष रूप में लोगों के समक्ष चला आ रहा है। जैनधर्म प्रचारकों को तीर्थंकर शब्द से सम्बोधित किया जाता है। प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव से लेकर अन्य तेईस तीर्थंकर पर्यन्त जैनधर्म और जैनदर्शन को पूर्णरूप से स्थापित करने में अक्षम रहे, परन्तु चौबीसवें तीर्थंकर वर्धमान महावीर ने छठी शताब्दी ईसा पूर्व में जैनदर्शन को प्रकाश प्रदान किया। जिससे कि सभी लोग इसकी ओर आकर्षित हो सकें (गोयल, 2008; सिन्हा, 2012)। जैन धर्म के अनुसार जो सिद्धपुरुष राग-द्वेष से परे हैं, सर्वज्ञाता हैं, तीनों लोकों में पूज्यमान तथा सामर्थ्यवान् हैं उन्हें 'अर्हत्' की संज्ञा दी जाती थी[27] और इन्हीं महापुरुषों द्वारा प्रचारित होने के कारण जैनधर्म को 'आर्हत' भी कहा जाता है (माधवाचार्य, 1999)। वर्धमान महावीर को 'जिन' की उपाधि प्राप्त थी क्योंकि उन्होंने राग-द्वेषादि मानव कल्याण के बाधक तत्त्वों पर विजय प्राप्त की थी तथा इनके द्वारा इस धर्म के प्रचार होने के कारण इसे जैनधर्म कहा जाने लगा था (उपाध्याय, 1984)। यथार्थवाद (Realism) का अनुसरण करते हुए ये मानते हैं कि प्रत्यक्ष में आने वाली प्रत्येक वस्तु यथार्थ है तथा उसका अस्तित्त्व है। इनके अनुसार विश्व के प्रत्येक कण की सत्ता है, इसलिये हिंसा को नकारते हुए अहिंसा ही परम धर्म है[28] (माधवाचार्य, 1999; सिन्हा, 2012)। प्रमुख विषय के रूप में 'आस्रव' तथा 'संवर' मोक्ष सम्बन्धी तत्वों का विवेचन प्राप्त होता है[29]। जैन दर्शन में ईश्वर की सत्ता को स्वीकार नहीं किया गया है। उनका तर्क है कि भक्ति और आस्था के लिए साकार वस्तु की आवश्यकता होती है। इसलिये इन्होंने सिद्ध पुरुषों को वह स्थान दिया जिन्हें अर्हत् कहा जाता है (उपाध्याय, 1984)। जैनधर्म के दो सम्प्रदाय हैं – श्वेताम्बर और दिगम्बर। श्वेताम्बर सम्प्रदाय के प्रवर्तक स्थूलभद्र हैं एवं इनके अनुयायी श्वेतवस्त्र धारण करते हैं। भद्रबाहु दिगम्बर सम्प्रदाय के प्रवर्तक हैं एवं इनके अनुयायी पुरुष निर्वस्त्र रहते हैं (शर्मा, 2001)। अनेकान्तवाद इस दर्शन का

---

[27] सर्वज्ञो जितरागादिदोषवस्त्रैर्लोक्यपूजितः।
यथास्थितार्थवादी च, देवोऽर्हत् परमेश्वरः॥ (सर्वदर्शनसंग्रह, पृ. 103)

[28] अहिंसा परमो धर्मः।

[29] आस्रवो भवहेतुः स्यात्, संवरो मोक्षकारणम्।
इतीयमार्हती दृष्टिरन्यदस्याः प्रपञ्चनम्॥ (सर्वदर्शनसंग्रह, पृ. 103)

प्रमुख सिद्धान्त है, जिसके अनुसार प्रत्येक तत्त्व में उत्पत्ति, क्षय और नित्यता ये लक्षण विद्यमान रहते हैं।

3.3 बौद्धदर्शन

प्राचीन साक्ष्यों के आधार पर समस्त षड्दर्शन तथा जैनदर्शन के बाद ही बौद्ध दर्शन का उदय माना जाता है। महात्मा गौतम बुद्ध द्वारा ही इसकी स्थापना की गई थी। जब ईसापूर्व छठी शताब्दी में साधारण मानव का नैतिक जीवन समाप्त-सा हो रहा था तब बुद्ध ने अपने उपदेशों के माध्यम से नैतिक सुधार लाने का प्रयत्न किया (गोयल, 2008)। इनके उपदेश पालि भाषा में मौखिक रूप से ही दिये जाते थे (उपाध्याय, 1984)। निम्न बिन्दुओं पर दृष्टिपात से सम्पूर्ण बौद्ध दर्शन को समझा जा सकता है -

त्रिपिटक

बुद्ध के उपदेशों को एकत्रित कर उसे 'पिटक' की संज्ञा दी गई। विषयानुसार इस पिटक को तीन भागों में विभाजित कर त्रिपिटक नाम दिया गया –

- सुत्तपिटक (बुद्ध के उपदेश)
- विनय पिटक (आचार सम्बन्धी ग्रन्थ)
- अभिधम्म पिटक (दार्शनिक विषयों का विवेचनात्मक ग्रन्थ)।

आर्यसत्य

बौद्ध दर्शन के अनुसार चार आर्यसत्य हैं। गौतम बुद्ध को अपनी विवेक बुद्धि से जब यह निश्चित हो गया कि यह सम्पूर्ण संसार दुःखों से आच्छादित है तब इस दुःख से मुक्त होने के लिये इन चार आर्यसत्यों के रहस्य का उद्घाटन किया। इसका आर्यसत्य नाम इसलिए रखा क्योंकि सत्य अनेक हैं परन्तु श्रेष्ठ चार हैं। आर्य का अर्थ है विद्वज्जन। यह ऐसा सत्य है जहाँ केवल विद्वान् ही पहुँच सकते हैं[30] (उपाध्याय, 1984; शर्मा, 2010)। ये चार आर्यसत्य हैं[31] –

[30] भारतीय दर्शन, पृ.121।

- दुःख
- समुदाय
- निरोध
- मार्ग

अष्टाङ्ग मार्ग

दुःखनिरोध के लिये बुद्ध ने आठ मार्गो की चर्चा की है, जिन्हें अष्टाङ्ग मार्ग भी कहा जाता है। वे अष्टाङ्ग मार्ग हैं –

- सम्यक् दृष्टि (ज्ञान)
- सम्यक् सङ्कल्प
- सम्यक् वचन
- सम्यक् आजीव
- सम्यक् व्यायाम
- सम्यक् स्मृति
- सम्यक् कर्मान्त (पञ्चशील, दशशील)
- सम्यक् समाधि

सम्यक् का अर्थ है न अधिक और न कम अर्थात् दोनों अतिशयता (Extremes) को रोकना। दुःखों को रोकने के उपाय ही मार्ग कहे जाते हैं[32] (शर्मा, 2010)।

सम्प्रदाय

गौतम बुद्ध के निर्वाण प्राप्ति के उपरान्त उनके शिष्यों के विचारों में परस्पर मतभेद होने के कारण बौद्ध धर्म के अनेक सम्प्रदायों का जन्म हुआ। इनमें से निम्नलिखित चार सम्प्रदाय सर्वाधिक लोकप्रिय हुए (गैरोला, 2009) –

---

[31] दुःखसमुदायनिरोधमार्गाश्चत्वार आर्यबुद्धस्याभिमतानि। (सर्वदर्शनसंग्रह, पृ. 77)।

[32] तन्निरोधोपायो मार्गः। स च तत्त्वज्ञानम्। (सर्वदर्शनसंग्रह, पृ. 80)

- माध्यमिक (शून्यवाद)
- योगाचार (विज्ञानवाद)
- सौत्रान्तिक (बाह्यार्थनुमेयवाद)
- वैभाषिक (बाह्यार्थ प्रत्यक्षवाद)

प्रारम्भ में बौद्ध धर्म की दो ही शाखाएं थीं - हीनयान (निम्न वर्ग) और महायान (उच्च वर्ग) । उपरोक्त चारों सम्प्रदायों में से 'वैभाषिक और सौत्रान्तिक' हीनयान के अन्तर्गत आते हैं तथा अन्य दो सम्प्रदाय 'योगाचार एवं माध्यमिक' महायान के अन्तर्गत आते हैं[33] (वेदालंकार, 2004) ।

पञ्चस्कन्ध

स्कन्ध का अर्थ है अमूर्त्त तत्त्व । यह चित्त तथा उसके विकारों से सम्बन्धित होते हैं । ये पञ्चस्कन्ध - रूप-स्कन्ध, विज्ञान-स्कन्ध, वेदना-स्कन्ध, संज्ञा-स्कन्ध, संस्कार-स्कन्ध हैं । इनमें से विज्ञानस्कन्ध चित्तस्वरूप है और अन्य विकार हैं[34] (शर्मा, 2010) । बुद्ध उपनिषद् वाक्य 'ऋते ज्ञानान्न मुक्तिः'[35] (शर्मा, 1927), अर्थात् बिना ज्ञान के मुक्ति (निर्वाण) की प्राप्ति नहीं हो सकती है, स्वीकार करते हैं और साथ ही साथ त्रिरत्न – शील, समाधि तथा प्रज्ञा द्वारा शारीरिक शुद्धता की ओर चर्चा करते हैं ।

4. साङ्ख्य-योग दर्शन का परिचय (Introduction of Sāṅkhya-Yoga Philosophy)

इस भाग में प्रस्तुत शोध का प्रमुख विषय साङ्ख्य एवं योग दर्शन का परिचय प्रस्तुत किया गया है ।

---

[33] भारतीय दर्शनशास्त्र का इतिहास (भाग-3), पृ. 497

[34] चित्तचैत्तात्मकः स्कन्धः पञ्चविधो रूप-विज्ञान-वेदना-संज्ञा-संस्कारसंज्ञकः । (सर्वदर्शनसंग्रह, पृ. 75)

[35] श्री गोविन्द भगवतपाद चिरचित रसहृदयतन्त्रम् मुग्धावबोधिनीटीका सहित (1/15/9)

4.1 साङ्ख्य दर्शन का सामान्य परिचय

साङ्ख्य दर्शन सर्वाधिक प्राचीन दर्शनों की श्रेणी में अग्रणी माना जाता है। प्राचीनकाल में यह दर्शन अत्यंत लोकप्रचलन में था तथा सामान्यजन भी इससे बहुत प्रभावित थे। साङ्ख्य दर्शन की मूलभूत विषय सामग्री का आधार वैदिक विश्वदर्शन है। अतः साङ्ख्य दर्शन पूर्णरूप से वैदिक विश्वदर्शन का सार रूप माना जाता है (जोशी, 1965)। महाभारत (श्रीमद्भगवद्गीता), विभिन्न पुराणों, उपनिषदों, चरकसंहिता और मनुसंहिता में साङ्ख्य के विशिष्ट उल्लेख मिलते हैं। महाभारतकार ने यहाँ तक कहा है कि "ज्ञानं च लोके यदिहास्ति किञ्चित् सांख्यागतं तच्च महन्महात्मन्"[36] (Dubey & Pilly, 2010)। साङ्ख्य दर्शन के पारंपरिक जन्मदाता कपिल मुनि माने जाते हैं। इनके विषय में स्पष्ट प्रमाण प्राप्त नहीं होते हैं किन्तु अवश्यमेव ये अत्यन्त प्रख्यात पुरुष रहे होंगे क्योंकि भगवान् श्री कृष्ण ने गीता में स्वयं को कपिल के समान बता कर इन्हें सम्मानित किया है - "सिद्धानां कपिलो मुनिः"[37] (नराले, 2003)। कपिल द्वारा रचित केवल दो ग्रन्थ ही माने जाते हैं - साङ्ख्यसूत्र एवं तत्त्वसमास और दुर्भाग्यवश ये दोनों ही ग्रन्थ अप्राप्य हैं। कीथ (1984) के अनुसार साङ्ख्यसूत्र में छः अध्याय और 451 सूत्र हैं[38] । तत्त्वसमाससूत्र केवल 25 सूत्रों में निबद्ध एक छोटा सा ग्रन्थ हैं।

4.1.1 नामकरण की मीमांसा

'सङ्ख्या' पद सम् उपसर्ग पूर्वक √ख्या (प्रकथने) धातु से 'अङ्' प्रत्यय के उपरान्त 'टाप्' प्रत्यय के योग से निर्मित हुआ है। जिसका अर्थ गणना करना है[39] (शास्त्री एवं शास्त्री, 2012)। पुनः 'सङ्ख्या' पद से 'तस्येदम्'[40] (शास्त्री, 2004) सूत्र द्वारा 'अण्' प्रत्यय करने पर 'साङ्ख्य' पद निष्पन्न

---

[36] महाभारत, शांति पर्व 301.109

[37] अश्वत्थः सर्ववृक्षाणां देवर्षीणां च नारदः। गन्धर्वाणां चित्ररथः सिद्धानां कपिलो मुनिः ।। (गीता - 10.26)

[38] सांख्यदर्शन का इतिहास, पृ. 45

[39] सांख्यकारिका (भूमिका)

[40] अष्टाध्यायी - 4.3.120

होता है । जिसका अर्थ है – गणना से सम्बन्धित अथवा गणना से जानने योग्य । क्योंकि साङ्ख्यदर्शन में प्रकृति से लेकर स्थूल-भूत पर्यन्त 25 तत्वों की गणना की गई है । इसीलिए यह दर्शन 'साङ्ख्य' के नाम से विख्यात हुआ । 'साङ्ख्य' शब्द के सन्दर्भ में अनेक ग्रन्थों में विभिन्न मत प्राप्त होते हैं, यथा -

1. गीता में श्री कृष्ण ने साङ्ख्य की चर्चा करते हुए कहा है कि सांख्ययोगियों की निष्ठा तो ज्ञानयोग से और योगियों की निष्ठा कर्मयोग से होती है - "ज्ञानयोगेन सांख्यानां कर्मयोगेन योगिनाम्"[41] स्वीकार किया गया है (नराले, 2003) ।
2. अमरकोश के अनुसार सङ्ख्या शब्द चर्चा तथा विचारणा के अर्थ में भी प्रयुक्त होता है[42] (श्रीमन्नालाल, 2008) ।
3. मुसलगावकर (1987) ने अपनी पुस्तक 'योगदर्शनम्' में 'सङ्ख्या' शब्द को गणनावाचक न मानकर ज्ञानार्थक स्वीकार किया है । क्योंकि यदि हम महदादि 25 तत्त्वों की सङ्ख्या की गणना के आधार पर इस दर्शन का नाम 'साङ्ख्य' निर्वाचित करें तो न्याय – वैशेषिकादि दर्शनों में भी तत्त्वों की चर्चा हुई है । अतः उनका नाम भी साङ्ख्य हो जायेगा । इसलिये साङ्ख्य शब्द के लिये यह तर्क निराधार-सा प्रतीत होता है ।

साङ्ख्य सृष्टि रचना एवं प्रकृति और पुरुष की व्याख्या पृथक्-पृथक् विवेचित करता है[43] । साङ्ख्यदर्शन की मान्यता है कि संसार की हर वास्तविक वस्तु का उद्गम पुरुष और प्रकृति के संयोग से हुआ है । पुरुष में स्वयं आत्मा का भाव है जबकि प्रकृति पदार्थ और सृजनात्मक शक्ति की जननी कहलाती है । साङ्ख्य का उद्देश्य तीनों प्रकार के दुःखों की निवृत्ति करना है । वे तीन दुःख हैं - आधिभौतिक, आधिदैविक एवं आध्यात्मिक (कीथ, 1967; शास्त्री, 2004) । साङ्ख्य दर्शन के अनुसार मुख्य रूप से दो तत्त्व नित्य हैं – पुरुष और प्रकृति । जब पुरुष का प्रकाश प्रकृति पर आक्षेपित होता है तब महदादि 23 तत्त्वों का निर्माण होता है जिससे सृष्टि की उत्पत्ति होती है ।

---

[41] लोकेऽस्मिन्द्विविधा निष्ठा पुरा प्रोक्ता मयानघ । ज्ञानयोगेन साङ्ख्यानां कर्मयोगेन योगिनाम् ॥ (गीता. 3.3)
[42] संख्या चर्चा संख्या विचारणा । (अमरकोश - 1.5.2)
[43] प्रकृतेर्महांस्ततोऽहङ्कारस्तस्माद् गणश्च षोडशकः । तस्मादपि षोडशकात् पञ्चभ्यः पञ्च भूतानि ॥ (सां.का. – 22)

साङ्ख्यदर्शन के दो प्रमुख सिद्धान्त हैं - सत्कार्यवाद[44] एवं पुरुषबहुत्व[45] (कर्णाटक, 1996; शास्त्री, 2004)। साङ्ख्यदर्शन अद्वैतवेदान्त से पूर्णरूप से भिन्न सिद्धान्तों को मानने वाला माना जाता है। सांख्याचार्यों के इस प्रकृति-कारणवाद का महान गुण यह है कि भिन्न धर्म वाले सत्, रजस् तथा तमस् गुणों के आधार पर जगत् की विषमता का किया गया समाधान अत्यन्त बुद्धिगम्य प्रतीत होता है। किसी लौकिक समस्या को ईश्वर का नियम न मानकर इन गुणों में साम्यता न होने को और जीवों के पुरुषार्थ न करने को कारण बताया गया है। अतः साङ्ख्यदर्शन की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसमें सृष्टि की उत्पत्ति ईश्वर की अपेक्षा विकासात्मक प्रक्रिया के रूप में मानी गयी है[46] (उपाध्याय, 1979) और माना गया है कि सृष्टि अनेकानेक अवस्थाओं (phases) से होकर गुजरने के बाद अपने वर्तमान स्वरूप को प्राप्त हुई है।

4.1.2 साङ्ख्य दर्शन के प्रमुख ग्रन्थ

साङ्ख्यदर्शन के प्राप्त होने वाले ग्रन्थों में व्याख्या-ग्रन्थ ही अधिक हैं। मूल ग्रन्थ के रूप में केवल तीन उपलब्ध होते हैं - पहला ग्रन्थ छः अध्यायों वाला 'साङ्ख्यसूत्र' और दूसरा सत्तर कारिकाओं वाला 'साङ्ख्यकारिका'। इन दो के अतिरिक्त एक अत्यंत लघुकाय सूत्रग्रन्थ भी है जो 'तत्त्वसमास' के नाम से प्रसिद्ध है। शेष समस्त साङ्ख्य वाङ्मय इन्हीं तीनों की टीकाएं और उपटीकाएं मात्र है। इनमें साङ्ख्य सूत्रों के उपदेष्टा परंपरा से कपिल मुनि माने जाते हैं।

साङ्ख्यसूत्र

महर्षि कपिल द्वारा रचित दो ग्रन्थों का उल्लेख मिलता है – साङ्ख्यसूत्र तथा तत्त्वसमाससूत्र। साङ्ख्यसूत्र 6 अध्यायों एवं 527 सूत्रों में निबद्ध है। इसका वर्णन सर्वदर्शनसंग्रह में न होने के कारण इसका समय 1400 ई. के पश्चात माना जाता है किन्तु माधवमन्त्री (1400 ई.) ने

---

[44] असदकरणादुपादानग्रहणात् सर्वसम्भवाभावात्।
शक्तस्य शक्यकरणात् कारणभावाच्च सत्कार्यम्॥ (सांख्यकारिका – 9)

[45] जननमरणकरणानां प्रतिनियमादयुगपत् प्रवृत्तेश्च।
पुरुषबहुत्वं सिद्धं त्रैगुण्यविपर्ययाच्चैव॥ (सांख्यकारिका – 18)

[46] भारतीय दर्शन की रूपरेखा, पृ.- 258

अपनी टीका में साङ्ख्यदर्शन के सूत्र का उल्लेख किया है[47] (शर्मा, 2001)। साङ्ख्यसूत्र पर अनेक टीकाएं तथा भाष्यग्रन्थ लिखे गये हैं, जो निम्नानुसार हैं –

1. **अनिरुद्धवृत्ति** – यह आचार्य अनिरुद्ध द्वारा रचित सबसे प्राचीन टीका मानी जाती है। इसका समय 15वीं शताब्दी उत्तरार्द्ध है (भट्टाचार्य, 1964)।
2. **साङ्ख्यवृत्तिसार** – अनिरुद्ध टीका से प्रभावित होकर महादेव सरस्वती ने इसकी रचना की है।
3. **साङ्ख्यप्रवचनभाष्य** – यह साङ्ख्यसूत्रों पर आधारित विज्ञानभिक्षु द्वारा रचित महत्त्वपूर्ण भाष्य है। इसका समय 16वीं ईसवीं माना जाता है। यद्यपि विज्ञानभिक्षु एक वेदान्ती आचार्य हैं तथा साङ्ख्य दर्शन, वेदान्त के विपरीत दर्शन माना जाता है। फिर भी इनके द्वारा लिखित यह भाष्य अत्यन्त लोकप्रिय है (श्रीवास्तव, 2011)।
4. **लघुसाङ्ख्यवृत्ति** – प्रसिद्ध वैयाकरण नागेश भट्ट ने साङ्ख्यसूत्रों के प्रवचनभाष्य के आधार पर एक लघुवृत्ति का प्रणयन किया जिसे लघुसाङ्ख्यवृत्ति के नाम से जाना जाता है।

तत्त्वसमाससूत्र

कपिल द्वारा रचित द्वितीय ग्रन्थ तत्त्वसमाससूत्र 24 सूत्रों में निबद्ध माना जाता है। तत्वसमाससूत्र के प्रायः 24 सूत्र तत्वपाद एवं प्रकीर्णपाद नामक कुल दो पादों में विभक्त हैं। यह साङ्ख्यसूत्रों को केन्द्र बनाकर लिखा गया है। इस पर पञ्चशिख ने भाष्य लिखा है। जिसका समर्थन विज्ञानभिक्षु ने भी अपनी ब्रह्मसूत्र की ऋजुव्याख्या में किया है[48] (त्रिपाठी, 2009)। तत्वसमास की प्राचीनता को सिद्ध करते हुये मैक्समूलर ने इसका समय 7वीं शती से पूर्व माना है क्योंकि 'भगवदज्जुकम्' नाटक महेन्द्रविक्रम के समय 700 ई. में निर्मित हुआ था। इस नाटक में

---

[47] "सत्त्वरजस्तमोगुणानां साम्यावस्था मूल प्रकृतिः"। (सां. सू.-191) (भारतीय दर्शन की चिन्तनधारा, पृ.- 228)

[48] त्रिविधं मोक्षं क्रमेणाह तत्त्वसमासाख्यभाष्ये पञ्चशिखाचार्यः - " आद्यास्तु मोक्षो ज्ञानेन द्वितीयो रागसंक्षयात्। कृच्छ्रक्षयात्तृतीयस्तु व्याख्यातं मोक्षलक्षणम्॥"

तत्वसमाससूत्र के 8 सूत्र प्राप्त होते हैं[49] (शास्त्री, 1986)। तत्वसमास पर कुछ टीकाएं प्राप्त होती हैं, जो साङ्ख्यसंग्रह में प्रकाशित हुई हैं[50]। जिसका विवरण इस प्रकार है –

1. **सर्वोपकारिणी टीका –** इसके अन्तर्गत तत्त्वसमास के 22 सूत्रों पर टीका लिखी गयी है। यह एक पाण्डुलिपि रूप में प्राप्त होती है तथा ऑनलाइन भी इसका एक संस्करण उपलब्ध होता है[51]। इस विषय में अधिक विवरण अप्राप्य है।
2. **साङ्ख्यतत्त्वविवेचन –** यह शिवानन्दकृत माना जाता है।
3. **साङ्ख्यसूत्रविवरण –** इसके विषय में कोई भी तथ्य प्राप्य नहीं हैं।
4. **साङ्ख्यक्रमदीपिका –** इसे सांख्यालङ्कार एवं साङ्ख्यसूत्रप्रवेशिका भी कहते हैं।
5. **तत्त्वयाथार्थ्यदीपन –** यह टीका 16वीं शताब्दी में विज्ञानभिक्षु के शिष्य भावगणेश दीक्षित द्वारा रचित है।
6. **अनामव्याख्या –** क्षेमेन्द्र दीक्षित द्वारा रचित यह एक अन्वयात्मक टीका है किन्तु इसका कोई नाम प्राप्त नहीं होता है।

साङ्ख्यकारिका

प्राप्त व्याख्या-ग्रन्थों में प्रायः 'साङ्ख्यकारिका' पर ही अधिकांश व्याख्याएं और अनुव्याख्याएं प्राप्त होती हैं। इस प्रकार साङ्ख्यसूत्रों पर आधारित शास्त्रीय ग्रंथों में ईश्वरकृष्ण विरचित साङ्ख्यकारिका प्राचीनतम एवं सर्वोपरि है। ईश्वरकृष्ण के विषय में कोई ठोस प्रमाण उपलब्ध नहीं होता है (शास्त्री, 2004; Biswas, 2007)। इनके द्वारा साङ्ख्यकारिका की अन्तिम 70 से 72 कारिकाओं में केवल अपनी गुरु परम्परा का उल्लेख किया गया है, स्वयं के जन्म तथा परिवार की कोई चर्चा नहीं है। इनका समय लगभग ई. पू. प्रथम शताब्दी माना जाता है। साङ्ख्यकारिका में आर्या छन्द में निबद्ध 72 श्लोक हैं। बाद में जोडे जाने के कारण अन्तिम 3 कारिकाओं को प्रक्षिप्त माना जाता है। साङ्ख्यकारिका की रचना के उपरान्त यह इतनी प्रामाणिक

[49] भगवदज्जुकम्। पृ. 1-15

[50] भारतीय दर्शन की चिन्तनधारा, पृ. 229

[51] https://sanskritdocuments.org/doc_z_misc_major_works/sarvopakAriNI.html

तथा लोकप्रिय हुई कि इस पर अनेक टीकाओं एवं व्याख्याओं की परम्परा प्रारम्भ हुई । जिनका विवरण निम्नलिखित है -

1. **माठरवृत्ति –** यह सबसे प्राचीन वृत्ति मानी जाती है । इसे माढरवृत्ति भी कहा जाता है । जैनग्रंथ 'अनियोगद्वार' (200 ई.), हरिभद्रसूरिकृत 'षड्दर्शनसमुच्चय' की गुणरत्नकृत टीका में माठरवृत्ति का उल्लेख प्राप्त होता है । इस वृत्ति के रचयिता आचार्य माठर सम्राट् कनिष्क के समसामयिक माने जाते थे इसलिये इनका समय प्रथम शतक स्वीकृत है[52] (शास्त्री, 1950) ।
2. **गौडपादभाष्य –** आचार्य गौडपाद ने साङ्ख्यकारिका पर लगभग सप्तम शताब्दी में 'गौडपाद' नामक भाष्य की रचना की । इन्होनें 69 कारिकाओं पर ही भाष्य लिखा है । यह निश्चित नहीं हो पाया है कि अद्वैतवेदान्त की माडूक्यकारिका के रचियता गौडपाद और साङ्ख्यकारिका के भाष्यकार आचार्य गौडपाद दोनों एक ही व्यक्ति हैं या भिन्न हैं । गौडपाद का समय प्रायः ईसा की षष्ठ शताब्दी माना जाता है । कुछ विद्वान् ईसा की सप्तम शताब्दी मानते हैं । माठरवृत्ति और गौडपाद-भाष्य में बहुत से अंशों में साम्यता दिखाई देती है । गौडपादभाष्य संक्षिप्त होते हुए भी गम्भीर है ।
3. **जयमङ्गला –** यह लगभग 14$^{वीं}$ शतक में आचार्य शङ्कर द्वारा विरचित मानी जाती है । इनके अस्तित्व के विषय में भी विद्वान ऐकमत्य नहीं हैं । यह निश्चित करना कठिन है कि वे आदि शङ्कराचार्य थे या बौद्ध भिक्षु थे (जोशी, 1965) ।
4. **युक्तिदीपिका –** साङ्ख्य के इतिहास के विषय में यह पर्याप्त ज्ञाननिबद्ध टीका मानी जाती है । इसका प्रकाशन 'कलकत्ता संस्कृत सीरिज' (सं. 23) एवं मोतीलाल बनारसी दास से हुआ है । युक्तिदीपिका किसके द्वारा रचित है, इस विषय में कोई प्रमाण प्राप्त नहीं होते हैं । तथा इसका रचनाकाल भी निश्चित नहीं किया गया है । इसमें प्राचीन सांख्याचार्यों के विभिन्न सिद्धान्तों का उल्लेख किया गया है । फलतः इस टीका से साङ्ख्य-सिद्धान्तों की

[52] सांख्य दर्शन का इतिहास, पृ. 408

पर्याप्त जानकारी प्राप्त होती है । यह एक प्राचीन व्याख्या है । जो अन्य व्याख्याओं की तुलना में अधिक विस्तृत है। इसमें 11 आह्निक (अध्याय) हैं (कर्णाटक, 1996)।

5. **साङ्ख्यतत्त्वकौमुदी –** वाचस्पति मिश्र द्वारा रचित यह टीका स्वयं में एक उच्च स्थान को ग्रहण करती है । विद्वता के कारण तथा अनेक ग्रन्थों पर टीका लिखने से इन्हें "द्वादशदर्शनकाननपञ्चानन" भी कहा जाता है (गौड़, 2019) । न्यायपूर्ण शैली में लिखे जाने के कारण साङ्ख्यतत्त्वकौमुदी पर अनेक प्रटीकाएं लिखीं गईं जिनमें से कुछ प्रमुख हैं – स्वामी बालराम उदसीन की विद्धत्तोषिणी, वंशीधर मिश्र की साङ्ख्यतत्त्वदिवाकर, कृष्णवल्लभाचार्य की किरणावली, शिवनारायण शास्त्री की सुषमा आदि (मिश्र, 1956)।
6. **चन्द्रिका –** नारायणतीर्थ द्वारा लगभग 17$^{वीं}$ ई. में इस लघुटीका का निर्माण माना जाता है। यह लघु होते हुये भी महत्त्वपूर्ण टीका है।
7. **साङ्ख्यतरुवसन्त –** इसके निर्माणकर्त्ता मुडुम्ब नरसिंह स्वामी हैं। ये साङ्ख्य तथा वेदान्त में भेद को स्वीकार नहीं करते हैं। यह टीका प्रकाशित रूप में प्राप्त नहीं होती है।

4.1.3 साङ्ख्य दर्शन में गुरु–शिष्य परम्परा

1. कपिल – उपनिषदादि शास्त्रों में उपलब्ध साङ्ख्यसिद्धान्त को एकत्रित कर एक सूत्रनिबद्ध ग्रन्थ की रचना कर कपिल ने साङ्ख्यसूत्र का सर्वप्रथम प्रणयन किया। इनके द्वारा रचित दो ग्रन्थ माने जाते हैं – साङ्ख्यसूत्र तथा तत्त्वसमास। ये ऐतिहासिक पुरुष थे (शर्मा, 1997)।

2. आसुरि – आसुरि कपिल के प्रथम साक्षात् शिष्य माने जाते हैं। इनके द्वारा लिखित कोई ग्रन्थ प्राप्त नहीं होता है। इनका काल 500 ईसा पूर्व है (श्रीवस्तव, 2011)।

3. पञ्चशिख – आसुरि के शिष्य पञ्चशिख थे । उन्हें पञ्चरात्र और भागवत सम्प्रदाय का भली प्रकार ज्ञान था । चीनी ग्रन्थों के अनुसार माना जाता है कि इन्होंने षष्टितन्त्र की रचना की थी किन्तु दुर्भाग्यवश यह ग्रन्थ लिखित रूप में प्राप्त नहीं होता है (शर्मा, 2001) ।

4. वार्षगण्य – कुछ विद्वान् इन्हें षष्टितन्त्र का प्रणेता मानते हैं । ये ईश्वरकृष्ण के गुरु थे । इनका समय ईसा प्रथम शताब्दी के अन्त से पूर्व ही रहा होगा, ऐसा अनेक विद्वान् मानते हैं (शर्मा, 2001) ।

5. ईश्वरकृष्ण – इनके द्वारा रचित साङ्ख्यकारिका साङ्ख्यदर्शन का एक अद्भुत एवं सर्वश्रेष्ठ प्रकरण ग्रन्थ माना जाता है । ईश्वरकृष्ण के समय के विषय में मतैक्यता नहीं है । डॉ. एस. एन. दास गुप्ता (1922) इनका समय 200 ई. मानते हैं किन्तु गार्वे और वेल्वल्कर महोदय प्रथम शतक स्वीकार करते हैं (शास्त्री, 2004) ।

6. विन्ध्यवासी – इनका कोई ग्रन्थ प्राप्त नहीं होता है । इनका गत नाम रुद्रिल था । ये वार्षगण्य के अनुयायी थे किन्तु ईश्वरकृष्ण के परवर्त्ती माने जाते हैं क्योंकि अनेक मतभेदों के बाद इनका समय 5$^{वीं}$ शताब्दी का मध्यकाल निश्चित हुआ है (मिश्र, 2008) ।

7. विज्ञानभिक्षु – ऐसा माना जा सकता है कि इन्हीं के साथ गुरुशिष्य परम्परा समाप्त होती है । यह अन्तिम आचार्य (16$^{वीं}$ शताब्दी के प्रथमार्ध में काशी में ही विद्यमान थे) स्वतन्त्र विचारधारा को अपनाने वाले सांख्याचार्य थे । इन्होंने तीन दर्शनों पर अपना भाष्य लिखकर विद्वता को दर्शाया है । साङ्ख्यसूत्र पर साङ्ख्यप्रवचनभाष्य, योगसूत्र के व्यासभाष्य पर योगवार्तिक और ब्रह्मसूत्र पर विज्ञानामृतभाष्य । इन्हीं को साङ्ख्ययोग को पुनर्जीवित करने का श्रेय जाता है (उपाध्याय, 1984) ।

4.2 योगदर्शन का सामान्य परिचय

भारतीय षड्दर्शन में योग दर्शन ने अपना विशिष्ट स्थान प्राप्त किया हैं। अमरकोष में योग शब्द का लक्षण सर्वप्रथम इस प्रकार किया है – "योगः सन्नहनोपायध्यानसङ्गतियुक्तिषु – तात्पर्यतः"[53] सन्नहन, उपाय, ध्यान, सङ्गति (संयोग) से युक्त, आदि अनेक अर्थों में मिलता है (श्रीमन्नालाल, 2008)। व्याकरण के अनुसार 'योग' शब्द युजिर् योगे[54] (यह संयोग अर्थ का बोधक है), युज संयमने[55] (जोकि इन्द्रियों को संयमित करने के अर्थ में है) तथा युज समाधौ[56] (समाधि अर्थ का वाचक) से निर्मित माना जा सकता है (सिन्हा, 2006)। पतञ्जलि ने अपने योगसूत्र में और योगसूत्र पर लिखे भाष्यग्रन्थों में इन तीनों अर्थों में से युजँ समाधौ से निर्मित समाधि अर्थ बोधक योग शब्द को स्वीकार किया है।[57] क्योंकि पातञ्जल योगसूत्र के योग शब्द में 'संयोग' अर्थ अन्वित नहीं हो पाता है। उनके तात्पर्यानुसार चित्तवृत्तिनिरोध ही योग शब्द का अर्थ है। अर्थात् चित्त की वृत्तियों को चंचल होने से रोकना (चित्तवृत्तिनिरोधः) ही योग है। अर्थात् मन को इतस्ततः भटकने न देना, मात्र एक ही वस्तु में स्थिर रखना ही योग है। योग दर्शन का मूल ग्रन्थ योगसूत्र है। यह षड्दर्शनों में से एक उत्कृष्ट दर्शन एवं योगशास्त्र का एक ग्रन्थ है। पतञ्जलि ने इन योगसूत्रों की रचना 400 ई. पूर्व की है। इन्होंने पूर्व में विद्यमान योग से सम्बन्धित विषय सामग्री का भी उपयोग किया है। चित्त को एकाग्र कर ईश्वर में तल्लीन करने का विधान योगसूत्रों में ही है। पातञ्जलयोग सूत्रों पर प्राचीनतम भाष्य महर्षि वेदव्यास का व्यासभाष्य, उस पर वाचस्पतिमिश्र का योगवार्त्तिक, विज्ञानभिक्षु द्वारा रचित योगसारसंग्रह एवं भोजराज की एक भोजवृत्ति प्रामाणिक ग्रन्थों में सम्मिलित हैं। पृष्ठतः योगसूत्र में तन्त्र के भी विषय सम्मिलित होते गये। जिसके

---

[53] योगः सन्नहनोपायध्यानसङ्गतियुक्तिषु। (अमरकोश - 3.3.22)

[54] रुधादिगण।

[55] चुरादिगण।

[56] दिवादिगण।

[57] योगः समाधिः। व्यासभाष्य, पृ.-2

युज् समाधावित्यनुशासनतः प्रसिद्धो योगः समाधिः, योगवार्त्तिक, पृ. - 6

युज् समाधौ इत्यस्माद्व्युत्पन्नः न तु युजिर् योगे...., तत्ववैशारदी, पृ. – 3

युज् समाधौ। अनुशिष्यते व्याख्याते, भोजवृत्ति, पृ.-11

युज् समाधौ। इति धातोर्योगः समाधिः। योगसूत्र, पृ. - 3

फलस्वरूप 'कायव्यूह' नामक विषय का अतिविस्तार हुआ । कायव्यूह में शरीर के अन्तः विभिन्न प्रकार के चक्र कल्पित हुए । क्रियाओं के अतिविस्तार के साथ-साथ योग की एक अन्य शाखा हठयोग का निर्गम हुआ । हठयोग में नेति, धौति, वस्ति आदि षट्कर्म तथा नाड़ीशोधन इत्यादि वर्णित हुए । हठयोग के प्रमुख ग्रन्थों में हठयोगप्रदीपिका, शिवसंहिता, घेरण्डसंहिता आदि प्रमुख हैं । आचार्य मत्स्येंद्रनाथ (मछंदरनाथ) एवं उनके शिष्य गोरखनाथ हठयोग के सर्वोत्कृष्ट आचार्यों में कनिष्ठकाधिष्ठित हैं । नीति विषयक उपदेशात्मक काव्य की कोटि योगशास्त्र गणित है । इसे एक धार्मिक ग्रन्थ भी माना जाता है लेकिन इसका धर्म किसी देवता पर आधारित नहीं है । इसे शारीरिक योग मुद्राओं का शास्त्र भी नहीं कह सकते हैं । योगशास्त्र आत्मा एवं परमात्मा के एकत्व विषयक धारणाओं को प्रस्तुत करता है एवं उन्हें एकत्व करने के नियमों व उपायों के सन्दर्भ में मार्ग प्रशस्त करता है । इसे अष्टाङ्गयोग की सञ्ज्ञा से भी सञ्ज्ञित किया गया है क्योंकि इसमें अष्ट अर्थात् आठ अङ्गों की व्याख्या है । ये आठ अङ्ग इस प्रकार हैं –

- यम
- नियम
- आसन
- प्राणायाम
- प्रत्याहार
- धारणा
- ध्यान
- समाधि

विभिन्न उत्तरवर्ती धार्मिकों ने इन पर अनेक टीकाएं लिखीं तथा इस शास्त्र के विकास में अपना अमूल्य योगदान दिया । विशेषतः जैनधर्म के हेमचन्द्राचार्य ने अपभ्रंश से उद्भूत हिंदी में इसको वर्णित करते हुए एक बृहत् सम्प्रदाय की नींव रखी । उनके सम्प्रदाय के अनेक मूलतत्व पातञ्जलयोगसूत्र से अनुगृहीत हैं । ओशो, स्वामी रामदेव, महेश योगी आदि विभिन्न धार्मिक गुरुओं ने योगसूत्र के अंगों को स्वशिक्षा का प्रमुख अङ्ग बनाया है ।

4.2.1 योगदर्शन के प्रमुख ग्रन्थ

योगसूत्र पर विभिन्न भाष्यग्रन्थ तथा टीकाओं की रचना हुई, जिनमें से कुछ मुख्य हैं-

1. व्यासभाष्य: व्यास ने अत्यन्त क्लिष्ट भाषा में अपने भाष्य का निर्माण किया जो व्यास भाष्य के नाम से विख्यात है। इसका रचना काल 200-400 ईसा पूर्व का माना जाता है। यह योगसूत्र का सबसे पुराना भाष्य है।

2. तत्त्ववैशारदी: वाचस्पति मिश्र द्वारा योगसूत्र के व्यास भाष्य को आधार बनाकर लिखी गयी प्रामाणिक टीका है। वाचस्पति मिश्र ने योगसूत्र एवं व्यास भाष्य दोनों पर ही अपनी व्याख्या प्रस्तुत की है। तत्त्ववैशारदी का रचना काल 841 ई. माना जाता है (जोशी, 1965)।

3. योगवार्तिक: व्यास भाष्य को समझने हेतु 16$^{वीं}$ शताब्दी के पूर्वाद्ध में विज्ञानभिक्षु द्वारा इस महत्वपूर्ण व्याख्या ग्रंथ का प्रणयन हुआ। इन्होंने एक लघुकाय ग्रन्थ 'योगसारसंग्रह' की रचना की जिसमें केवलमात्र योग के सिद्धान्त का सार प्रस्तुत किया गया है (त्रिपाठी, 2000)।

4. भोजवृत्ति: भोजराज ने अत्यन्त सरल शैली में योग सूत्रों पर भोजवृत्ति नामक ग्रन्थ का निर्माण किया। इसका अपर नाम 'राजमार्तण्डा वृत्ति' हैं। भोज के राज्य का समय 1075-1110 विक्रम संवत् माना जाता है। परन्तु कुछ इतिहासकार इसे 16$^{वीं}$ सदी का ग्रंथ मानते हैं (शर्मा, 2001)।

5. भास्वतीः आधुनिक आचार्य हरिहरानन्द आरण्यक ने भाष्य पर अपनी टीका की रचना की जिसका समय लगभग 200 ई. माना जाता है। हरिहरानंद को कुछ विद्वान बीसवीं शताब्दी के आरंभिक बंगाल के सबसे महत्वपूर्ण विचारकों में से एक भी मानते हैं (व्हाइट, 2011) । हरिहरानंद एक अमीर बंगाली परिवार से सम्बन्ध रखते थे और उनकी

विद्वत्तापूर्ण शिक्षा के बाद उनके शुरुआती जीवन में सत्य की तलाश में धन, पद और आराम का त्याग हुआ।

6. मणिप्रभा: योगसूत्र पर रचित वृत्ति ग्रन्थों में रामानन्दयति की मणिप्रभा संस्कृत टीका अत्यन्त लोकप्रिय है। इसमें अत्यन्त प्रवाहमयी भाषा में योग के सिद्धान्तों की मूलभूत व्याख्या प्रस्तुत की गई है। यह टीका व्यासभाष्यानुसारी है। प्रारम्भ में मंगलाचरण में पतञ्जलि के साथ व्यासमुनि एवं व्यासभाष्य को सादर स्मरण किया है (कर्णाटक, 1974) –

पतञ्जलिं सूत्रकृतं प्रणम्य व्यासमुनिं भाष्यकृतं व भक्त्या।
भाष्यनुगां योगमणिप्रभाऽऽख्यां वृत्तिं विधास्यामि यथामतीड्याम् ॥

7. योगसिद्धान्तचन्द्रिका: श्री नारायणतीर्थ द्वारा योगसूत्र पर लिखित योगसिद्धान्तचन्द्रिका एक मौलिक रचना है। इसमें स्वमत की स्थापना के लिये युक्तियों को शास्त्रान्तरों के उद्धरणों द्वारा परिपुष्ट किया गया है। इसमें पूर्ववर्ती योग के आचार्यों के मतों का अन्धानुसरण नहीं किया गया है। योगसिद्धान्तचन्द्रिका में एक तरफ भक्तियोग की पराकाष्ठा दृष्टिगोचर होती है। वहीं दूसरी ओर हठयोग का भी चरमोत्कर्ष है। इसके अतिरिक्त नारायणतीर्थ ने बहुत से ग्रन्थ लिखे जिनमें से चन्द्रिका (साङ्ख्यकारिका पर लिखित टीका), सूत्रार्थबोधिनी (योगसूत्र की वृत्ति) प्रमुख हैं (वेदालंकार, 2004)।

8. योगसूत्रभाष्यविवरण: योगसूत्र के व्यासभाष्य पर आदि शंकराचार्य ने विवरण नामक एक उपभाष्य लिखा जो पूर्व में अज्ञात था किन्तु 1952 में इस अनमोल भाष्य की पाण्डुलिपि को एकत्रित कर मद्रास सरकार ओरिएण्टल प्रणाली प्रकाश में लेकर आई। जो मूलतः संस्कृत भाषा में था। इसका अंग्रेजी अनुवाद टी.एस. रुकमणि ने दो भाग में किया है (वेदालंकार, 2004)।

9. भावागणेश वृत्ति (प्रदीपवृत्ति): भावागणेश द्वारा रचित यह वृत्ति उनके नाम से ही विख्यात है किन्तु इसे प्रदीप वृत्ति भी कहा जाता है। इसका काल लगभग 1600-1700 ई. माना जाता है।

10. योगप्रदीपिका: यह वृत्ति मूलरूप से योगसूत्र पर बलदेवमिश्र द्वारा रचित है और इसका समय लगभग 1900 ई. स्वीकार किया जाता है। इसके अतिरिक्त जानकारी प्राप्त नहीं होती है।

11. चन्द्रिका: योगसूत्रों पर आधारित इस वृत्ति को योगचन्द्रिका, पदचन्द्रिका आदि नाम से भी सम्बोधित किया जाता है। इसका काल लगभग 1900 ई. निश्चित किया गया है। इसके कर्ता के रूप में अनन्तदेव को माना जाता है (जोशी, 1965)।

उपरोक्त ग्रन्थों के अतिरिक्त योगदर्शन पर अन्य टीकाओं की रचना की गई जो निम्न प्रकार हैं –

सदाशिवेन्द्र सरस्वती की योगसुधाकर (1800 ई.), नागोजी भट्ट की लघ्वी तथा बृहती वृत्तियाँ (1800-1900 ई.), नारायणतीर्थ की सूत्रार्थबोधिनी (1800ई.) आदि प्रसिद्ध हैं (त्रिपाठी, 2000)।

पतञ्जलि द्वारा रचित योगसूत्र की प्रसिद्धि का अनुमान इसी बात से लगाया जा सकता है कि इसका अंग्रेजी सहित विश्व की कई भाषाओं में अनुवाद हो चुका है। अभी हाल में ही इसका हिब्रू भाषा में अनुवाद हुआ है (जोशी, 1965; वेदालंकार, 2004)।

द्वितीय अध्याय

पारिभाषिक शब्द, साङ्ख्य-योग दर्शन के पारिभाषिक शब्दों का परिचय एवं सर्वेक्षण
Technical Term, Introduction of Technical Terms of Sāṅkhya-Yoga Philosophy and Survey

1. पारिभाषिक शब्द (Technical Term)

सृष्टि के प्रारम्भ से ही मनुष्य विचारवान् रहा है । वह सदैव सत्य के अन्वेषण में व्यस्त रहता है । हम कौन हैं ? कहाँ से आए हैं ? जीवन का लक्ष्य क्या है ? आदि इस प्रकार के प्रश्न मष्तिष्क में विद्यमान रहे हैं। कालान्तर से इन विचारों की विशाल परम्परा दर्शन रूप में प्रकट हुई। जिसमें प्रत्येक दर्शन के सिद्धान्त तत्त्व भिन्न हैं किन्तु इन सभी भारतीय दर्शनों का एक ही मूल उद्देश्य रहा है मनुष्य जीवन का उद्धार करना तथा दुःखों से निवृत्त करना (सिन्हा, 2012) । सभी दर्शनों के मूलग्रन्थ सूत्रात्मक शैली में निबद्ध हैं । इन सूत्रात्मक मूलग्रन्थों के अर्थों को स्पष्ट करने की दृष्टि से अनेक प्रकरण ग्रन्थों का निर्माण हुआ एवं इनमें अनेक क्लिष्ट शब्दों का समावेश हुआ । इन शब्दों का सामान्य भाषा में कुछ और अर्थ एवं विभिन्न दर्शनों में एक विशिष्ट अवधारणा (Concept) को प्रकट करते हैं । इन अवधारणाओं को समझने के लिए परिभाषाओं की आवश्यकता होती है । अतः इन शब्दों को पारिभाषिक शब्दों की श्रेणी में रखा गया है (शुक्ल, 1993) । अब इन शब्दों के ज्ञान के बिना दर्शनों की मूलभूत अवधारणाओं को समझना कठिन होता है । अतः अनेक विद्वानों ने लगभग सभी भारतीय दर्शनों के लिए परिभाषाकोश एवं शब्दकोशों का निर्माण किया । अर्थ की दृष्टि से विचार करें तो किसी भी भाषा की शब्दावली के दो भेद किए जा सकते हैं - सामान्य शब्दावली और पारिभाषिक शब्दावली । जिन शब्दों का कोई विशेष गूढ अर्थ नहीं होता है और न ही वे किसी विशेष क्षेत्र में प्रयुक्त होते हैं ऐसे शब्द सामान्य शब्द कहे जाते हैं । ज्ञान की किसी विशेष विधा (कार्य क्षेत्र) में प्रयोग किए जाने वाले शब्दों की उनकी परिभाषा सहित सूची पारिभाषिक शब्दावली (Glossary) या पारिभाषाकोश कहलाती है (कुमार एवं अन्य, 2014) । महान् भाषाविद्, प्रख्यात कोशकार विद्वान् आचार्य रघुवीर (2009) ने सामान्य एवं पारिभाषिक

शब्दों के मध्य अन्तर स्पष्ट करते हुए कहा है कि "जिसकी सीमाएं बांध दी गई हों वह पारिभाषिक शब्द है तथा जिन्हें सीमाओं में नहीं बांधा जा सकता, वे साधारण शब्द होते हैं" । हिन्दी के कोशकार, भाषावैज्ञानिक एवं भाषाचिन्तक डॉ. भोलानाथ तिवारी (1998) ने 'अनुवाद' के सम्पादकीय में पारिभाषिक शब्द को और स्पष्ट करते हुए कहा है कि "पारिभाषिक शब्द सामान्य व्यवहार की भाषा के शब्द न होकर भौतिकी, रसायन, प्राणिविज्ञान, दर्शन, गणित, इंजीनियरी, विधि, वाणिज्य, अर्थशास्त्र, मनोविज्ञान, भूगोल आदि ज्ञान-विज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों के विशिष्ट शब्द होते हैं और जिनकी अर्थ सीमा सुनिश्चित और परिभाषित होती है । क्षेत्र विशेष में इन शब्दों का विशिष्ट अर्थ होता है" । अंग्रेजी में पारिभाषिक शब्द को टेक्निकल टर्म (Technical Term) कहते हैं जिसकी उत्पत्ति ग्रीक भाषा के 'टेक्निक्स' (Technics) शब्द से स्वीकार की जाती है । इसका अर्थ विशिष्ट कला है । जटिल विचारों की अभिव्यक्ति को सुचारु रूप से समझने हेतु पारिभाषिक शब्दों का प्रयोग किया जाता है ।

1.1 पारिभाषिक शब्दावली

पारिभाषिक शब्द ही नहीं अपितु साधारण शब्द के बिना संसार का व्यावहारिक जीवन सुचारू रूप से नहीं चल सकता । व्याकरण के अनुसार शब्द को ब्रह्म भी कहा गया है । शब्द की महत्ता को बताते हुए पाश्चात्य विद्वान् Heinrich Hein (हेनरिच हेन) (1948) ने कहा है कि – "Words have created the world, The world is the signature of the word"[1]

पारिभाषिक शब्दावली 'ग्लॉसरी' (Glossary) का प्रतिशब्द है । मूलरूप से इसकी उत्पत्ति 'ग्लॉस' शब्द से मानी जाती है जो ग्रीक भाषा के 'ग्लोसा' (Glossa) शब्द से बना है जिसका प्रारंभिक अर्थ 'वाणी' था । किंतु बाद में अर्थपरिवर्तन के कारण इसका प्रयोग पारिभाषिक, सामान्य, क्षेत्रीय, प्राचीन, अप्रचलित आदि शब्दों के लिए प्रचलित हो गया । अतः इस प्रकार के शब्दों का संग्रह ही 'ग्लॉसरी' या 'परिभाषा कोश' कहलाता है । (Velardi and all, 2008; Fujii and Ishikawa, 2000)

[1] The poetry and prose of Heinrich Hein.

1.2 पारिभाषिक शब्दावली का विकास

पारिभाषिक शब्दावली का प्रचलन प्राचीन समय में भी विद्यमान था । दर्शन, ज्योतिष, गणित, आयुर्वेद आदि अन्य विषयों पर भी प्रचुर मात्रा में पारिभाषिक शब्दावली उपलब्ध थी । इन पारिभाषिक शब्दों का मानक भाषा द्वारा अर्थनिर्धारण करने हेतु एवं भाषा के वास्तविक विकास कार्य करने के लिए कुछ संस्थानों ने अहम कदम उठाए । जिनमें से प्रथम 'नागरी प्रचारिणी सभा' (काशी) है । जिसकी स्थापना 16 जुलाई, 1893 ई. में श्यामसुन्दर दास जी द्वारा भारत में हिन्दी भाषा साहित्य एवं देवनागरी लिपि का प्रचार-प्रसार करने के उद्देश्य से हुई थी[2] ।

नागरी प्रचारिणी सभा के तत्त्वावधान में 1 मई, 1910 ई. में 'हिन्दी साहित्य सम्मेलन' (प्रयाग), की स्थापना हुई । इस सभा के सभापति के रूप में महात्मा गांधी दो बार नियुक्त हुए थे । गांधी जी और इस संस्था के प्रयत्नों के कारण अहिन्दी भाषी प्रदेशों में भी हिन्दी भाषा को विस्तारित किया गया। इसका प्रमुख केन्द्र प्रयाग (इलाहाबाद) में स्थित है जिसके अंतर्गत पुस्तकालय, छापाखाना, संग्रहालय एवं प्रशासनिक भवन विद्यमान हैं । 'बंगीय साहित्य परिषद्' (Bangiya Sahitya Parishad) यह बंगाल की सुप्रसिद्ध एक संस्था है जिसमें बांग्ला भाषा से सम्बन्धित अप्राप्त ग्रंथों, शब्दकोषों को प्रकाशित करना मुख्य उद्देश्य था । इसकी स्थापना 23 जुलाई, 1893 में 'बेंगाल एकेडेमि ऑफ लिटरेचर' (Bengal Academy of Literature) के नाम से हुई । बाद में इसका नाम बंगीय साहित्य परिषद् कर दिया[3] । उस्मानिया विश्वविद्यालय (हैदराबाद) भारत के प्राचीन विश्वविद्यालयों में से सातवां प्रमुख विश्वविद्यालय है । हिंदुस्तानी कल्चर सोसाइटी, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय (हरिद्वार) आदि के माध्यम से पारिभाषिक शब्दों पर कार्य संभव हो पाया था । नागरी प्रचारिणी सभा ने सन् 1898-1901 ई. के मध्य 'हिन्दी साइंटिफिक ग्लॉसरी' (Hindi Scientific Glossary) नाम का एक पारिभाषिक कोश का निर्माण किया था । इन संस्थाओं के अतिरिक्त शब्दावली पर निजी रूप से कुछ व्यक्तियों ने भी सराहनीय कार्य करके अपना योगदान प्रदान किया है । इनमें से डॉ. सत्यप्रकाश, डॉ. रघुवीर एवं सुखसंपतिराय प्रमुख थे । डॉ. सत्यप्रकाश

[2] https://samalochan.blogspot.com/2020/03/blog-post_25.html
[3] https://web.archive.org/web/20070929061927/http://tempweb34.nic.in/xnagari/html/parichay.php

(विज्ञान परिषद्, इलाहाबाद) एक मासिक पत्रिका के सम्पादक थे । यह पत्रिका वैज्ञानिक विषयों के पत्रों को हिन्दी भाषा में प्रकाशित करती है । डॉ. रघुवीर महान् भाषाविद्, प्रख्यात विद्वान्, राजनीतिक नेता तथा महान् कोशकार, शब्दशास्त्री तथा भारतीय संस्कृति के उन्नायक थे । सुखसंपतिराय भंडारी (अजमेर) ने सन् 1940 ई. में 'ट्वेंटिएथ सेंच्युरी इंग्लिश-हिन्दी डिक्शनरी' (20th Century English-Hindi Dictionary) को प्रकाशित किया और सन् 1951 ई. में स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद डॉ. रघुवीर ने 'अ कोम्प्रेहेंसिव इंग्लिश-हिन्दी डिक्शनरी' (A Comprehensive English-Hindi Dictionary) को जनता के समक्ष प्रकाशित किया (Raghuvira, 2009) । इनका मानना था कि संस्कृत शब्द निर्माण की अद्भुत क्षमता से युक्त है । यदि इसके एक भाग का भी सही प्रकार से उपयोग किया जाए तो लाखों शब्दों का निर्माण किया जा सकता है । जो हिन्दी की प्रवृत्ति के अनुकूल हो सके ।

1.3 पारिभाषिक शब्दावली का इतिहास

संस्कृत में अति प्राचीन काल से पारिभाषिक शब्दों के निर्माण और उपयोग का प्रचलन रहा है। जिस प्रकार स्वभाषा में पठन–पाठन से छात्रों में मौलिकता आती है, रटने की प्रवृत्ति पर अंकुश लगता है उसी प्रकार स्वभाषा की शब्दावली का ज्ञान होने से भी विषय का गहन अध्ययन करने में सहायता मिलती है । अगर शब्दावली के इतिहास की बात करें तो ऐसा माना जाता है कि यूरोप में भी शब्दावलियाँ प्रारंभ में एकभाषिक थीं किन्तु बाद में बहुभाषिक शब्दावलियों की परम्परा का प्रचलन प्रारम्भ हो गया । यूरोप की प्राचीनतम ज्ञात द्विभाषिक शब्दावली लैटिनग्रीक की है, इसका समय लगभग छठी ई. है । तीसरी सदी ई. पू. में प्राप्त 'एनसाइक्लोपीडिया ब्रिटैनिका' (Encyclopaedia Britannica) जिसका हिन्दी अर्थ 'ब्रितानी विश्वकोश' है तथा फिलेटस (Philetas) से शब्दावली की परम्परा का आरम्भ हुआ था[4] । इनके द्वारा 'अतक्ता' (Atakta) नामक शब्दावली का संग्रहण किया गया था । लेकिन भारत में सर्वप्रथम प्राचीनतम शब्दावली के रूप में जो ग्रंथ प्राप्त होता है वह निघण्टु है । इसके अन्तर्गत उन वैदिक शब्दों का संग्रह किया गया था जो उस समय उभयार्थक एवं अत्यन्त कठिन थे । इसके रचयिता आचार्य यास्क थे जिनका समय 8वीं

[4] https://www.britannica.com/topic/Encyclopaedia-Britannica-English-language-reference-work.

सदी ई. पू. स्वीकृत है । आशय यह है कि पश्चिमी विद्वान् फिलटस द्वारा रचित जिस शब्दावली (Glossary) को सबसे प्राचीनतम शब्दावली की श्रेणी में मानते हैं जबकि वह भारतीय वैदिक शब्दावली निघण्टु से कम से कम 4-5 सौ वर्ष पश्चात् की रचना है । अतः निघण्टु ही सबसे प्राचीन कोशग्रन्थ है (Sharma, 1961) ।

प्रायः भारत में एकभाषिक शब्दावली का प्रचलन अत्यन्त प्राचीन है । क्योंकि निघण्टु भी एकभाषिक शब्दावली है । उसके बाद जिन भी शब्दकोश का निर्माण हुआ वह लगभग एकभाषिक थे जैसे - कात्य द्वारा रचित 'नाममाला', भागुरि का 'त्रिकांड', अमरदत्त द्वारा लिखित 'अमरमाला' या वाचस्पति का 'शब्दार्णव' आदि एवं बाद के - पुरुषोत्तम देव के 'हारावली' तथा 'त्रिकांडकोश', हलायुध द्वारा कृत 'अभिधान रत्नमाला', यादवप्रकाश द्वारा रचित 'वैजंती' आदि कोश एकभाषिक ही हैं (वाजपेयी, 1981) । प्राकृत अपभ्रंश भाषा में भी एकभाषिक शब्दावली प्राप्त होती हैं - जैसे धनपाल द्वारा रचित 'पाइअ लच्छीनाममाला', हेमचंद्रकृत 'देशीनाममाला' तथा गोपाल, द्रोण आदि के देशी 'कोश' एवं हिंदी के पुराने कोश - जैसे नंददास, बनारसीदास, बद्रीदास, हरिचरणदास, (वाजपेयी,1981) । चेतनविजय, विनयसागर आदि की 'नाममाला', प्रयागदास की 'शब्दरत्नावली' या हरिचरणदास का 'कर्णाभरण' आदि उसी परम्परा में, अर्थात् एकभाषिक शब्दावलियाँ हैं । धीरे-धीरे समयानुसार द्विभाषिक तथा बहुभाषिक शब्दावली का चलन आरम्भ हुआ । बहुभाषिक शब्दावली की परम्परा अधिक प्राचीन नहीं है । इस प्रकार की शब्दावली के प्रचलन के बाद 3-4 भाषाओं में ही नहीं अपितु 10-12 भाषाओं में विभिन्न विषयों की शब्दावलियों का निर्माण हुआ । यद्यपि शब्दावलियों का विकास कोशों के रूप में ही हुआ है परन्तु फिर भी दोनों में पर्याप्त भेद प्राप्त होते हैं । शब्दावली के अन्तर्गत शब्दों का संग्रह एक या अधिक भाषा में रहता है किंतु कोश में संग्रहीत शब्दों का अर्थ अथवा उनकी व्याख्या आदि का भी वर्णन रहता है । किसी भी विषय या क्षेत्र जैसे- कला, वाणिज्य, विज्ञान आदि के द्विभाषिक या बहुभाषिक कोशों के अतिरिक्त, पर्याय एवं विलोमकोश (Thesaurus) (कुमार और कुमार, 2006) भी शब्दावलियों की ही श्रेणी में आते हैं । पर्याय कोशों की भी अपनी अलग महत्ता रही है । इनकी परम्परा बडी वैज्ञानिक और अत्यन्त

उपयोगी है[5] । कोश के अन्तर्गत पारिभाषिक शब्दों का संकलन होता है । इन पारिभाषिक शब्दों का प्रयोग जटिल तथ्यों की अभिव्यक्ति को सहज एवं सुगम बनाने के लिए किया जाता है । इन पारिभाषिक शब्दों के ज्ञान के बिना सम्बन्धित ग्रन्थ या दर्शन को समझना कठिन हो जाता है । भारत में प्रचलित आधुनिक पद्धति पर निर्मित संस्कृत कोशों को दो वर्गों में विभक्त किया जा सकता है । इनमें एक विधा वह है जिसमें अंग्रेजी अथवा जर्मन आदि भाषाओं के माध्यम से संस्कृत के कोशग्रन्थों का निर्माण हुआ । इस पद्धति के प्रवर्तक अथवा आदि निर्माता पाश्चात्य विद्वान् थे । दूसरे नवीन पद्धति के अनुसार नूतन प्रेरणाओं को लेकर संस्कृत में ऐसे कोश बने जिसका माध्यम भी संस्कृत ही था । इस प्रकार के कोशों में विशेष रूप से वाचस्पत्यम् (तारानाथ, 1812-85), शब्दकल्पद्रुमः (Deva, 1967), कविकल्पद्रुमः, अमरकोशः (बालशास्त्री, 2012) आदि मुख्य कोशग्रन्थ की श्रेणी में आते हैं ।

पारिभाषिक शब्दों द्वारा जटिल विचारों को बडी ही सरलता से अभिव्यक्त किया जा सकता है । इसी तथ्य को भारतीय गणितज्ञ महावीराचार्य द्वारा संस्कृत भाषा में रचित गणितसारसंग्रहः के 'संज्ञाधिकारः' (Terminology) नाम के पहले अध्याय में कहा है – 'न शक्यतेऽर्थोबोद्धुं यत्सर्वस्मिन् संज्ञया विना । आदावतोऽस्य शास्त्रस्य परिभाषाभिध्यास्यते ।।'[6] अर्थात् संज्ञा (शब्दावली) के बिना किसी भी विषय को समझाना असम्भव है (Rangacarya, 2011) । अतः इसलिए उन्होंने अपने शास्त्र के आरम्भ में ही सभी पारिभाषिक शब्दों को परिभाषा के माध्यम से स्पष्ट किया है । तत्पश्चात् लम्बाई, क्षेत्रफल, आयतन, समय, सोना, चाँदी एवं अन्य धातुओं के मापन की इकाइयों के नाम और उनकी परिभाषा (परिमाण) को दिया है ।

2. साङ्ख्य-योग दर्शन के पारिभाषिक शब्दों का सामान्य परिचय (Introduction of Technical Terms of Sāṅkhya-Yoga Philosophy)

पारिभाषिक शब्दों का अपना विशेष महत्त्व है । ये शब्द किसी विशेष विज्ञान, शास्त्र या व्यवहार आदि में निश्चित अर्थ में प्रयोग किए जाते हैं तथा उनकी उसी संदर्भ में परिभाषा भी दी जाती है । किसी भी विषय को समझने हेतु पारिभाषिक शब्द अहम भूमिका निभाते हैं इनके ज्ञान के बिना उस विषय को सम्यक् रूप से नहीं जाना जा सकता है, दर्शन भी इनमें से एक है । प्रायः

[5] Guftagoo with Arvind Kumar - https://youtu.be/febBYbK6Khk
[6] गणितसारसंग्रह 1.1

सभी दर्शनों के किसी ना किसी रूप में कोशग्रंथ उपलब्ध होते हैं । साङ्ख्य-योग दर्शन पर भी 'साङ्ख्य-योगकोशः' नामक एक कोषग्रन्थ प्राप्त होता है (त्रिपाठी, 1978) किन्तु उसमें केवल शब्द और उनके अर्थ दिए हैं। प्रस्तुत शोध कार्य के अन्तर्गत साङ्ख्य-योग दर्शन के पारिभाषिक शब्दों के अर्थ के साथ-साथ उनसे सम्बन्धित ग्रन्थों के अनुसार लक्षण और उन लक्षणों के अर्थ सहित सम्पूर्ण विश्लेषण किया गया है। कुल 385 पारिभाषिक शब्दों का संकलन किया गया है। जिनमें से साङ्ख्य दर्शन से 100 शब्दों का संग्रह किया गया है। साङ्ख्यदर्शन के मूल ग्रन्थ साङ्ख्यसूत्र में मूलतः छः अध्याय और 527 सूत्र हैं। इन पारिभाषिक शब्दों को एकत्रित करने के लिए साङ्ख्यसूत्र, साङ्ख्य प्रवचनभाष्य तथा साङ्ख्यकारिका को मूलस्रोत के रूप में आधार बनाया गया है। योगसूत्र में चार पाद (अध्याय) तथा 195 सूत्र हैं । योगदर्शन के पारिभाषिक शब्दों का संकलन योगसूत्र, व्यासभाष्य, तत्त्ववैशारदी, योगवार्तिक तथा भोजवृत्ति को केंद्रबिन्दु बनाकर 285 पारिभाषिक शब्दों को एकत्रित किया है।

3. शोधसर्वेक्षण (Survey of Research)

किसी भी शोधकार्य को मुख्यरूप प्रदान करने के लिए शोधसर्वेक्षण करना अति आवश्यक होता है क्योंकि उससे सम्बन्धित अन्य कार्यों से भिन्नता प्रदान की जा सके। शोधसर्वेक्षण में साङ्ख्य-योग दर्शन, पारिभाषिक शब्द तथा कोशग्रन्थों से सम्बन्धित शोधकार्यों एवं सङ्गणकीय भाषाविज्ञान से सम्बन्धित हुए शोधकार्यों का संक्षिप्त शोधसर्वेक्षण प्रस्तुत किया गया है । इनको पारम्परिक अनुसंधान एवं सङ्गणकीय भाषावैज्ञानिक अनुसंधान के रूप में वर्गीकृत किया गया है। जिनका विवरण निम्नलिखित है।

3.1. साङ्ख्य-योग दर्शन से सम्बन्धित पारम्परिक अनुसन्धानों का परिचय

साङ्ख्य-योग दर्शन से सम्बन्धित पारम्परिक अनुसन्धानों में साङ्ख्य एवं योग दर्शन से सम्बन्धित लघुशोध, शोध, शोधपत्र, अनुसंधान परियोजना, पारिभाषिक शब्द तथा कोशग्रन्थों से सम्बन्धित शोधकार्यों का अधुना पर्यन्त संक्षिप्त शोधसर्वेक्षण प्रस्तुत किया गया है। जिनका विवरण अग्रलिखित है -

1. 'योगदर्शन में कर्माशय की अवधारणा : योगसूत्र, व्यासभाष्य तथा वाचस्पति मिश्र, विज्ञानभिक्षु की टीकाओं एवं भोजवृत्ति के आलोक में' (जायसवाल, 2011) नामक शोध

को चार अध्यायों में विभक्त किया गया है । जिसके प्रथम अध्याय में योग दर्शन की परम्परा एवं भारतीय दर्शन में कर्म सिद्धान्त के विषय में बताया गया है । द्वितीय अध्याय में कर्माशय एवं उनके कारण स्वरूप पञ्च क्लेशों की मूलकता की चर्चा की है । तृतीय अध्याय में कर्माशय एवं त्रिविध विपाको की विवेचना हुई है । चतुर्थ अध्याय में कर्माशय एवं वासनाओं के सम्बन्ध पर विचार किया गया है।

2. 'न्याय-साङ्ख्य-वेदान्त में वर्णित सृष्टि-प्रक्रिया का समीक्षात्मक अध्ययन' (रीना कुमारी, 2009) सृष्टि प्रक्रिया एक महत्वपूर्ण विषय माना जाता है । प्रस्तुत लघुशोध प्रबन्ध में वेद, पुराण एवं दार्शनिक परिप्रेक्ष्य के आधार पर सृष्टि संरचना का निरुपण किया है । इसके अन्तर्गत पाँच अध्याय है । प्रथम अध्याय में पूर्वकालिक दार्शनिक ग्रन्थों में वर्णित सृष्टि-प्रक्रिया को व्याख्यायित किया गया है । द्वितीय अध्याय में न्याय दर्शन के अनुसार परमाणु से ही सृष्टि उत्पत्ति एवं विलय की बात करते हुए सृष्टि-प्रक्रिया का सूक्ष्म अवलोकन किया है। तृतीय अध्याय में साङ्ख्य दर्शनानुसार सृष्टि-प्रक्रिया का उल्लेख किया है । चतुर्थ अध्याय में वेदान्तानुसार सृष्टि संरचना की चर्चा की है । अन्तिम अध्याय में उपरोक्त सभी के अनुसार सृष्टि- प्रक्रिया का समीक्षात्मक अध्ययन किया है ।

3. 'योग दर्शन में आचार एवं नीति' (नोगिया, 2004) यह शोधकार्य आचार एवं नीति के स्वरूप को समझाने का एक प्रयास है यह सात अध्यायों में विभक्त है जिसमें क्रमशः योगदर्शन का परिचय एवं स्वरूप, आचार एवं नीति, पातञ्जल योगदर्शन में आचार एवं नीति, गीता में प्रतिपादित योग में आचार एवं नीति, जैन योग में आचार एवं नीति, बौद्ध योग में आचार एवं नीति और अरविन्द योग में आचार एवं नीति आदि विषयों को समाहित कर विस्तारपूर्वक विचार किया गया है ।

4. एक लघुशोध प्रबन्ध में योगसूत्र में वर्णित छब्बीस तत्त्वों की विस्तार से विवेचना की है । 'योगसूत्र की तत्त्वमीमांसा' (रानी, 1996) प्रस्तुत शोध को पाँच अध्यायों में विभाजित किया है । प्रथम अध्याय में भारतीय दर्शन का परिचय, अभिप्राय, उद्देश्य, श्रेणी-विभाग तथा तत्त्व मीमांसा की चर्चा की है । द्वितीय अध्याय में पुरुष और प्रकृति के बारे में बताया गया है । तृतीय अध्याय में सृष्टि प्रक्रिया को समझाया गया है । चतुर्थ अध्याय में छब्बीसवें तत्त्व के रूप में ईश्वर की अवधारणा को वर्णित किया है । अन्तिम पंचम अध्याय में कैवल्य

मीमांसा में योग के उत्कृष्ट लक्ष्य कैवल्य अर्थात् मोक्ष के स्वरूप तथा उसकी प्राप्ति के साधनों की बात कही है।

5. योग में वर्णित चित्त की वृत्तियों को विस्तार से समझाने हेतु छः अध्यायों में विभाजित 'योग में वृत्तियाँ' (शर्मा, 1990) नामक लघुशोध उल्लेखनीय है। इसके प्रथम अध्याय में चित्त और उसकी वृत्तियों का सामान्य परिचय दिया गया है। योगदर्शन में पाँच वृत्तियाँ होती हैं इन्हीं पाँच वृत्तियों का वर्णन अग्रिम पाँच अध्यायों में किया गया है। प्रत्येक अध्याय में प्रत्येक वृत्ति (प्रमाण, विपर्यय, विकल्प, निद्रा और स्मृति) को विस्तार से विवेचित किया गया है।
6. साङ्ख्य-योग दर्शन में प्रत्यय-सर्ग (श्रीनिवास, 1984) साङ्ख्य-योग दर्शन के प्रत्यय-सर्ग पर आधारित यह एक लघुशोध है, जिसमें चार अध्याय हैं। साङ्ख्य-योग की प्राचीनता नामक प्रथम अध्याय में वेद एवं उपनिषदों में साङ्ख्य-योग की प्राचीनता, बौद्ध साहित्य में योग आदि का वर्णन किया गया है। साङ्ख्य-योग का अन्वय नामक द्वितीय अध्याय में साङ्ख्य एवं योग का अर्थ तथा दोनों के पारस्परिक सम्बन्ध की चर्चा की गयी है। साङ्ख्य-योग के प्रमुख सिद्धान्त इस तृतीय अध्याय में दोनों दर्शनों के प्रमुख सिद्धान्तों की चर्चा की गयी है जैसे - साङ्ख्य के मूलतत्त्व, प्रकृति और पुरुष का संयोग, सत्कार्यवाद, योग के प्रमुख अंगो के विषय में विस्तार से बताने का प्रयास किया गया है। प्रत्यय-सर्ग नामक चतुर्थ अध्याय में प्रत्ययसर्ग के विषय में विस्तार से व्याख्यान किया है।

उपरोक्त शोधकार्यों के अतिरिक्त अन्य कार्य भी प्राप्त होते हैं परन्तु उनका विवरण यहाँ प्रस्तुत कर पाना सम्भव नहीं था। अतः मुख्य कार्यों का समावेश किया गया है।

3.2. साङ्ख्य-योग दर्शन के पारिभाषिक शब्दों से सम्बन्धित पारम्परिक अनुसन्धानों का परिचय

साङ्ख्य-योग दर्शन के पारिभाषिक शब्दों से सम्बन्धित पारम्परिक अनुसन्धानों में साङ्ख्य एवं योग दर्शन से सम्बन्धित लघुशोध, शोध, शोधपत्र, अनुसंधान परियोजना से सम्बन्धित शोधकार्यों का अधुना पर्यन्त संक्षिप्त शोधसर्वेक्षण प्रस्तुत किया गया है।

1. संस्कृत वाङ्मय में प्राचीन एवं अर्वाचीन चयनित शब्दकोशों का तुलनात्मक अध्ययन (मेहता, 2010) संस्कृत साहित्य के विभिन्न कोशों पर केन्द्रित यह शोधकार्य किया गया है। जो छः अध्यायों में विभक्त है । प्रथम अध्याय में शब्द संग्रह की परम्परा की विस्तार से चर्चा की गई है । द्वितीय अध्याय में शब्दकोश की व्यापकता का उल्लेख करते हुए वैदिक संहिताएँ, वैदिक युग, विभिन्न कोशों एवं प्राचीन भारतीय संस्कृत कोश के विषय में बताया गया है । तृतीय अध्याय में चयनित शब्दकोशों को प्राचीन एवं अर्वाचीन खण्ड में विभाजित कर प्रत्येक कोश के रचनाकार और उनकी कृतियों के विषय में बताया गया है । चतुर्थ अध्याय में प्राचीन कोशों का विश्लेषण किया गया है तथा पञ्चम अध्याय में अर्वाचीन कोशग्रन्थों का विश्लेषण किया है और अंतिम षष्ठ अध्याय में उपसंहार रूप में समीक्षा की गई है ।
2. 'संस्कृत के द्विरूपकोशों का समालोचनात्मक अध्ययन' (अग्रवाल, 2004) नामक कोश द्विरूपकोशों का समालोचनात्मक अध्ययन प्रस्तुत करता है । कोशों की विधा में एक द्विरूपकोशों का भी प्रचलन रहा है । द्विरूपकोश का तात्पर्य है कि एक ही अर्थ वाले दो शब्द जो विभिन्न कारणों से दो रूपों में प्रचलित हो गए परन्तु उनके अर्थ में कोई परिवर्तन नहीं होता या उनका अर्थविस्तार हो जाता है । द्विरूपकोशों पर स्वतंत्र रूप से कार्य अधिक मात्रा में प्राप्त नहीं होते हैं । द्विरूपकोशों पर प्रस्तुत शोधकार्य प्राप्त है जिसके अन्तर्गत सप्त अध्यायों का विभाजन किया है । इस शोध में संस्कृत कोश साहित्य का सामान्य परिचय, कोशों के प्रकार, उनका समय तथा उनके विषय में संक्षिप्त वर्णन किया गया है । लेखक का व्यक्तित्व, कृत्तित्व, शैली, शब्दों के स्रोत, शब्दों में परिवर्तन के कारण इत्यादि का समालोचनात्मक अध्ययन तथा कोषों का आलोचनात्मक एवं विश्लेषणात्मक अध्ययन किया गया है ।
3. 'मेदिनिकोष के सम्भावित स्रोत' (कुमार, 2001) लघुशोध में मेदिनिकोष के स्रोत की चर्चा चार अध्यायों में की है । यह एक नानार्थक शब्दकोष भी कहा जाता है । इसमें लगभग 2300 श्लोक विद्यमान हैं । सम्पूर्ण कोश को कान्तवर्ग से हान्तवर्ग पर्यन्त 33 वर्गों में विभाजित कर शोधकार्य किया गया है । प्रथम अध्याय में मेदिनिकोष एवं मेदिनिकोषकार, द्वितीय अध्याय में संस्कृतकोश साहित्य में मेदिनिकोष का स्थान, तृतीय अध्याय में मेदिनिकोष के सम्भावित स्रोत और चतुर्थ अध्याय में उपसंहार के साथ विषय का समापन

किया गया है। मुख्यरूप से तृतीय अध्याय ही शोध का मेरुदण्ड है। इसमें ही मेदिनिकोष के स्रोत की चर्चा विस्तार से की है।

4. 'बृहदारण्यकोपनिषद् शाङ्करभाष्य में अद्वैत सम्मत पारिभाषिक शब्दों का अध्ययन' (झा, 1997) यह एक लघुशोध है। शोधकर्ता ने बृहदारण्यकोपनिषद् में उपलब्ध शाङ्कर द्वारा कथित परिभाषाओं को एकत्रित कर समय एवं उपयोगिता की दृष्टि से पारिभाषिक शब्दों को पाँच अध्यायों में विभाजित किया है जो क्रमशः हैं - भूमिका, तत्त्व मीमांसीय पारिभाषिक शब्द, ज्ञान मीमांसीय पारिभाषिक शब्द, आचार्य मीमांसीय पारिभाषिक शब्द, खिल् व मिश्रित पारिभाषिक शब्द।

साङ्ख्य-योग दर्शन से सम्बन्धित पारिभाषिक शब्दावली पर अधिक कार्य प्राप्त नहीं होते हैं। उपरोक्त कार्यों के आधार पर कहा जा सकता है कि प्रस्तुत शोधकार्य मौलिक एवं नवीन है।

3.3 दर्शन से सम्बन्धित कोशग्रन्थों का सर्वेक्षण

दर्शन से सम्बन्धित कोशग्रन्थों के सर्वेक्षण में साङ्ख्य-योग दर्शन के अतिरिक्त अन्य दर्शनों, व्याकरण कोशग्रन्थों एवं प्राचीन कोशग्रन्थों पर हुए शोधकार्यों का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत किया गया है।

1. व्याकरण दर्शन कोष के लिए 'व्याकरण दर्शन कोष' (Panda, 2017) ऐसा ग्रंथ है, जिसमें व्याकरण दर्शन से सम्बन्धित 282 शब्दों का संग्रह है तथा इन शब्दों के बारे में विभिन्न व्याकरण दर्शन ग्रन्थों में प्रतिपादित विचारों को प्रस्फुटित करने वाली समस्त पंक्तियों को संदर्भित किया गया है। इसमें ईसा पूर्व 350 में विरचित अष्टाध्यायी से लेकर 1800 ईसवीं में विरचित परिभाषेन्दुशेखर तक पाणिनि व्याकरण परम्परा में उपलब्ध नौ ग्रंथों से सम्बद्ध पंक्तियों को संग्रहित किया गया है। इसमें ऐतिहासिक क्रम से ग्रन्थों की पंक्तियों का उल्लेख किया गया है।

2. योग दर्शन के तकनीकी शब्दों को ग्राह्य बनाने के लिए 15 मूल तथा प्रकरण ग्रन्थों को आधार बनाकर एक शब्दकोश भी उल्लेखनीय है (Swami and et al, 2015)। यह योग दर्शन के तकनीकी शब्दों को समझने में एक सहायक ग्रंथ है क्योंकि शब्द को स्पष्ट करने के

लिए योग के 15 ग्रंथों के आधार पर सम्बन्धित पारिभाषिक शब्दों का लक्षण प्रस्तुत किया गया है । इसके अन्तर्गत 145 पारिभाषिक शब्दों का समावेश किया गया है और इनका विश्लेषण हिन्दी तथा अंग्रेजी दोनों भाषाओं में उपलब्ध है ।

3. वेद, मीमांसा, उपनिषद्, वेदान्त, योग, साङ्ख्य, न्याय, वैशेषिक, बौद्ध एवं जैन आदि से 200 पारिभाषिक शब्दों को चयनित कर तत्तद् दर्शनों के मूल स्रोतों के अनुसार इनकी शास्त्रीय अवधारणाओं को स्पष्ट करने के लिए 'दार्शनिक सम्प्रत्यय-कोश' (कुमार एवं अन्य, 2014) का निर्माण किया गया है ।
4. संस्कृत-वाङ्मय को हृदयङ्गम कराने में व्याकरणशास्त्र की सर्वाधिक महत्वपूर्ण भूमिका तथा आधुनिक अध्ययन एवं अनुसन्धान में कोशों की अत्यन्त उपादेयता को दृष्टि में रखकर 'संस्कृतव्याकरण-पारिभाषिककोश' (कुमार एवं आर्य, 2013) उल्लेखनीय है । प्रस्तुत-ग्रन्थ में संस्कृतव्याकरणशास्त्र में प्रयुक्त तकनीकी पदों को एकत्रित कर हिन्दी माध्यम में परिभाषित करने का प्रयास किया गया है । इसमें पाणिनीयतन्त्र के पारिभाषिक उद्धरणों, पाणिनीएतर-सम्प्रदायों, प्रातिशाख्यों के व्याख्येय पदों, ऐतिह्य-संस्कृत-वैयाकरणों, व्याकरण के दार्शनिक चिन्तकों, ग्रन्थों तथा ग्रन्थकारों को विभिन्न सन्दर्भों सहित विवेचन कर समाहित किया गया है। जिससे अनेक शास्त्रों का अध्ययन न कर सकने वाले सुधी पाठक भी एक शब्द के अन्यान्य अर्थों को भिन्न-भिन्न सन्दर्भों तथा शास्त्रों के परिप्रेक्ष्य में उचित अर्थावधारण करने में समर्थ हो सकते हैं ।
5. न्याय पारिभाषिक शब्दावली (महापात्र, 2010) प्रस्तुत कोशग्रंथ में न्याय दर्शन के 524 पारिभाषिक शब्दों का संकलन किया गया है । शब्द और उसका अर्थ संस्कृत भाषा में रचित है। साथ ही साथ शब्द का अर्थ अंग्रेजी भाषा में भी लिखा है । यह कोशग्रन्थ 156 पृष्ठ में निबद्ध है ।
6. योगसूत्र एवं व्यासभाष्य में प्रयुक्त पारिभाषिक शब्दों का संग्रह भगवान दास (2009) द्वारा 'योगसूत्रभाष्यकोषः' में किया गया है । इस ग्रंथ में पारिभाषिक शब्द संस्कृत भाषा में वर्णमाला के क्रमानुसार दिए गए है तथा इसका अर्थ अंग्रेजी भाषा में लिखा गया है । सूत्र एवं भाष्य का प्रत्येक शब्द जिस-जिस स्थान में आया है, उसका अंकन ग्रन्थ में भी किया

गया है । यह कार्य केवल एक योगसूत्रभाष्य का अनुक्रमणी रूप में स्वीकार किया जा सकता है ।

7. समस्त ज्ञान का भंडार विश्वकोश (Encyclopedia) में किया गया है । अत: विश्वकोश वह कृति है जिसमें ज्ञान की सभी शाखाओं का सन्निवेश होता है । इसमें वर्णानुक्रमिक रूप में व्यवस्थित अन्यान्य विषयों पर बहुत ही संक्षिप्त परन्तु तथ्यपूर्ण निबंधों का संकलन होता है। यह संसार के वैविध्य सिद्धांतों की पाठ्यसामग्री के रूप में है । प्रारम्भिक अवस्था में विश्वकोश एक या अनेक खण्डों में पुस्तक के रूप में ही आते थे । परन्तु कम्प्यूटर के प्रादुर्भाव से अब सीडी (Compact Disc) आदि के रूप में भी तरह-तरह के विश्वकोश उपलब्ध हैं । आजकल अनेक विश्वकोश अन्तर्जाल (Internet) पर 'ऑनलाइन' भी उपलब्ध हैं[7] । इसी क्षेत्र में दर्शन के लिए भी विश्वकोश उपलब्ध है । Encyclopedia of Indian Philosophy vol. XII: Yoga-India's philosophy of meditation. (Larson & Bhattacharya, 2008) नामक विश्वकोश के बारहवें खण्ड में योग को ध्यान का दर्शन कहा गया है और साथ ही साथ योग दर्शन की शास्त्रीय पद्धति की भी चर्चा की गई है । इसी खण्ड में 'संगीतात्मक ढंग' (समाहार) और 'अनंत ज्ञानात्मक क्षमताओं' (समापत, सिद्धांत) जैसे विचारों ने योग दर्शन में जो भूमिका निभाई, वह समकालीन पश्चिमी दर्शन में वर्तमान मुद्दों के लिए प्रासंगिकता को भी स्पष्ट किया गया है । Encyclopedia of Indian philosophy (volume IV) – Sāṅkhya: A Dualist tradition in Indian philosophy, (Larson & Bhattacharya, 2006) साङ्ख्य दर्शन भारत की सबसे पुरानी दार्शनिक प्रणालियों में से एक है । यह ग्रन्थ जिराल्ड जेम्स लार्सन (Gerald James Larson) एवं रामशंकर भट्टाचार्य द्वारा सह-संपादित भारतीय दर्शनों के संग्रह से बना है । कार्ल एच. पॉटर (Karl Harrington Potter) (2009) द्वारा लिखित 'Encyclopedia of Indian Philosophies' में दर्शन के इतिहास को दर्शाया गया है । इसके चतुर्थ खंड में साङ्ख्य से सम्बन्धित संस्कृत ग्रंथों का सार अंग्रेजी भाषा में प्रस्तुत किया गया है । इसमें अनेक सारांश ऐसे ग्रंथों से उद्धृत हैं जिनका कभी संपादन ही नहीं किया गया है । इसका मूल उद्देश्य दार्शनिकों, सांस्कृतिक इतिहासकारों और तुलनात्मक अध्ययनों का वर्णन करना है ।

[7] https://www.encyclopedia.com/

8. भारतीय दर्शन की अवधारणाओं को समझाने के उद्देश्य से 'भारतीय दर्शन बृहत्कोश' (अवस्थी, 2004) की रचना की गई है । इस कोशग्रन्थ के सात भाग हैं । इसमें 20 दार्शनिक ग्रंथों के पारिभाषिक शब्दों का चयन कर उनका विस्तार से विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है । किसी भी पारिभाषिक शब्द को उसके मूल ग्रंथ के अनुसार बताया है और साथ ही साथ अन्य ग्रन्थों में वह शब्द किस अर्थ में प्रयुक्त हुआ है इसका भी विवेचन किया गया है । सभी शब्दों का संकलन अकारादि क्रम से किया है ।
9. The Practical Sanskrit-English Dictionary (Apte & Gode, 1998) नामक यह डिक्सनरी इंग्लैंड एडिसन का पुनर्संस्करण है । इसमें सामान्य कोश की भांति संस्कृत भाषा में शब्द और उनके अर्थ अंग्रेजी भाषा में दिया गया है । पाश्चात्य विद्वानों द्वारा संस्कृत भाषा पर किए गए कार्यों में आप्टे द्वारा द्वारा रचित यह कोशग्रन्थ अत्यन्त विस्तृत है । जिसमें सम्पूर्ण संस्कृत शब्दों को समाहित करने का प्रयास किया गया है । समय- समय पर इसके कई प्रकाशन भिन्न-भिन्न स्थानों से हुए हैं । Digital Dictionary Of South Asia[8] द्वारा विभिन्न भाषाओं के कोशग्रंथो का संग्रह डिजिटल रूप में किया है, जिनमें से संस्कृत भाषा से सम्बन्धित कोशग्रंथों में से एक आप्टे द्वारा रचित कोश है । वामन शिवराम आप्टे के 'प्रैक्टिकल संस्कृत-अंग्रेज़ी शब्दकोश' पर आधारित एक वेब संस्कृत शब्दकोश भी प्राप्त होता है- 'आप्टे संस्कृत शब्दकोश खोज' । जिसका लिंक इस प्रकार है - http://www.aa.tufs.ac.jp/~tjun/sktdic/ । इसमें स्वर तथा व्यंजन का कीबोर्ड भी दिया है । जिसके माध्यम से कोई भी प्रयोक्ता बडी सरलता से शब्द को खोज सकता है ।
10. भीमाचार्य झलकीकर (1996) द्वारा रचित 'न्यायकोश or dictionary of technical terms of Indian philosophy' न्याय दर्शन के पारिभाषिक शब्दों के लिए एवं प्रस्तुत शोधकार्य के क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है । अपनी प्रारम्भिक अवस्था में यह अति संक्षिप्त था। अब तक इस ग्रन्थ के कुल चार संस्करण प्रकाशित हो चुके हैं । इसके प्रथम संस्करण में केवल 267 पृष्ठ थे । बाद में इसका विस्तार किया गया जिसके परिणामस्वरूप चतुर्थ संस्करण में यह ग्रन्थ कुल 1084 पृष्ठों का हो गया । सम्पूर्ण कोश संस्कृत भाषा में रचित है । प्रत्येक शब्द को प्रायः एक पंक्ति में स्पष्ट किया गया है । इसकी महत्ता को देखते हुए इस

[8] https://dsal.uchicago.edu/dictionaries/sanskrit/

कोश को दिल्ली विश्वविद्यालय के संस्कृत विभाग के पूर्व अध्यक्ष प्रो. मदन मोहन अग्रवाल (2011) ने पुनः चौखम्भा सुरभारती से प्रकाशित किया।

11. भारतीय दर्शन के सभी सम्प्रदायों के मुख्य पारिभाषिक शब्दों का अकारादि क्रम से संकलन 'भारतीय दर्शन परिभाषा कोश' (शुक्ल, 1993) नामक कोशग्रन्थ में किया गया है। साथ ही साथ उन शब्दों की यथासम्भव व्युत्पत्ति एवं उनके शाब्दिक अर्थों पर विचार किया गया है। चूंकि इस ग्रन्थ में केवल मुख्य पारिभाषिक शब्दों का समावेश हुआ तो इसमें 296 पृष्ठ ही है। इसमें प्रत्येक पारिभाषिक शब्द का अर्थ अत्यन्त संक्षेप में प्रस्तुत किया गया है।
12. इसी सन्दर्भ में सम्पूर्ण मीमांसा दर्शन के लिए कुछ विशिष्ट कोशों का भी निर्माण किया गया है। इनमें से 'मीमांसाकोष' (सरस्वती, 1992) प्रमुख है। यह सात भागों में विभाजित है। इसमें सम्पूर्ण मीमांसा दर्शन को सम्मिलित किया है। इस कोष का प्रत्येक भाग संस्कृत भाषा में लिखित है। इसका प्रथम भाग सर्वप्रथम 1952 में प्रकाशित हुआ। तत्पश्चात् इसी का दूसरा प्रकाशन 1992 में हुआ था। मीमांसा दर्शन पर लिखित यह कोषग्रंथ महत्वपूर्ण स्थान रखता है।
13. न्याय दर्शन में उक्तियों का प्रयोग बहुलता से प्राप्त होता है। इनका संकलन 'न्यायोक्तिकोशः' (मिश्र, 1978) नामक ग्रन्थ में किया गया है। न्याय दर्शन की उक्तियों से युक्त यह पुस्तक मूलरूप से संस्कृत भाषा में निबद्ध है। इसके अन्तर्गत लगभग 540 उक्तियों का समावेश है। प्रत्येक उक्ति की संस्कृत भाषा में व्याख्या की गयी है।
14. प्राच्यविद्याधर्मविज्ञानसंकाय के दर्शन विभागाध्यक्ष श्री केदारनाथ त्रिपाठी (1974) द्वारा रचित 'साङ्ख्ययोगकोशः' नामक कोश साङ्ख्य योग दर्शन को समझने के लिए उपयुक्त कोशग्रन्थ है। इसमें साङ्ख्य तथा योग के पारिभाषिक शब्दों का अकारादि क्रम से संकलन किया गया है। जिनमें से साङ्ख्य दर्शन के लगभग 227 शब्दों तथा योग दर्शन के 318 शब्दों का समावेश किया गया है। इन शब्दों के अन्तर्गत ' जगत्सृष्टौ परमात्मनो भूतानुग्रहः प्रयोजनम्', 'ईश्वरस्य वैषम्यनैर्घृण्याभावः' आदि प्रकार की पंक्तियों का प्रयोग शब्द के अन्तर्गत किया है। इसके अतिरिक्त सभी शब्दों की व्याख्या संस्कृत भाषा के माध्यम से प्रस्तुत की गई है। साथ ही साथ उन ग्रन्थों को सन्दर्भित किया है जिनमें वह शब्द साक्षात रूप से प्राप्त होता है। किन्तु यह निश्चित नहीं हो पाया है कि इन शब्दों के संग्रह के लिए किन ग्रन्थों को आधार बनाया गया है। इस ग्रन्थ की समीक्षा के उपरान्त ज्ञात हुआ कि यह

ग्रन्थ साङ्ख्य और योग को समझने में अत्यन्त सहायक है । किन्तु इसमें सभी आधारित ग्रन्थों के अनुसार विस्तृत रूप से जानकारी का अभाव भी दृष्टिगोचर होता है । साथ ही साथ प्रत्येक शब्द की व्याख्या एवं विश्लेषण बहुत ही संक्षेप में दिया गया है । उदाहरणस्वरूप इस कोशग्रन्थ के अनुसार साङ्ख्य में पुरुष नामक पारिभाषिक शब्द की व्याख्या "असंहतो निर्गुणः कूटस्थो द्रष्टा भोक्ता विभुर्नित्यश्चित्स्वरूपः प्रतिशरीरं नाना चेति। पुरुषः, आत्मा, पुमान्, पुद्गलजन्तु, जीवः क्षेत्रजः इति पर्यायाः" इस प्रकार की गई है । इस प्रकार के अन्य शब्दों की भी व्याख्या प्राप्त होती हैं ।

किन्तु प्रस्तुत शोध में साङ्ख्य दर्शन से 100 और योग दर्शन से 285 पारिभाषिक शब्दों को एकत्रित किया गया है । जिसमें साङ्ख्य दर्शन के पारिभाषिक शब्दों के लिए साङ्ख्यसूत्र, साङ्ख्यप्रवचनभाष्य एवं साङ्ख्यकारिका और योग दर्शन के पारिभाषिक शब्दों के संग्रह के लिए योगसूत्र, व्यासभाष्य, भोजवृत्ति, तत्त्ववैशारदी एवं योगवार्तिक नामक मूल तथा प्रकरण ग्रन्थों को आधार बनाया है । प्रत्येक शब्द का आधारित ग्रन्थों के अनुसार लक्षण दिया गया है और विश्लेषण हिन्दी भाषा में प्रस्तुत किया गया है । उदाहरण स्वरूप पारिभाषिक शब्द 'पुरुष' का विश्लेषण इसी शोधकार्य के तृतीय अध्याय में पृष्ठ संख्या 74 पर देखा जा सकता है । जिसके माध्यम से इस शोधकार्य और केदारनाथ त्रिपाठी द्वारा लिखित पुस्तक में भेद किया जा सकता है । यह शोध एक ऑनलाइन टूल के रूप में भी उपलब्ध है । जिसके कारण इसका उपयोग कहीं भी कभी भी किया जा सकता है । अतः उपरोक्त तथ्यों के आधार पर कहा जा सकता है कि यह शोधकार्य सर्वथा नवीन तथा मौलिक है ।

15. योग-वेदान्त के लगभग 1500 शब्दों का संग्रह 'Yoga vedanta dictionary' (Sivananda, 1973) नामक ग्रन्थ में किया गया है । यह पुस्तक अंग्रेजी भाषा में रचित है । योग और वेदान्त दर्शन के शब्द मिश्रित रूप से अकारादि क्रम में IAST में लिखे गए हैं और उनके अर्थ अंग्रेजी भाषा में निबद्ध हैं ।
16. संस्कृत के एकभाषीय कोश के रूप में 'शब्दकल्पद्रुम' (Deva, 1967), आधुनिक युग का एक महाशब्दकोश है । यह स्यार राजा राधाकांतदेव बहादुर द्वारा निर्मित है । इसका प्रकाशन 1828-1858 ई. में हुआ और तृतीय प्रकाशन 1967 ई. में हुआ । यह पाँच खण्डों में विभक्त

है । जिसमें यथा-संभव संस्कृत साहित्य के समस्त वाङ्मय को समाहित किया है । इसके अतिरिक्त अंत में परिशिष्ट भी दिया गया है जो अत्यंत महत्वपूर्ण है । परवर्ती संस्कृत कोशों पर ही नहीं अपितु भारतीय भाषा के सभी कोशों पर इसका प्रभाव व्यापक रूप दृष्टिगोचर होता है । शब्दकल्पद्रुम में प्रत्येक शब्द की व्युत्पत्ति पाणिनिव्याकरण के अनुसार दी गई है । शब्दप्रयोग के उदाहरण उद्धृत हैं तथा शब्दार्थसूचक कोश या इतर प्रमाणों के समर्थन द्वारा अर्थनिर्देश किया गया है । प्रत्येक शब्द के पर्याय भी दिए गए हैं ।

17. वाचस्पत्यम् (Tarkavachaspati, 1962) भी संस्कृत का आधुनिक महाशब्दकोश है । इसका संकलन तर्कवाचस्पति तारानाथ भट्टाचार्य ने सन् 1812-1885 में किया था । ये बंगाल के राजकीय संस्कृत महाविद्यालय में अध्यापक थे । इस महाशब्दकोश को पूर्ण करने में 18 वर्ष लगे । वाचस्पत्यम् शब्दकल्पद्रुम की अपेक्षा संस्कृत कोश का एक बृहत्तर संस्करण है । एच वुडरो ने अपनी 'वाचनिका' में इस कोश की विशेषता बताते हुए कहा कि 'विल्सन' की 'संस्कृत डिक्शनरी' और 'शब्दकल्पद्रुम' की अपेक्षा इसका क्षेत्र अत्यन्त विस्तृत और गंभीर है।

18. भाषा संचालनालय, महाराष्ट्र शासन, मुम्बई द्वारा 46 कोशग्रन्थों का निर्माण किया गया है। इनमें 'भाषाविज्ञान व वाङ्मयविद्या परिभाषा कोश' (2001), 'तत्त्वज्ञान व तर्कशास्त्र परिभाषा कोश' (1975), 'साहित्य समीक्षा परिभाषा कोश' (1987) आदि प्रमुख है । 'पाइअ-सद्द-माहण्णवो' (प्राकृत-शब्द-महार्णवः) (Sheth, 1923-1928) नामक कोश ग्रन्थ प्राकृत शब्दों पर आधारित है । इसमें अकारादि क्रम से प्राकृत शब्दों को एकत्रित कर यथासम्भव उनके कई अर्थ हिन्दी भाषा में दिए गए हैं । यह कोशग्रन्थ चार भागों में विभक्त है । वर्ष 2014 में इसका डिजिटलीकरण किया गया । यह https://dsal.uchicago.edu/dictionaries/sheth Website पर Digital Dictionaries of South Asia के अन्तर्गत उपलब्ध है । इसमें प्राकृत शब्दों को खोजना अत्यन्त सरल बनाने का प्रयास किया गया है । शब्द को अन्तिम अक्षर, प्रथम अक्षर, सम्पूर्ण शब्द तथा केवल बीच के अक्षर से मिला कर खोज सकते हैं । यह उन लोगों के अधिक लाभदायक है जिन्हें

प्राकृत शब्द पूर्ण रूप से याद न हो। इस Online Dictionary में सबसे ऊपर सर्च हेल्प भी दिया गया है। जिसमें शब्द कैसे खोजें यह भी समझाया गया है।

3.4 वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग

भारत की स्वतंत्रता के बाद वैज्ञानिक-तकनीकी शब्दावली के लिए शिक्षा मंत्रालय ने सन् 1950 में बोर्ड की स्थापना की। सन् 1952 में बोर्ड के तत्त्वावधान में शब्दावली निर्माण का कार्य प्रारंभ हुआ। अन्तत: 1960 में केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय और 1961 ई. में वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग की स्थापना हुई। इन दोनों आयोगों ने मिल कर विभिन्न क्षेत्रों के लिए समय-समय पर तैयार की गयी शब्दावली को 'पारिभाषिक शब्द संग्रह' शीर्षक से प्रकाशित किया गया। जिसका उद्देश्य अन्तरिम अवधि में लेखकों को नई संकल्पनाओं हेतु सर्वसम्मत पारिभाषिक शब्द प्रदान करना था[9]। हिन्दी शब्द भंडार की वृद्धि के लिए भारतीय संविधान (351) में प्रावधान है कि मुख्य रूप से संस्कृत और गौणरूप से अन्य भाषाओं से शब्द ग्रहण किए जा सकते हैं। वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग, उच्चतर शिक्षा विभाग, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार, अपनी स्थापना समय से ही उसे सौंपे गए कार्यभार अनुसार भारतीय भाषाओं में शिक्षा माध्यम परिवर्तन हेतु विभिन्न विषयों में भारतीय भाषाओं की मानक शब्दावली तथा विश्वविद्यालय स्तरीय विभिन्न विषयक पुस्तकों का निर्माण एवं प्रकाशन करता आ रहा है। इस दीर्घ अवधि में आयोग ने विभिन्न आवश्यक विषय से संबंधित अंग्रेजी-हिंदी तथा अन्य भारतीय भाषा शब्दावलियों का निर्माण एवं प्रकाशन किया है। 21वीं सदी के सूचना प्रौद्योगिकी के इस दौर में शिक्षा एवं ज्ञानार्जन के साधनों की सद्य: उपलब्धता में क्रांतिकारी परिवर्तन आया है। ई-गवर्नेंस, ई-व्यवस्था एवं डिजिटल इंडिया जैसे क्रियाकलाप दैनिक जीवन के अंग हो गए हैं। ऐसे में आयोग ने भी इन संसाधनों का उपयोग करने का निश्चय किया। इसी क्रम में आयोग द्वारा निर्मित सभी शब्दावलियों, परिभाषा-कोशों का ई-संस्करण आपको सहज रूप से उपलब्ध कराने के उद्देश्य से ई-बुक निर्माण योजना पर कार्य प्रारंभ किया गया है। इसके द्वारा अनेक शब्दावली कोशों का निर्माण

[9] http://csttpublication.mhrd.gov.in/english/overview.php

हुआ है जिनमें से भारतीय दर्शन पर परिभाषा कोश बुक तथा ई-बुक के रूप में उपलब्ध होते हैं[10] । इस आयोग द्वारा अब तक 53 कोशग्रन्थों का निर्माण किया जा चुका है ।

दर्शन से सम्बन्धित प्रथम अवनीश कुमार एवं उनके सहयोगियों (2003) द्वारा सम्पादित 'दर्शनशास्त्र परिभाषा कोश - Definitional Dictionary of philosophy'[11] वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग द्वारा प्रकाशित कोशग्रन्थ में 2000 शब्दों की परिभाषाएँ दी गयी हैं । सभी प्रविष्टियाँ अंग्रेजी भाषा के वर्णानुक्रम में है । पूर्व में अंग्रेजी भाषा में शब्द तत्पश्चात् उसका अर्थ, हिन्दी पर्याय तथा कम से कम शब्दों में उसके अर्थ को स्पष्ट करने वाली परिभाषा दी गई है । अर्थ को अधिक स्पष्ट करने के लिए यत्र-तत्र उदाहरण प्रस्तुत किए हैं तथा आवश्यकता पड़ने पर ऐतिहासिक या व्यक्तिवृत्तीय सन्दर्भों का उल्लेख दिया है । इस कोष में दर्शन की लगभग सभी शाखाओं के महत्वपूर्ण शब्द दिए गए हैं तथा परिभाषा का आधार मुख्यतः डिक्शनरी ऑफ फिलॉसफी एंड साइकोलॉजी बाल्डविन (Dictionary of Philosophy and Psychology Baldwin), इनसाइक्लोपीडिया ऑफ फिलॉसफी (Encyclopedia of Philosophy), इनसाइक्लोपीडिया ऑफ मोरल (Encyclopedia of Moral) और इनसाइक्लोपीडिया ऑफ रिलीजन (Encyclopedia of Religion) आदि को बनाया गया है । विदेशी नामों के उच्चारण और नियंत्रण के संबंध में विस्तृत बायोग्राफिकल डिक्शनरी (Biographical dictionary) को मानक के रूप में स्वीकार किया गया है ।

भारतीय दर्शनों पर आधारित एक कोशग्रन्थ अवनीश कुमार एवं सहयोगियों (1999) द्वारा सम्पादित 'भारतीय दर्शन परिभाषा कोश' उपलब्ध है । वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग द्वारा इसका ई-बुक संस्करण भी 2019 में प्रकाशित किया गया है[12] । यह परिभाषाकोश बृहत् है । इसलिए तीन खण्डों में विभक्त है । इसके प्रथम खण्ड में पाशुपत शैव दर्शन तथा वीरशैव दर्शन की लगभग 390 तकनीकी संकल्पनाओं को सरल भाषा में परिभाषित किया है । द्वितीय खण्ड में वल्लभ वेदान्त दर्शन तथा साङ्ख्य-योग दर्शन के 600 तकनीकी शब्दों को समाहित किया है । अन्तिम

[10] http://csttpublication.mhrd.gov.in/english/result.php?search=glo%20humanities&search55=Submit#
[11] http://www.csttpublication.mhrd.gov.in/ebook/Definitional_Dictionary_of_Philosophy_Hindi/html5forpc.html?page=0
[12] http://www.csttpublication.mhrd.gov.in/ebook/Definitional_Dictionary_of_Indian_Philosophy_Vol.%20-%20I/html5forpc.html?page=0

तीसरे खण्ड में काश्मीर शैव दर्शन तथा शाक्त दर्शन के शब्दों को सरल भाषा में परिभाषित किया गया है।

रूपविज्ञान, वाक्यविज्ञान, अर्थविज्ञान, स्वनिम विज्ञान, प्रजनक भाषाविज्ञान, कम्प्यूटेशनल भाषाविज्ञान, गणितीय भाषाविज्ञान, तंत्रिका भाषाविज्ञान, व्याकरण आदि अनेक प्रमुख विषयों से प्राप्त पारिभाषिक शब्दों का संकलन 'भाषाविज्ञान शब्दावली-Glossary of Linguistics'[13] (कुमार एवं अन्य, 2017) नामक ग्रन्थ में किया गया है। इसके मध्य शब्द अंग्रेजी भाषा में तथा उसका अर्थ हिन्दी भाषा में दिया गया है।

3.5 संगणकीय भाषाविज्ञान से सम्बन्धित इस क्षेत्र में हुए शोधकार्यों का सर्वेक्षण

संस्कृत के साथ काम करने वाले सङ्गणकीय भाषाविद् लम्बे समय से भारत में समृद्ध भाषाई परम्परा के लिए आकर्षित हुए हैं। सङ्गणकीय भाषाविज्ञान के क्षेत्र में संस्कृत भाषा एक अद्वितीय स्थान रखती है। संस्कृत अन्य भाषाओं से भिन्न तथा कम्प्यूटर के लिए उपयोगी है। सङ्गणकीय भाषाविज्ञान के क्षेत्र को शोध के माध्यम से आगे बढाने में संस्कृत अध्ययन केन्द्र, जवाहरलाल नेहरू विशवविद्यालय, नई दिल्ली, आईआईटी मुम्बई (http://www.iitb.ac.in/), आईआईआईटी हैदराबाद (http://www.iith.ac.in/), संस्कृत अध्ययन विभाग, हैदराबाद विश्वविद्यालय (http://sanskrit.uohyd.ac.in/scl/) आदि प्रमुख संस्थान हैं। भारतीय भाषा प्रसारण एवं विस्तारण केन्द्र (TDIL), इलेक्ट्रानिकी और सूचना प्रौद्योगिकी विभाग (DeitY), संचार एवं सूचना मन्त्रालय, भारत सरकार भारतीय भाषाओं से सम्बन्धित अनुसंधान एवं विकास के लिए वित्तपोषण प्रदान करता है जिसके तहत संस्कृत भाषा के लिए अनेक टूल्स बनाए गए हैं (http://tdil-dc.in/san)।

संस्कृत एवं प्राच्यविद्या अध्ययन संस्थान, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय सङ्गणकीय भाषाविज्ञान से सम्बन्धित कार्यों के लिए अग्रणी है। संस्कृत एवं प्राच्यविद्या अध्ययन संस्थान के सङ्गणकीय भाषाविज्ञान और अनुसन्धान एवं विकास के अन्तर्गत सन् 2002 से अनुसन्धान कार्य

[13] http://www.csttpublication.mhrd.gov.in/ebook/Definitional_Dictionary_of_Linguistics_Volume-1/html5forpc.html?page=0

सङ्गणकीय भाषा विज्ञान के गणमान्य प्रो. गिरीश नाथ झा के निर्देशन में प्रारम्भ हुआ है। यह विभाग संस्कृत और अन्य भारतीय भाषाओं के लिए भाषा प्रौद्योगिकी के कई क्षेत्रों में अनुसंधान एवं विकास कर रहा है। इस केन्द्र ने सङ्गणकीय भाषाविज्ञान से सम्बन्धित अनेक उपकरण और संसाधन विकसित किए गए हैं। इस केन्द्र का मुख्य उद्देश्य संस्कृत से भारतीय भाषाओं में मशीनी अनुवाद करना है। इसी लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए अनेकों शोधकार्य सम्पन्न किए जा रहे हैं। http://sanskrit.jnu.ac.in पर चार प्रकार के सङ्गणकीय टूल्स मुख्यरूप से उपलब्ध हैं। इनमें Language Processing Tools (भाषा प्रसंस्करण उपकरण), Lexical Resources (शाब्दिक संसाधन), e-Learning (ई-लर्निंग), Corpora and e-Text (कॉर्पोरा और ई- टेक्स्ट) शामिल हैं। इस केन्द्र द्वारा अनेक कार्य संस्कृत व्याकरण से सम्बन्धित हैं परन्तु भारतीय दर्शन के लिए अनेक कोशग्रन्थों से सम्बन्धित विभिन्न टूल्स भी विकसित किए हैं। साथ ही साथ संस्कृत साहित्यखोज (Online Indexing) भी प्रमुख कार्य हैं।

साङ्ख्य, योग और वेदान्त दर्शन से सम्बन्धित मुख्य शब्दों को सर्च करने के लिए एक शब्दकोश का निर्माण "Dictionary of Sankhya, Yoga & Vedanta project" (Jain, 2007) किया गया है। इसमें साङ्ख्य, योग और वेदान्त दर्शन से सम्बन्धित कोई भी शब्द देवनागरी लिपि में लिख कर खोजा जा सकता है। परिणाम स्वरूप लिखित शब्द से सम्बन्धित अन्य शब्द, उसके दर्शन का नाम तथा अर्थ प्रस्तुत होता है। यह http://sanskrit.jnu.ac.in/student_projects/lexicon.jsp?lexicon=sankhya पर उपलब्ध है। यह एक एम.ए. प्रोजेक्ट के तहत विकसित किया गया है। अतः सीमित शब्दों की सूचना प्रस्तुत करता है।

योगसूत्रानुक्रमणिका (गौतम, 2009) एवं योग शब्दकोश (Yadav & Upadhyay, 2009) भी इस क्षेत्र में प्रारम्भिक स्तर पर किए गए कार्यों में महत्त्वपूर्ण हैं। योग शब्दकोश का निर्माण पातञ्जल योग दर्शन के आधार पर सीमित सूचनाओं के साथ किया गया है। इसके माध्यम से योग से सम्बन्धित शब्द को लिखकर सर्च किया जा सकता है। तत्पश्चात् परिणाम स्वरूप एक टेबल रूप में मूल शब्द और उसका अर्थ मात्र प्रदर्शित होता है[14]। कोई भी शब्द योगदर्शन मे सूत्र में प्रयुक्त हुआ है या नहीं अथवा कितने सूत्रों में प्रयुक्त हुआ है यह जानने के लिए योगसूत्रानुक्रमणिका का

[14] http://sanskrit.jnu.ac.in/student_projects/lexicon.jsp?lexicon=yogasutra

निर्माण एम.ए. स्तर पर प्रोजेक्ट के रूप में किया गया है। इस सिस्टम के माध्यम से योग का कोई भी शब्द देवनागरी लिपि में लिखने पर परिणाम के रूप में सूत्र संख्या, उस शब्द से सम्बन्धित सूत्र तथा सूत्रविच्छेद और अन्त में उस सूत्र का अर्थ प्राप्त किया जा सकता है[15]। ब्रह्मसूत्र अनुक्रमणिका (संजय, 2008) भी इसी प्रकार का एक सिस्टम है जहां पर ब्रह्मसूत्र से सम्बन्धित किसी भी शब्द को खोजा जा सकता है परिणाम के रूप में खोजा गया शब्द पूर्ण सन्दर्भ के साथ, सूत्र संख्या, उस शब्द से सम्बन्धित सूत्र तथा सूत्रविच्छेद और अन्त में उस सूत्र का अर्थ प्राप्त किया जा सकता है[16]।

इसी केन्द्र ने अनेक ई-कोशों का भी विकास किया है। ऑनलाइन बहुभाषीय अमरकोश एक उल्लेखनीय शोध है। यह प्रोजेक्ट यूजीसी के UPOE कार्यक्रम के तहत वित्तपोषण के माध्यम से विकसित किया गया है। इस सिस्टम के माध्यम से संस्कृत, हिंदी, अंग्रेजी, बंगाली, पंजाबी, उडिया, असमी, मैथिली एवं कन्नड़ भाषाओं के माध्यम से अमरकोश में उल्लिखित किसी भी शब्द को सर्च किया जा सकता है। परिणाम भी इन्हीं भाषाओं में प्राप्त होता है। सर्च को यूजर अनुरूप बनाने के लिए एक सर्च बॉक्स एवं अन्य माध्यम भी प्रदत्त हैं। परिणाम के रूप में शब्द का समानार्थी शब्दों की सूची उसकी ऑन्टोलॉजी, पूर्ण अमरकोश सन्दर्भ, शब्द का विभिन्न भाषाओं में अर्थ एवं व्याकरणिक कोटियां आदि प्रस्तुत की गई है[17]। इसी कड़ी में हलायुध कोश[18] (Khandoliyan, Pandey, Meena, Pandey & Kumar, 2009), मंख-कोश[19] (कुमार, 2009),मेदिनिकोश[20] (द्विवेदी, 2009) आदि कोशों में प्राप्त शब्दों को इस सिस्टम के माध्यम से खोजा जा सकता है। परिणाम के रूप में सबसे पहले मूलशब्द, उसके बाद शब्द का वर्गीकरण, अर्थ, व्युत्पत्ति, संदर्भ आदि सूचनाएं प्राप्त होती हैं। संदर्भ का अर्थ है कि मूल मेदिनि कोश में प्राप्त शब्द किस पेज पर उपलब्ध है[21]।

ऑनलाइन अनुक्रमणिका के क्षेत्र में यह केन्द्र अग्रणी है। संस्कृत ग्रन्थों का डिजटलीकरण एवं उनके लिए ऑनलाइन सर्च प्रदान करने का कार्य भी इस केन्द्र के शोध में शामिल है। इस क्षेत्र

[15] http://sanskrit.jnu.ac.in/student_projects/lexicon.jsp?lexicon=yoga
[16] http://sanskrit.jnu.ac.in/student_projects/lexicon.jsp?lexicon=bs
[17] http://sanskrit.jnu.ac.in/amara/index.jsp
[18] http://sanskrit.jnu.ac.in/student_projects/lexicon.jsp?lexicon=halayudh
[19] http://sanskrit.jnu.ac.in/student_projects/lexicon.jsp?lexicon=mankha
[20] http://sanskrit.jnu.ac.in/student_projects/lexicon.jsp?lexicon=medini
[21] http://sanskrit.jnu.ac.in/student_projects/lexicon.jsp?lexicon=medini

में दिवाकर मणि द्वारा विकसित (2008) विकसित महाभारत अनुक्रमणिका प्रमुख है। इस सिस्टम के माध्यम से महाभारत में प्राप्त शब्दों को विभिन्न प्रकार से खोजा जा सकता है[22]। परिणाम के रूप में विस्तृत सूचना प्राप्त की जा सकती है। इसी क्षेत्र में सुश्रुत-संहिता-अण्वेषण[23] (Pandey, 2011), चरक-संहिता-खोज[24] (Tiwari, 2011), अमरकोष (वनौषधि-वर्ग) एवं भावप्रकाश-निघण्टु-अनुक्रमणी[25] (Khandoliyan, 2011), आयुर्वेद-औषधि-अनुक्रमणी[26], बृहदारण्यकोपनिषद्-अनुक्रमणी[27] (Dash, 2011), वेदांत-अनुक्रमणी[28], कर्मकाण्ड अन्वेषण[29], सुभाषित-अनुक्रमणी[30], अर्थ-शास्त्र-अनुक्रमणी[31], मुण्डकोपनिषदन्वेषण[32] आदि प्रमुख हैं।

संस्कृत अध्ययन विभाग, हैदराबाद विश्वविद्यालय, भारतीय व्याकरणिक परंपरा, संस्कृत पाठ के विश्लेषण के लिए विभिन्न कम्प्यूटेशनल उपकरण विकसित कर रहा है[33]। संशाधिनी नामक वेबसाइट पर भी संस्कृत व्याकरण से सम्बन्धित अनेक टूल्स उपलब्ध होते हैं। कोश ग्रन्थों में अमरकोश[34] एवं धातुपाठ[35] शामिल हैं। संस्कृत शास्त्रों के लिए एक सर्च इंजन भी इस केन्द्र द्वारा विकसित किया गया है जिसके माध्यम से संस्कृत पाठ में से शब्दों को सर्च किया जा सकता है[36]।

दिल्ली विश्वविद्यालय का संस्कृत विभाग भी 2014 से इस क्षेत्र में कार्य करना प्रारम्भ किया। इस विभाग का मुख्य उद्देश्य ई-लर्निंग के इस बढते युग में संस्कृत भाषा के लिए ऑनलाइन शिक्षण के लिए टूल्स का निर्माण करना है। इस विभाग द्वारा शोध एवं विकास कार्य के अन्तर्गत गत छः वर्षों में शोध के माध्यम से विभिन्न सङ्गणकीय टूल्स विकसित किए जा चुके हैं। संस्कृत व्याकरण के शिक्षण एवं अधिगम को सुगम एवं सुलभ बनाने के लिए स्वगतम् नामक टूल का

[22] http://sanskrit.jnu.ac.in/mb/index.jsp
[23] http://sanskrit.jnu.ac.in/susruta/index.jsp
[24] http://sanskrit.jnu.ac.in/caraka/index.jsp
[25] http://sanskrit.jnu.ac.in/bpnighantu/search.jsp
[26] http://sanskrit.jnu.ac.in/ayurveda/search.jsp
[27] http://sanskrit.jnu.ac.in/vedanta/busearch.jsp
[28] http://sanskrit.jnu.ac.in/vedanta/index.jsp
[29] http://sanskrit.jnu.ac.in/student_projects/lexicon.jsp?lexicon=karma
[30] http://sanskrit.jnu.ac.in/student_projects/lexicon.jsp?lexicon=subhashit
[31] http://sanskrit.jnu.ac.in/student_projects/lexicon.jsp?lexicon=artha
[32] http://sanskrit.jnu.ac.in/student_projects/lexicon.jsp?lexicon=mundakopanishada
[33] https://sanskrit.uohyd.ac.in/scl/
[34] https://sanskrit.uohyd.ac.in/scl/amarakosha/index.html
[35] https://sanskrit.uohyd.ac.in/scl/dhaatupaatha/index.html
[36] http://scl.samsaadhanii.in:8080/searchengine/

निर्माण भी इसी केन्द्र ने किया है[37] (Chandra et al, 2017) । यह उपागम विभिन्न प्रकार के सङ्गणकीय भाषाविज्ञान के टूल्स का एक समूह है । जिनमें से पाँच प्रकार के सङ्गणकीय टूल्स मुख्य हैं - Language Analyzer Tools (भाषा विश्लेषक उपकरण), Language generator (भाषा उत्पादक), e-Learning (ई-लर्निंग), e-Text and Search (ई- टेक्स्ट और खोज), Research Tools (अनुसंधान उपकरण) आदि । प्रायः सभी टूल्स दिल्ली विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रम में शामिल संस्कृत व्याकरण को ग्राह्य बनाने के उद्देश्य से विकसित किए गए हैं । इनमें ई-शिक्षण हेतु सुबन्त-रूपसिद्धि (Chandra et al, 2015) सिस्टम लघुसिद्धान्तकौमुदीस्थ सुबन्तप्रकरणगत किसी भी सुबन्त पद की ससूत्र रूपसिद्धि प्रस्तुत करता है । यूजर यूनीकोड देवनागरी (UTF-8) प्रारूप में इन्पुट प्रविष्ट करके प्रदत्त सुबन्त पद की पाणिनीय सूत्रों के आधार पर पूर्ण रूपसिद्धिप्रक्रिया प्राप्त कर सकता है । रूपसिद्धि में प्रयुक्त प्रत्येक सूत्र एवं वार्तिक हाईपरलिंक्ड होता है । जिस पर कर्सर ले जाने पर एक सूत्र अथवा वार्तिक का अर्थ प्रकट होता है एवं क्लिक करने पर एक नए वेबपेज पर उसकी सम्पूर्ण व्याख्या प्रदर्शित की होती है । इस सिस्टम के निर्माण में उदाहरण एवं नियम विधि का उपयोग किया गया है[38] । इसी कड़ी में संस्कृत-तिङन्तरूप सिद्धि प्रक्रिया (Kumar, 2019), क्रियापदों की रूपसिद्धि के विकसित किया गया है[39], जिससे भ्वादिगणस्थ धातुओं के दस लकारों में ससूत्र क्रियारूपसिद्धि को सरलता से सीखा जा सकता है । संस्कृत स्त्रीप्रत्ययान्तशब्द रूपसिद्धि प्रक्रिया (Upreti, 2019) के माध्यम से स्त्रीप्रत्ययान्त शब्दों की ससूत्र रूपसिद्धि प्रक्रिया को आसानी से सीखा जा सकता है[40] । संस्कृत ग्रन्थों के अर्थ को समझने के लिए सन्धि विच्छेद करना आवश्यक होता है । अतः सन्धि के ज्ञान के लिए ससूत्र सिद्धि प्रक्रिया के लिए भी सिस्टम विकसित किया गया है[41]। संस्कृत साहित्य में कृदन्त पदों का प्रयोग बहुलता से दिखाई पड़ता है । अतः इसके ज्ञान के लिए भी कृदन्तरूपसिद्धिप्रक्रिया[42] सिस्टम का विकास किया गया है जिसके माध्यम से आसानी से इनका ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है । ई-लर्निंग उपक्रम के अन्तर्गत संस्कृत छन्दसूचना तन्त्र (मीना, 2016) का निर्माण उल्लेखनीय है । इस सिस्टम की सहायता से दिल्ली विश्वविद्यालय के बी.ए.

[37] http://cl.sanskrit.du.ac.in
[38] http://cl.sanskrit.du.ac.in/supSiddhi
[39] http://cl.sanskrit.du.ac.in/tinSiddhi
[40] http://cl.sanskrit.du.ac.in/stri
[41] http://cl.sanskrit.du.ac.in/LearnSandhi
[42] http://cl.sanskrit.du.ac.in/kritSiddhi

पाठ्यक्रम में सम्मिलित सभी छन्दों के उदाहरण सहित नियम और पहचान का ज्ञान बडी सरलता से प्राप्त किया जा सकता है।

संस्कृत साहित्य में किसी भी शब्द को खोजना एक दुष्कर कार्य है। अतः इसी कार्य को आसान करने के लिए संस्कृत साहित्य के लिए ऑनलाइन अनुक्रमणिकाओं का विकास भी किया गया है। जिसके तहत वेब आधरित ऋग्वेदीय खोज एवं अनुक्रमणिका तंत्र का विकास (कुमार, 2015) नामक टूल के माध्यम से ऋग्वेद के किसी भी मन्त्र को देवता, ऋषि, मण्डल आदि क्रम में खोजा जा सकता है[43]। पौराणिक सर्च (Chandra & Anju, 2017) के द्वारा उपलब्ध पुराणों से सम्बन्धित सूचनाएं निकाली जा सकती हैं[44]। अभी यह सिस्टम अग्निपुराण तक सीमित है। बाद में इसमें अन्य पुराणों से सम्बन्धित खोज भी की जा सकेगी। आधुनिक युग में प्रायः धर्मशास्त्रीय अवधारणाएं किसी न किसी रूप में विवादास्पद रूप में प्रस्तुत की जा रहीं हैं। इसका प्रमुख कारण है कि हमें धर्मशास्त्रीय अवधारणाओं का पूर्ण ज्ञान नहीं है। हम आंशिक ज्ञान के आधार पर उसकी आलोचना करते हैं। इसी को ध्यान में रखते हुए धर्मशास्त्रीय अवधारणाओं के पूर्ण ज्ञान के लिए ऑनलाइन सिस्टम का निर्माण भी किया जा रहा है। जिसके माध्यम से हम किसी भी अवधारणा से सम्बन्धित सन्दर्भ सहित एवं हिन्दी-अंग्रेजी अनुवाद के साथ सम्पूर्ण सूचना सिंगल क्लिक के माध्यम से ऑनलाइन प्राप्त कर सकते हैं[45]।

इस विभाग द्वारा विकसित अन्य टूल्स सनाद्यन्त विश्लेषक (कुमार एवं चन्द्रा, 2015; कुमार, 2018), मशीनी अनुवाद हेतु तद्धित विश्लेषक (साक्षी, 2018), भारतीय भाषा लिप्यन्तरण (Chandra, Kumar & Anju) आदि प्रमुख हैं।

उपरोक्त सर्वेक्षण के आधार पर कहा जा सकता है कि संगणकीय भाषाविज्ञान से सम्बन्धित अनेक कार्य हो चुके हैं एवं अनेक प्रगति पर भी हैं। दर्शन से सम्बन्धित भी कुछ न कुछ कोशों का भी निर्माण किया गया है। परन्तु साङ्ख्य-योग दर्शन के पारिभाषिक शब्दों पर इस प्रकार का कोई भी सिस्टम दृष्टिगोचर नहीं होता है। ई-लर्निंग के क्षेत्र में दार्शनिक रूप में प्राप्त होने वाला एवं विस्तृत रूप में जानकारी देने वाला इसे एकमात्र सिस्टम कहा जा सकता है। प्रस्तुत ऑनलाइन ग्लोसरी रूप सिस्टम के द्वारा साङ्ख्य-योग दर्शन के पारिभाषिक शब्दों का विश्लेषणात्मक ज्ञान तुरन्त प्राप्त

[43] http://cl.sanskrit.du.ac.in/rveda
[44] http://cl.sanskrit.du.ac.in/purana
[45] http://cl.sanskrit.du.ac.in/manu

किया जा सकता है। साङ्ख्य-योग दर्शन पर आधारित इस सिस्टम का विस्तार से विवेचन पञ्चम अध्याय में किया गया है। यह कार्य अभी केवल भारतीय दर्शन के दो ही दर्शनों पर आधारित है। अग्रिम कार्य अन्य दर्शनों पर भी किया जा सकता है।

तृतीय अध्याय

साङ्ख्य दर्शन के पारिभाषिक शब्दों का विश्लेषण

Analysis of Technical Terms of Sāṅkhya Philosophy

कोश का महत्त्व प्राचीन काल से रहा है । जिस प्रकार राजा को सुचारू रूप से राज्य के पालन-पोषण हेतु राजकोष की आवश्यकता होती है । उसी प्रकार एक ग्रन्थ के लिये शब्दकोश महत्त्वपूर्ण है । जिसका व्यवहार की दृष्टि से प्रत्येक क्षेत्र में अपना अर्थ और भाव होता है । जैसे राजा के लिये उसका कोश से तात्पर्य धन से है । पाकशाला में कोष का अर्थ बर्तन है । इस प्रकार अन्य क्षेत्रों में भी इसका प्रयोग भिन्न-भिन्न अर्थों में प्रचलित है । किन्तु इस शब्द का व्यापक रूप वाङ्मय में दृष्टिगोचर होता है । भाषा, विषय या व्यक्ति के द्वारा प्रयोग किये गये शब्दों के समुच्चय को शब्दसंग्रह कहा जाता है और जिस ग्रन्थ में ये एकत्रित शब्द (शब्दसंग्रह) स्थापित किये जाते है उन्हें कोश ग्रन्थ कहा है (Apte, 2017) । इसकी सहायता से तत्तत् विषय अथवा ग्रन्थ का सरलता पूर्वक अध्ययन किया जा सकता है । इसी दृष्टि को ध्यान में रखते हुये साङ्ख्यदर्शन के सम्यक् अध्ययन हेतु कुछ शब्दों का संग्रह किया है । इन शब्दों के ज्ञान के लिये परिभाषा की अपेक्षा रहती है । इसलिये इन शब्दों को पारिभाषिक शब्दों की श्रेणी में रखा गया है । सम्पूर्ण साङ्ख्यदर्शन, प्रकरण एवं भाष्यग्रन्थों से 100 मुख्य पारिभाषिक शब्दों का संकलन किया है ।

1. साङ्ख्यदर्शन के पारिभाषिक शब्दों का संकलन (Collection of Technical Terms of Sāṅkhya Philosophy)

प्रत्येक शास्त्र की अवधारणाओं को व्यक्त करने के लिये तकनीकी शब्दों का प्रयोग किया जाता है । ऐसे शब्द जिनको समझने के लिये विशिष्ट व्याख्या की अपेक्षा होती हैं । ऐसे शब्दों के ज्ञान के बिना तत्सम्बन्धी शास्त्र का सम्यक् रूप से अध्ययन कर पाना कठिन हो जाता है । इसी प्रकार की समस्या साङ्ख्य दर्शन का अध्ययन करते समय भी दृष्टिगोचर होती है । जिसके समाधान

के लिए विद्वानों ने साङ्ख्य दर्शन से सम्बन्धित ग्रन्थों से ऐसे शब्दों का संकलन करके उनकी समुचित व्याख्या प्रस्तुत की । इन्हीं को पारिभाषिक कोश के नाम से जाना जाता है । अभी तक साङ्ख्य दर्शन से सम्बन्धित जितने भी परिभाषा कोश प्राप्त होते हैं वे सब प्रकाशित पुस्तक के रूप में उपलब्ध हैं एवं इसकी विस्तृत व्याख्या/ विश्लेषण के रूप में नहीं है । सूचना प्रौद्योगिकी के इस युग में किसी भी विषय पर तात्कालिक सूचनाएँ प्राप्त करने की अपेक्षा होती है । साङ्ख्य दर्शन भी इससे अछूता नहीं है । अतः इसी समस्या को ध्यान में रखते हुए प्रस्तुत शोध के द्वारा साङ्ख्य-योग सम्बन्धी तकनीकी शब्दों के लिये विस्तृत व्याख्या, विश्लेषण, विभिन्न मूल ग्रन्थों से सन्दर्भ के साथ ई-परिभाषा कोश का निर्माण किया गया है । इसी उद्देश्य को पूरा करने के लिये साङ्ख्य दर्शन से 100 पारिभाषिक शब्दों का संकलन एवं उनका विस्तृत विश्लेषण निम्नलिखित प्रारूप में किया गया है –

1. पारिभाषिक शब्द के रूप में मूल शब्द को ही एकत्रित किया है ।
2. एकत्रित शब्दों को एक सुव्यवस्थित रूप से रखने के लिये उन शब्दों को अकार आदि क्रम से रखा गया है, जिससे शब्द को खोजने में सरलता का अनुभव हो सके ।
3. मूल तथा प्रकरण ग्रन्थों से प्राप्त प्रत्येक पारिभाषिक शब्द का लक्षण भी प्रस्तुत किया गया है । साथ ही साथ उसका अनुवाद भी दिया गया है ।
4. सभी प्रामाणिक तथा उचित तथ्यों का समावेश किया है ।
5. कुछ शब्द जिनका प्रयोग ग्रन्थ में पुनः पुनः है उन सभी का एकत्रित रूप से विश्लेषण किया है तथा विश्लेषण के मध्य साङ्ख्य के अतिरिक्त अन्य ग्रन्थों में उपलब्ध तथ्यों का भी समावेश किया है ।

2. साङ्ख्यदर्शन के पारिभाषिक शब्दों के संकलन का आधार (Basis of Technical Terms collection of Sāṅkhya Philosophy)

कपिल मुनि द्वारा रचित साङ्ख्यसूत्र में 527 सूत्रों का समावेश किया है, जो छः अध्यायों में विभक्त हैं । साङ्ख्यसूत्र जिस पर अनेक भाष्य, टीकाएँ तथा प्रकरण ग्रन्थ प्राप्त होते हैं, जिनका वर्णन प्रथम अध्याय में किया जा चुका है । साङ्ख्यदर्शन के पारिभाषिक शब्दों के संग्रह हेतु निम्नलिखित ग्रन्थों को आधार बनाया गया है ।

1. साङ्ख्यसूत्र - कपिल मुनि द्वारा प्रणीत 527 सूत्रों में निबद्ध साङ्ख्यसूत्र साङ्ख्य दर्शन का मूल ग्रन्थ है । इस पर अनेक भाष्य, टीकाएँ एवं व्याख्याएँ लिखी गयी है । पारिभाषिक शब्दों को संग्रहीत करने एवं उनका विश्लेषण करने के लिये डॉ. गजानन शास्त्री मुसलगाँवकर (2013) एवं आचार्य उदयवीर शास्त्री (2017) की सहायता ली गई है।

2. साङ्ख्यप्रवचनभाष्य - साङ्ख्यसूत्र पर लिखित भाष्यों में विज्ञानभिक्षु द्वारा रचित साङ्ख्यप्रवचन भाष्य अत्यन्त महत्त्वपूर्ण भाष्य माना जाता है। इसके मूल एवं हिन्दी अर्थ के लिये डॉ. गजानन शास्त्री मुसलगाँवकर (2013) की सहायता ली है।

3. साङ्ख्यकारिका – साङ्ख्य दर्शन पर प्राप्त शास्त्रीय ग्रन्थों में ईश्वरकृष्ण द्वारा रचित साङ्ख्यकारिका प्राचीनतम एवं प्रतिनिधि ग्रन्थ माना जाता है। निरीश्वर साङ्ख्य के प्रतिपादन की दृष्टि से इसे आद्य ग्रन्थ स्वीकार किया जा सकता है । इसके लिये डॉ. राकेश शास्त्री (2004) एवं आचार्य जगन्नाथ शास्त्री (2017) की सहायता ली है

उपरोक्त ग्रन्थों के आधार पर ही प्रत्येक शब्द का विश्लेषण भी प्रस्तुत किया गया है। कुछ शब्द तीनों आधारित ग्रन्थों में उपलब्ध होते हैं तथा कुछ शब्द केवल साङ्ख्यकारिका में ही प्राप्त होते हैं, जिनका वर्णन साङ्ख्यसूत्र एवं साङ्ख्यप्रवचनभाष्य में प्राप्त नहीं होता है और कुछ शब्दों की चर्चा केवल साङ्ख्यसूत्र एवं भाष्य में ही उपलब्ध होती है, ऐसे शब्द साङ्ख्यकारिका में दृष्टिगोचर नहीं होते हैं। शब्द संकलन के लिये इन सब तथ्यों को ही आधार बनाया गया है।

3. साङ्ख्यदर्शन के प्रमुख ग्रन्थ एवं उनके लेखकों का परिचय (Introduction of Main Texts of Sāṅkhya Philosophy and their Writers)

साङ्ख्य दर्शन से सम्बन्धित पारिभाषिक शब्दों के चयन एवं विश्लेषण हेतु तीन प्रमुख ग्रन्थों को आधार बनाया गया है जो इस प्रकार है -

3.1 साङ्ख्यसूत्र एवं आचार्य कपिल का परिचय

प्रत्येक दर्शन का मुख्य उद्देश्य मोक्ष प्राप्त करना होता है। साङ्ख्यदर्शन के अनुसार मोक्ष की प्राप्ति तत्त्वज्ञान के द्वारा बताई गई है। साङ्ख्यदर्शन का मूलग्रन्थ साङ्ख्यसूत्र को माना जाता है। इसलिये पारिभाषिक शब्दों को एकत्रित करने के लिये सर्वप्रथम साङ्ख्यसूत्र को आधार ग्रन्थ के रूप में चयनित किया गया है। कपिल मुनि द्वारा विरचित यह दर्शन अत्यन्त प्राचीन है। जिसकी विवेचना प्रथम अध्याय में विस्तृत रूप से की गयी है। अतः यहाँ पुनः वर्णन करना उचित प्रतीत नहीं होता है।

साङ्ख्यदर्शन के प्रवर्तक महर्षि कपिल प्राचीन भारत के अत्यन्त विद्वान् एवं प्रभावशाली मुनि थे। इन्हें प्राचीन ऋषि भी कहा गया है। भगवद्गीता में इन्हें श्रेष्ठ मुनि से सम्बोधित किया गया है। श्रीमद्भागवत पुराण (3/24) के अनुसार इनके पिता का नाम कर्दम ऋषि और माता का नाम मनु पुत्री देवहूति था। इन्होंने अपनी माता देवहूति को साङ्ख्यज्ञान का उपदेश दिया। जिसका विशद वर्णन श्रीमद्भागवत के तीसरे स्कंध में प्राप्त होता है। ऐसा माना जाता है कि ये भगवान विष्णु के पाँचवे अवतार थे। इनको 'आदिसिद्ध' और 'आदिविद्वान्' कहा जाता है क्योंकि जन्म से ही इन्हें सारी सिद्धियाँ प्राप्त थीं। इनके अनुसार संसार का कर्त्ता कोई अतिप्राकृतिक शक्ति नहीं है अपितु संसार एक स्वभाविक गति से उत्पन्न हुआ है। श्री राम शर्मा आचार्य (1997) के अनुसार महर्षि कपिल ने स्वकीय साङ्ख्यसिद्धान्तों का आधार वेद को माना है एवं कई स्थानों पर यह सम्पुटित भी कर दिया है। कपिल के मतानुसार वेदों की उत्पत्ति ईश्वरीय ज्ञान से हुई है। अतः वेदों के कथन को प्रमाण मानना चाहिए। किन्तु मतभेद होने के कारण कुछ लोग इनको अनीश्वरवादी स्वीकार करते हैं। मैक्समूलर (Garbe, 1896), कोलब्रुक, कीथ (Keith, 2012), जैकोबी, प्रो. रानाडे (Ranade, 2016), पुलिन बिहारी चक्रवर्ती (Chakravarti, 1975), पं. गोपीनाथ कविराज, डॉ. हरदत्त शर्मा आदि विद्वान् कपिल को ऐतिहासिक व्यक्ति नहीं मानते हैं। किन्तु गार्वे नामक विद्वान् तथा प्रसिद्ध दार्शनिक विद्वान् डॉ. राधाकृष्णन् ने साङ्ख्यदर्शन के कर्त्ता कपिल को ऐतिहासिक व्यक्ति के रूप में स्वीकार किया है। भारतीय इतिहास में कपिल नामक कई व्यक्ति हुए हैं जैसे- कपिलवस्तु को बसाने वाले कपिल, प्रह्लादपुत्र असुर कपिल, विश्वामित्रपुत्र

कपिल, उपपुराणकार कपिल, धर्मस्मृतिकार कपिल आदि। परन्तु इनमें से कोई भी साङ्ख्यप्रवर्तक कपिल नहीं है। पुराणों के अनुसार कपिल को अग्नि का अवतार और ब्रह्मा का मानसपुत्र भी माना गया है। डॉ. कीथ के अनुसार कपिल पद हिरण्यगर्भ का पर्याय है। कपिल एक काल्पनिक व्यक्ति का नाम है। अग्नि, विष्णु, शिव आदि के साथ हिरण्यगर्भ (कपिल) की एकात्मकता का वर्णन संस्कृत साहित्य में प्राप्त होता है। इसलिये कहा जा सकता है कि साङ्ख्यप्रवर्तक कपिल नामक कोई व्यक्ति पृथ्वी पर अवतीर्ण ही नहीं हुए (Keith, 2012)। पं. गोपीनाथ कविराज ने भी स्वलिखित भूमिका (जयमंगला टीका) में कपिल के ऐतिहासिक व्यक्ति होने पर सन्देह व्यक्त किया है[1]।

श्वेताश्वतरोपनिषत्[2] में कपिल शब्द का उल्लेख मिलता है। श्रीमच्छङ्कराचार्य का इस विषय में मत है कि 'ऋषिप्रसूतं कपिलं' इत्यादि मन्त्र में कपिल को साङ्ख्यप्रवर्तक के रूप में स्वीकार न करके केवल सामान्य शब्द के रूप में माना है। केवल शब्दमात्रोल्लेख से अवैदिक कपिल का बोध करना उचित नहीं है[3]। क्योंकि श्रुति में आये कपिल शब्द का अर्थ श्रीमच्छङ्कराचार्य हिरण्यगर्भ (सुवर्ण सदृश कपिल वर्ण या कनक वर्ण[4]) करते हैं। सृष्टि के आदिकाल में विष्णु के अवतार कपिल मुनि हुए। जो साङ्ख्यदर्शन से सम्बन्धित थे। महाभारत में कपिल का वर्णन शान्तिपर्व एवं वनपर्व में प्राप्त होता है। सगरोपाख्यान में कपिल को वासुदेव कहा गया है[5]। कपिल मुनि द्वारा राजा सगर के 60 हजार पुत्रों को भस्म करने वाला उपाख्यान वाल्मीकि रामायण में विस्तृत रूप से वर्णित है। रामायण में कपिल के लिए वासुदेव एवं सनातन जैसे विशेषण का प्रयोग हुआ है[6]। विष्णुपुराण[7], वायुपुराण[8], पद्मपुराण (सृष्टिखण्ड)[9] तथा स्कन्दपुराण (रेवाखण्ड) [10] में

---

[1] पं. गोपीनाथ कविराज, जयमंगला टीका, सांख्यकारिका, पृ. 2-3

[2] ऋषिप्रसूतं कपिलं यस्तमग्रे (श्वेताश्वतरोपनिषद्, मंत्र 5/2 उत्तरार्द्ध)

[3] यास्तु श्रुति कपिलस्य ज्ञानातिशयं प्रदर्शयन्ती प्रदर्शिता न तया श्रुतिविरुद्धमपि कपिल मत श्रद्धातुं शक्यम्। 2.1.1 ब्रह्मसूत्र शाङ्करभाष्य।

[4] कपिल कनककपिलवर्णं प्रसूत स्वेनोवापादित हिरण्यगर्भ जनयामास पूर्वम्, श्वेताश्वतरोपनिषत्, 5/2 शाङ्करभाष्य।

[5] वासुदेवेति य प्राहु कपिल। वनपर्व – 1/7/32 पूर्वार्द्ध।

[6] कपिल तत्र वासुदेव। (वाल्मीकि रामायण – बालकाण्ड 40/25)

[7] कपिलर्षिर्भगवतः सर्व्वभूतस्य वै द्विज। विष्णोरंशो जगन्मोहनाशायोर्वीमुपागतः॥ विष्णुपुराण (2.14.9)

[8] विष्णुर्कपिलरूपेण हस नारायणम् प्रभुम्। वायुपुराण – 88/143-147

[9] पद्मपुराण – 8/147-2/ 6 -25

स्पष्ट शब्दों में कपिलमुनि को भगवान् विष्णु का अंश स्वीकार किया है और इन्हीं कपिलमुनि को साङ्ख्य दर्शन का प्रवर्त्तक माना गया है (शास्त्री, 1950)।

समय और स्थान

इनके समय और जन्मस्थान के विषय में निश्चित रूप से नहीं कहा जा सकता है। कुछ इतिहासकारों के अनुसार कपिल मुनि का समय आज से लगभग 6000 वर्ष पूर्व है। प्रो. विन्टरनित्ज एवं डॉ. राधाकृष्णन् (राधाकृष्णन्, 2015) के अनुसार साङ्ख्य की रचना बुद्ध से पूर्व हो चुकी थी (Winternitz, 1996)। महात्मा बुद्ध की जन्मभूमि कपिलवस्तु है। जो कपिल के नाम पर बसा नगर था। कपिल का जन्मस्थान संभवत: कपिलवस्तु और तपस्याक्षेत्र गंगासागर था। इससे यह अनुमान लगाया जा सकता है कि कपिल महात्मा बुद्ध से पूर्व अस्तित्व में थे। यदि कपिल के शिष्य आसुरि और शतपथ ब्राह्मण में प्राप्त आसुरि इन दोनों को एक ही मानें तो कहा जा सकता है कि ब्राह्मणकाल में कपिल विद्यमान रहे होंगे। इस आधार पर कपिल का समय 700 वर्ष ई.पू. माना जा सकता है।

कपिल द्वारा रचित कृतियां

कपिल मुनि के नाम से कई ग्रंथ उपलब्ध हैं - साङ्ख्यसूत्र, तत्वसमास, व्यासप्रभाकर, कपिलगीता, कपिलपंचराम, कपिलस्तोभ और कपिलस्मृति। किन्तु साङ्ख्यदर्शन के रचनाकार कपिल द्वारा केवल साङ्ख्यसूत्र और तत्वसमाससूत्र नामक दो ही कृतियाँ मानी जाती हैं। तत्वसमाससूत्र अत्यन्त छोटा ग्रन्थ है। उसमें सूत्र छोटे और सरल हैं (मुसलगावकर, 1987)।

3.2. साङ्ख्यप्रवचनभाष्य एवं आचार्य विज्ञानभिक्षु

साङ्ख्यप्रवचनभाष्य साङ्ख्यदर्शन के मूलग्रन्थ साङ्ख्यसूत्र पर आचार्य विज्ञानभिक्षु द्वारा रचित भाष्य है। इसका समय 16वीं ईसवीं स्वीकार किया गया है। जब साङ्ख्यदर्शन प्रायः लुप्त होने लगा था तब विज्ञानभिक्षु ने साङ्ख्यप्रवचन नामक भाष्य की रचना कर प्रत्येक जनमानस के मस्तिष्क में साङ्ख्य के प्रति रूचि प्रकट करने का प्रयास किया। जो लोग साङ्ख्य को अनीश्वरवादी

[10] स्कन्दपुराण – 175/2-7

मानकर नकारते थे, उनको प्रत्युत्तर देते हुये विज्ञानभिक्षु ने सिद्ध किया कि साङ्ख्य ईश्वर के अस्तित्त्व को स्वीकार करता है (श्रीवास्तव्य, 1969)।

विज्ञानभिक्षु भारतीय दर्शन के विद्वान् हैं। उनके नाम में प्रयुक्त 'भिक्षु' शब्द उनके बौद्ध धर्म के अनुयायी होने का द्योतक नहीं है अपितु भिक्षु उनके नाम का ही अंग है। इस शब्द से इन्हें सन्यासी भी नहीं समझना चाहिए। विज्ञानभिक्षु का समय विद्वानों के द्वारा 16वीं शताब्दी के मध्य में माना जाता है। साङ्ख्यमत को पुन: प्रतिष्ठित करने का श्रेय इन्हीं को जाता है। ये साङ्ख्यदर्शन के अन्तिम आचार्य माने जाते हैं (श्रीवास्तव्य, 1969)। इनके द्वारा ही ईश्वर का समावेश किया गया तथा साङ्ख्यदर्शन पर लगे अवैदिकता के आक्षेप का भी सफलता पूर्वक निराकरण किया। उपनिषद् और पुराण के युग में भी लुप्त हुये साङ्ख्य और वेदान्त में सामंजस्य स्थापित करने का प्रयास करते रहे थे। क्योंकि वे वेदान्तदर्शन के प्रति भी आस्था रखते थे। विज्ञानभिक्षु के द्वारा ही साङ्ख्यदर्शन की परंपरा में सर्वप्रथम साङ्ख्यमत को श्रुति और स्मृतिसम्मत रूप में प्रस्तुत किया गया है।

समय और स्थान

पं. उदयवीर शास्त्री आदि विद्वानों ने विभिन्न समीचीन तर्कों के द्वारा उनका समय 14 शताब्दी ईसवीं बताया है[11] (Hasurkar, 1958)। आधुनिक योगशास्त्र के लब्धप्रतिष्ठित विद्वान् रामशंकर भट्टाचार्य (1964) भी इसे सम्यक् मानते हैं[12]। श्री पी. डी. गोडे ने हाल, गार्वे (Garvey), विंटरनित्स (Winternitz), दासगुप्ता (1550 ई.), कीथ (Keith) (1650 ई.), आदि विद्वानों के साक्ष्यों एवं मतों का विवेचन करके विज्ञानभिक्षु का काल 1525 – 1580 ई. के बीच सिद्ध किया है (शास्त्री, 1900)। उपलब्ध तथ्यों के आधार पर इनका समय 16वीं शताब्दी का पूर्वार्द्ध स्वीकार किया जा सकता है।

---

[11] Vachaspati's greatness as profound and original thinker, an erudite scholar and versatile philosopher - Dr. S.S. Hasurkar, Vachaspati Mishra on Advaita Vedanta, p-143, Mithila Institute Darbhanga – 1958.

[12] पातञ्जल योगदर्शनम्, भूमिका, पृ.73

विज्ञानभिक्षु की कृतियाँ

विज्ञानभिक्षु एक प्रकार से साङ्ख्य के अंतिम आचार्य हैं । इन्होंने ही साङ्ख्यमत में ईश्वरवाद का समावेश किया था। इन्होंने तीन दर्शनों पर भाष्य-ग्रंथ लिखे हैं - साङ्ख्यप्रवचनभाष्य (साङ्ख्यसूत्र पर), योगवार्तिक (व्यासभाष्य पर) और ब्रह्मसूत्र पर "विज्ञानामृतभाष्य" । इस प्रकार इन्होंने साङ्ख्य, योग एवं वेदान्त तीनों दर्शनों पर भाष्यलेखन कार्य किया है । 'साङ्ख्यसार' लिखकर साङ्ख्यदर्शन के और 'योगसार' लिखकर योगदर्शन के सिद्धान्तों को सरल एवं संक्षिप्त रूप में प्रतिपादित किया है । इन्होंने साङ्ख्य एवं वेदान्त दर्शन के बीच सामंजस्य स्थापित किया है । 'तत्त्वयाथार्थ्यदीपन' का लेखक भावगणेश विज्ञानभिक्षु का ही शिष्य था। विज्ञानभिक्षु पूरे औचित्य के साथ साङ्ख्यसूत्र पर अपना भाष्य प्रस्तुत करते हुए कहते हैं कि साङ्ख्य 'कालभक्षित' हो गया था (श्रीवास्तव्य, 1969) । इस तंत्रप्रणाली को पुन: पुनर्जीवित करने के लिए ही वे प्रयत्नशील रहे हैं। विज्ञानभिक्षु वेदान्त के प्रति भी आस्थाशील थे, 'विज्ञानामृत' नाम से ब्रह्मसूत्र पर उनका भाष्य इस तथ्य को प्रमाणित करता है । विज्ञानभिक्षु का योगवार्तिक ग्रन्थ उनके साङ्ख्यभाष्य के पश्चात् लिखा गया है, ऐसा उनके वार्तिक ग्रन्थ में सूत्र संख्या (2/22) तथा (3/55) से ज्ञात होता है ।

उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध तक संस्कृत विषयों के जो मूलग्रन्थ प्राप्त होते हैं उनकी सूचियां भारत के विभिन्न प्रान्तों में विद्यमान थीं । उन सभी सूचियों का संकलन कर डा. आफ्रेक्ट-महोदय ने तीन भागों में बृहत् सूची को प्रकाशित किया । उस सूची का नाम 'कैटलोगस् कैटलोगरम्' है । यह बृहत्सूची क्रमशः वर्ष 1891, 1896 एवं 1903 में लिपजिंग से प्रकाशित हुई[13] । इसी के अन्तर्गत आफ्रेक्ट ने विज्ञानभिक्षु द्वारा लिखित ग्रन्थों की संख्या 18 बताई है । जिनका नामोल्लेख अधोलिखित है –

1. आदेशरत्नमाला (इसे उपदेशरत्नमाला भी कहते हैं) ।
2. ईश्वरगीताभाष्यम् ।

[13] https://sa.wikipedia.org/wiki/मातृकाग्रन्थः

3. कठवल्ल्युपनिषदालोकः ।
4. कैवल्योपनिषदालोकः ।
5. पातञ्जलजलभाष्यवार्तिकम्/योगवार्तिकम् ।
6. प्रश्नोपनिषदालोकः ।
7. ब्रह्मादर्शः ।
8. भगवद्गीताटीका ।
9. माण्डूक्योपनिषदालोकः ।
10. मुण्डकोपनिषदालोकः ।
11. योगसारसंग्रहः ।
12. विज्ञानामृतम्/ब्रह्मसूत्रव्याख्या ।
13. वेदान्तालोकः (उपनिषदों की व्याख्या) [14] (श्रीवास्तव्य, 1969) ।
14. श्वेताश्वतरोपनिषदालोकः ।
15. साङ्ख्यकारिकाभाष्यम् ।
16. साङ्ख्यप्रवचनभाष्यम् ।
17. साङ्ख्यसार-विवेकः ।
18. भिक्षुवार्तिकम् ।

3.3 साङ्ख्यकारिका एवं ईश्वरकृष्ण

संस्कृत के एक विशेष प्रकार के श्लोकों को "कारिका" कहा जाता है । किसी भी शास्त्र में कारिका उन श्लोकों को कहा जाता है जो छन्दबद्ध होते हैं तथा जिनमें थोड़े से ही शब्दों में बहुत से शास्त्रार्थ व्यक्त कर दिये जाते हैं एवं सूत्र के रूप में अनेक बातों को एक साथ कहने की इसमें सुविधा होती है । इस प्रकार कारिकाओं में लिखे गये साहित्य को कारिकासाहित्य कहा जाता है। जिनमें से साङ्ख्यकारिका, साङ्ख्यदर्शन का बहुत ही महत्त्वपूर्ण एवं लोकप्रिय प्रकरण ग्रन्थ है । साङ्ख्यदर्शन

[14] श्री सुरेशचन्द्र श्रीवास्तव्य का कहना है कि आठ उपनिषदों की व्याख्या का सामूहिक नाम ही वेदान्तमाला है । इसलिये इनका पृथक् नामनिर्देश उचित नहीं है । और सांख्याकारिकाभाष्य एवं भिक्षुवार्तिक विज्ञानभिक्षु की कृति नहीं हैं क्योंकि इनका कोई प्रमाण नहीं मिलता है । (विज्ञानभिक्षु और भारतीय दर्शन में उनका स्थान, पृ. 49)

के ग्रन्थों की चर्चा करे तो लगभग सभी व्याख्या ग्रन्थ ही हैं। मूलग्रन्थ के रूप में केवल तीन ही प्राप्त होते हैं – साङ्ख्यसूत्र, तत्त्वसमास एवं साङ्ख्यकारिका । ईश्वरकृष्ण कृत 'साङ्ख्यकारिका' साङ्ख्यदर्शन का प्रमुख प्रतिनिधि प्रकरण ग्रन्थ माना जाता है । इसमें आर्या छन्द में निबद्ध 72 कारिका हैं परन्तु अन्तिम 3 श्लोक को प्रक्षिप्त कहा गया है (शास्त्री, 2004)।

साङ्ख्यकारिका पर रचित ग्रन्थ

साङ्ख्यकारिका पर विभिन्न विद्वानों द्वारा अनेक टीकाएँ लिखी गयीं हैं । जिनमें युक्तिदीपिका, गौड़पादभाष्यम्, जयमंगला, तत्वकौमुदी, नारायणकृत साङ्ख्यचन्द्रिका आदि प्रमुख हैं। सबसे प्राचीन भाष्य गौड़पाद द्वारा रचित गौड़पादभाष्य है तथा दूसरा महत्वपूर्ण भाष्य वाचस्पति मिश्र द्वारा रचित साङ्ख्यतत्वकौमुदी है । साङ्ख्यकारिका पर चीनी भाषा में भी अनुवाद छठी शताब्दी में हुआ और सन् 1832 में क्रिश्चियन लासेन (Christian Lassen)[15] ने इसका लैटिन में अनुवाद किया । एच. टी. कोलब्रुक (H.T.Colebrooke) (2012) ने इसका सर्वप्रथम अंग्रेजी में रूपान्तरण किया। ईसा की चौदहवीं शताब्दी के आचार्य तथा शङ्कर आदि आचार्यों ने तत्त्वसमास या साङ्ख्यसूत्र को अपने ग्रन्थों में उद्धृत न करके साङ्ख्यकारिका को ही उद्धृत किया है । इस प्रकार ईश्वरकृष्ण की 'साङ्ख्यकारिका' साङ्ख्यदर्शन का प्रमुख प्रतिनिधि प्रकरण ग्रन्थ के रूप में प्रसिद्ध है।

समय और स्थान

साङ्ख्यकारिका के कालनिर्धारण के विषय में निश्चित प्रमाण के अभाव में मतभेद प्राप्त होते हैं। किन्तु बहुमत से ई. तृतीय शताब्दी के मध्य काल माना जाता है। वस्तुत: इनका समय इससे पर्याप्त पूर्व का प्रतीत होता है (शास्त्री, 2004)।

ईश्वरकृष्ण ने साङ्ख्यशास्त्र पर साङ्ख्यकारिका नामक एक प्रकरणग्रन्थ लिखा है । इनको साङ्ख्य का प्रधान दार्शनिक माना जाता है। ईश्वरकृष्ण को साङ्ख्य के प्रधान दार्शनिक के रूप में स्मरण किया जाता है। उनका प्रकरण ग्रन्थ 'साङ्ख्यकारिका' को साङ्ख्य का प्रामाणिक

[15] https://theodora.com/encyclopedia/l/christian_lassen.html

और प्राचीन ग्रंथ माना जाता है । जिस पर माठरवृत्ति, गौड़पादभाष्य, युक्तिदीपिका आदि अनेक टीकाएं उपलब्ध होती हैं । इनके जीवन के विषय में प्रायः किसी भी प्रकार की कोई ठोस जानकारी प्राप्त नहीं होती है । साङ्ख्यकारिका की अन्तिम तीन कारिकाओं[16] में ईश्वरकृष्ण ने अपनी गुरुपरम्परा का उल्लेख किया है परन्तु स्वयं के माता-पिता, जन्मस्थान आदि का कोई संकेत नहीं दिया है (शास्त्री, 2004) । यह मूलत: साङ्ख्यदर्शन में ईश्वर की अवधारणा को स्वीकार नहीं करते हैं तथा अनीश्वरवादी हैं । इनके अनुसार केवल आध्यात्मिक, आधिदैविक, आधिभौतिक दु:खों से उनके निराकरण के उपायों की खोज आरम्भ होती है ।

ईश्वरकृष्ण एक प्रसिद्ध साङ्ख्य दर्शनकार हैं । किन्तु फिर भी इनका काल विवादग्रस्त है । डॉ. तकाकुसू के अनुसार उनका समय लगभग 450 ई. है । डॉ. विसेंट स्मिथ ने ईश्वरकृष्ण का समय 240 ई. के समीप स्वीकार किया है । डॉ. सुरेन्द्र नाथ दासगुप्ता ने ईश्वरकृष्ण के समय के विषय में चर्चा करते हुये 200 ई. निर्धारित किया है[17] (Dasgupta, 1975) । गार्बे ने 100 ई. स्वीकार किया है । डॉ. वेल्वल्कर (Dr.Velwalkar) इनका समय तृतीय शतक के मध्य में मानते हैं । डॉ. कीथ ने कहा है कि इनका समय 300 ई. से अधिक नहीं माना जा सकता है (Nair, 2005) । आचार्य बलदेव उपाध्याय ने इन्हें ईसा की प्रथम शताब्दी से पूर्व माना है[18] । उपर्युक्त सभी तथ्यों के आधार पर ईश्वरकृष्ण का समय ईसा पूर्व प्रथम शताब्दी स्वीकार करना उचित प्रतीत होता है ।

ईश्वरकृष्ण द्वारा रचित रचनाएँ

इनके द्वारा रचित केवल साङ्ख्यकारिका नामक एक ही कृति का प्रमाण प्राप्त होता है । इसके अतिरिक्त अन्य कोई जानकारी उपलब्ध नहीं होती है ।

---

[16] एतत् पवित्रमग्र्यं मुनिरासुरयेऽनुकम्पया प्रददौ । आसुरिरपि पञ्चशिखाय तेन बहुधाकृतं तन्त्रम् ॥ (सां.का. 70)
शिष्यपरम्परयागतमीश्वरकृष्णेन चैतदार्याभिः । सङ्क्षिप्तमार्यमतिना सम्यग्विज्ञाय सिद्धान्तम् ॥ (सां.का. 71)
सप्तत्यां किल येऽर्थास्तेऽर्थाः कृत्स्नस्य सृष्टितन्त्रस्य । आख्यायिकाविरहिताः परवादविवर्जिताश्चाऽपि ॥ (सां.का. 72)

[17] हिस्ट्री ऑफ इण्डियन फिलोसफी के खण्ड-1, पृष्ठ-218

[18] भारतीयदर्शन पृष्ट-254

4. साङ्ख्य दर्शन के पारिभाषिक शब्दों की सूची (List of Technical Terms of Sāṅkhya Philosophy)

साङ्ख्य दर्शन से 100 पारिभाषिक शब्दों का संकलन किया गया है। जिनकी यहाँ केवल सूची दी जा रही है। इनका विश्लेषण वेबतंत्र पर उपलब्ध है। चूंकि इस शोध का मुख्य उद्देश्य वेब आधारित तंत्र का निर्माण करना है इसलिये यहां पारिभाषिक शब्दों को एक तालिका के माध्यम से दर्शाया गया है जिससे ज्ञात हो सके कि साङ्ख्यदर्शन के किन शब्दों को सम्मिलित किया गया है।

अत्यन्तपुरुषार्थः	आवृत्तिः	देहः	भौतिकसर्गः
अदृष्टम्	आसनम्	ध्यानम्	मनः
अधिकारि	इन्द्रियवृत्तिः	ध्यानसिद्धिः	मुक्तिः
अधिष्ठानशरीरम्	उपरागः	नाशः	मुक्तोपभोगः
अध्यवसायः	ऐकभौतिक	निरोधः	रजस्
अनुमानम्	करणम्	निर्गुणत्वम्	रजोविशाला
अन्तःकरणम्	कर्मकर्तृविरोधः	पंचतन्मात्रम्	लिङ्गम्
अपवर्गः	कर्मनिमित्तः	पञ्चपर्वाविद्या	लिङ्गशरीरम्
अपुरुषार्थत्वम्	कर्मेन्द्रियः	पञ्चवायु	विपर्यय
अभिमानः	कार्यद्वयम्	पार	विपर्ययभेदाः
अमूलम्	कृतकृत्यता	पुरुषः	विमुक्तिश्रुतिः
अविवेकः	गुणाः	पुरुषबहुत्वम्	विवेकसिद्धिः
अविवेकनिमित्तः	चातुभौतिकम्	पुरुषार्थः	व्यक्तम्
अविशेषः	चिद्रूपः	पुरुषार्थत्वम्	व्याप्तिः
अविशेषापत्तिः	जगत्	प्रकृतिः	शब्दः
अव्यक्तम्	जड़व्यावृतः	प्रत्यक्षम्	सत्कार्यवाद
अशक्तिः	जीवत्वम्	प्रत्ययसर्गः	सत्त्वम्
अहङ्कारः	ज्ञानमीमांसा	प्रमा	सत्त्वविशाला
अहङ्कारधर्माः	तमस्	प्रमाणम्	सदसत्ख्यातिवाद

आतिवाहिकशरीरम्	तमोविशाला	प्रलयावस्था	सदुत्पत्तिः
आत्मलाभः	तुष्टिः	बन्धः	साक्षित्वम्
आधिदैविकम्	दार्ढ्यार्थम्	बाह्यकरणम्	सिद्धिः
आधिभौतिकम्	दिक्कालः	बुद्धिः	सृष्टिवैचित्र्यम्
आध्यात्मिकम्	दुःखम्	बुद्धीन्द्रियः	स्थूलशरीरम्
आप्तवचनम्	दृष्टम्	भोगदेशकाललाभः	स्वस्थः

तालिका 3.1: साङ्ख्य के पारिभाषिक शब्द

5. पारिभाषिक शब्दों के विश्लेषण का आधार (Basis for Analysis of Technical Terms)

प्रत्येक शब्द का अपना एक अर्थ होता है जिसे शाब्दिक अर्थ कहा जाता है। विश्लेषण के मध्य यथासम्भव प्रत्येक शब्द का सर्वप्रथम उनके शाब्दिक अर्थ की विवेचना की गयी है। तत्पश्चात् जिन शब्दों का व्याकरण की दृष्टि से व्युत्पत्ति लभ्य अर्थ प्राप्त होता है, उसे यथासम्भव प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है। पारिभाषिक शब्दों के साङ्ख्यसूत्र के अनुसार लक्षण तथा अर्थ प्रस्तुत किये हैं और यदि वह शब्द साङ्ख्यकारिका तथा साङ्ख्यप्रवचनभाष्य में भी उपलब्ध होते हैं तो उनके विचार भी विश्लेषण में एक साथ सम्मिलित किये गये हैं। किन्तु कुछ शब्द जो केवल साङ्ख्यकारिका में प्राप्त होते हैं उनका वर्णन साङ्ख्यप्रवचनभाष्य में प्राप्त नहीं होता है, तब इस अवस्था में शब्द का विश्लेषण उन्हीं के आधार पर किया गया है। जिन शब्दों की चर्चा अन्य दार्शनिक ग्रन्थों में उपलब्ध होती है, उनका भी समायोजन करने का प्रयास किया है। तथा जिन शब्दों के विश्लेषण के मध्य वाद-विवाद, शंका-समाधान आदि दृष्टिगोचर होते हैं वहाँ केवल संक्षेप में मूल तथ्यों को ही ग्रहण किया है।

6. पारिभाषिक शब्दों का विश्लेषणात्मक अध्ययन (Analytical Study of Terminology)

527 सूत्रों में निबद्ध साङ्ख्यदर्शन के केवल 100 पारिभाषिक शब्दों को ही विश्लेषण के लिये एकत्रित किया है क्योंकि साङ्ख्यदर्शन अत्यन्त सरल दार्शनिक ग्रन्थ है । यहाँ सभी का विश्लेषण प्रस्तुत करना सम्भव नहीं है । इसलिये यहाँ प्रारूप रूप में दस पारिभाषिक शब्दों का ही विश्लेषण प्रस्तुत किया जा रहा है । शेष समग्र शब्दों का विश्लेषण वेबतंत्र पर डिजिटल माध्यम से (http://cl.sanskrit.du.ac.in/) पर उपलब्ध है । चूंकि शोध के विषय में ही यह निर्धारित किया जा चुका है कि इसके मध्य एक वेबतंत्र का विकास किया जाना है । लेखन सीमा को ध्यान में रखते हुये यहाँ सभी शब्दों के विश्लेषण को समाहित नहीं जा सकता है । केवल उदाहरण स्वरूप दस पारिभाषिक शब्दों का विश्लेषण निम्न प्रकार है-

1

पारिभाषिक शब्द	**पुरुषः**
साङ्ख्यसूत्रम्	असङ्गोऽयं पुरुष इति ॥1.15॥
साङ्ख्यप्रवचनभाष्य	अप्राप्त
साङ्ख्यकारिका	सङ्घातपरार्थत्वात् त्रिगुणादिविपर्ययादधिष्ठानात् । पुरुषोऽस्ति भोक्तृभावात् कैवल्यार्थं प्रवृत्तेश्च ॥17॥
विश्लेषण	सामान्य भाषा में 'पुरुष' शब्द का अर्थ साधारण मनुष्य होता है । परन्तु साङ्ख्यदर्शन के अनुसार 'पुरुष' शब्द का अर्थ आत्मा है । प्रकृति एवं पुरुष साङ्ख्य दर्शन के दो महत्वपूर्ण तत्त्व हैं जिनमें से पुरुष प्रकृति से भिन्न तथा विपरीत तत्त्व माना जाता है । वह अत्रिगुणात्मक, विवेकी, अविषय, असामान्य, चेतन तथा परिणामी है । इसे 'ज्ञ' भी कहा जाता है । इसका वर्णन सर्वप्रथम संस्कृत साहित्य में ऋग्वेद के दशम मण्डल के 90वें सूक्त "सहस्रशीर्षाः पुरुषः सहस्रपात् । स भूमि विश्वतो वृत्वात्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम् ॥"(ऋ.वे. 10.90.1) में प्राप्त होता है । जहाँ पुरुष का अर्थ दार्शनिक परिप्रेक्ष्य में न होकर एक विराट् पुरुष के रूप में

	लिया गया है । यही पुरुषसूक्त वाजसनेयी संहिता (31) एवं अथर्ववेद (19/6) में भी प्राप्त होता है । वेदों में नर के लिए पुम् (पुंस और पुमान्) मूलों का प्रयोग मिलता है । इसके अतिरिक्त बृहदारण्यक उपनिषद् में ईश्वर के लिए पुरुष शब्द का प्रयोग मिलता है । जीवात्मा (आत्मा) को कपिल मुनि कृत साङ्ख्यदर्शन में पुरुष शब्द से सम्बोधित किया गया है जो चेतन तत्त्व है तथा सर्वत्र चेतना का बोधक है । इसके दो प्रकार बताएं गए हैं – सामान्य आत्मा अर्थात् जीवात्मा और परमात्मा । सामान्यपुरुष के लिए अन्य दर्शनों में 'जीवात्मा' शब्द तथा परमात्मापुरुष के लिए 'परमात्मा' शब्द का प्रयोग प्राप्त होता है । साङ्ख्य दर्शन में कुल 25 तत्त्वों की चर्चा की है जिनमें से साङ्ख्य सृष्टिप्रक्रिया में 25वाँ तत्त्व पुरुष को कहा जाता है । साङ्ख्यदर्शन में पुरुष के लिए नित्य, कैवल्य, मध्यस्थ, द्रष्टा, उदासीन, निर्गुण, असङ्ग आदि अनेक विशेषणों का प्रयोग किया है । सभी पुर् अर्थात् लोकों में शयन करने वाले प्राणतत्व आत्मा को पुरुष कहा गया है । 'असङ्गोऽयं पुरुष इति' के अनुसार पुरुष को असङ्ग अर्थात् सङ्गरहित कहा है । असङ्ग क्या होता है ? इसका वर्णन विज्ञानभिक्षु ने अपने भाष्य 'सांख्यप्रवचनभाष्य' में एक दृष्टान्त के माध्यम से स्पष्ट करते हुए कहा है कि जिस प्रकार कमल पत्र में जल के रहने से भी कमलपत्र एवं जल की असङ्गता बनी रहती है । ठीक उसी प्रकार पुरुष रूपी उस आत्मा की संसार के प्रति असङ्गता समझनी चाहिये । अनुमान प्रमाण को चार्वाक दर्शन के अतिरिक्त अन्य सभी दर्शनों ने स्वीकार किया है । अनुमान के तीन भेद माने जाते हैं –पूर्ववत्, शेषवत् तथा सामान्यतोदृष्ट अनुमान । इनमें से पुरुष की सिद्धि शेषवत् अनुमान द्वारा की गई है । जिसे साङ्ख्यकारिका में कारिका 17 के माध्यम से समझाया गया है - सङ्घातपरार्थत्वात् त्रिगुणादिविपर्ययादधिष्ठानात् । पुरुषोऽस्ति भोक्तृभावात् कैवल्यार्थं प्रवृत्तेश्च ॥17॥ अर्थात् पाँच हेतुओं से पुरुष की विद्यमानता को स्वीकार

	किया गया है। जिस प्रकार राजा की रसोई में पाचकों का संचरण राजा के लिये होता है। उसी प्रकार लिङ्गशरीर का संचरण चेतन पुरुष के लिये होता है। साङ्ख्य दर्शन में पुरुष एक तथा अनेक स्वीकार किये गये हैं। अनेक पुरुष के लिये 'पुरुषबहुत्व' नामक पारिभाषिक शब्द को देखना चाहिये।

2

पारिभाषिक शब्द	**प्रकृतिः**
साङ्ख्यसूत्रम्	सत्वरजस्तमसां साम्यावस्था प्रकृतिः प्रकृतेर्महान् महातोऽहङ्कारोऽहङ्कारात् पञ्चतन्मात्राण्युभयमिन्द्रियं तन्मात्रेभ्यः स्थूलभूतानि पुरुष इति पञ्चविंशतिर्गणः॥1.61॥
साङ्ख्यप्रवचनभाष्य	सत्त्वादिद्रव्याणां या साम्यावस्थाऽन्यूनानतिरिक्तावस्थाऽन्यूनाधिकभावेनासंहतावस्थेति यावत्। अकार्यावस्थेति निष्कर्षः। अकार्याऽवस्थोपलक्षितं गुणसामान्यं प्रकृतिरित्यर्थः।
साङ्ख्यकारिका	त्रिगुणमविवेकि विषयः सामान्यमचेतनं प्रसवधर्मि। व्यक्तं तथा प्रधानं तद्विपरीतस्तथा च पुमान् ॥11॥
विश्लेषण	दार्शनिक दृष्टि के अतिरिक्त साधारण रूप से विचार करें तो 'प्रकृति' एक प्राकृतिक पर्यावरण है जो हमारे जीवन का महत्वपूर्ण और अविभाज्य अंग है। इसके बिना जीवन सम्भव नहीं हो सकता है। साङ्ख्य दर्शन में वर्णित प्रकृति और पुरुष नामक दो प्रमुख तत्त्व हैं जिनमें से सत्त्व, रजस् तथा तमस् नामक त्रिगुण की साम्यावस्था ही प्रकृति कहलाती है। विज्ञानभिक्षु प्रकृति की अवस्था पर विचार करते हैं। 'प्रकृति' का परिष्कृत लक्षण देते हैं जिससे उसे और अधिक स्पष्टता से समझा जा सके - "अकार्यावस्थोपलक्षितं गुणसामान्यं प्रकृतिः"। प्रकृति की द्विविध अवस्थाएं हैं - साम्यावस्था तथा विषमावस्था। जिसकी विषमावस्था से

	महदादिक्रम से साङ्ख्यसम्मत 23 तत्वों का निर्माण होता है । साङ्ख्यदर्शन में प्रकृति के लिए अव्यक्त, प्रधान, अक्षर, प्रकृति, जड़ आदि विशेषणों का प्रयोग किया है। यह प्रकृति जगत् का उपादान कारण है। यह विभु तथा एक है क्योंकि साङ्ख्यदर्शन में पुरुषबहुत्व सिद्धान्त स्वीकृत है परन्तु प्रकृतिबहुत्व नहीं । प्रकृति परम सूक्ष्म तत्त्व है अतः उसका प्रत्यक्ष नहीं हो सकता । किन्तु उससे निर्मित तत्वों से प्रकृति के अस्तित्व की सिद्धि हो जाती है। विज्ञानभिक्षु ने कहा है कि 'प्रकृष्टा कृति: परिणामरूपा अस्या इति व्युत्पते:'। प्रधान, अव्यक्त, अजा, तम, माया, अविद्या, ब्रह्म, अक्षर, ये सब प्रकृति के ही पर्याय हैं । प्रकृति समस्त अचेतन विकारों का उपादान कारण है। इसका कोई मूल कारण नहीं है और न ही यह किसी का कार्य या विकार है। इसलिए इसको अविकृति कहते है । त्रिगुणसाम्य की अवस्था प्रकृति कही गई है । साम्यावस्था प्रकृति की अव्यक्तावस्था है। साम्य-भंग या वैषम्यावस्था प्रकृति का नाश नहीं, व्यक्तोन्मुखता है । व्यक्तावस्था कार्य रूप है और अव्यक्तावस्था कारण रूप है। दोनों ही अवस्थाओं में अवस्थाभेद के कारण वैषम्य भी है और उपादानता के कारण साम्य भी । व्यक्ताव्यक्त साधर्म्य त्रिगुणत्व अविवेकित्व, विषयरूपता, अचेतनत्व सामान्यत्व तथा प्रसवात्मकता की दृष्टि से है । यही लक्षण व्यक्त पदार्थों में सर्वत्र पाए जाते हैं । अत: एतद्वारा कारण रूप में भी इन लक्षणों का होना अनुमानगम्य है। सृष्टि कार्यावस्था है, इस आधार पर कारणावस्था के अनुमान में पांच हेतु दिए जाते हैं। प्रकृति और पुरुष का अन्धक और पङ्गु का सम्बन्ध है क्योंकि प्रकृति जड़ है और पुरुष चेतन और साथ ही प्रकृति क्रियाशील है वरन् पुरुष निष्क्रिय । अतः इन दोनों के अन्योन्याश्रय सम्बन्ध के फलस्वरूप सृष्टि का निर्माण होता है। प्रकृति शब्द साङ्ख्यसूत्र में 14 बार प्रयुक्त हुआ है।

3

पारिभाषिक शब्द	**बुद्धिः**
साङ्ख्यसूत्रम्	अध्यवसायो बुद्धिः॥ 2.13 ॥
साङ्ख्यप्रवचनभाष्य	महत्तत्त्वस्य पर्यायो बुद्धिरिति । अध्यवसायश्च निश्चयाख्यस्तस्याऽसाधारणी वृत्तिरित्यर्थः । अभेदनिर्देशस्तु धर्मधर्म्यभेदात् । अस्याश्च बुद्धेर्महत्त्वं स्वेतरसकलकार्यव्यापकत्वान्महैश्वर्याश्च मन्तव्यम् ॥
साङ्ख्यकारिका	अध्यवसायो बुद्धिर्धर्मो ज्ञानं विरागाइश्वर्यम् । सात्त्विकमेतद्रूपं तामसमस्माद् विपर्यस्तम् ॥ 23॥
विश्लेषण	बुद्धि का अस्तित्व प्रारम्भ समय से ही विद्यमान रहा है। सामान्य शब्दों में कहे तो बुद्धि का अर्थ अक्ल, मनीषा (intelligence) है । बुद्धि वह मानसिक शक्ति है जो वस्तुओं एवं तथ्यों को समझने, उनमें आपसी सम्बन्ध खोजने तथा तर्कपूर्ण ज्ञान प्राप्त करने में सहायक होती है। बुद्धि शब्द 'बुध' धातु से 'क्तिन्' प्रत्यय करने के उपरान्त बनता है जो ज्ञान, समझ, प्रतिभा आदि अर्थों को व्यक्त करता है । प्रायः सभी दर्शनों में 'बुद्धि' की चर्चा भिन्न-भिन्न अर्थों में प्राप्त होती है । न्याय- वैशेषिक में 'उपलब्धि' और 'ज्ञान' को बुद्धि का ही पर्यायवाची कहा गया है ।"अर्थ प्रकाशको बुद्धिः" अर्थात् प्रत्येक शब्द के अर्थ का ज्ञान बुद्धि के प्रकाश से होता है। वेदान्त दर्शन के अनुसार 'बुद्धि' कारणरूप ब्रह्म का कार्यरूप है। उसी प्रकार साङ्ख्य दर्शन में भी 'बुद्धि' को मूलप्रकृति का कार्यरूप माना गया है। साङ्ख्यदर्शन में अव्यक्त रूप मूल प्रकृति से सर्वप्रथम महत् आदि 23 तत्त्वों की उत्पत्ति होती है । जिसमें से प्रथम तत्त्व महत् है जिसे 'बुद्धि' भी कहा जाता है। साङ्ख्यकारिकाकार ईश्वरकृष्ण ने 'निश्चय' को ही बुद्धि कहा है । क्योंकि उक्त लक्षण के अनुसार बुद्धि का स्वरूप अध्यवसाय (अध्यवसायः बुद्धिः) है। और साङ्ख्यसूत्र में 'अध्यवसाय' का अभिप्राय 'निश्चय' है। इस प्रकार 'निश्चय' ही बुद्धि है। यद्यपि बुद्धि धर्मी

	है और निश्चय करना बुद्धि का धर्म होता है परन्तु यहाँ क्रिया और क्रियावान् के भेद को अस्वीकार करते हुए 'निश्चय' को ही बुद्धि माना है। अर्थात् निश्चय को बुद्धि का कार्य ना मानकर उसका स्वरूप ही स्वीकार किया गया है। अतः बुद्धि ही निश्चय है तथा निश्चय ही बुद्धि है। तथा क्रिया-क्रियावान् में भेद न होने की विवक्षा की जाये तो अपसिद्धान्तापत्ति[19] (कर्णाटक, 1976) अर्थात् असङ्गति न होगी। सृष्टि रचना में त्रिगुणात्मिका प्रकृति से सर्वप्रथम त्रिगुणात्मक बुद्धितत्त्व का आविर्भाव हुआ। बुद्धि के आठ धर्म स्वीकृत हैं, जिनमें से धर्म, ज्ञान, वैराग्य तथा ऐश्वर्य ये चार धर्म सत्त्वगुण प्रधान हैं तथा ठीक इनके विपरीत अधर्म, अज्ञान, अवैराग्य तथा अनैश्वर्य ये तमोगुण प्रधान हैं। रजोगुण प्रेरक होने के कारण दोनों गुणों में समाहित रहता है। विज्ञानभिक्षु सरल शब्दों में समझाने का प्रयास करते हुए कहते हैं कि महत्तत्त्व का तात्पर्य बुद्धि से है, क्योंकि अव्यक्त स्वरूप मूलकारण प्रकृति से सर्वप्रथम उत्पन्न व्यक्ततत्त्व 'महत्' का ही दूसरा नाम बुद्धि है और यह स्वयं के अतिरिक्त सभी कार्यों में विद्यमान रहती है। शान्तिपर्व के 'बुद्धिरध्यवसानाय' (247/18) तथा 'बुद्धिरध्यवसायिनी' (248/1) श्लोक में भी बुद्धि को 'अध्यवसाय' कहकर सम्बोधित किया है। 'अध्यवसाय' ही निश्चय है यह सिद्ध करने के उपरान्त बुद्धि के सत्त्व तथा तमोगुण से उत्पन्न होने वाले कार्यों की चर्चा की गई है। साङ्ख्यसूत्र के द्वितीय अध्याय के 14वें सूत्र 'तत्कार्यं धर्मादि' में बताया गया है कि बुद्धि सत्त्वगुण प्रधान है। इससे धर्म, ज्ञान, वैराग्य, एश्वर्य आदि कार्य उत्पन्न होते हैं। 15वें सूत्र 'महदुपरागाद्विपरीतम्' में बुद्धि के तमोगुण से सम्बन्धित कार्यों का वर्णन किया गया है। बुद्धि में तमोगुण की प्रधानता होने के कारण अधर्म, अज्ञान, अवैराग्य एवं अनैश्वर्य आदि कार्य उत्पन्न होते हैं। जहाँ

[19] एकसिद्धान्तमतमाश्रित्य कथाप्रवृत्तौ तद्विरुद्धसिद्धान्तमतमालम्ब्योत्तरदानम् अथवा कथायां स्वीकृतसिद्धन्तप्रच्यवः। (सा. का.-पृ. 65)

	साङ्ख्य दर्शन में बुद्धि को ज्ञान का साधन स्वीकार किया है वहीं न्याय दर्शन में बुद्धि को ज्ञान का गुण कहा है।

4

पारिभाषिक शब्द	**अहङ्कारः**
साङ्ख्यसूत्रम्	अभिमानोऽहङ्कारः ॥2.16॥
साङ्ख्यप्रवचनभाष्य	अहङ्कारोतीत्यहङ्कारः कुम्भकारवत् । अन्तःकरणद्रव्यम् । स च धर्मधर्म्यभेदादभिमान इत्युक्तोऽसाधारणवृत्तितासूचनाय। बुद्धया निश्चित एवार्थेऽहङ्कारममकारौ जायेते।
साङ्ख्यकारिका	अभिमानोऽहङ्कारस्तस्माद् द्विविधः प्रवर्तते सर्गः । एकादशकश्च गणस्तन्मात्रः पञ्चकश्चैव ॥24॥
विश्लेषण	सभी प्रकार के ज्ञानों के मूल में विद्यमान अहम् की प्रतीति को 'अहङ्कार' कहते हैं। सामान्य लोक व्यवहार में अहङ्कार को घमण्ड कहा जाता है जिसे अग्रेंजी भाषा में 'Ego, Pride' आदि शब्दों से सम्बोधित किया जाता है। सामान्य शब्दों में कहें तो स्वयं को दूसरों से उचित एवं बड़ा मानना घमण्ड अर्थात् अहङ्कार कहा जाता है। प्रायः सभी दर्शनों में इसकी चर्चा की गयी है क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति का स्वरूप इसी से प्रदर्शित होता है। "अहं करोति इति भावः अहङ्कारः" जिस प्रकार घट का निर्माण करने वाले व्यक्ति को कुम्भकार कहा जाता है (कुम्भं करोति इति कुम्भकारः) उसी प्रकार किसी वस्तु को देखकर बुद्धि द्वारा उत्पन्न अहंभाव को अहङ्कार कहते हैं। इस अहम् शब्द से अभिमान नामक वृत्ति उत्पन्न होती है। साङ्ख्य द्वारा तीन अन्तःकरण स्वीकार किये जाते हैं (मन, बुद्धि एवं अहङ्कार) जिनमें से अहङ्कार द्रव्यरूप अन्तःकरण है।

	अभिमान अहङ्कार का व्यापार रूप (वृत्ति) है। अर्थात् अभिमान धर्म है और अहङ्कार धर्मी है किन्तु यहां धर्म-धर्मी अभेद को स्वीकार करते हुए अभिमान को ही अहङ्कार कह दिया गया है। अन्तःकरण के विषय में विज्ञानभिक्षु एक और तथ्य को स्पष्ट करते हुए कहते हैं कि "अन्तःकरणमेकमेव" अर्थात् अन्तःकरण को एक ही समझना चाहिए क्योंकि इसके तीन भेद (मन, बुद्धि और अहङ्कार) नहीं हैं अपितु ये अन्तःकरण की अवस्थाएं हैं, जैसे – बीजाङ्कुर महावृक्षादिवत् । योगदर्शन में अहङ्कार के स्थान पर अस्मिता का वर्णन प्राप्त होता है। साङ्ख्यकारिका में भी 'मैं, मेरा, अहम्, अभिमान' आदि भाव ही अहङ्कार हैं। अहङ्कार महत्तत्व से उत्पन्न होने वाला दूसरा व्यक्त तत्व है। यह कार्य तथा कारण दोनों ही है। इसको तीन भागों में विभक्त किया गया है । सात्विक अहङ्कार, राजस् अहङ्कार और तामस् अहङ्कार । सात्विक अहङ्कार से पञ्च-ज्ञानेन्द्रियां (नेत्र, श्रोत्र, घ्राण, रस, त्वक्), पञ्च-कर्मेन्द्रियाँ (वाक्, पाणि, पाद, पायु, उपस्थ) तथा मन उत्पन्न होते हैं । तामस अहङ्कार से पञ्च-तन्मात्राओं (शब्द, स्पर्श, रूप, रस एवं गन्ध) का निर्माण होता है। राजस अहङ्कार दोनों के लिये प्रेरक रूप में कार्य करता है। जैनदर्शन 'अहङ्कार' को मनुष्य की निकृष्ट वृत्ति मानता है। अविद्या अथवा अज्ञानता से अहङ्कार उत्पन्न होता है और इसी से जीवन के प्रति मोह तथा भ्रम का निर्माण होता है। निष्कर्ष रूप में कह सकते हैं कि जो अहम् की भावना उत्पन्न होती है वही अहङ्कार कहलाता है। गीता में अहङ्कार के व्यवहारिक एवं शास्त्रीय दोनों पक्षों पर दृष्टिपात किया गया है। व्यवहार पक्ष के अनुसार उदाहरण स्वरूप कोई पुरुष स्वयं को अधिक गुणवान मानता है ये उसका अहङ्कार है। शास्त्रीय महत्त्व के

	प्रयोग महाभारत की इस उक्ति से ज्ञात होता है- "भूमिरापोनलो वायुः खं मनो बुद्धिरेव च । अहंकार इतीयं मे भिन्ना प्रकृतिरष्टधा ॥" (7/4) अर्थात् भूमि, जल, तेज, वायु, आकाश (तन्मात्र), मन, बुद्धि और अहंकार के भेद से परमेश्वर की शक्तिरूपा प्रकृति आठ प्रकार की है ।

5

पारिभाषिक शब्द	**व्यक्तम्**
साङ्ख्यसूत्रम्	अव्यक्तं त्रिगुणाल्लिङ्गात् ॥1.136 ॥
साङ्ख्यप्रवचनभाष्य	महत्तत्त्वं तु तदपेक्षया व्यक्तमित्यर्थः ।
साङ्ख्यकारिका	हेतुमदनित्यमव्यापि सक्रियमनेकमाश्रितं लिङ्गम् । सावयवं परतन्त्रं व्यक्तं विपरीतमव्यक्तम् ॥ 10 ॥
विश्लेषण	व्यक्त का एक साधारण अर्थ अपनी भावनाओं को प्रत्यक्ष करना किया जा सकता है । अर्थात् जो प्रत्यक्ष हो सके उसे 'व्यक्त' (Express) कहा जाता है । यह महत् तत्त्व त्रिगुणात्मक है । संपूर्ण जगत व्यक्त है । सभी कार्य अपने कारण अर्थात् महत् तत्त्व में लीन हो जाते हैं । इस लयपरम्परा में अन्तिम तत्त्व व्यक्त है । साङ्ख्यकारिका की 11वीं कारिका "त्रिगुणमविवेकि विषयः सामान्यमचेतनं प्रसवधर्मि । व्यक्तं तथा प्रधानं तद्विपरीतस्तथा च पुमान् ॥" के माध्यम से व्यक्त और अव्यक्त में परस्पर समानता का वर्णन किया गया है । जिसके लिए त्रिगुणम्, अविवेकि, विषय, सामान्यम्, चेतनम् तथा प्रसवधर्मि इन छः तत्वों की विवेचना की है । तथा इनके माध्यम से ही व्यक्त और अव्यक्त को 'ज्ञ' अर्थात् पुरुष से भिन्न माना है । साङ्ख्य की सृष्टिप्रक्रिया में अव्यक्त प्रकृति से व्यक्त, प्रमेय पदार्थ महत् आदि की उत्पत्ति होती है । साङ्ख्यकारिका में व्यक्त को विस्तार से समझाने के लिये नौ भेदों का वर्णन किया है- हेतुमद्, अनित्य,

	अव्यापि, सक्रिय, अनेकम्, आश्रितम्, लिङ्गम्, सावयवम् एवं परतंत्र । इनके विपरीत भाव को अव्यक्त माना जाता है । अव्यक्त का सम्यक् रूप से ज्ञान प्राप्त करने के लिए इन नौ गुणों का विस्तार से समझना आवश्यक है । **हेतुमद्**- हेतु का अर्थ कारण है । हेतु शब्द से मतुप् प्रत्यय करने के उपरान्त हेतुमद् शब्द का निर्माण होता है जिसका अर्थ 'कारण वाला' रूप बनता है । प्रत्येक व्यक्त पदार्थ किसी न किसी कारण से युक्त होता है । महत् तत्त्व से आकाश आदि स्थूल पर्यन्त सभी व्यक्त पदार्थ कहलाते हैं, क्योंकि ये प्रत्यक्ष के विषय होते हैं । **अनित्य** – व्यक्त पदार्थ कार्यरूप होते हैं इसलिए इन्हें अनित्य कहा जाता है । **अव्यापि** - व्यक्त पदार्थ देशकाल की सीमाओं से सीमित होने के कारण अव्यापक है । **सक्रिय** - व्यक्त पदार्थों का एक महत्वपूर्ण गुण क्रियाशील भी है यह सदैव सक्रिय बने रहते हैं । **अनेक** - पुरुष बहुत के कारण व्यक्त भी अनेक होते हैं । क्योंकि प्रत्येक पुरुष के साथ बुद्धि आदि का अलग- अलग होना स्वाभाविक है । **आश्रित** - समस्त व्यक्त पदार्थ अपने-अपने कारण पर आश्रित होते हैं जैसे अंकुर अपने कारण बीज पर आश्रित होता है । आश्रय के अभाव में आश्रित का अस्तित्व ही संभव नहीं है । **लिङ्गम्** - संपूर्ण व्यक्त पदार्थ अव्यक्त की सिद्धि में अनुमापक हेतु अर्थात् लिङ्ग है । **सावयव** - सभी व्यक्त पदार्थ अव्यवयुक्त हैं वे अपने ही जैसे अन्य भेदों के साथ मिश्रित हो सकते हैं । इनका प्रत्यक्ष अनुभव किया जा सकता है । **परतन्त्र** - इन्हें परतन्त्र कहा जाता है क्योंकि यह अपने-अपने कारण से उत्पन्न होते हैं । यदि मूल कारण न हो तो व्यक्त पदार्थ का अस्तित्व ही न हो । सूत्रकार कहते हैं कि कारण का अनुपात तथा लय को प्राप्त करने के उद्देश्य से लिङ्ग का अर्थ 'समस्त कार्य' अर्थात् व्यक्त माना जाता है । भाष्यकार विज्ञानभिक्षु कहते हैं कि व्यक्त पदवाच्य कार्य है यह सभी हेतुमान्, अनित्य, अव्यापक, सक्रिय, अनेक, आश्रित, लयशील, सावयव तथा परतन्त्र है । व्यक्त पदवाच्य सभी कार्य को लिङ्ग कहा गया है ।- 'हेतुमत्वं कारणवत्त्वम्। अनित्यवं विनाशिता' ।

6

पारिभाषिक शब्द	**अव्यक्त**
साङ्ख्यसूत्रम्	अव्यक्तं त्रिगुणाल्लिङ्गात् ॥1.136 ॥
साङ्ख्यप्रवचनभाष्य	अभिव्यक्तात् त्रिगुणान्महत्तत्वादपि मूलकारणमव्यक्तं सूक्ष्मम् । महत्तत्त्वस्य हि सुखादिर्गुणः साक्षात् क्रियते, प्रकृतेश्च गुणोऽपि न साक्षात्क्रियत इति प्रधानम् परमाव्यक्तम् ।
साङ्ख्यकारिका	हेतुमदनित्यमव्यापि सक्रियमनेकमाश्रितं लिङ्गम् । सावयवं परतन्त्रं व्यक्तं विपरीतमव्यक्तम् ॥10॥
विश्लेषण	मुख्य रूप से मूलप्रकृति के दो विभाग माने जाते हैं- व्यक्त तथा अव्यक्त । व्यक्त प्रकृति का कार्य रूप है तथा अव्यक्त कारण रूप है । मुख्यतः मूल प्रकृति को ही अव्यक्त कहा जाता है । त्रिगुणात्मक लिङ्ग रूप महत् से अव्यक्त प्रकृति का भान होता है । क्योंकि प्रत्येक कार्य का कोई न कोई कारण अवश्य होता है । महत् कारण रूप तथा कार्य रूप दोनों प्रकार का है । महत् से पञ्च ज्ञानेन्द्रियाँ आदि 16 व्यक्त तत्त्वों का आविर्भाव होता है इसलिये यह उन तत्त्वों का कारण कहलाता है । इसी के साथ महत् का आविर्भाव मूलप्रकृति से हुआ है इसलिए महत् को कार्य भी कहा जाता है। इसलिये कहा गया है कि महत् के होने से अव्यक्त प्रकृति का भान होता है। व्यक्त प्रकृति अर्थात् महत् तत्त्व के सुखादि गुण (धर्म) का साक्षात्कार किया जा सकता है किंतु प्रधान अर्थात् मूलप्रकृति परम अव्यक्त है इसका इन्द्रियों द्वारा साक्षात्कार नहीं किया जा सकता है । साङ्ख्यकारिका में व्यक्त प्रकृति के नौ गुणों की बात कही गई है । और उससे भिन्न रूप वाली प्रकृति को अव्यक्त कहा है । अर्थात् साङ्ख्य की सृष्टि प्रक्रिया से स्पष्ट हो जाता है कि अव्यक्त कारण रूप मूल प्रकृति से ही महत् आदि की उत्पत्ति होती हैं । सत्त्व, रजस् और तमोगुण की साम्यावस्था का नाम ही अव्यक्त मूल प्रकृति है । सृष्टि निर्माण में परस्पर अभिभव के कारण गुणत्रय की

	साम्यवस्था में वैषम्य उपस्थित हो जाता है। इसलिए अव्यक्त प्रकृति और व्यक्त पदार्थों के स्वरूप में अंतर रहता है।

7

पारिभाषिक शब्द	**मनः**
साङ्ख्यसूत्रम्	उभयात्मकं मनः॥2.26॥
साङ्ख्यप्रवचनभाष्य	ज्ञानकर्मेन्द्रियात्मकं मन इत्यर्थः।
साङ्ख्यकारिका	उभयात्मकमत्र मनः सङ्कल्पकमिन्द्रियं च साधर्म्यात् । गुणपरिणामविशेषान् नानात्वं बाह्यभेदाच्च ॥ 27॥
विश्लेषण	सामन्यतः मन का निर्वचन 'मन्यते ज्ञायतेऽनेनेति तन्मनः' किया जाता है। जिसके अनुसार मन को केवल चिन्तन का ही साधन माना जाता है । सांख्यदर्शन में महर्षि कपिल के अनुसार मन उभयेन्द्रिय है। अर्थात् यह ज्ञानेंद्रिय तथा कर्मेंद्रिय दोनों है। मन के विषय में विज्ञानभिक्षु ने अपने भाष्य में कहा है कि एकादश इन्द्रिय समुदाय में मन उभयात्मक है। मन का संबंध दोनों के साथ रहता है। बाह्यविषयों के साथ चक्षुरादि इन्द्रियों का साक्षात् संबंध होता है। किसी भी वस्तु का ज्ञान होने के लिए बाह्य साधन की आवश्यकता होती है इसलिए बाह्य इन्द्रियों को बाह्यकरण भी कहते हैं किंतु 'बुद्धि, मन, अहङ्कार यह तीनों अंतःकरण कहलाते हैं। वैशेषिक दर्शन में नौ द्रव्यों का वर्णन किया गया है- "तत्र द्रव्याणि पृथिव्यप्तेजोवाय्वाकाशकालदिगात्ममनांसि नवैव"। जिसमें से मन अंतिम नौंवाँ द्रव्य है । और मन को परिभाषित करते हुए कहा है कि- "सुखाद्युपलब्धिसाधनमिन्द्रियं मनः" अर्थात् सुख-दुःख आदि की उपलब्धि का साधन मन है। इसे परमाणु रूप तथा नित्य कहा है। मन प्रत्येक जीव

	में विद्यमान होने के कारण अनंत है। नैयायिकों का मानना है कि मन, आत्मा और बाह्येन्द्रियों के मध्य संपर्क की एक कड़ी है। साङ्ख्यकारिका में मन को उभयात्मक संकल्प-विकल्प शक्ति से युक्त कहा गया है। यह सजातीय भी है। इसकी उत्पत्ति भी कर्मेन्द्रियों और ज्ञानेन्द्रियों की भांति अहङ्कार से ही हुई है। एक ही तत्त्व अहङ्कार से उत्पन्न होने पर भी इन्द्रियों में विभिन्नता प्रतिपादित होती है। कारिका में प्रयुक्त 'च' अव्ययपद को भाष्यकारों ने उपमार्थक मानकर "इव" अर्थ में प्रयुक्त माना है।

8

पारिभाषिक शब्द	**दुःखम्**
साङ्ख्यसूत्रम्	समानं जरामरणादिजं दुःखम् ॥3.53॥
साङ्ख्यप्रवचनभाष्य	ऊर्ध्वाधोगतानां ब्रह्मादिस्थावरान्तानां सर्वेषामेव जरामरणादिजं दुःख साधारणमतोऽपि हेय इत्यर्थः।
साङ्ख्यकारिका	तत्र जरामरणकृतं दुःखं प्राप्नोति चेतनः पुरुषः। लिङ्गस्याविनिवृत्तेस्तस्माद् दुःखं स्वभावेन ॥ 55॥
विश्लेषण	साधारण भाषा में किसी भी प्रतिकूल वेदना को, चाहे वह शारीरिक हो अथवा मानसिक, दुःख कहा जाता है। कोई भी वस्तु, व्यक्ति अथवा परिस्थिति जो हमें परेशान करे, उसे हम दुःख-स्वरूप समझ लेते हैं। दुःख शब्द की निष्पत्ति 'दुःख तत्क्रियायाम्' धातु से 'अच्' प्रत्यय द्वारा हुई है। जो रूढ़ात्मक रूप से पीड़ात्मक वेदना का वाचक है। न्याय दर्शन में द्वादश प्रमेय के अंतर्गत दुःख का परिगणन किया गया है और इस दुःख के

	आत्यान्तिक नाश से अपवर्ग की व्यवस्था की गई है । 'बाधनालक्षणं दुःखम्' (न्या.सू. 1/1/21) दुःख का लक्षण बांधना किया है। वैशेषिकदर्शन के प्रकरण ग्रन्थ तर्कसंग्रह में सप्त पदार्थ – 'द्रव्यगुणकर्मसामान्यविशेषसमवायाभावाः सप्त पदार्थाः' बताएं गये हैं । जिसमें से गुण दूसरा पदार्थ है जिसके 'रूप-रस-गन्ध...आदि' 24 भेदों की चर्चा की गयी है। उन चतुर्विंशतिगुणों में से दुःख भी एक गुण है। इनके अनुसार दुःख को आत्मा का अन्यतम विशेष गुण माना है। कणाद ने सुख एवं दुःख की पृथक-पृथक स्थापना करते हुए कहा है कि वनितादि इष्ट कारण से सुख की और कंटक आदि अनिष्ट कारण से दुःख की उत्पत्ति होती है । इन दोनों उदाहरणों के माध्यम से सुख और दुःख का पृथक होना सिद्ध होता है । योगसूत्र में दुःख के विषय में कहा गया है कि जिसका अभिघात पाकर प्राणी उसके अपघात के लिए प्रयत्न करते हैं उसे दुःख कहा जाता है । इसे तीन भागों में विभक्त किया गया है- आधिदैविक, आधिभौतिक तथा आध्यात्मिक । इन त्रिविध दुःखों की निवृत्ति को ही साङ्ख्य ने अत्यंत पुरुषार्थ की संज्ञा दी है और साथ ही साथ शास्त्रजिज्ञासा का उद्देश्य भी बतलाया है। साङ्ख्यसूत्रकार दुःख के विषय में कहते हैं कि जरा-मरण आदि से होने वाला दुःख सभी लोगों और योनियों में समान प्राप्त होता है । चाहें वह उच्चलोकों में विचरण करने वाले हों या फिर अधोलोको में रहने वाले हो सभी को जरा-मरण रूपी दुःख का अनुभव समान रूप से होता है । सांख्यकारिका में कहा गया है कि पुरुष निर्गुण होने के कारण दुःख रहित है। किंतु लिङ्गशरीर से संबंध होने के कारण 'दुःख' जो 'बुद्धि' का धर्म है उसे अपना मान कर दुःखी होता रहता है । लिङ्ग शरीर धारण किए हुए पुरुष अनेकों योनियों में विचरण करता है और तत्तत् शरीर में प्राप्त होने वाले दुःख से स्वयं दुखी होता है । चेतन पुरुष के अज्ञानवश दुःख प्राप्ति की अवधि

	लिङ्गशरीर की निवृत्ति हो जाने पर समाप्त हो जाती है । क्योंकि सूक्ष्म शरीर सत्व रजस् और तमोगुण से युक्त होता है यह तीनों सुख-दुःख मोहात्मक हैं । उपरोक्त दर्शनों के आधार पर दुःख के विषय में प्राप्त वर्णन के अतिरिक्त जरा-मरण से होने वाले दुःख का वर्णन मिलता है । बृहदारण्यक उपनिषद् 'अशनायापिपासे शोकं मोहं जरां भृत्युमत्येति' (3/5/1) में तथा न्यायमाला (4/1/57) 'जन्मजराव्याधिप्रायणाऽनिष्टसंयोगेष्टवियोग- प्रार्थितानुपपत्तिनिमित्तमनेकविधं यावद् दुःखमुत्पद्यते' ।

9

पारिभाषिक शब्द	**पुरुषबहुत्वम्**
साङ्ख्यसूत्रम्	जन्मादिव्यवस्थातः पुरुषबहुत्वम् ॥1.149॥, पुरुषबहुत्वं व्यवस्थातः ॥6.45॥
साङ्ख्यप्रवचनभाष्य	पुण्यवान् स्वर्गे जायते, पापी नरके, अज्ञो बध्यते, ज्ञानी मुच्यते" इत्यादेः श्रुतिस्मृतिव्यवस्थाया विभागस्यान्यथानुपपत्त्या पुरुषा बहवः इत्यर्थः ।
साङ्ख्यकारिका	जन्ममरणकरणानां प्रतिनियमादयुगपत् प्रवृत्तेश्च । पुरुषबहुत्वं सिद्धं त्रैगुण्यविपर्ययाच्चैव ॥18॥
विश्लेषण	पुरुष-बहुत्व साङ्ख्य का एक महत्वपूर्ण सिद्धांत है । साङ्ख्यकारिका में तीन युक्तियों के माध्यम से पुरुष-बहुत्व को सिद्ध किया गया है । प्रत्येक व्यक्ति का जन्म और मरण अलग-अलग समय पर होता है, इसलिए पुरुष अनेक है । यहाँ परम पुरुष की बात नहीं हो रही है, वह तो केवल एक परमात्मा है । अर्थात् पुरुष का अंश रूप यह पुरुष रूपी जीवात्मा अनेक है। आत्मा के ही भेद होने के कारण इसे जीवात्मा भी कह दिया जाता है । पुरुषबहुत्व में द्वितीय युक्ति "अयुगपत्प्रवृत्तेः" देते हैं । जिसके अनुसार

	प्रत्येक शरीर की एक ही समय में अलग-अलग क्रियाएं देखी जाती हैं। सभी मनुष्य साथ में एक जैसी क्रियाएं नहीं करते हैं। इसी आधार पर कहा जा सकता है कि पुरुष अनेक हैं। तृतीय "त्रैगुण्यविपर्ययात्" द्वारा सिद्ध करते हैं कि इस संसार में विभिन्न स्वभाव वाले लोग हैं। यह स्वभाव परिवर्तन उनमें सत्व रजस् एवं तमस् गुण की न्यूनाधिक्यता के कारण होता है। जैसे ऊर्ध्व तेजस् योगी में सत्वगुण, सामान्य व्यक्ति में रजोगुण एवं पशु-पक्षी तथा आलसी व्यक्ति में तमोगुण की बहुलता होती है। इसलिए प्रत्येक शरीर में भिन्न-भिन्न पुरुषों की सत्ता स्वीकार करना उचित है। सूत्रकार कहते हैं कि जन्म-मरण दृष्टिगोचर होता है। आत्मा की अनेकता तो स्पष्ट होती है। भाष्यकार इसे स्पष्ट करते हैं कि पुण्यवान् मनुष्य स्वर्ग में रहता है। पापी को नरकवास करना होता है, अज्ञानी बंधन में रहता है और ज्ञानी मुक्त हो जाता है आदि। श्रुति स्मृति में वर्णित व्यवस्था के विभाग, अन्यथानुपत्ति के कारण पुरुष अनेक हैं यह स्पष्ट है। सूत्रकार ने पुरुषबहुत्व की सिद्धि में "पुरुषबहुत्वं व्यवस्थातः" (6.45) यह सूत्र भी प्रस्तुत किया गया है। अर्थात् बन्ध–मोक्ष की व्यवस्था को देखकर 'पुरुष' का अनेकत्व सिद्ध होता है।

10

पारिभाषिक शब्द	**सत्कार्यवाद**
साङ्ख्यसूत्रम्	उपादाननियमात् ॥1.115॥ , सर्वत्र सर्वदा सर्वासम्भवात् ॥1.116॥, शक्तस्य शक्यकरणात् ॥1.117॥, कारणभावाच्च ॥1.118॥
साङ्ख्यप्रवचनभाष्य	मृद्येव घट उत्पद्यते, तन्तुष्वेव पट इत्येवं कार्याणामुपादानकारणं प्रति नियमोऽस्ति।, उपादानानियमे च सर्वत्र सर्वदा सर्वे सम्भवेदित्याशयः।,

	कार्यशक्तिमत्त्वमेवोपादानकारणत्वम्, अन्यस्य दुर्वचत्वात्, लाघवाच्च ।, उत्पत्तेः प्रागति कार्यस्य कारणाभेदः श्रूयते, तस्माच्च सत्कार्यसिद्ध्या नासदुत्पाद इत्यर्थः ।
साङ्ख्यकारिका	असदकरणादुपादानग्रहणात् सर्वसम्भवाभावात् । शक्तस्य शक्यकरणात् कारणभावाच्च सत्कार्यम् ॥9॥
विश्लेषण	प्रायः सभी दार्शनिक-सम्प्रदाय सृष्टि को कार्य या परिणाम रूप में स्वीकार करते हैं और इसके मूल कारण की खोज करते हैं । कारण की खोज करने से पूर्व कारण का अस्तित्व है, ऐसा विश्वास यदि न हो तो कारण की खोज निरर्थक होगी । कारण के अस्तित्व का यह विश्वास प्रत्यक्ष पर आधृत अनुमान का ही रूप है । सत्कार्यवाद साङ्ख्यदर्शन का प्रमुख सिद्धान्त है । इसे कारण-कार्य सिद्धान्त भी कहते है । इसके अनुसार कार्य की उत्पत्ति कारण के बिना सम्भव नहीं है । कार्य, अपनी उत्पत्ति के पूर्व कारण में विद्यमान रहता है । कार्य को अपने कारण का सार कह सकते है । कार्य तथा कारण वस्तुतः समान प्रक्रिया के व्यक्त-अव्यक्त रूप हैं । कारण अव्यक्त रूप से कार्य में विद्यमान रहता है और कार्य व्यक्त कहलाता है । परिणामवाद तथा विवर्तवाद के भेद से सत्कार्यवाद दो प्रकार का है । परिणामवाद का अर्थ है कि कारण वास्तविक रूप में कार्य में परिवर्तित हो जाता है । जैसे तिल तेल में, दूध दही में रूपांतरित होता है । विवर्तवाद के अनुसार परिवर्तन वास्तविक न होकर आभास मात्र होता है । जैसे-रस्सी में सर्प का आभास होना । ठीक इसके विपरीत असत्कार्यवाद एवं कारणवाद का न्यायदर्शनसम्मत सिद्धांत है । इसके अनुसार कार्य उत्पत्ति के पहले नहीं रहता । न्याय के अनुसार उपादान और निमित्त कारण में अलग-अलग कार्य उत्पन्न करने की पूर्ण शक्ति नहीं है किंतु जब ये कारण मिलकर व्यापारशील होते हैं तब इनकी सम्मिलित शक्ति से ऐसा कार्य उत्पन्न होता है जो इन कारणों से विलक्षण होता है । अत: कार्य सर्वथा नवीन होता है, उत्पत्ति के पहले से इसका अस्तित्व नहीं

	होता है । कारण केवल उत्पत्ति में सहायक होते हैं । यह भाववादी और यथार्थवादी है । साङ्ख्य का सत्कार्यवाद बौद्धों के शून्यवाद के विपरीत है । क्योंकि साङ्ख्य जगत की उत्पत्ति शून्य से नहीं अपितु किसी मूल सत्ता से मानते है । भगवान कपिल कहते हैं- "नासदुत्पादो नृश्रृंगवत् ।" मनुष्य के सींग के समान असत् वस्तु की उत्पत्ति नहीं होती । साङ्ख्य दर्शन के सत्कार्यवाद का यही आधार है । सत्कार्यवाद के सिद्धान्त को सिद्ध करने के लिए प्रथम अध्याय के 113-118 सूत्रों में सूत्रकार ने वर्णन किया है - उपादाननियमात्, सर्वत्र सर्वदा सर्वासम्भवात् । शक्तस्य शक्यकरणात् तथा कारणभावात् । इन सूत्रों की ही ईश्वरकृष्ण ने अपनी साङ्ख्यकारिका में एक कारिका के माध्यम से उल्लेख किया है । सत्कार्यवाद के सिद्धान्त की पुष्टि के लिये पाँच हेतुओं को स्थापित करते हुये इसे तर्क द्वारा स्पष्ट करते है कि- असदकरणादुपादानग्रहणात् सर्वसंभवाभावात् । शक्तस्य शक्यकरणात् कारणाभावाच्च सत्कार्यम् ।। **असद् अकरणात्** - सत्कार्यवाद की पुष्टि हेतु पहला तर्क यह है कि जिसका अस्तित्व नहीं है उसकी कभी भी उत्पत्ति नहीं हो सकती है । उदाहरण के लिए यदि बालू से घी निकालने का प्रयास करने पर घी नहीं निकल सकता है क्योकि बालू में घी का अस्तित्व नहीं है । **उपादान ग्रहणात्** - किसी कार्य की उत्पत्ति किसी उपयुक्त कारण से ही हो सकती है । जैसे तेल उत्पन्न करने के लिए तिलहन की आवश्यकता होती हैं, दही उत्पन्न करने के लिए दूध का होना जरूरी है । इससे स्पष्ट है कि कार्य अपने उपयुक्त कारण में ही पहले से विद्यमान रहता है । **सर्वसम्भव अभावात्** - प्रत्येक वस्तु से प्रत्येक वस्तु उत्पन्न नहीं हो सकती जैसे बालू से घी नहीं निकलता है । यदि कार्य अपने मुख्य कारण में छिपा नहीं रहता है, तो फिर किसी भी वस्तु से किसी भी वस्तु की उत्पत्ति हो जाती। **शक्तस्य शक्यकरणात्** - इस तर्क के अनुसार कोई कारण उसी कार्य को

	उत्पन्न कर सकता है जिसमें वह समर्थ हो जैसे तिलों में ही तेल को उत्पन्न करने की शक्ति है बालू में नहीं । अतः तेलरूप कार्य 'शक्य' है और कारणरूप तिल 'शक्तकारण' है । **कारणाभावाच्च सत्कार्यम्** - कारण और कार्य एक दूसरे से अभिन्न हैं । इन्हें एक दूसरे से अलग नहीं किया जा सकता है । वस्तुतः कारण और कार्य सापेक्ष हैं, क्योंकि कोई वस्तु कार्य तभी कहलाती है जब उसका कोई कारण विद्यमान होता है । इन्हें एक ही वस्तु के दो रूप कहा जा सकता है, अविकसित रूप कारण है और विकसित रूप कार्य है । जैसे- दही अपने मूलकारण का विकसित रूप ही है । गीता में भी सत्कार्यवाद के सिद्धान्त की चर्चा की गई है ।" नासतो विद्यते भावो नाभावो विद्यते सतः" (गीता० 2/16)

चतुर्थ अध्याय

योगदर्शन के पारिभाषिक शब्दों का विश्लेषण

Analysis of Technical Terms of Yoga Philosophy

किसी ग्रन्थ के अध्ययन में उसके पारिभाषिक शब्दों का अर्थ पूर्णरूप से स्पष्ट हो जाता है तो उस ग्रन्थ को पढने तथा समझने में अत्यन्त सरलता का अनुभव होता है। साथ ही साथ उस ग्रन्थ के प्रति रूचि जागृत होती है। किसी भी दर्शन का निर्माण उसके मूलभूत प्रश्नों के निवारणार्थ किया जाता है। योगदर्शन संस्कृत दर्शन में अपना एक पृथक् महत्त्व रखता है। प्रस्तुत शोध में सम्पूर्ण योगदर्शन तथा उसके भाष्यग्रन्थों से कुल 285 शब्दों का संकलन तथा उनका विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है।

1. योगदर्शन के पारिभाषिक शब्दों का संकलन (Collection of Technical Terms of Yoga Philosophy)

योग दर्शन के अध्ययन करते समय अनेक समस्याएँ अध्ययनकर्त्ता के समक्ष प्रकट होती हैं। कुछ शब्द ऐसे आते हैं जिनका एक गूढ अर्थ होता है और जब तक उन शब्दों का समाधान नहीं मिलता तब तक तत्सम्बन्धी ग्रन्थ का सम्पूर्ण ज्ञान होना असम्भव सा हो जाता है। इस प्रकार की समस्या को ध्यान में रखते हुए अनेक विद्वानों ने योगदर्शन से सम्बन्धित ग्रन्थों में प्राप्त कठिन शब्दों का संकलन करके उनका अर्थ तथा यथासम्भव व्याख्या प्रस्तुत करने के लिये अनेक ग्रन्थों का निर्माण किया। इसी सन्दर्भ में प्रस्तुत शोध के द्वारा योग दर्शन सम्बन्धी 285 पारिभाषिक शब्दों का संकलन एवं उनका विस्तृत विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है और यह कार्य ई-परिभाषा कोश के रूप में भी उपलब्ध है। योगदर्शन के संदर्भ में विशिष्ट अर्थ बोधक शब्दों के संग्रह के विषय में विचार किया है।

1. योगदर्शन के मूल एवं लक्षण ग्रन्थों में प्राप्त प्रत्येक पारिभाषिक शब्द को लक्षण सहित प्रस्तुत किया गया है।

2. इन लक्षणों की व्याख्या विभिन्न भाष्यों, वार्त्तिकों, वृत्तियों एवं टीकाओं के आधार पर लक्षणों का अनुवाद सहित क्रम से लिखा गया है।
3. विश्लेषण अधिक विस्तृत न हो इसलिए शास्त्रार्थ के विषय का समावेश नहीं किया गया है।
4. जहाँ व्याख्या में बहुत ज्यादा विस्तार की अपेक्षा है वहां केवल सूचना पूर्वक विषय के संक्षेप में दी गई है।
5. जिन शब्दों का पुनः पुनः प्रयोग हुआ है उन सबका पृथक्-पृथक् क्रम से विवरण दिया है।

2. योग दर्शन के पारिभाषिक शब्दों के संकलन का आधार (Basis of Collection of Technical Terms of Yoga Philosophy)

पातञ्जल योगसूत्र का आरम्भ 'अथ योगानुशासनम्' से होता है। जिसमें अनुशासन शब्द का अर्थ है – 'अनुशिष्यतेऽनेन इति अनुशासनम्' अर्थात् जिसके द्वारा सिखाया जाए अथवा अनुशासित किया जाये वह 'अनुशासन' कहलाता है। 'शिष्टस्य शासनम् इति अनुशासनम्' व्यञ्जना के अनुसार पूर्व में कथित विषय को सिखाने वाले शास्त्र को अनुशासन कहा जाता है। अनुशासन शब्द अनु उपसर्ग पूर्वक शासुँ धातु से करण अर्थ में ल्युट् प्रत्यय के पश्चात् निर्मित होता है। योगदर्शन में अथ शब्द का प्रयोग अधिकारवाचक अर्थात् आरम्भ अर्थ में प्रयुक्त हुआ है (श्रीवास्तव, 2011)। पतञ्जलि ने अपने इस शास्त्र में 194 सूत्रों का समावेश किया है। जिस पर अनेक भाष्य, टीकाएँ, वृत्ति एवं वार्तिक उपलब्ध होते हैं। योगदर्शन के पारिभाषिक शब्दों के संग्रह हेतु योगसूत्र (श्रीवास्तव, 2011), व्यासभाष्य (श्रीवास्तव, 2011; कर्णाटक, 1992), भोजवृत्ति (आर्या, 2010), तत्त्ववैशारदी (कर्णाटक, 1992) एवं योगवार्तिक (कर्णाटक, 1992) को आधार बनाया है। इन्हीं के आधार पर प्रत्येक शब्द का विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। कुछ शब्द साक्षात् योगदर्शन से तथा कुछ शब्द व्याख्या के करते समय भाष्यग्रन्थ एवं टीकाओं से प्राप्त होते हैं। इनके अतिरिक्त योगदर्शन पर अन्य बहुत ग्रन्थ भी उपलब्ध होते हैं किन्तु पारिभाषिक शब्द की व्याख्या हेतु प्रस्तुत शोध में उपर्युक्त वर्णित पाँच ग्रन्थों को ही आधार बनाना गया है।

3. योगदर्शन के प्रमुख ग्रन्थ एवं उनके लेखकों का परिचय (Introduction of Main Texts of Yoga Philosophy and their Writers)

योगदर्शन से सम्बन्धित पारिभाषिक शब्दों को एकत्रित करने के लिए योगदर्शन के पाँच ग्रन्थों को आधार बनाया गया है। जिनका विवरण निम्न प्रकार है-

3.1 योगदर्शन एवं महर्षि पतञ्जलि

पारिभाषिक शब्दों के संकलन हेतु आधारित ग्रन्थों में पतञ्जलि द्वारा निर्मित योगदर्शन प्रथम है। यह षड्दर्शनों में से एक महत्त्वपूर्ण दर्शन है। जिसका विस्तारपूर्वक वर्णन प्रथम अध्याय में किया जा चुका है।

पतञ्जलि द्वारा रचित योगदर्शन भारतीय दार्शनिक परम्परा में अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। योगशास्त्र को सर्वप्रथम स्वतन्त्र दर्शन का रूप देने का श्रेय पतञ्जलि को ही जाता है। इनके जीवन के विषय में कोई ठोस प्रमाण प्राप्त नहीं होते हैं। लेकिन अनुमानतः कहा जा सकता है कि कपिल के अनन्तर चार दार्शनिकों के पहले ही इनका प्रादुर्भाव हो चुका था (तीर्थ, 1948)। याज्ञवल्क्यस्मृति के अनुसार हिरण्यगर्भ योग के प्रवक्ता थे और पतञ्जलि द्वारा तो मात्र हिरण्यगर्भ द्वारा शासित योगशास्त्र का उपदेश किया गया है (भगवद्दत्त, 1938)। प्राप्त सूचनाओं के आधार पर कहा जा सकता है कि इनका जन्म गोनार्ध (गोंडा,उ.प्र.) में हुआ था। बाद में ये काशी में 'नागकूप' पर वास करने लगे थे। इनकी माता का नाम गोणिका था (दीक्षित, 1934)। ये व्याकरणाचार्य पाणिनि के शिष्य माने जाते हैं। मुनित्रय (पाणिनि, कात्यायन और पतञ्जलि) की परम्परा में पतञ्जलि अंतिम मुनि के स्थान को ग्रहण करते हैं। उनके भीतर अलौकिक प्रतिभा की छटा दृष्टिगोचर होती है। इसलिये उन्हें शेषनाग का अवतार माना जाता है। राजा भोज ने पतञ्जलि को तन और मन दोनों का चिकित्सक स्वीकार किया है[1] (Woods, 1914)। कैयट द्वारा महाभाष्य पर लिखित टीका में पतञ्जलि के नाम की व्याख्या की गयी है कि – 'पतन्तः अञ्जलयः यस्मै' अर्थात् जिसके लिये सबकी

[1] The Yoga Sutras of Patañjali. Published for Harvard University by Ginn & Co. pp. xiv–xv.

अञ्जलियाँ बँध जाती हैं। श्री राधाकृष्णन् (2015) ने वैयाकरणमहाभाष्य एवं पातञ्जलयोगसूत्र के प्रणेता को एक ही माना है ।

पतञ्जलि का काल

डॉ. राधाकृष्णन् (2015) के अनुसार योगसूत्र की रचना ईसा पूर्व 2 शताब्दी में हुई थी। लेकिन कुछ विद्वान् मानते हैं कि इसकी रचना 4 शताब्दी ई.पू. हुई थी। क्योंकि परमाणुवाद का (1/40), सौत्रान्तिकों की समय विषयक प्रकल्पना 'यत्कालः क्षणानां शृङ्खलारूपः' (3/52), स्फोटवाद (योगभाष्य 3/17) तथा बौद्धादर्शवाद (4/15-17) का उल्लेख योगसूत्र में समाहित है। पतञ्जलि संभवत: पुष्यमित्र शुंग (195-142 ई.पू.) के शासनकाल में विद्यमान थे। जे.एच.वूड्स J.H. Woods ने अपनी पुस्तक 'Introduction of Yoga System of Patanjali' में महर्षि पतञ्जलि का समय 300 से 400 ई. के मध्य माना है[2]। डॉ. भंडारकर ने अपने लेख 'पतञ्जलि का काल' में पतञ्जलि का समय 158 ई. पूर्व स्वीकार किया है। द बोथलिक (The Bothlic) ने पतञ्जलि का समय 200 ईसा पूर्व (Ganeri, 2011: Sarvpalli and Moore, 1957) एवं कीथ के अनुसार उनका समय 140 से 150 ईसा पूर्व माना गया है।

पतञ्जलि की कृतियाँ एवं योगदान

भारतीय संस्कृत साहित्य को पतञ्जलि द्वारा तीन प्रमुख ग्रन्थ प्रदान किये गये है। योगसूत्र, अष्टाध्यायी पर महाभाष्य और आयुर्वेद पर चरकसंहिता नामक ग्रन्थ। इस विषय में निरन्तर मतभेत प्राप्त होते रहे हैं कि ये तीनों ग्रन्थ एक ही विद्वान् की कृतियां हैं अथवा नहीं। पाणिनीय व्याकरण शास्त्र को अधिक स्पष्ट रूप प्रदान करने हेतु पतञ्जलि ने महाभाष्य की रचना कर सर्वश्रेष्ठ स्थान को अधिकृत किया है। व्याकरण के अतिरिक्त अन्य शास्त्रों के भी ज्ञाता थे। व्याकरण शास्त्र में उनकी बात को अंतिम प्रमाण के रूप में स्वीकार किया जाता है। महाभाष्य

[2] "The conclusion would be then that Patanjali's Sutras were written at some time in the fourth or fifth century of our era." – Introduction of Yoga System of Patanjali p. xiv

व्याकरण का ग्रंथ होने के साथ-साथ तत्कालीन समाज का विश्वकोश भी माना जाता है। भृतहरि ने अपने ग्रन्थ 'वाक्यपदीय' (अवस्थी, 2013) के प्रारम्भ में पतञ्जलि को नमन करते हुए निम्न श्लोक का वर्णन किया है। प्रायः इस श्लोक का योगाभ्यास प्रारम्भ करने से पूर्व में गाया जाता है -

योगेन चित्तस्य पदेन वाचां मलं शरीरस्य च वैद्यकेन।
योऽपाकरोत्तं प्रवरं मुनीनां पतञ्जलिं प्राञ्जलिरानतोऽस्मि॥

अर्थात् जिन्होनें चित्त की शुद्धि के लिये योगसूत्र का, वाणी की शुद्धि के लिये व्याकरण शास्त्र पर महाभाष्य का तथा शरीर शुद्धि के लिए वैद्यकशास्त्र चरकसंहिता का निर्माण किया, उन मुनिश्रेष्ठ पतञ्जलि को मैं प्रणाम करता हूँ। इन तीनों के अतिरिक्त पतञ्जलि रसायन विद्या के विशिष्ट ज्ञाता थे। जिन्होंने अभ्रक विंदास, अनेक धातुयोग और लौहशास्त्र का निर्माण किया है[3] (जोशी, 1965)।

3.2 व्यासभाष्य एवं महर्षि व्यास

व्यासभाष्य योगसूत्र पर लिखित सर्वाधिक प्रचलित, प्रमाणिक तथा प्रौढ भाष्यग्रन्थ माना जाता है। प्रायः सभी टीकाकारों ने अपनी-अपनी टीकाओं में व्यासभाष्य का ही अनुसरण किया है। साथ ही वाचस्पति मिश्र, विज्ञानभिक्षु जैसे आचार्य भी विशेषतः व्यासभाष्य को ही व्याख्यायित करते हैं। इस भाष्य का दूसरा नाम 'सांख्यप्रवचनभाष्यम्' भी है (श्रीवास्तव, 2011)। टीका साहित्य में भाष्य का सर्वाधिक महत्व है। यह शब्द भाष् धातु से निष्पन्न होता है। इसका लक्षण सहित विशेष अर्थ प्रस्तुत श्लोक से समझा जा सकता है (शर्मा, 1980) –

सूत्रार्थो वर्ण्यते यत्र वाक्यैः सूत्रानुसारिभिः।
स्वपदानि च वर्ण्यन्ते भाष्यं भाष्यविदो विदुः॥

[3] jivani.org/Biography/459/पतंजलि--जीवनी

प्रायः सूत्रग्रन्थों पर भाष्यग्रन्थों की रचना की जाती है । शास्त्रग्रन्थों में विषय, संशय, पूर्वपक्ष, उत्तरपक्ष और निष्कर्ष ये पाँच अधिकरण होते हैं[4] । नागेशभट्ट ने पतञ्जलिकृत महाभाष्य पर रचित 'उद्योत' नामक टीका में भाष्य को परिभाषित करते हुए कहा है कि भाष्य मध्यम बुद्धि वाले व्यक्तियों के लिये भी होना चाहिए अर्थात् अतिविस्तृत तथा अतिसूक्ष्म नहीं होना चाहिए जिससे मध्यम बुद्धि वाला जिज्ञासु भी सरलता से समझ सके[5] (Shastri,1987) । इस प्रकार भाष्य में आवश्यकता स्वरूप प्रतिज्ञा, आक्षेप, सिद्धान्त, समाधान, उदाहरण, प्रश्न, निर्धारण, प्रयोजन, अन्तरोपपादन, प्रतीक, उक्ति, प्रत्युक्ति, साधक-बाधक, विषयविवेचन आदि का समायोजन होता है। यह योगदर्शन के मूलग्रन्थ पातञ्जल योगसूत्र पर लिखित एक भाष्य ग्रन्थ है । जिसके रचयिता व्यास माने जाते हैं । ये व्यास कौन हैं ? इस पर अनेक मतभेद प्राप्त होते हैं । व्यासभाष्य के माध्यम से ही योगदर्शन का शास्त्रीय एवं व्यावहारिक स्वरूप का निरूपण किया गया है । व्यासभाष्य को योगभाष्य, पातञ्जलभाष्य तथा सांख्यप्रवचनभाष्य आदि अन्य नामों से भी सम्बोधित किया जाता है (श्रीवास्तव, 2011) । इसे सांख्यप्रवचनभाष्य कहने का कारण यह है कि योगशास्त्र तथा मूल सांख्यशास्त्र दोनों के तत्वमीमांसा सिद्धान्त समान है तथा व्यासभाष्य की चारों पादों की पुष्पिकाओं में 'सांख्यप्रवचनभाष्ये' पाठ प्राचीन सभी प्रतिलिपियों में प्राप्त होता है । जैसे – "इति पातञ्जले सांख्यप्रवचने योगशास्त्रे समाधिपादः प्रथमः" । इसी बात को योगवार्त्तिककार विज्ञानभिक्षु ने अपने वार्त्तिक में भी स्पष्ट किया है[6] । योगभाष्य को सांख्यप्रवचनभाष्य कहने के लिये एक अन्य तथ्य यह भी है कि 'सांख्य' शब्द का एक अर्थ 'तत्त्वज्ञान' है और इस तत्त्वज्ञान की तीन अवस्थाओं का निरूपण योगदर्शन में किया गया है । इनमें तत्त्वज्ञान के साधनरूप अष्टांगयोग का अभ्यास[7], तत्वज्ञान की प्राप्तिरूप सम्प्रज्ञातयोग की सिद्धि एवं तत्वज्ञान का अतिक्रमणरूप असम्प्रज्ञातयोग की सिद्धि शामिल है । इन्हीं तीनों अवस्थाओं का निरूपण करने वाले भाष्य को सांख्यप्रवचन भाष्य भी कहा जाता है (श्रीवास्तव, 2011) । व्यासभाष्य योगसूत्र में कथित विषयों को प्रमाणों द्वारा परिपुष्ट

[4] विषयो विशयश्चैव पूर्वपक्षस्तथोत्तरम् । प्रयोजनं च पंचाङ्गं शास्त्रेऽधिकरणं मतम् ॥

[5] "नाऽविस्तीर्णं नाऽतिविस्तीर्णं मध्यानामपि बुद्धिकृत् भाष्यम्" (नागेश भट्टकृत उद्योतटीका, पद्य – 4)

[6] सांख्यस्यैव प्रकर्षेण वचनं सांख्यप्रवचनं सांख्ये ह्यभ्युपगमनादेवेश्वरं प्रतिषिध्यासम्प्रज्ञातयोगनैरपेक्ष्येण च जीवतत्त्वज्ञानादेव मोक्ष उक्तोऽस्मिंस्तु शास्त्रे निरुपद्रवासन्दिग्धैच्छिकमुक्ति-नियमाय परमेश्वरविद्या आशुमोक्षहेतुरसम्प्रज्ञातयोगश्च प्रदर्शित इति भावः । (यो.वा.)

[7] 'योगाङ्गानुष्ठानादशुद्धिक्षये ज्ञानदीप्तिराविवेकख्यातेः । (योगसूत्र-2.28)

करता है तथा विरोधी मतों का खण्डन करने की चेष्टा भी करता है। इसकी शैली सक्षम, सुदृढ, सार को ग्रहण कराने वाली है। किन्तु कुछ आधुनिक समीक्षकों ने इसकी निन्दा की है और महाभाष्य तथा शाङ्करभाष्य की अपेक्षा निकृष्ट श्रेणी का भाष्य कहा है। इस पर विज्ञानभिक्षु तथा वाचस्पति मिश्र भास्वतीकार आदि योगपरम्परा के आचार्य इसके प्रति श्रद्धा एवं प्रेम प्रकट करते हुए इसकी शैली को ओजस्विता से परिपूर्ण स्वीकार करते हैं (जोशी, 1965)। यदि भाष्य के रचनाकाल की बात करें तो यह निश्चित करना सरल नहीं है क्योंकि इसके विषय में कोई ठोस प्रमाण उपलब्ध नहीं होते हैं। वाचस्पति मिश्र, जे. एच. वुड्स (J.H. Woods) माघ तथा अन्य गणितज्ञों के युक्तिसंगत उद्धरणों से तथा योगभाष्य में अनेक स्थलों पर बौद्ध दर्शन की छवि प्रदर्शित होती है। अतः योगभाष्य का रचनाकाल विक्रम की तृतीय सदी मानना ही उचित प्रतीत होता है (श्रीवास्तव, 2011)।

व्यासभाष्य में वेद, पुराण, स्मृत्यादि शास्त्रों के वचनों को उद्धृत किया गया है। महर्षि व्यास ने अपने व्यासभाष्य में वैनाशिक-बौद्ध-बाह्यार्हवादियों, वैनाशिक-शुद्धसन्तानवादियों, शून्यवादियों, विज्ञानवादियों आदि के ग्रन्थों के मतों को प्रस्थापित किया है। इसमें क्षणिक, एकान्त, बौद्ध, उच्छेदवाद, शाश्वतवाद, निर्ग्रन्थ, वैशेषिक आदि वादों का स्मरण, खण्डन एवं मण्डन किया गया है। इस प्रकार इस ग्रन्थ की महिमा एवं विशिष्टता सर्वथा अतुल्य है। इसलिये उत्तरकालिक विद्वान् मूलग्रन्थ की अपेक्षा व्यासभाष्य का ही व्याख्यान करते हैं (कर्णाटक, 1974)।

महर्षि व्यास द्वारा रचित व्यासभाष्य पातञ्जल योगदर्शन के उपरान्त सर्वप्रसिद्ध कृति है। इसकी रचना का उद्देश्य योगसूत्र के सिद्धान्तों का विस्तार करना था। प्राचीन काल में व्यास नाम से अनेक आचार्य प्राप्त होते हैं। जिनमें से महाभारत के रचयिता पराशरपुत्र कृष्णद्वैपायन वेदव्यास हुए हैं तथा वेदान्तसूत्रकार बादरायण व्यास हैं। इसके अतिरिक्त व्यास एक प्रकार की उपाधि अथवा गद्दी का भी नाम था। जो व्यक्ति उस पदवी के योग्य अधिकार के रूप में स्वीकार किया जाता था वह उस समय के लिए व्यास कहा जाता था। किन्तु योगभाष्य के प्रणेता व्यास कौन थे ? इसका निर्णय करना अत्यन्त कठिन कार्य है। विज्ञानभिक्षु के द्वारा बादरायण व्यास को ही

व्यासभाष्य का कर्त्ता माना गया है[8] । वाचस्पति मिश्र ने व्यासभाष्य पर तत्ववैशारदी नामक टीका लिखी जिसमें वेदव्यास नाम के व्यासमुनि को व्यासभाष्य के प्रणेता के रूप में स्वीकार किया गया है। किन्तु ब्रह्मसूत्र में प्रयुक्त 'एतेन योगः प्रत्युक्तः' सूत्र के द्वारा योग के खण्डन से निश्चय हो जाता है कि बादरायण व्यास व्यासभाष्य के रचयिता नहीं हैं और न ही कृष्णद्वैपायन हैं । अत्यधिक सम्भावना के अनुसार ऐसा प्रतीत होता है कि इन दोनों व्यास के अतिरिक्त योगभाष्य के रचयिता व्यास कोई अन्य व्यक्ति ही थे । श्री बलदेव उपाध्यय के अनुसार व्यासभाष्य की पुराणता अधिक न होने के कारण वेदव्यास व्यासभाष्य के रचयिता नहीं हैं । इस भाष्य में बौद्ध ग्रन्थों के वाक्यों से न्यूनाधिक्य सदृशता प्राप्त होती है । तद्यथा – 'एतेन भूतेन्द्रियेषु धर्मलक्षणावस्थापरिणामा व्याख्याताः' (3/13), इस सूत्र के भाष्य में भदन्तधर्मत्रात, भदन्तघोक, भदन्तवसुमित्र जैसे बौद्धग्रन्थकार बुद्धदेव के प्रसिद्ध मत के प्रतिपादक वाक्यों के समान वाक्य प्रतीत होते हैं (उपाध्याय, 1976) ।

व्यास का स्थितिकाल

जे. एच. वुड्स (J.H.Woods) के मतानुसार व्यास माघ के पूर्व हो चुके थे । क्योंकि माघ ने अपने शिशुपालवध (शास्त्री, 1985) में परिकर्म शब्द का प्रयोग एक पद्य में किया है –

मैत्र्यादिचित्तपरिकर्मविदो विदग्ध- क्लेश-प्रहाणमिह लब्ध-सबीजयोगाः ।

ख्यातिं च सत्वपुरुषान्यतयाऽधिगम्य, वांछन्ति तामपि समाधिभृतौ निरोद्धुम्[9] ॥

इस पद्य में प्रयुक्त 'परिकर्म' शब्द संस्कृतसाहित्य में प्रायः न के बराबर मिलता है । बौद्धसाहित्य में इस शब्द का कहीं-कहीं प्रयोग प्राप्त होता है । शिशुपालवध में इस शब्द के प्रयोग से अनुमान लगाया जा सकता है कि माघकवि के समय योगदर्शन और योगभाष्य काफी प्रचलित

[8] 'अथ योगानुशासनम् – तदिदं सूत्रमारभ्य समग्रं शास्त्रं सर्वलोकहिता भगवान् बादरायणो व्याचष्टे' (योगवार्तिक)
'श्रीपतंजलिभाष्यदुग्धजलधिर्विज्ञानरत्नाकरो, वेदव्यासमुनीन्द्रबुद्धिकनितो…।' (योगवार्तिक 1.2)

[9] शिशुपालवध (4/55)

था[10](Woods, 2010) । जे.एच. वुड्स (J.H.Woods) (2010) के अनुसार इनका काल 5वीं सदी से पहले नहीं माना जा सकता । जयन्तभट्ट की न्यायमञ्जरी[11] में 'अन्यत्राप्युक्तम्' ऐसा कहकर जिस वाक्य का निर्देश किया है वह योगभाष्य[12] में प्राप्त होता है । डॉ. राधाकृष्णन् (2015) ने व्यासभाष्य का काल चतुर्थ शताब्दी माना है[13] । जबकि जे.एच. वुड्स (J.H.Woods) (2010) दशमलव प्रणाली के संकेत के आधार पर श्रीव्यास का काल छठी शताब्दी के समीप स्वीकार करते हैं । वस्तुतः पातञ्जल योगदर्शन के इस व्यासभाष्य में मोक्षधर्म के विरुद्ध बौद्धमतों का निराकरण किया है । इस दृष्टि से ईसा पूर्व चतुर्थ अथवा पंचम शताब्दी व्यासभाष्य का रचना काल माना जा सकता है । किन्तु इस विवादित विषय का कोई ठोस प्रमाण नहीं है ।

व्यास का परिचय

पुराणों के अनुसार श्रीव्यास के पिता 'पाराशर ऋषि' और माता 'सत्यवती' थीं[14] । व्यास ही कृष्णद्वैपायन अथवा द्वैपायन कहलाते हैं । यह प्रायः सम्भाव्य है कि इन महर्षि का प्रारम्भिक नाम कृष्ण ही हो, द्वीप में जन्म लेने के फलस्वरूप द्वैपायन नाम से प्रसिद्ध हुए हों । वेदों के वर्गीकरण करने के कारण इन्हें वेदव्यास अथवा व्यास कहा जाता है[15] । व्यास के पुत्र का नाम शुकदेव है और इनका साधना स्थल बदरी वन है । इससे अधिक वंश का परिचय प्राप्त नहीं होता है।

महर्षि व्यास की कृतियां

महर्षि व्यास की कृतियां – वेदों का विस्तार, अठारह पुराण और महाभारत हैं, ऐसा सभी विद्वज्जन स्वीकार करते हैं । प्राचीन पुराणों में अनेक स्थलों पर योगसिद्धान्तों के प्रवचन के

---

[10] Introduction to Yoga system of Patanjali, J. H. Woods, P. 221

[11] न्यायमञ्जरी (काशीसंस्करण) पृ. 87

[12] क्रमान्यत्वं परिणामान्यत्वे हेतुः (योगसूत्र 3/15)

[13] भारतीय दर्शन, पृ. 337

[14] पुरा सरस्वतीतीरे व्यासः सत्यवतीसुतः । देवीभागवतपुराणम् – 1/4/4

[15] पातंजलयोगशास्त्र – एक अध्ययन, पृ. 17 (ब्रह्मदत्त अवस्थी)

फलस्वरूप पातञ्जलयोगदर्शन का भाष्य भी व्यासमुनि का व्यवहृत होता है । व्यासभाष्य ही योगसूत्रभाष्य के नाम से प्रसिद्ध हुआ है (कर्णाटक,1974) ।

3.3 भोजवृत्ति एवं आचार्य भोज

योगसूत्र पर प्रणीत अनेक टीकाओं में से भोज द्वारा रचित 'भोजवृत्ति' अत्यन्त प्रसिद्ध है । इसका अपर नाम 'राजमार्तण्ड' भी है । 'भोजवृत्ति' योगविद्वज्जनों के समक्ष सदैव सम्मान के साथ चर्चित थी । क्योंकि इसमें न तो अनावश्यक विषयों को ग्रहण किया है और न ही जटिल विषयों का त्याग किया गया है । भोज ने अपने द्वारा रचित इस ग्रन्थ का प्रमाण स्वयं अपने ग्रन्थ में उल्लेख किया है – **"धारेश्वर-भोजराज-विरचितायां राजामार्तण्डाभिधानायाम्"** (आर्या, 2010) । अपने ग्रन्थ की प्रशंसा करते हुये भोज कहते हैं कि जो अन्य विद्वानों द्वारा दुर्बोध है, उसको सरलता से समझाने हेतु इस ग्रंथ का प्रणयन हुआ है[16] । भोजवृत्ति में अनेक स्थलों पर वाचस्पति मिश्र तथा व्यास के मतों का भी खण्डन किया है । इसमें योग के सूक्ष्मार्थों को उदित करने का भरसक प्रयास किया है । जैसे - द्वितीय अध्याय के 23वें सूत्र में "द्रष्टृ-दृश्य-संयोगस्वरूपं " के वर्णन में गम्भीरता तथा वर्णनात्मकता तुलनात्मक रूप से उत्कृष्ट दिखाई देता है । राजा भोज के राज्य का समय 1075-1110 विक्रम संवत् माना जाता है । कुछ इतिहासकार भोजवृत्ति को 16वीं सदी का ग्रंथ मानते हैं (आर्या, 2010) ।

आचार्य भोज का रचनाकाल

'कीर्तिर्यस्य स जीवति'[17] (Haeberlin, 1847) इस उक्ति के अनुसार मनुष्य का चित्त परिवर्तनशील होता है । धन, सम्पत्ति, युवास्था और जीवन चलायमान होते हैं किन्तु उसके द्वारा किये गए शुभ कर्मों से प्राप्त उसकी कीर्ति सदैव बनी रहती है । इसी अवधारणा का अनुसरण करते हुए भारतीय मनीषीगण प्रायः अपने जीवनवृत्त के विषय में लिखते नहीं हैं । इस परम्परा के

---

[16] "उत्सृज्य विस्तरमुदस्य विकल्पजालं फल्गु प्रकाशमवधार्य च सम्यगर्थान्" (भो.वृ.)

[17] 'स जीवति यशो यस्य कीर्तिर्यस्य स जीवति । अयशोऽकीर्तिसंयुक्तः जीवन्नपि मृतोपमः॥' (काव्यसंग्रह-6)

अन्तर्गत भोज भी आते हैं। अर्थात् उन्होंने भी अपने जीवनवृत्त के बारे में उल्लिखित नहीं किया है। परन्तु 'भोज' यह नाम एक योग्यतम शासक, विद्वानों से समादृत, आश्रयदाता एवं वृत्तिप्रदानकर्त्ता के रूप में अनेक ताम्र पत्रों, दानपत्रों, प्रशस्तिपत्रों एवं शिलालेख आदि में वर्णित हैं। इनके अनुसार इनका शासनकाल सुनिश्चित किया जा सकता है। यह समय 1010 ई. से 1062 ई. तक है। बंसवाडा के ताम्रपत्र में संस्कृत में उल्लेख प्राप्त होता है कि "परमभट्टारकमहाराजाधिराजपरमेश्वर श्रीसीयकदेव पदानुध्यात- परमभट्टारक महाराजाधिराजपरमेश्वर श्रीवाक्पतिराजदेवपदानध्यात-परमभट्टारकमहाराजाधिराजपरमेश्वर–

श्रीसिन्धुराजदेवपदानुध्यातपरमभट्टारकमहाराजाधिराजपरमेश्वर श्री भोजदेव... यथाऽस्माभिः कोंकणविजयपर्वणि... स्वहस्तोऽयं श्रीभोजदेवस्य" । इस ताम्रपत्र में लेखनसमय सं. 1076 माघ शुदि 5 अंकित है। डॉ. फ्लीटमहोदय के अनुसार यह समय 3 जनवरी 1020 ई. था। इसी प्रकार अन्य दानपात्रादि में भी यही समय प्रायः प्राप्त होता है। कल्हणकृत राजतरंगिणी (सिंह, 2019) में पी. वी. काणे (P.V.Kane), सुरेन्द्र नाथ दासगुप्ता आदि विद्वान् भी इसी काल की पुष्टि करते हैं।

इसी क्रम में भोज के राज्य का समय 1075-1110 विक्रमसंवत् माना जाता है। भोज की वृत्ति का योग के अन्य व्याख्याकारों ने भी प्रचुरता से उल्लेख किया है। नागोजिभट्ट (विक्रमसंवत 1772) की वृत्ति में 1/46, 2/5, 2/12 एवं 3/25 आदि स्थलों पर भोजवृत्ति का उल्लेख किया गया है। भोजवृत्ति योगविद्वज्जनों के बीच समादरणीय एवं प्रसिद्ध है। भोज का दूसरा अभिहित नाम 'रणरंगमल्ल' का भी उल्लेख ग्रन्थ की प्रस्तावना-श्लोक की पाँचवीं पंक्ति[18] में मिलता है।

[18] शब्दानामनुशासनं विदधता पातञ्जले कुर्वता वृत्तिं
राजमृगाङ्कसञ्ज्ञकमपि व्यतन्वता वैद्यके।
वाक्चेतोवपुषां मलः फणिभृतां भर्त्रेव येनोद्धृतस्तस्य
श्रीरणरङ्गमल्लनृपतेर्वाचो जयन्त्युज्ज्वलाः ॥ (भोजवृत्ति – प्रस्तावना)

आचार्य भोज का वंशादिपरिचय

डॉ. देवर्षिसनाढ्या शास्त्री (1979) ने अपनी कृति 'भोज प्रबन्ध' में वर्णित 'भोज की राज्यप्राप्ति' की कथा के अनुसार भोज, धारा नगरी के राजा 'सिन्धुल' के पुत्र थे और इनकी माता का नाम सावित्री था। ये परमारवंश के प्रसिद्ध क्षत्रिय थे। भोज विंध्यवासी थे क्योंकि एक स्थल पर इनके द्वारा कहा गया है – "यह अभिप्राय मेरे विंध्यवासी द्वारा कहा गया है" (रेउ, 1932)।

व्याकरण, धर्मशास्त्र, शैवदर्शन, ज्योतिष, वास्तुशास्त्र, रणविद्या आदि विषयों पर आपके ग्रन्थ प्रसिद्ध हैं। प्रसिद्ध धर्मशास्त्र ग्रन्थ याज्ञवल्क्यस्मृति के लब्धप्रतिष्ठित व्याख्याकार अर्थात् मितक्षराकार विज्ञानेश्वर आपके सभा में थे, ऐसी प्रसिद्धि है।

भोज की कृतियां

धारेश्वर उपाधि से विभूषित श्री भोजदेव ने कितनी रचनाएं कीं ? इस विषय में विद्वानों का एकमत नहीं है। उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध तक प्राप्त सभी संस्कृत विषयों के मूलग्रन्थ की सूचियों का संकलन डा. आफ्रेक्ट-महोदय ने किया। यह अत्यन्त बृहत् सूची थी इसलिये इसे तीन भागों में वर्ष 1891, 1896 और 1903 में प्रकाशित किया। और उस सूची का नाम 'कैटलोगस् कैटलोगरम्' दिया गया[19]। इसके अनुसार ही आफ्रेक्ट ने भोज द्वारा रचित कृत्तियों की संख्या की चर्चा की है। जो इस प्रकार है –

1. ज्योतिष में – आदित्यप्रतापसिद्धान्तः, राजमार्तण्डः, राजमृगांकः, विद्वज्जनवल्लभः।
2. चिकित्सा में – आयुर्वेदसर्वस्वम्, विश्रान्तविधानविनोदः, शालोहोत्रम्।
3. शैवशास्त्र – तत्त्वप्रकाशः, शिवतत्त्वरत्नमालिका, युक्तिकल्पतरुः , सिद्धान्तसंग्रहः।
4. नीतिशास्त्र में – चाणक्यनीतिः।

[19] https://sa.wikipedia.org/wiki/मातृकाग्रन्थः

5. कोशविद्या में – नाममालिका ।
6. योगशास्त्र में – पातंजलयोगसूत्र पर टीका (राजमार्तण्डारव्या वृत्तिः) ।
7. धर्मशास्त्र में – व्यवहारसमुच्चयः, चारुचर्या ।
8. व्याकरण में – शब्दानुशासनम् (सरस्वतीकण्ठाभरणम्) ।
9. शिल्पशास्त्र में – समरांगणसूत्रधारः।
10. सुभाषित में – सुभाषितप्रबन्धः ।
11. अलंकारशास्त्र में – सरस्वतीकण्ठाभरणम् ।
12. चम्पूसाहित्य में – चम्पूरामायणम् ।

श्रीयुत विश्वेश्वर रेउ महोदय (1932) द्वारा लिखित 'राजा भोज' नामक ग्रन्थ में भोज रचित 11 ग्रन्थों का उल्लेख किया है । जिसके नाम निम्न है –

1. भुजबलनिबन्धः (ज्योतिष) ।
2. शृंगारप्रकाशः (साहित्य) ।
3. पूर्वमार्तण्डः ।
4. विविधविद्याविचारचतुरा ।
5. सिद्धान्तसारपद्धतिः (धर्मशास्त्र, राजनीतिशास्त्र) ।
6. महाकालीविजयः ।
7. विद्याविनोदः ।
8. शृंगारमंजरी ।
9. कूर्मशतकम् (नाटक) ।
10. कूर्मशतकम् (काव्यम्) ।
11. प्राकृतव्याकरणम् ।

इस प्रकार यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि राजा भोज जैसे महान् ग्रन्थ प्रणेता विरल ही हैं। राजमार्तण्ड की वृत्ति के अन्त की पुष्पिका में इस प्रकार का पद्य प्राप्त होता है जिसमें उनकी प्रशस्ति का उल्लेख है–

सर्वे यस्य वशाः प्रतापवसतेः पादान्तसेवानतिः, प्रभ्रश्यन् मुकुटेषु मूर्धसु दधत्याज्ञां धरिश्रीभृतः।
यद्वत्राम्बुजमाप्य गर्वसमं वाग्देवता संश्रिता, श्रीधारेश्वरभोजदेवनृपतेर्वाचो जयन्त्युज्वलाः ॥[20]

3.4 तत्त्ववैशारदी एवं वाचस्पति मिश्र

योगसूत्र पर व्यास द्वारा रचित भाष्य को समझने के लिये सर्वदर्शनपण्डित वाचस्पति मिश्र ने तत्त्ववैशारदी नामक प्रामाणिक टीका की रचना की। इसको व्यासभाष्य में प्रयुक्त मतभेदों तथा रहस्यों को स्पष्ट करने की दृष्टि से अद्वितीय व्याख्या ग्रन्थ माना जाता है। योगवार्तिक की अपेक्षा तत्त्ववैशारदी का कलेवर लघु है किन्तु भाषा, भाव तथा सहजता की दृष्टि से इसका महत्त्व सर्वातिशायी है। वाचस्पति मिश्र लगभग सभी दर्शनों के ज्ञाता थे। उन्होनें योगदर्शन के सूत्रों पर रचित 'व्यासभाष्य' पर निबद्ध अपने इस 'तत्त्ववैशारदी' नामक टीकाग्रन्थ में अन्य दर्शनों का मिश्रण न करते हुये केवल विशुद्ध भाव से योगदृष्टि से ही व्याख्या की है। व्यासभाष्य को स्पष्ट करने के लिए 'तत्त्ववैशारदी' टीका का निर्माण किया गया। 'तत्त्ववैशारदी' को सुस्पष्ट करने के लिये इस पर भी एक टीकाग्रन्थ प्राप्त होता है। जिसका नाम 'पातंजलरहस्य' टीकाग्रन्थ है और इसके रचयिता राघवानन्द सरस्वती हैं। तत्त्ववैशारदी में अन्य आस्तिक एवं नास्तिक दर्शनों के मतों को भी संग्रहित किया गया है। व्यासभाष्य में प्रयुक्त पाठ भेदों का निदर्शन एवं भाष्य में वर्णित विभिन्न शब्दों का संप्रदाय सहित उल्लेख करके भाष्य को स्पष्ट किया है। जैसे – 'अपरे वैशेषिका'[21] आदि (कर्णाटक, 1992)। व्यासभाष्य में पञ्चशिखासूत्र के उदाहरण के प्रंसग में 'पंचशिखा' नाम का प्रयोग नहीं हुआ है किन्तु तत्त्ववैशारदी में 'पंचशिखा' से सम्बन्धित प्रंसग की चर्चा की गई है। इसी क्रम में

[20]https://web.archive.org/web/20150411131919/http://sanskritdocuments.org/doc_yoga/bhojavritti.html?lang=sa (भोजवृत्ति)

[21] जातिलक्षणदेशैरन्यताऽनवच्छेदात्तुल्ययोस्ततः प्रतिपत्तिः। (यो.सू. 3/53)

योगसूत्र के विभूति पाद के 32वें सूत्र[22] में 'मूर्धपद' का प्रयोग हुआ है। जिसका वर्णन व्यासभाष्य में नहीं किया गया है अपितु तत्त्ववैशारदी में 'मूर्धपद' का अर्थ 'सुषुम्ना नाड़ी' बतलाया गया है। उसी तरह योगसूत्र के समाधि नामक प्रथम पाद के 32वें सूत्र की वृत्ति में वाचस्पति ने ईश्वर को सीधा ईश्वर न कहकर 'एकतत्त्वाभ्यास' से लक्षित किया है। इसके अतिरिक्त अन्य स्थलों पर मौलिक ज्ञान की प्राप्ति होती है। इसमें योगशास्त्र को 'हिरण्यगर्भयोग' से अभिहित किया गया है[23]। इन तथ्यों के आधार पर यह निश्चित किया जा सकता है कि वाचस्पति मिश्र द्वारा रचित 'तत्त्ववैशारदी' एक ऐसा टीकाग्रन्थ है जिसमें अनेक मौलिक विचारों का भी समावेश हुआ है। वाचस्पति के काल के अनुसार ही तत्त्ववैशारदी का रचना काल 841 ई. माना जाता है (श्रीवास्तव, 2011; कर्णाटक, 1992)।

वाचस्पति मिश्र का स्थितिकाल

वाचस्पति मिश्र भारतीय दार्शनिक थे, जिन्होंने पूर्वमीमांसा के अतिरिक्त अन्य सभी दर्शनों पर अपनी टीकाएं लिखीं है। वाचस्पति मिश्र को सर्वतन्त्रस्वतन्त्र से सम्बोधित किया जाता है। प्रारम्भिक रूप से नव्य-न्यायदर्शन पर कार्य करने वाले व्यक्ति भी वाचस्पति मिश्र थे। इसी कार्य को 13वीं शती में गंगेश उपाध्याय ने आगे बढ़ाया। वाचस्पतिमिश्र के समय के विषय में विद्वान् ऐकमत्य नहीं हैं। परन्तु गौतम के न्यायसूत्र के ऊपर रचित न्यायसूचीनिबन्ध नामक ग्रन्थ में उपलब्ध साक्ष्य के आधार पर वाचस्पति मिश्र के कालनिर्धारण में पर्याप्त सहायता प्राप्त होती है[24]। तद्यथा – न्यायसूचीनिबन्धोऽसावकारि सुधियां मुदे। श्रीवाचस्पतिमिश्रेण वस्वंकसुवत्सरे॥

इस श्लोक के अनुसार 898 संवत्सर प्राप्त होता है। परन्तु यह विक्रमसंवत्सर है अथवा शकसंवत्सर इस विषय में मतभेद है। लेकिन श्री उदयवीर शास्त्री (1900), आद्या प्रसाद मिश्र, वुड्स, गंगानाथ

[22] मूर्द्धज्योतिषि सिद्धदर्शनम्। (यो.सू.3/32)

[23] 'हिरण्यकगर्भकृतयोगशास्त्रम्' (यो.सू. त.वै. 1/1)

[24] योगसूत्र का बालरामोदासीन संस्करण, पृ. 105

झा (2011), कीथ (2012), मेक्डोनल (Macdonell) (2004) रमाशंकर भट्टाचार्य आदि विद्वान् विक्रमसंवत्सर स्वीकार करते हैं

[25] । महामहोपाध्याय श्री हरप्रसाद शास्त्री, श्री दिनेश चन्द्र भट्टाचार्य शकसंवत्सर के पक्ष को स्वीकार करते हैं । उदयनाचार्य की लक्षणावली[26] के अन्तिम पद्य से ज्ञात होता है कि तत्त्ववैशारदी का समापन 906 शकसंवत्सर में हुआ था[27] । लक्षणावली तात्पर्यटीका की व्याख्या है । अत एव वाचस्पति मिश्र का काल 8वीं शताब्दी का अन्तिम चरण अथवा 9वीं शताब्दी का प्रारम्भिक चरण माना जा सकता है ।

वाचस्पति मिश्र का वंशादिपरिचय

ये प्रथम मिथिला में मधुबनी के पास अन्धराठाढी गाँव में रहने वाले ब्राह्मण थे । अद्वैत वेदान्त पर लिखी उनकी टीका का नाम उनकी पत्नी भामती के नाम पर रखा गया है और अद्वैत वेदान्त का भामती नामक सम्प्रदाय स्थापित किया गया । क्योंकि ऐसी मान्यता है कि 30 वर्षों के कठिन परिश्रम में लगे रहने के कारण ग्रन्थ की समाप्ति पर उन्हें ज्ञात हुआ कि उनकी एक पत्नी है जो 30 वर्षों से उनकी निःस्वार्थ भाव से सेवा कर रही है । उसके इस त्याग को देखकर वाचस्पति मिश्र ने अपने ग्रन्थ का नाम भामती रख दिया । इनके गुरु का नाम श्री त्रिलोचन मिश्र था । जिसके कुशल निर्देशन में सभी शास्त्रों का गम्भीर अध्ययन किया । त्रिलोचन गुरु के लिये नतमस्तक होते हैं । इससे ज्ञात होता है कि उनके गुरु त्रिलोचन थे । जो एक प्रसिद्ध न्याय शास्त्री कहलाते थे । इसका वर्णन वाचस्पति मिश्र द्वारा रचित 'न्यायवार्त्तिक तात्पर्यटीका' (शास्त्री, 1925) में उद्धृत है –

त्रिलोचनगुरुन्नीत-मार्गानुगमनोन्मुखैः । यथामानं यथावस्तु व्याख्यानमिदमीदृशम् ॥

---

[25] (क) सांख्यदर्शन का इतिहास, पृ. 340-56

(ख) सांख्यदर्शन की ऐतिहासिक परम्परा, पृ. 267-91

(ग) History of Sanskrit Literature – Introduction, p. 21-23.

(घ) सांख्यतत्वकौमुदी भूमिका, महामहोपाध्याय गंगानाथ झा ।

(ङ) History of Sanskrit Literature, p. 619.

[26] https://archive.org/details/in.ernet.dli.2015.349591/mode/2up?view=theater

[27] तर्काम्बरांकप्रमितेष्वतीतेषु शकान्ततः । वर्षेषूदयनश्चक्रे सुबोधां लक्षणावलीम् ॥ (लक्षणावली)

वाचस्पति मिश्र द्वारा रचित ग्रन्थ

वाचस्पति मिश्र ने लगभग सभी प्रमुख दार्शनिक सम्प्रदायों की प्रमुख कृतियों पर अपना भाष्य लिखा है तथा इसके अतिरिक्त 'तत्त्वबिन्दु' नामक एक मूल ग्रन्थ की भी रचना की है जो भाष्यग्रन्थ नहीं है। इनकी कृत्तियों के विषय कोई ठोस प्रमाण उपलब्ध नहीं होते हैं किन्तु अनुमान के आधार पर ग्रन्थों की सूची निम्नप्रकार[28] है -

1. तत्त्ववैशारदी – योगसूत्र के व्यासभाष्य पर सर्वाधिक प्रचलित टीका है।
2. तत्त्वकौमुदी – सांख्यसूत्र के प्रकरण ग्रन्थ सांख्यकारिका पर टीका है।
3. न्यायसूची निबन्ध – न्यायसूत्र सम्बन्धी टीका है।
4. न्यायवार्तिकतात्पर्यटीका – न्यायवार्तिक पर रचित टीका है।
5. न्याय कणिका – मण्डन मिश्र के विधिविवेक ग्रन्थ पर टीका है।
6. भामती - ब्रह्मसूत्र के भाष्य अद्वैत वेदान्त पर सर्वाधिक मान्य एवं आदरणीय टीका है।
7. तत्त्वसमीक्षा – ब्रह्मसिद्धि ग्रन्थ पर लिखित टीका है।
8. ब्रह्मसिद्धि - वेदान्त विषयक ग्रन्थ है।
9. तत्त्वबिन्दु – शब्दतत्त्व तथा शब्दबोध पर आधारित लघु मूल ग्रन्थ है।

3.5 योगवार्तिक एवं विज्ञानभिक्षु

व्यासभाष्य के अनुशीलन हेतु 'योगवार्तिक' संज्ञक प्रौढ एवं बृहत् टीका का निर्माण कार्य विज्ञानभिक्षु द्वारा किया गया है। यह एक विशाल एवं विस्तृत ग्रन्थ है। इसमें योग द्वारा कथित सिद्धान्तों को श्रुतिमूलकता, प्राचीनता, व्यापकता तथा प्रामाणिकता प्रदान करने के लिये श्रुति, स्मृति, इतिहास तथा पुराणादि शास्त्रों में प्राप्त उद्धरणों को स्पष्टता के साथ प्रस्तुत किया गया है।

[28] https://hi.wikipedia. org/wiki/वाचस्पति_मिश्र

टीका शैली की अनेक विशेषताओं के अनुसार यह वार्तिक ग्रन्थ 'सिद्धान्त-सन्दर्भ कोश' का जाज्वल्यमान दीपस्तम्भ है । इसके साथ ही योगवार्तिक में योगभाष्य के अनेक पाठभेदों का भी निर्देश किया है । पाठभेद से अभिप्राय है कि सूत्र की व्याख्या में किसी के द्वारा किसी शब्द तथा अन्य के द्वारा अन्य शब्द का प्रयोग किया जाना । जिसके कारण व्याख्या में ही महत्वपूर्ण भिन्नता दृष्टिगोचर होती है । पाठभेद से प्रमाणिक अर्थ निरूपण सरलतापूर्वक किया जा सकता है। "उक्तानुक्तदुरुक्तचिन्ताकरत्वं वार्तिकम्" प्रस्तुत उक्ति के द्वारा वार्तिक शब्द के अर्थ को जाना जा सकता है । जिसका अर्थ है - योगभाष्य में उक्त, अनुक्त एवं दुरुक्त योग के विषयों पर विचार कर उन्हें स्पष्ट करने का प्रयत्न अथवा ग्रन्थ । विज्ञानभिक्षु के सांख्यभाष्य के पश्चात् ही योगवार्तिक की रचना हुई है और विज्ञानभिक्षु का समय विद्वानों के अनुसार 16वीं शताब्दी के मध्य माना गया है जबकि उदयवीर शास्त्री आदि विद्वानों ने अनेक उचित तर्कों के माध्यम से उनका समय 14वीं शताब्दी ईसा निश्चित किया है ।

विज्ञानभिक्षु ने सांख्यदर्शन पर सांख्यप्रवचन भाष्य तथा योगदर्शन पर योगवार्त्तिक नामक वार्त्तिक ग्रन्थ लिखा है । इनके विषय में विस्तृत रूप से जानकारी तृतीय अध्याय में प्रस्तुत की गयी है ।

4. योगदर्शन के पारिभाषिक शब्दों की सूची (List of Technical Terms of Yoga Philosophy)

योगदर्शन के पारिभाषिक शब्दों के विश्लेषण हेतु 285 पारिभाषिक शब्द संकलित किये गये हैं । जिनकी अकारादिक्र से सूची यहां दी जा रही है । जिससे यह ज्ञात हो सके कि योगदर्शन के किस-किस शब्द को वेबतंत्र में सम्मिलित किया गया है ।

अक्रमः	ऋतम्भरा प्रज्ञा	धर्मी	विकल्पः
अक्लिष्टाः-वृत्तिजातिः	एकतत्वाभ्यासः	धारणा	विक्षिप्तम्
अङ्गमेजयत्वम्	एकभविकः कर्माशयः	ध्यानजचित्तम्	अन्तराय
अङ्गानि	एकाग्रता	ध्यानम्	वितर्काः
अणिमा	एकाग्रता-परिणामः	नित्यख्यातिः	विदेहाः

अतीतानागतज्ञानम्	ऐकाग्र्यम्	निद्रा	विधारणम्
अदृष्टजन्मवेदनीयः कर्माशयः	औषधिसिद्धिः	नियमाः	विपर्ययः
अधिमात्रतीव्रः(संवेगः)	करुणाबलम्	निरुद्धम्	विरामप्रत्ययः
अधिमात्रोपायः	करुणाभावना	निरोधपरिणामः	विवेकज्ञानम् 1
अध्यात्मप्रसादः	कर्म	निर्बीजसमाधिः	विवेकज्ञानम् 2
अनन्तसमापत्तिः	कायधर्मानभिघातः	निर्विचारासमापत्तिः	विशेष-गुणपर्वः
अनवस्थितत्वम्	कायव्यूहज्ञानम्	निर्वितर्का समापत्तिः	विशोका
अनियतविपाकः कर्माशयः	कायसम्पत्	परचित्तज्ञानम्	विशोकासिद्धिः
अनुमानम्	कायसिद्धिः	परवैराग्यम्	विषयवतीप्रवृत्तिः
अन्तरङ्ग साधनम्	कायेन्द्रियसिद्धि:	परशरीरावेशः	वीतरागविषयं चित्तम्
अन्तर्द्धानम्	कारणानि	पुरुषज्ञानम्	वीर्यम्
अन्वयः-इन्द्रियजय	कार्यविमुक्तिप्रज्ञा	पूर्वजातिज्ञानम्	वीर्यलाभः
अन्वयः-भूतजय	कैवल्यम् दृशेः 1	प्रकृतिलयः	वृत्तयः
अपरवैराग्यम्	कैवल्यम् 1	प्रकृत्यापूरः	वेदना
अपरान्तज्ञानम्	कैवल्यम् 3	प्रच्छर्दनम्	वैशारद्यम्
अपरिग्रहः	कैवल्यम् 4	प्रज्ञा 1	व्याधिः
अपरिग्रहफलम्	क्रियायोगः	प्रणवः	व्यानः
अपरिदृष्टा धर्माः	क्लिष्टवृत्तिः	प्रत्यक्षम्	शुचिख्यातिः
अपानः	क्लेशकर्मनिवृत्तिः	प्रत्ययः	शौचफलम्
अभिनिवेशः	क्लेशाः	प्रत्याहार:	शौचम्
अभ्यासः	क्षणस्तत्क्रमश्च	प्रधानजयः	श्रद्धा
अरिष्टानि	क्षिप्तम्	प्रमाणम्	श्रावणम्

अर्थवत्वम् इन्द्रियजयः	क्षुत्पिपासानिवृत्तिः	प्रमादः	श्वासः
अर्थवत्वं भूतजयः	गुणपर्वः	प्रवृत्यालोकन्यासः सिद्धिः	संयमः
अलब्धभूमिकत्वम्	गुणवृत्तिविरोधः	प्रशान्तवाहिता	संयमफलम्
अलिङ्गं गुणपर्वः	गुणाः	प्रश्वासः	संयोगः
अवस्थापरिणामः	गुणात्मा	प्रसुप्तक्लेशः	संशयम्
अविद्या	ग्रहणं रूपम्	प्राकाम्यम्	संस्कारदुःखता
अविरतिः	ग्रहण-समापत्तिः	प्राणः	सत्त्वशुद्धिः
अविशेषाः गुणपर्वः	ग्रहीतृ-समापत्तिः	प्राणायाम:	सत्यफलम्
असम्प्रज्ञातः	ग्राह्य-समापत्तिः	प्राणायामफलम्	सत्यम्
अस्तेयफलम्	चितिशक्तिः	प्राणायामभेदाः	सन्तोषः
अस्तेयम्	चित्तं परार्थम्	प्रातिभज्ञानम्	सन्तोषफलम्
अस्मिता 1	चित्तं सर्वार्थम्	प्रान्तभूमिप्रज्ञा	सबीजसमाधिः
अस्मिता 2-3	चित्तधर्माः	प्राप्तिः	उपायरूपसमाधिः
अस्मिता 4	चित्तप्रसादनम्	बन्धनानि	समाधिः
अहिंसा	चित्तभूमयः	बहिरङ्गम्	समाधिपरिणामः
अहिंसाफलम्	चित्तम्	बाह्यवृत्तिप्राणायाम्	समाधिसिद्धिः
आकाशगमनम्	चित्तम् त्रिगुणम्	ब्रह्मचर्यम्	समानः
आगमः	चित्तविक्षेपाः	भवप्रत्ययः	समानजयः
आत्मख्यातिः	चित्तविमुक्तिप्रज्ञाः	भुवनज्ञानम्	समापत्तिः
आत्मदर्शनयोगत्वम्	चित्तसंवित्	भूतजय:	सम्प्रज्ञातसमाधिः
आत्मभावभावना	जन्मजासिद्धिः	भ्रान्तिदर्शनम्	सर्वज्ञातृत्वम्
आदर्श	ज्ञानदीप्तिः	मधुप्रतीका सिद्धिः	सर्वथाविषयम्-विवेकजज्ञानम्
आनन्दः	ज्योतिष्मतीप्रवृत्तिः	मधुमतीसिद्धिः	सर्वभावाधिष्ठातृत्वम्

आभ्यान्तरशौचसिद्धिः	ज्योतिष्मतीप्रवृत्तिफलम्	मनोजवित्वम्	सर्वरत्नोपस्थानम्
आलस्यम्	तनुक्लेशः	मन्त्रजासिद्धिः	सर्वविषयम्- विवेकजज्ञानम्
आशयः	तपः 1	महाविदेहाधारणा	सर्वार्थता
आसनम्	तपः 2	महाव्रतम्	सविचारा समापत्तिः
आसनसिद्धिः	तपोजासिद्धिः	महिमा	सवितर्का समापत्तिः
आसनसिद्धिः फलम्	तापदुःखता	मुदिताभावना	सिद्धदर्शनम्
आस्वादः	तारकम्	मुदिताबलम्	सुखख्यातिः अविद्या
इन्द्रियजयः	तारागतिज्ञानम्	मूढम्	सूक्ष्मविषयत्वम्
इन्द्रियजयसिद्धिः	ताराव्यूहज्ञानम्	मैत्री	सौमनस्यम्
इन्द्रियसिद्धिः	दिव्यश्रोत्रम्	मैत्रीबलम्	स्त्यानम्
ईशितृत्वम्	दुःखम्	यत्रकामावसायित्वम्	स्थैर्यम्
ईश्वरः	दृश्यम्	यमा:	स्मृतिः 2
ईश्वरप्रणिधानफलम्	दृष्टजन्मवेदनीयः कर्माशयः	योगः	स्मृतिवृत्तिः
ईश्वरप्रणिधानम् 1	दौर्मनस्यम्	योगिनः	स्वाध्याय:
ईश्वरप्रणिधानम् 2	द्रव्यम्	रजसः	स्वाध्यायफलम्
उत्क्रान्तिः	द्रष्टा	राग:	हस्तिबलादीनिसिद्धिः
उदानः	द्वेषः	लघिमा	हानम्
उदानजयः	धर्म:	वशित्वम्	हानोपायः
उदारः	धर्मपरिणामः	वशीकारः	हेतुः
उपायप्रत्ययः	धर्मपरिणामक्रमः	वार्ता	हेयम्
उपेक्षाभावना	धर्ममेघः समाधिः	विकरणभावः	हेयहेतुः
	धर्मिधर्माः		

तालिका 4.1: योगदर्शन के पारिभाषिक शब्दों की सूची

5. योग दर्शन के पारिभाषिक शब्दों के विश्लेषण का आधार (Basis for Analysis of Technical Terms of Yoga Philosophy)

विश्लेषण के मध्य यथासम्भव प्रत्येक शब्द का व्याकरणात्मक व्युत्पत्ति द्वारा अर्थ प्रदर्शित करने का प्रयास किया गया है । पारिभाषिक शब्द का विश्लेषण सर्वप्रथम पातञ्जलयोगदर्शन के अनुसार किया है उसके पश्चात् व्यास, भोज, तत्त्ववैशारदी तथा योगवार्तिक के अनुसार विश्लेषण किया है । कुछ शब्द अत्यन्त विस्तृत होते हैं जिनका वर्णन अन्य दार्शनिक ग्रन्थों में भी उपलब्ध होता है । उनका वर्णन भी संक्षेप में किया गया है ।

6. पारिभाषिक शब्दों का विश्लेषणात्मक अध्ययन (Analytical Study of Terminology)

योगदर्शन के 285 पारिभाषिक शब्दों का विश्लेषण किया है । उन सभी की विषय वस्तु अत्यन्त विस्तृत है । केवल उदाहरण स्वरूप दस पारिभाषिक शब्दों का विश्लेषण अग्रलिखित है-

1

पारिभाषिक शब्द	**योग**
योगसूत्रम्	अथ योगानुशासनम् ॥1.1॥, योगश्चित्तवृत्तिनिरोधः ॥1.2॥
व्यासभाष्य	योगः समाधिः । स च सार्वभौमश्चित्तस्य धर्मः । क्षिप्तं, मूढं, विक्षिप्तम्, एकाग्रं, निरुद्धम् इति चित्त-भूमयः । तत्र विक्षिप्ते चेतसि विक्षेपोपसर्जनी-भूतः समाधिर्न योग-पक्षे वर्तते । यस्त्वेकाग्रे चेतसि सद्-भूतम् अर्थं प्रद्योतयति, क्षिणोति च क्लेशान्, कर्म-बन्धनानि श्लथयति, निरोधम् अभिमुखं करोति, स सम्प्रज्ञातो योग इत्याख्यते । स च वितर्कानुगतः, विचारानुगतः, आनन्दानुगतोऽस्मितानुगत इत्युपरिष्टात्प्रवेदयिष्यामः ।
भोजवृत्ति	चित्तस्य निर्मलसत्त्वपरिणामरूपस्य या

	वृत्तयोऽङ्गाङ्गिभावपरिणामरूपास्तासां निरोधो बहिर्मुखतया परिणतिविच्छेदादन्तर्मुखतया प्रतिलोमपरिणामेन स्वकारणे लयो योग इत्याख्यायते । स च निरोधः सर्वासां चित्तभूमिनां सर्वप्राणिनां धर्मः कदाचित् कस्याश्चिद्भूमवाविर्भवति । ताश्च क्षिप्तं मूढं विक्षिप्तम् एकाग्रं निरुद्धमिति चित्तस्य भूमयश्चित्तस्यावस्थाविशेषाः । तत्र क्षिप्तं रजस उद्रेकादस्थिरं बहिर्मुखतया सुखदुःखादिविषयेषु विकल्पितेषु व्यवहितेषु वा रजसा प्रेरितम् । तच्च सदैव दैत्यदानवादीनाम् । मूढं तमस उद्रेकात् कृत्याकृत्यविभागमन्तरेण क्रोधादिभिर्विरुद्धकृत्येष्वेव नियमितम् । तच्च सदैव रक्षःपिशाचादीनाम् । विक्षिप्तं तु सत्त्वोद्रेकाद्वैशिष्ट्येन परिहृत्य दुःखसाधनं सुखसाधनेष्वेव शब्दादिषु प्रवृत्तम् । तच्च सदैव देवानाम् । एतदुक्तं भवति --- रजसा प्रवृत्तिरूपं तमसा परापकारनियतं सत्त्वेन सुखमयं चित्तं भवति । एतास्तिस्रश्चित्तावस्थाः समाधावनुपयोगिन्यः । एकाग्रनिरुद्धरूपे द्वे च सत्त्वोत्कर्षाद्यथोत्तरमवस्थितत्त्वात् समाधावुपयोगं भजेते । सत्त्वादिक्रमव्युत्क्रमे त्वयमभिप्रायः --- द्वयोरपि रजस्तमसोरत्यन्तहेयत्वेऽप्येतदर्थं रजसः प्रथममुपादानम् । यावन्न प्रवृत्तिर्दर्शिता तावन्निवृत्तिर्न शक्यते दर्शयितुमिति द्वयोर्व्यत्ययेन प्रदर्शनम् । सत्त्वस्य त्वेतदर्थं पश्चात् प्रदर्शनं यत्, तस्योत्कर्षेणोत्तरे द्वे भूमी योगोपयोगिन्याविति । अनयोर्द्वयोरेकाग्रनिरुद्धयोर्भूम्योर्यश्चित्तस्यैकाग्रतारूपः परिणामः स योग इत्युक्तं भवति । एकाग्रे बहिर्वृत्तिनिरोधः । निरुद्धे च सर्वासां वृत्तिनां संस्काराणां च प्रविलय इत्यनयोरेव भूम्योर्योगस्य सम्भवः ॥2॥
तत्ववैशारदी	निरुध्यन्ते यस्मिन्प्रमाणादिवृत्तयोऽवस्थाविशेषे चित्तस्य सोऽवस्थाविशेषो योगः ।
योगवार्तिक	चित्तमन्तःकरणसामान्यमेकस्यैवान्तःकरणस्य वृत्तिभेदमात्रेण चतुर्धात्र दर्शने विभागात् तस्य यावल्लक्ष्यमाणा वृत्तयस्तासां निरोधस्तासां लयाख्योऽधिकरणस्यैवावस्थाविशेषोऽभावस्यास्मन्मतेऽधिकरणावस्थाविशेष

	रूपत्वात्, स योग इत्यर्थः ।
विश्लेषण	सामान्य भाषा में योग शब्द का अर्थ होता है – जोड़ना (Addition) । यह शब्द हिन्दी माध्यम के गणित विषय में संख्याओं को जोड़ने के अर्थ में प्रयुक्त होता है । योग (Yoga) शब्द के एक अन्य प्रचलित अर्थ के रूप में आसन, प्राणायाम आदि शारीरक क्रियाओं को भी लिया जाने लगा है । संस्कृत व्याकरण के अनुसार 'योग' शब्द 'युज्-समाधौ' धातु से घञ् प्रत्यय करके निष्पन्न होता है । पाणिनि व्याकरण के अनुसार युज् धातु तीन गणों मे प्राप्त होती है - (1) 'युज्-समाधौ' धातु दिवादिगणीय (आत्मनेपदी) जिसका अर्थ 'समाधि' है । (2) 'युजिर्-योगे' धातु रुधादिगणीय (उभयपदी) जिसका अर्थ ' जोड़' है । (3) 'युज्-संयमने' धातु चुरादिगणीय (परस्मैपदी) जिसके अनुसार अर्थ 'संयमन' है । योगदर्शन में प्रथम अर्थ 'समाधि' मान्य है । योग सूत्रकार पतञ्जलि के अनुसार चित्त की वृत्तियों का निरोध करना योग कहा गया है । भाष्यकार व्यास ने समाधि को ही 'योग' कहा है और यह समाधि चित्त का सार्वभौम धर्म है । अर्थात् चित्त की सभी भूमियों में रहने वाला धर्म चित्त का सार्वभौमिक धर्म कहलाता है । क्षिप्त, मूढ, विक्षिप्त, एकाग्र और निरुद्ध नामक चित्त की पाँच भूमियाँ होती हैं । इन भूमियों में से विक्षिप्त नामक भूमि योग के प्रकार में शामिल नहीं होती क्योंकि उसमें सर्वथा सुलभ विक्षेपों के कारण समाधि बार-बार गौण हो जाती है । अतः यह योग के पक्ष में नहीं होती है । सभी वृत्तियों का निरोध हो जाने पर प्राप्त होने वाली समाधि को असम्प्रज्ञात समाधि कहा जाता है । आचार्य भोज 'योग' शब्द का व्युत्पत्तिलभ्य अर्थ करते हुए कहते हैं कि 'युज्' (समाधौ) धातु से घञ् प्रत्ययपूर्वक 'योग' शब्द का निर्माण होता है । जिसका अर्थ ध्यान की एकाग्रता है । समाधि के अर्थ में युज् धातु से निष्पन्न होने के कारण योग शब्द का अर्थ समाधि है । योगसूत्र के द्वितीय सूत्र में भोज कहते हैं कि जो चित्त सत्वगुण के शुद्ध परिणाम को प्राप्त

	करता है । ऐसे चित्त के अङ्ग-अङ्गी स्वरूप को जो प्रमाण, विपर्यय, विकल्प, निद्रा एवं स्मृति आदि पाँचों वृत्तियाँ प्राप्त करतीं हैं उन वृत्तियों को ही बाह्य विषयों की ओर से बाधित करना ही योग है । अर्थात् वृत्तियों के अपने ही कारण चित्त में विलीन हो जाना ही योग कहलाता है । 'एकाग्र' और 'निरुद्ध' नामक भूमियों में चित्त का एकाग्रता भूमि में बाह्य वृत्तियों का निरोध हो जाता है । वाचस्पति ने योग की परिभाषा देते हुए कहा है कि 'मधुमती' आदि भूमियों से विदित सार्वभौम चित्तवृत्तियों का निरोध योग है। संक्षेप में कहते हैं कि जिसमें प्रमाणादि वृत्तियाँ अवस्थाविशेष में निरुद्ध की जाती है, वह चित्त की अवस्थाविशेष योग है । विज्ञानभिक्षु ने सारांशरूप में कहा है कि जो एकाग्र चित्त में रहते हुए ध्येय वस्तु को परमार्थ रूप से साक्षात् करवाता है और उससे अविद्यादि पाँच क्लेशों को क्षीण करता है । उससे भी बुद्धि और पुरुष के बन्ध कारणों को शिथिल करता है तथा असम्प्रज्ञातयोग के प्रति परवैराग्य उत्पादन द्वारा अभिमुख करता है वह सम्प्रज्ञातयोग कहा जाता है ।

2

पारिभाषिक शब्द	**चित्तम्**
योगसूत्रम्	योगश्चित्तवृत्तिनिरोधः ॥ 1.2 ॥
व्यासभाष्य	चित्तं हि प्रख्याप्रवृत्तिस्थिति शीलत्वात् त्रिगुणम् ।
भोजवृत्ति	अप्राप्त
तत्ववैशारदी	चित्तशब्देनान्तःकरणं बुद्धिमुपलक्षयति । न हि ज्ञानधर्मा भवितुमर्हति, बुद्धिस्तु भवेदिति भावः ।
योगवार्तिक	चित्तमन्तःकरण सामान्यमेकस्यैवान्तः करणस्य वृत्तिभेदमात्रेण चतुर्धाऽत्र दर्शने विभागात् ।
विश्लेषण	प्रायः 'चित्त' शब्द का अर्थ सामान्य भाषा में 'मन' लिया जाता है । चित्त

	शब्द की व्युत्पत्ति 'चिति संज्ञाने' धातु से हुई है । ज्ञान की अनुभूति के साधन को चित्त कहते हैं । चित्त से तात्पर्य अन्तःकरण माना जाता है । प्रायः अन्तःकरण एक ही है किन्तु वृत्ति भेद से इसके चार विभाग किये गये है । जहाँ वेदान्त दर्शन के अनुसार अन्तःकरण को मन, बुद्धि, चित्त और अहंकार के भेद से चार प्रकार का बताया है, वहीं सांख्यकारिका में चित्त के तीन भेद किये है[29] - मन, बुद्धि और अहङ्कार । पतञ्जलि ने भी अन्तःकरण के तीन (मन, बुद्धि, अहङ्कार) भेद किये है और इनके वाचकरूप में चित्त शब्द का प्रयोग किया है । व्यास के अनुसार चित्त प्रकाशशील, चेष्टाशील और स्थैर्यशील होने के कारण त्रिगुणात्मक है । यह प्रकृति का परिणाम स्वरूप है इसलिये सत्त्वगुण से प्रकाश, रजोगुण के प्रभाव से चेष्टा और तमोगुण की अधिकता से स्थैर्यशील होता है । भोज चित्त के विषय में कुछ नहीं कहते हैं । वाचस्पति मिश्र चित्त को बुद्धि अथवा अन्तःकरण के रूप में स्वीकार करते हैं । विज्ञानभिक्षु के अनुसार अन्तःकरण सामान्य ही चित्त है किंतु ये वाचस्पति के समान बुद्धि से उपलक्षित नहीं करते हैं । इनके अनुसार भी अन्तःकरण के चार भेद है (मन, बुद्धि, चित्त और अहंकार) । इन चारों भेद को चित्त पद से सम्बोधित किया है ।

3

पारिभाषिक शब्द	**धारणा**
योगसूत्रम्	देशबन्धश्चित्तस्य धारणा ॥ 3.1 ॥
व्यासभाष्य	नाभिचक्रे हृदयपुण्डरीके मूर्ध्नि ज्योतिषि नासिकाग्रे जिह्वाग्रे इत्यादिमादिषु देशेषु बाह्ये वा विषये चित्तस्य वृत्तिमात्रेण बन्धैति धारणा ॥
भोजवृत्ति	देशे नाभिचक्रनासादाग्रौ चित्तस्य बन्धो विषयान्तरपरिहारेण

[29] अन्तःकरणं त्रिविधं दशधा बाह्यं त्रयस्य विषयाख्यम् । (सा. का. 33)

	यत्स्थिरीकरणं सा चित्तस्य धारणोच्यते । अयमर्थः - मैत्रयादिचित्तपरिकर्मवासितान्तः करणेन यमनियमवता जितासनेन परिहृत्यप्राणविक्षेपेण प्रत्याहृतेन्द्रियग्रामेण निर्बाधे प्रदेश ऋजुकायेन जितद्वंद्वेन योगिता नासाग्रादौ सम्प्रज्ञातस्य समाधेरभ्यासाय चित्तस्य स्थिरीकरणं कर्तव्यमिति ।
तत्ववैशारदी	आध्यात्मिकदेशमाह नाभिचक्रे इति । आदिशब्देन ताल्वादयो ग्राह्याः । बाह्यदेशमाह बाह्यैति । बाह्ये च न स्वरूपेण चित्तस्य सम्बन्धः सम्भवतीत्युक्तं वृत्तिमात्रेण ज्ञानमात्रेणेत्यर्थः।
योगवार्तिक	यत्र देशे ध्येयं चिन्तनीयं तत्र ध्यानाधारदेशविषये चित्तस्य स्थापनं तदैकाग्र्यं धारणेत्यर्थः ।
विश्लेषण	धारणा शब्द आम बोलचाल में 'मत, राय, विचार' आदि अर्थ में प्रयुक्त होता है । यथा – लोगों ने योग के बारे में यह 'आम धारणा' (आम राय) बना ली है कि यह आसन, प्राणायाम आदि ही है । परन्तु संस्कृत व्याकरण के अनुसार धारणा का व्युत्पत्तिलभ्य अर्थ है - 'धारणम् एव धारणा' धार्यत इति धृ+णिच्+युच्+टाप् = धारणा । 'ध्रियतेऽनेनेति वा धारणा '। वहीं पतञ्जलि के अनुसार योगसूत्र के द्वितीयपाद में वर्णित अष्टांगयोग के अन्तर्गत तीन आभ्यान्तर साधनों (धारणा, ध्यान एवं समाधि) में से धारणा प्रथम साधन है । जिसका अर्थ चित्त का किसी देशविशेष में स्थापित करना ही धारणा नामक योगाङ्ग किया गया है । व्यास धारणा शब्द को अपने भाष्य में स्पष्ट करते हुये कहते हैं कि नाभिचक्र, हृदयपुण्डरीक, मूर्द्धज्योति, नासिकाग्र एवं जिह्वाग्र आदि देशों में चित्त का बँधना अथवा बाह्य विषय में वृत्तिमात्र के द्वारा चित्त का बन्ध ही धारणा है । भोज इस विषय विस्तार से वर्णन करते हैं कि देश नाभिचक्र में दूसरे विषयों के परित्याग द्वारा चित्त को स्थिर करना ही धारणा है । अर्थात् मैत्री करुणा इत्यादि चित्त के परिक्रमों से शुद्ध हुए अन्तःकरण वाले, यम-नियमों का पालन करने

	वाले, आसन पर विजय प्राप्त करने वाले, प्राणवायु के विक्षेप का परिहार करने वाले, (प्राणायाम की सिद्धि करने वाले) विषयों से इन्द्रिय समूहों को लौटा लेने वाले, द्वन्द्वों अर्थात् शीत-ऊष्ण आदि को जीत लेने वाले योगी के द्वारा नासाग्रादि में सम्प्रज्ञात समाधि के अभ्यास के लिये चित्त को एकाग्र करना कर्त्तव्य है । वाचस्पति ने प्रासंगिक स्पष्टीकरण में नाभिचक्र को आध्यात्मिक देश तथा आदिशब्द से तालु आदि में धारणा का संकेत किया है। विज्ञानभिक्षु भी संक्षेप में व्यास के कथन की पुष्टि करते हैं । यहाँ देशबन्धः शब्द से तात्पर्य आकाश, सूर्य, चन्द्र, देव, प्रतिमा इत्यादि बाह्य पदार्थ तथा नाभिचक्र हृदयकमल आदि शरीर के भीतरी स्थान किसी एक में बाँधना देशबन्ध है ।

4

पारिभाषिक शब्द	**ध्यानम्**
योगसूत्रम्	तत्र प्रत्ययैकतानता ध्यानम् ॥ 3.2 ॥
व्यासभाष्य	तस्मिन् देशे ध्येयालम्बनस्य प्रत्ययस्य इक-तानता सदृशः प्रवाहः प्रत्ययान्तरेण अपरामृष्टो ध्यानम् ॥
भोजवृत्ति	तत्र तस्मिन् प्रदेशे यत्र चित्तं धृतं तत्र प्रत्ययस्य ज्ञानस्य या एकतानता विसदृशपरिणामपरिहारद्वारेण यदेव धारणायामवलम्बनीकृतं तदवलम्बनतयैव निरन्तरमुत्पत्तिः सा ध्यानमुच्यते ॥
तत्ववैशारदी	धारणा-साध्यं ध्यानं लक्षयति—तत्र प्रत्ययैकतानता ध्यानम् ॥ एकतानतैकाग्रता । सुगमं भाष्यम् । अत्रापि पुराणम् — तद्-रूप-प्रत्यया चैका सन्ततिश्चान्य-निःस्पृहा । तद्-ध्यानं प्रथमैरङ्गैः षड्भिर् निष्पाद्यते नृप ॥(वि.पु. 6.5.91)

योगवार्तिक	ध्यान-लक्षणं प्राथमिकौत्सर्गिक-ध्यानाभिप्रायेण, सर्वत्र ध्याने देशानियमात् । अतोऽस्य गारुडे लक्षणान्तरम् उक्तम्—तस्यैवब्रह्मणि प्रोक्तं ध्यानं द्वादश-धारणा इत्यनेन । तस्यैव द्वादश-प्राणायाम-कालेन धारित-चित्तस्य द्वादश-धारणा-कालावच्छिन्नं चिन्तनं ध्यानं प्रोक्तम् इत्यर्थः ।
विश्लेषण	'ध्यै चिन्तायाम्' धातु से 'ध्यान' शब्द निर्मित होता है । जिसका अर्थ 'एक विषय में चिन्तन को स्थिर करना' होता है। योगदर्शन में ध्यान को समाधि में सहायक योग का सातवां अङ्ग माना है। सूत्रकार के अनुसार धारणा के विषयभूत पदार्थ में वृत्ति का एक अभिन्न प्रवाह ही 'ध्यान' कहलाता है । व्यास इसे अपने शब्दों में कहते हैं कि "धारणा के देशविशेष में(जहाँ धारणा की जाती है) जब ध्येयवस्तु का ज्ञान एकाकाररूप से प्रवाहित होने लगता है, तब वह ध्यान कहलाता है ।" अर्थात् अन्य विषयक वृत्ति के व्यवधान से रहित जो केवल ध्येय-विषयक वृत्ति की स्थिति है वही ध्यान है । भोज के अनुसार बाह्य आकाशादि अथवा आभ्यान्तर नाभिचक्रादि ध्येय पदार्थ में चित्त को एकाग्र किया जाता है । उसी ध्येय पदार्थ में ज्ञान की जो एकतानता अर्थात् निरन्तर ज्ञान की प्रतीति होती है । उस अवस्था को ध्यान कहते हैं । वाचस्पति मिश्र ने एकतानता का अर्थ चित्त की एकाग्रता किया है । ध्यानकाल में चित्त ध्येय विषय में इतना तल्लीन हो जाता है कि चित्त में अन्य विषयक वृत्तियां उत्पन्न नहीं होतीं । ध्यानावस्था में चित्त के सदृश प्रवाह की उपमा निरन्तर प्रवाहित होने वाली तैलधारा के समान बताई गई है । इसके अतिरिक्त विज्ञानभिक्षु का मत है कि द्वादशप्राणायाम काल से अवच्छिन्न धारणा के बारह गुणा काल पर्यन्त चित्त की जो अखण्ड ध्येयाकारता है वह ध्यान है ।

5

पारिभाषिक शब्द	**समाधिः**
योगसूत्रम्	तदेवार्थमात्रनिर्भासं स्वरूपशून्यमिव समाधिः ॥ 3.3 ॥
व्यासभाष्य	ध्यानमेव ध्येयाकारनिर्भासं प्रत्ययात्मकेन स्वरूपेण शून्यमिव यदा भवति ध्येयस्वभावावेशात्, तदा समाधिरित्युच्यते ।
भोजवृत्ति	समाधिरेकाग्रता । तत्स्मरणाच्येतः समधीयते च ।
तत्ववैशारदी	ध्यानसाध्यं समाधिं लक्षयतितदेवार्थमात्रनिर्भासं स्वरूपशून्यमिव समाधिः ।
योगवार्तिक	मात्रपदस्यार्थः स्वरूपशून्यमिवेत्यनेन स्वयं विवृतः । तदेतद्व्याचष्टे ध्यानमेवेति । यदा तदेव ध्यानं ध्येयस्याकारेणैव साक्षिणि निर्भासते, न तु प्रत्ययाकारनिर्भासम्, चित्तस्य ध्येयस्वरूपावेशेनाहमिदं चिन्तयामीत्येवं प्रत्ययाकारवृत्त्यन्तरानुदयात्तदा ध्यानमेव समाधिरुच्यतेइत्यर्थः । ध्यानस्वरूपस्य वस्तुतः सत्त्वादिवशब्दप्रयोगः, तथा ध्यातृध्येयध्यानकल्पनावद् ध्यानं तद् रहितं च समाधिरिति ध्यानसमाध्योर्विभागः ।
विश्लेषण	महर्षि पतञ्जलि द्वारा रचित योगदर्शन में योग के आठ अङ्गों का वर्णन प्राप्त होता हैं । योग साधना में चित्त को स्थिर करने के लिए जिन साधनों या उपायों द्वारा योग की सिद्धि प्राप्त होती है, वही साधन या उपाय योग के अङ्ग कहलाते हैं । चूंकि इन अङ्गों की संख्या आठ है इसलिए इन्हें अष्टाङ्ग कह दिया जाता है । योगसूत्र के द्वितीय पाद के 29वें सूत्र में अष्टांग योग की विस्तृत चर्चा की गई है । पतञ्जलि ने यम, नियम, आसन, प्रणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि नामक योग के आठ अङ्गों में से समाधि को सर्वश्रेष्ठ अंग माना है । पतञ्जलि योगसूत्र में समाधि के विषय में कहते हैं कि जब साधक ध्येय वस्तु के ध्यान में पूर्ण रूप से डूब जाता है और उसे अपने अस्तित्व का भी ज्ञान नहीं रहता है तो ध्यान की उस अवस्था को समाधि कहा जाता है । व्यास ने भी पतञ्जलि के समान

	ध्यान की उस अवस्था को समाधि माना है जिसमें ध्यान अपना स्वरूप त्याग कर ध्येय वस्तु के आकार के समान हो जाता है । आचार्य भोज समाधि के विषय में अपने विचार प्रकट करते हुए कहते हैं कि जिस ध्यान में अर्थमात्र का अभाव होता है और ध्यान में ध्येय पदार्थ का प्रवेश हो जाता है । उस अवस्था में ध्येय पदार्थ के स्वरूप वाला ज्ञान लुप्त हो जाता है । जब उसी ध्यान अवस्था में चित्त का स्वयं अपना स्वरूप भी शून्य सा हो जाए तब वह ध्यान ही समाधि कहलाता है । इसके साथ ही विक्षेपों (विघ्न) को दूर करके मन को अच्छे प्रकार से एकाग्र करना भी समाधि है । वाचस्पति ने अपनी तत्त्ववैशारदी टीका में समाधि के विषय में पतञ्जलि एवं व्यास के विचारों का ही समर्थन किया है । इसके अतिरिक्त कुछ विशिष्ट अथवा नवीन विचार प्रकट नहीं किये हैं । विज्ञानभिक्षु समाधि के विषय में एक दृष्टान्त देते हुए कहते हैं कि जब 'ध्यान' ध्येय के आकार से ही सभी पदार्थों में निर्भासित होता है तब चित्त (मन, बुद्धि, अहङ्कार) में 'मैं यह सोचता हूं' इस प्रकार की वृत्ति के उदय न होने से ध्यान ही समाधि कहलाता है । समाधि का सामान्य लक्षण चित्त की वृत्तियों (प्रमाण, विपर्यय, विकल्प, निद्रा और स्मृति) का निरोध करना है । चित्त की क्षिप्त, विक्षिप्त, मूढ, एकाग्र और निरुद्ध नामक पाँच अवस्थाएँ अथवा चित्तभूमियाँ हैं । इनमें से चित्त की क्षिप्त, मूढ और विक्षिप्त अवस्था में भी वृत्तिनिरोध थोड़ा बहुत होता है किंतु वह समाधि योग साधन के लिए बिल्कुल उपयोगी नहीं है । योग चित्त की 'एकाग्र' और 'निरुद्ध' नामक भूमियों में रहने वाला धर्म है । इस प्रकार कह सकते हैं कि प्रत्येक 'समाधि' को 'योग' की श्रेणी में नहीं रखा जा सकता जबकि प्रत्येक 'योग' को 'समाधि' के अन्तर्गत रखा जा सकता है । उदाहरण स्वरूप जैसे- सभी मनुष्य जीव हैं, किन्तु सभी जीव

	मनुष्य नहीं हैं । योग के लिए उपयोगी समाधियों के रूप में सम्प्रज्ञात समाधि तथा असम्प्रज्ञात समाधि को ग्रहण किया जाता है ।

6

पारिभाषिक शब्द	**द्रष्टा**
योगसूत्रम्	द्रष्टा दृशिमात्रः शुद्धोऽपि प्रत्ययानुपश्यः॥2.20॥
व्यासभाष्य	द्रष्टा बुद्धेः प्रतिसंवेदी पुरुष ।
भोजवृत्ति	द्रष्टा चिद्रूपः पुरुषः ।
तत्व वैशारदी	चितिच्छायापत्तिरेव बुद्धेर्बुद्धि-प्रतिसंवेदित्वमुदासीनस्यापि पुंसः ।
योगवार्तिक	बुद्धेः प्रतिसंवेदनं, संवेदनस्य बुद्धिवृत्तेः प्रतिबिम्बः । प्रतिध्वनिवदियं प्रयोगः। सोऽस्यास्तीति फलितार्थः ।
विश्लेषण	सामान्यतः द्रष्टा शब्द का अर्थ 'देखने वाला' होता है । यह एक संस्कृतनिष्ठ शब्द है । जिसका निर्माण 'दृशिर् प्रेक्षणे' धातु से कर्त्ता अर्थ में तृच् प्रत्यय के संयोग से होता है तथा उसका व्युत्पत्यर्थ 'सम्यक् रूप से देखने वाला' होता है । योगदर्शन के अनुसार 'द्रष्टा' का अर्थ साक्षी अथवा पुरुष के रूप में ग्रहण किया गया है । पुरुष एक ऐसा आत्मतत्त्व है जिसका स्वरूप केवल चेतनमात्र है और जो सर्वथा शुद्ध एवं निर्विकार है । किन्तु बुद्धि के साथ सम्बन्ध होने से बुद्धिवृत्ति के अनुरूप देखने वाला होने के कारण वह चेतनस्वरूप आत्मतत्त्व 'द्रष्टा' कहलाने लगता है । वह पुरुष न तो बुद्धि के अत्यन्त समान रूप वाला होता है और न ही अत्यन्त असमान रूप वाला होता है । भोजवृत्ति में "द्रष्टा चिद्रूपः पुरुषः" पंक्ति के अनुसार द्रष्टा के विषय में कहा है कि चेतनस्वरूप पुरुष ही द्रष्टा है । वाचस्पति ने बुद्धि को चिति का छायापति कहा है और उसका प्रतिसंवेदी होने से ही द्रष्टा पुरुष के उदासीन होने पर भी उसमें चेतनता है यह दिखलाया है । भिक्षु ने यही बात प्रतिध्वनि की समानता से समझाई है ।

पारिभाषिक शब्द	प्रणवः
योगसूत्रम्	तस्य वाचकः प्रणवः ॥1.27॥
व्यासभाष्य	वाच्य ईश्वरः प्रणवस्य ।
भोजवृत्ति	इत्थमुक्तस्वरूपस्येश्वरस्य वाचकोऽभिधायकः प्रकर्षेण नूयते स्तूयतेऽनेनेति नौति स्तौतीति वा प्रणव ओङ्कारः ।
तत्ववैशारदी	अप्राप्त
योगवार्तिक	तस्येश्वरस्य प्रणवो नामेत्यर्थः । अदृष्टविग्रहो देवो भावग्राह्यो मनोमयः । तस्योंकारः स्मृतो नाम तेनाहूतः प्रसीदति ॥ इति योगियाज्ञवल्क्यादिभ्यः । अदृष्टविग्रहोऽद्भुतशरीरो देवः परमात्मा भावग्राह्यो भक्तिमात्रग्राह्यो मनोमयो मनस्तुल्यकारणोपाधिशबलोऽयःशबलाग्निवदित्यादिरर्थः ।
विश्लेषण	लोकव्यहार में 'प्रणव' शब्द का अर्थ 'ॐकार' प्रचलित है । हिन्दू धर्म में इसे त्रिदेव (ब्रह्मा, विष्णु, महेश) के सृष्टिकार्य रूप में व्याख्यायित किया गया है । जिस प्रकार ब्रह्मा, विष्णु और महेश क्रमशः सृष्टि की उत्पत्ति, पालन एवं संहार करते हैं । उसी प्रकार ॐकार के उच्चारण के समय आदि में ब्रह्मा, मध्य में विष्णु और अन्त में महेश का स्मरण किया जाता है । पतञ्जलि के अनुसार 'प्रणव' (ॐ) शब्द को ईश्वर का वाचक माना गया है और ईश्वर की ही उपासना के लिये उपयोगी साधन बताया है । व्यास का भी यही कथन है कि प्रणव का वाच्य ईश्वर है । भोज ने कहा है कि इस प्रकार पूर्वोक्त स्वरूप वाले ईश्वर का वाचक नाम प्रणव है । इसलिये जिस शब्द के द्वारा ईश्वर की सम्यक् रूप से स्तुति की जाये उस शब्द को प्रणव कहते हैं और प्रणव 'ॐ' को कहते हैं । वाचस्पति ने प्रणव शब्द के विषय में कोई विवेचन नहीं किया है । विज्ञानभिक्षु ने 'उस ईश्वर' का नाम प्रणव है । जिसकी पुष्टि के लिए विज्ञानभिक्षु ने 'योगियाज्ञवल्क्य' के एक पद्य को उदाहृत किया है- "

	अदृष्टविग्रहो देवो भावग्राह्यो मनोमयः । तस्योंकारः स्मृतो नाम तेनाहूतः प्रसीदति ॥" जिसका अर्थ है- परमात्मा को शारीरिक इन्द्रियों के माध्यम से देखा नहीं जा सकता है अपितु ईश्वर का लोहे में व्याप्त अग्नि के समान भाव एवं मन के द्वारा ग्रहण किया जा सकता है। उसका नाम ॐकार है अतः इस नाम से बुलाने पर अथवा स्मरण करने से वह प्रसन्न होता है।

8

पारिभाषिक शब्द	**अध्यात्मप्रसादः**
योगसूत्रम्	निर्विचारवैशारद्येऽध्यात्मप्रसादः ॥1.47॥
व्यासभाष्य	अशुद्धयावरणमलापेतस्य प्रकाशात्मनो बुद्धिसत्त्वस्य रजस्तमोभ्यामनभिभतः स्वच्छः स्थितिप्रवाहो वैशारद्यम् । यदा निर्विचारस्य समाधेर्वैशारद्यमिदं जायते तदा योगिनो भवत्यध्यात्मप्रसादो भूतार्थविषय: क्रमाननुरोधी स्फुट: प्रज्ञालोक: ।
भोजवृत्ति	निर्विचारत्वं व्याख्यातम् । वैशारद्यं नैर्मल्यं, सवितर्क । स्थूलविषयामपेक्ष्य निर्वितर्कायाः प्राधान्यं, ततोऽपि सूक्ष्मविषयायाः सविचारायः, ततोऽपि निर्विकल्परूपाया निर्विचारायाः तस्यास्तु निर्विचाराया: प्रकृष्टाभ्यासवशाद्वैशारद्ये नैर्मल्ये सत्यध्यात्मप्रसाद: समुपजायते । चित्तं क्लेशवासनारहितं स्थितिप्रवाह योग्यं भवति । एतदेव चित्तस्य वैशारद्यं यत्स्थितौ दाढ्यम् ।
तत्ववैशारदी	स्यादेतत् - ग्राह्यविषया चेत्समापत्तिः कथमात्मविषय प्रसाद इत्यत आह भूतार्थविषय इति । नात्मविषयः किंतु तदाधार इत्यर्थः । क्रमाननुरोधी युगदित्यर्थः । अत्रैव पारमर्षी गाथामुदाहरति तथा चेति । ज्ञानालोकप्रकर्षेणात्मानं सर्वेषामुपरिपश्यन्दुःखत्रयपरीतान् शोतो जनान् जनाति ।

योगवार्तिक	आत्मनि बुद्धौ वर्त्तत इत्यध्यात्मं तादृश: । प्रसादशब्दार्थ: विवृणोति भूतार्थेति । यथार्थविषयक: क्रमाननुरोधीयुगपत्सर्वार्थताग्राही स्फुट: प्रत्यक्ष: स प्रज्ञा रव्यालोक इत्यर्थ: ।
विश्लेषण	संस्कृत व्याकरण के अनुसार अध्यात्मप्रसाद शब्द 'षष्ठी तत्पुरुषसमास' से निष्पन्न होकर बनता है । इसका विग्रह 'अध्यात्मनः प्रसादः' है । जिसका विग्रह अर्थ 'अध्यात्म का प्रसाद अथवा बुद्धि का प्रकाश' होता है । पतञ्जलि कृत योगसूत्र में "ता एव सबीजः समाधिः" (1.46) सूत्र में सवितर्का, निर्वितर्का, सविचारा एवं निर्विचारा समापत्तियों को ही सबीज समाधि अथवा सम्प्रज्ञात समाधि कहा गया है । इनमें से निर्विचारा समापत्ति के अभ्यास से योगी के चित्त की स्थिति निर्मल एवं परिपक्व हो जाने पर ' अध्यात्मप्रसाद' की प्राप्ति होती है । अर्थात् एक ही समय में सभी पदार्थों के विषय से सम्बन्धित यथार्थज्ञान की उत्पत्ति होती है । व्यासभाष्यकार ने ' अध्यात्मप्रसाद' को समझाने के लिए सूत्र में कथित 'वैशारद्य' शब्द की व्याख्या की है । जिसमें वैशारद्य को एक ऐसा स्वच्छ स्थितिप्रवाह अर्थात् एकाग्र प्रवाह माना है जो रजोगुण एवं तमोगुण से हीन है तथा प्रकाशस्वभाव वाले सत्वगुण की प्रधानता वाला है । जब निर्विचारा समापत्ति में दृढ अभ्यास से इस वैशारद्य अर्थात् स्वच्छता को प्राप्त कर लिया जाता है तो योगी को 'अध्यात्मप्रसाद' प्राप्त होता है । भोजवृत्तिकार ने भी 'वैशारद्य' शब्द को समझाते हुए 'अध्यात्मप्रसाद' को सिद्ध किया है । इन्होंने वैशारद्य को निर्मलता का पर्यायवाची स्वीकार किया है । साथ ही साथ सवितर्का, निर्वितर्का, सविचारा एवं निर्विचारा आदि चारों समापत्तियों की प्रधानता का उत्तरोत्तर उल्लेख किया है और अन्त में

	निर्विचारा समापत्ति को ही प्रधान रूप में स्वीकार किया है । इसी निर्विचारा समापत्ति में अभ्यास से वैशारद्य अथवा नैर्मल्य को प्राप्त करके अध्यात्मप्रसाद को प्राप्त किया जा सकता है । क्योंकि क्लेश और वासना से रहित स्थितिप्रवाह योग्य चित्त ही वैशारद्य होता है । विज्ञानभिक्षु तथा वाचस्पति मिश्र ने अध्यात्मप्रसाद के विषय में व्यास एवं भोज के विचारों को ही सहमति प्रदान की है । इसके अतिरिक्त उन्होंने कुछ नूतन तथ्यों को प्रस्तुत नहीं किया है ।

9

पारिभाषिक शब्द	**अन्तराय**
योगसूत्रम्	व्याधिस्त्यानसंशयप्रमादालस्याविररतिभ्रान्तिदर्शनालब्धभूमिकत्वानवस्थितत्वानि चित्तविक्षेपास्तेऽन्तरायाः ॥1.30॥, दुःखदौर्मनस्याङ्गमेजयत्वश्वासप्रश्वासा विक्षेपसहभुवः ॥1.31॥
व्यासभाष्य	नवाऽन्तरायाश्चित्तस्य विक्षेपाः । सहैते चित्तवृत्तिभिर्भवन्ति । एतेषामभावे न भवन्ति पूर्वोक्ताश्चित्तवृत्तयः ।
भोजवृत्ति	नवैते रजस्तमोबलात् प्रवर्तमानाश्चित्तस्य विक्षेपा भवन्ति । तैरेकाग्रताविरोधिभिश्चित्तं विक्षिप्यत इत्यर्थः ।
तत्ववैशारदी	पृच्छति अथ कैति । सानान्येनोत्तरं—यैति । विशेष-साङ्ख्ये पृच्छति—के पुनरिति । उत्तरमाह व्याधीत्यादि सूत्रेण । अन्तराया नव । एताश्चित्तवृत्तयो योगान्तराया योगविरोधिनः, चित्तस्य विक्षेपाः । चित्तं खल्वमी व्याध्यादयो योगाद् विक्षिपन्तियपनयन्तीति विक्षेपाः ।
योगवार्तिक	व्याध्यादेरन्तरायत्वोपपादनाय सूत्रे चित्तविक्षेपा इति वदिष्यति । तस्य व्याख्यानार्थम्भाष्ये वक्रोक्तिः । विक्षेपाः विक्षेपकाः । सामान्येन दत्तोत्तरं विशेषसङ्ख्याभ्यां पुनः पृच्छति-के पुनरिति ।
विश्लेषण	संस्कृत साहित्य में किसी भी शास्त्र के प्रारम्भ में मंगलाचरण का प्रावधान

	किया गया है । जिसका उद्देश्य उस शास्त्र में होने वाले विघ्नों का नाश करना होता है । प्रत्येक मनुष्य अपने जीवन में समय-समय पर विभिन्न प्रकार के विघ्नों (Problems) से घिरा रहता है तथा मनुष्य उनके निवारण के निरन्तर प्रयत्न करता रहता है ताकि वह अपने जीवन में सुख की प्राप्ति कर सके। योगदर्शन में विघ्नों को 'अन्तराय' शब्द से सम्बोधित किया गया है । ये अन्तराय समाधि में बाधा उत्पन्न करने वाले होते हैं । अर्थात् योगसाधना में लगे हुए साधक के चित्त में विक्षेप उत्पन्न करके उसे विचलित करने वाले होते हैं। योगदर्शन में अन्तरायों की संख्या 9 मानी गई है । यथा – व्याधि, स्त्यान, संशय, प्रमाद, आलस्य, अविरति, भ्रान्तिदर्शन, अलब्धभूमिकत्व एवं अनवस्थितत्व । भाष्यकार अन्तराय के विषय में अपने विचार प्रकट करते हुए कहते हैं कि ये नव 'अन्तराय' चित्त को विक्षिप्त करने वाले चित्त विक्षेपक होते हैं । जो प्रमाणादि (प्रमाण, विपर्यय, विकल्प, निद्रा एवं स्मृति) पाँचों चित्त की वृत्तियों के साथ ही होते हैं तथा इनसे पृथक् नहीं होते हैं । विक्षेपों के न होने पर पूर्वकथित प्रमाणादि वृत्तियाँ उत्पन्न नहीं होती हैं। इन नव विक्षेपों के अतिरिक्त दुःख, दौर्मनस्य, अङ्गकम्पन, श्वास और प्रश्वास नामक 5 भेद इन विक्षेपों के साथी होते हैं। अर्थात् व्याधि-स्त्यानादि नव अन्तरायों को मुख्य अन्तराय कहा गया है तथा दुःख-दौर्मनस्य आदि पाँच अन्तरायों को सहायक अन्तराय की श्रेणी में परिगणित किया गया है। भोज के अनुसार चित्त की एकाग्रता के विरोधी विघ्न को चित्त के विक्षेप कहा जाता है । वाचस्पति मिश्र तथा विज्ञानभिक्षु शंका और समाधान के माध्यम से अन्तराय को समझाते हुए प्रश्न करते हैं कि ये कौन से अन्तराय हैं ? और उत्तर देते हैं कि जो चित्त के प्रति विक्षेपकारी है अर्थात् जो चित्त को उद्विग्न (अशान्त) कर उसकी एकाग्रता को भंग करते हैं वे अन्तराय कहलाते हैं।

10

पारिभाषिक शब्द	प्रातिभज्ञानम्
योगसूत्रम्	प्रातिभाद्वा सर्वम् ॥3.33॥, ततः प्रातिभश्रावणवेदनादर्शास्वादवार्ता जायन्ते ॥3.36॥
व्यासभाष्य	प्रातिभं नाम तारकम् । तद्विवेकजस्य ज्ञानस्य पूर्वरूपम् । यथोदये प्रभा भास्करस्य । तेन वा सर्वमेव जानाति योगी, प्रातिभस्य ज्ञानस्योत्पत्ताविति ॥3.33॥, प्रातिभात्सूक्ष्मव्यवहितविप्रकृष्टातीतानागतज्ञानम् ॥3.36॥
भोजवृत्ति	निमित्तानपेक्षं मनोमात्रजन्यमविसंवादकं द्रागुत्पद्यमानं ज्ञानं प्रतिभा । तस्यां संयमे क्रियमाणे प्रातिभं विवेकख्यातेः पूर्वभावि तारकं ज्ञानमुदेति । यथोदेष्यतः सवितुः पूर्वं प्रभा प्रादुर्भवति तद्वद्विवेकख्यातेः पूर्वं तारकं सर्वविषयं ज्ञानमुत्पद्यते । तस्मिन् सति संयमान्तरानपेक्षः सर्वं जानातीत्यर्थः ॥33॥
तत्ववैशारदी	प्रतिभा ऊहः, तद्भवं प्रातिभं, प्रसङ्ख्यानहेतुसंयमवतो हि तत्प्रकर्षे प्रसङ्ख्यानोदयपूर्वलिङ्गं यदूहजं ज्ञानं, तेन सर्वं विजानाति योगी । तत्र प्रसङ्ख्यान सन्निधापनेन संसारात्तारयतीति तारकम् ॥33॥
योगवार्तिक	तच्च विवेकजस्य वक्ष्यमाणस्य सार्वज्ञ्यस्य पूर्वलिङ्गम् । तत्र दृष्टान्तो यथा सूर्योदयस्य पूर्वलिङ्गं प्रभेति, तेन वा प्रातिभ ज्ञानेनसर्वपूर्वोक्तमतीतानागतादि सिद्धपर्यन्तं योगीजानाति पूर्वोक्तान् संयमान् विनाऽपीत्यर्थः ।
विश्लेषण	योगसूत्र के 'विभूति' नामक तृतीय पाद में 'प्रातिभज्ञान' की चर्चा की गई है । पतञ्जलि ने कहा है कि जब साधक स्वार्थ (पुरुष) में संयम करता है तब वह पुरुषसाक्षात्कार के पहले ही प्रातिभ, श्रावण, वेदन, आदर्श, आस्वाद तथा वार्ता नामक सिद्धियों को प्राप्त कर लेता है । इन सिद्धियों में से प्रातिभ नामक सिद्धि को 'प्रातिभज्ञान' के नाम से भी जाना जाता है ।

	जिसका अर्थ 'सब कुछ ज्ञात करना' किया गया है । अर्थात् ऐसा ज्ञान जिसमें सूक्ष्म, अन्तरित एवं दूरस्थ तथा अतीत और अनागत का ज्ञान होता है उसे 'प्रातिभज्ञान' कहा जाता है । महर्षि व्यास इसे उदाहरण के माध्यम से सरल शब्दों में समझाते हुए कहते हैं कि प्रातिभज्ञान ही तारकज्ञान है । 'प्रातिभज्ञान' विवेकज्ञान का प्रारम्भिक रूप होता है । जैसे - सूर्योदय की सूचना 'उषा' से ही जाती है जबकि उषा में सूर्य के समान प्रकाश भी नहीं होता है । फिर भी रात्रि के अन्धकार में डूबे हुए समस्त पदार्थों की पर्याप्त जानकारी उषा के प्रकाश के माध्यम से भी हो जाती है । ठीक उसी प्रकार विवेकज्ञान के समान परम प्रकाश प्रातिभज्ञान में नहीं होता है किन्तु फिर भी उस प्रातिभज्ञान से सब कुछ ज्ञात होता है । तात्पर्य यह है कि विवेकज्ञान के उदित होने के पूर्व बुद्धि में जो असामान्य प्रतिभा उदित होती है, उसका प्रकाश ही प्रातिभज्ञान है । भोज के अनुसार किसी निमित्त की अपेक्षा के बिना ही केवल बुद्धि में उत्पन्न होने वाला संवाद रहित अर्थात् बाह्य उपदेश के बिना तत्काल उत्पन्न ज्ञान प्रातिभज्ञान कहलाता है । अर्थात् प्रातिभज्ञान बुद्धि में तत्काल होने वाला वह ज्ञान है जो बाह्य विषयों और उनके आलम्बनों की अपेक्षा नहीं रखता । इसे 'तारक' भी कहते हैं । वाचस्पति मिश्र प्रातिभज्ञान को समझाते हुए शब्द की व्युत्पत्ति पर प्रकाश डालते हैं । और कहते हैं कि 'प्रातिभ' शब्द 'प्रतिभा' शब्द से निष्पन्न होता है । जिसमें 'प्रतिभा' का अर्थ 'ऊह' स्वीकार किया है । अर्थात् निर्धारण, परीक्षण अथवा तर्कणा और प्रतिभा से उत्पन्न होने वाला ज्ञान प्रातिभज्ञान कहा जाता है । यह प्रातिभज्ञान 'संसारात् तारयति' व्युत्पत्ति के अनुसार संसार से पार कराता है इसलिये यह तारकज्ञान भी कहलाता है । विज्ञानभिक्षु भी वाचस्पति मिश्र के कथन को ही स्वीकार करते हैं ।

पञ्चम अध्याय

साङ्ख्य-योग दर्शन के पारिभाषिक शब्दों के विश्लेषण हेतु वेब तंत्र का विकास एवं परिचय तथा दर्शन से सम्बन्धित उपलब्ध सिस्टम से तुलना

Development and Introduction of Web System for Analysis of Technical Terms of Sāṅkhya-Yoga Philosophy and Comparison with other Available Systems Related to Philosophy

प्रस्तुत शोध का उद्देश्य अनुसंधान के साथ-साथ साङ्ख्य-योग दर्शन के पारिभाषिक शब्दों के लिए एक वेब आधारित सिस्टम का विकास करना है । अनुसंधान में साङ्ख्य-योग दर्शन के पारिभाषिक शब्दों का संकलन कर विभिन्न मूलग्रन्थ, प्रकरणग्रन्थ एवं टीकाओं के आधार पर उनका सरल एवं समुचित विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है । इन्हीं पारिभाषिक शब्दों को सुलभ एवं सुगम बनाने के लिए एक वेब आधारित सिस्टम का भी निर्माण किया गया है, जो http://cl.sanskrit.du.ac.in/sy पर उपलब्ध है । यह सिस्टम ई-शिक्षण (E-Learning) के क्षेत्र में बहुत ही उपयोगी है । अतः इस वेब सिस्टम का लिंक संस्कृत विभाग, कला संकाय, दिल्ली विश्वविद्यालय के संगणकीय भाषाविज्ञान अनुसंधान एवं विकास हेतु विकसित अन्तर्जाल http://cl.sanskrit.du.ac.in पर ई-शिक्षण टूल्स (E-Learning Tools) मेनू के अन्तर्गत उपलब्ध है। प्रस्तुत अध्याय में इसी वेब आधारित सिस्टम का विस्तृत विवरण प्रस्तुत किया गया है ।

1. सामग्री एवं संग्रहण पद्धति (Data and Collection Methedology)

प्रस्तुत शोध में डेटा के रूप में साङ्ख्यदर्शन के लिए कपिल द्वारा रचित सांख्यदर्शन में 527 सूत्रों का समावेश किया है । सांख्यदर्शन के पारिभाषिक शब्दों के संग्रह हेतु सांख्यसूत्र, सांख्यप्रवचनभाष्य एवं सांख्यकारिका को आधार बनाया है । इन सबके आधार पर ही प्रत्येक शब्द का विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है । कुछ शब्द तीनों आधारित ग्रन्थों में उपलब्ध होते हैं तथा कुछ

शब्द केवल सांख्यकारिका में ही प्राप्त होते हैं। जिनका वर्णन सांख्यसूत्र एवं सांख्यप्रवचनभाष्य में प्राप्त नहीं होता है और कुछ शब्दों की चर्चा केवल सांख्यसूत्र एवं भाष्य में ही उपलब्ध होती है, ऐसे शब्द सांख्यकारिका में दृष्टिगोचर नहीं होते हैं। शब्द संकलन के लिए इन सब तथ्यों को ही आधार बनाया गया है। योगदर्शन के लिए पतञ्जलि के योगसूत्र को आधार बनाया गया है। इस शास्त्र में 194 सूत्रों का समावेश किया है । योगदर्शन के पारिभाषिक शब्दों के संग्रह हेतु योगसूत्र, व्यासभाष्य, भोजवृत्ति, तत्त्ववैशारदी एवं योगवार्तिक को आधार बनाया है।

इन दोनों दर्शनों के मूल, प्रकरण, भाष्य एवं टीका ग्रन्थों से अध्ययन करके सबसे पहले परिभाषिक शब्दों का सङ्ग्रह किया गया। इस प्रकार शोधार्थी को साङ्ख्य दर्शन से कुल 100 एवं योगदर्शन से कुल 285 शब्दों का सङ्ग्रह किया गया। जिसका विस्तृत विवरण तृतीय एवं चतुर्थ अध्याय के तालिका सङ्ख्या 3.1 एवं 4.1 में प्रस्तुत किया गया है।

2. डेटा डिजिटलीकरण (Digitization of Data)

साङ्ख्य एवं योग दर्शन से सङ्गृहीत पारिभाषिक शब्दों के लिए अलग डिजिटल डेटाबेस का निर्माण किया गया है एवं सभी पारिभाषिक शब्दों को एक अद्वितीय आईडी दी गई। जिसका प्रारूप तालिका सङ्ख्या 5.1 एवं 5.2 में दिया गया है। यह डेटाबेस पारिभाषिक शब्दों के सत्यापन के लिए भी सहायता करता है एवं अद्वितीय आईडी अन्य सूचनाओं को खोजने में सहायता करती है। पारिभाषिक पदों के लक्षण के लिए अलग डेटाबेस का निर्माण मूल, प्रकरण एवं भाष्य ग्रन्थों के आधार पर किया गया है। इसका प्रारूप तालिका सङ्ख्या 5.3 एवं 5.4 में देखा जा सकता है। जैसाकि स्पष्ट किया जा चुका है कि यह सिस्टम प्रत्येक पारिभाषिक शब्द का पूर्ण सन्दर्भ के साथ विस्तृत विश्लेषण भी करता है। इसलिए विभिन्न ग्रन्थों का अध्ययन करके शोधार्थी द्वारा सुगम एवं बहुत ही सरल भाषा में इनका विश्लेषण एक अन्य डेटाबेस में सङ्ग्रहीत किया गया है। इसका प्रारूप तालिका सङ्ख्या 5.5 एवं 5.6 में देखा जा सकता है। सभी डेटा देवनागरी यूनीकोड में लिखित हैं। विश्लेषण हिन्दी में प्रस्तुत किया गया है। अभी सारे डेटा टेक्स्ट फाइल में सङ्ग्रहीत किए गए हैं परन्तु बाद में आवश्यकता पड़ने पर डेटाबेस में स्थानान्तरित किया जाएगा।

SR	पारिभाषिक शब्द	दर्शन
1	प्रमाण	सांख्यसूत्र
2	अपवर्ग	सांख्यसूत्र
3	अदृष्ट	सांख्यसूत्र
4	बन्धः	सांख्यसूत्र
5	मनः	सांख्यसूत्र
6	अध्यवसाय	सांख्यसूत्र
7	अनुमान	सांख्यसूत्र
8	अभिमान	सांख्यसूत्र
9	अधिकारि	सांख्यसूत्र
10	शब्द	सांख्यसूत्र

तालिका 5.1: साङ्ख्य दर्शन पारिभाषिक शब्द डेटाबेस

SR	पारिभाषिक शब्द	दर्शन
1	अक्रमः	योगसूत्र
2	अङ्गानि	योगसूत्र
3	अणिमा	योगसूत्र
4	अतीतानागतज्ञानम्	योगसूत्र
5	अधिमात्रोपायः	योगसूत्र
6	अध्यात्मप्रसादः	योगसूत्र
7	अनन्तसमापत्तिः	योगसूत्र
8	अनवस्थितत्वम्	योगसूत्र
9	अनुमानम्	योगसूत्र
10	अन्तर्द्धानम्	योगसूत्र

तालिका 5.2: योग दर्शन पारिभाषिक शब्द डेटाबेस

SR	Lakshan	Text
1	द्वयोरेकतरस्य वाऽप्यसन्निकृष्टार्थपरिच्छित्तिः प्रमा तत्साधकतमं यत्तत् त्रिविधं प्रमाणम् ॥1.87॥	सांख्यसूत्र
2	इतरैतरवत्तद्दोषात्॥3.65॥	सांख्यसूत्र
3	पुरुषार्थं करणोद्भवोऽप्यदृष्टोल्लासात् ॥2.36॥	सांख्यसूत्र
4	बन्धो विपर्ययात् ॥3.24॥	सांख्यसूत्र
5	उभयात्मकञ्च मनः॥2.26॥	सांख्यसूत्र
6	अध्यवसायो बुद्धिः॥2.13॥	सांख्यसूत्र
7	प्रतिबन्धदृशः प्रतिबद्धज्ञानमनुमानम्॥1.100॥	सांख्यसूत्र
8	जपास्फटिकयोरिव नोपरागः किन्त्वभिमानः ॥6.28॥	सांख्यसूत्र
9	अधिकारित्रैविध्यान्न नियमः ॥1.70॥, अधिकारिप्रभेदान्न नियमः ॥3.76॥, अधिकारित्रैविध्यान्न नियमः ॥6.22॥	सांख्यसूत्र
10	आप्तोपदेशः शब्दः॥1.101॥	सांख्यसूत्र

तालिका 5.3: साङ्ख्य दर्शन लक्षण डेटाबेस

SR	Lakshan	Text
1	तारकं सर्वविषयं सर्वथाविषयमक्रमं चेति विवेकजं ज्ञानम् ॥ 3.54 ॥	योग सूत्र
2	यमनियमासनप्राणायामप्रत्याहारधारणाध्यानसमाधयोऽष्टाव् अङ्गानि॥2.29॥	योग सूत्र
3	ततोऽणिमादिप्रादुर्भावः कायसंपत्तद्धर्मानभिघातश्च ॥ 3.45 ॥	योग सूत्र
4	परिणामत्रयसंयमादतीतानागतज्ञानम् ॥ 3.16॥	योग सूत्र
5	तीव्रसंवेगानाम् आसन्नः ॥ 1.21 ॥, मृदुमध्याधिमात्रत्वात् ततोऽपि विशेषः ॥ 1.22 ॥	योग सूत्र
6	निर्विचारवैशारद्येऽध्यात्मप्रसादः ॥ 1.47 ॥	योग सूत्र
7	प्रयत्नशैथिल्यानन्तसमापत्तिभ्याम् ॥ 2.47 ॥	योग सूत्र
8	व्याधिस्त्यानसंशयप्रमादालस्याविरतिभ्रान्तिदर्शनालब्धभूमिकत्वानवस्थितत्वानि चित्तविक्षेपास् तेऽन्तरायाः ॥ 1.30 ॥	योग सूत्र

9	प्रत्यक्षानुमानागमाः प्रमाणानि ॥ 1.7 ॥	योग सूत्र
10	कायरूपसंयमात् तद्ग्राह्यशक्तिस्तम्भे चक्षुःप्रकाशासंप्रयोगेऽन्तर्धानम् ॥ 3.21 ॥	योग सूत्र

तालिका 5.4: योग दर्शन लक्षण डेटाबेस

SR	विश्लेषण
1	'प्र' उपसर्गपूर्वक 'मा' धातु से 'ल्युट' का 'करण' अर्थ में प्रयोग करके प्रमाण शब्द व्युत्पन्न होता है जिसका अर्थ प्रमा या साधन होता है….
2	'अप' उपसर्ग सहित 'वृजी वर्जने' धातु से 'घञ्' प्रत्यय करने के बाद 'अपवर्ग शब्द निष्पन्न होता है, जिसका धात्वर्थ की दृष्टि से अर्थ अपवर्जन या त्याग होता है; परन्तु शास्त्रों में यह मोक्षवाचक हो गया है …….
3	"न दृष्टमिति अदृष्टम्" इस व्याकरणिक व्युत्पत्यानुसार अदृष्ट पद में नञ् तत्पुरुष समास है। जिसका व्युत्पत्तिलभ्य अर्थ है- जो देखा न गया हो । महर्षि कपिल कहते है कि अदृष्ट (धर्माऽधर्म) की अभिव्यक्ति भोग या मोक्ष के लिये करणों …..
4	प्रायः प्रत्येक दर्शन का प्रयोजन मोक्ष प्राप्ति तथा अपवर्ग है। जिससे मनुष्य इस जन्म-मरण के चक्र से मुक्ति पा सके। इसके विपरीत बन्ध को माना जाता है यह शब्द "बन्ध बन्धने" तथा "बन्ध संयमने" धातु से 'घञ्' प्रत्यय द्वारा निर्मित होता है…..
5	सूत्रकार कहते हैं कि मन उभयेन्द्रिय है। अर्थात् यह ज्ञानेंद्रिय तथा कर्मेंद्रिय है। इसी तथ्य को भाष्यकार स्पष्ट करते हुए कहते हैं कि एकादश इन्द्रिय समुदाय में मन उभयात्मक है। मन का संबंध दोनों के साथ रहता है……..
6	अध्यवसाय शब्द मुख्यरूप से निश्चयार्थ वाचक है। जो अधि तथा अव उपसर्गों के साथ षो अन्तःकर्मणि धातु से घञ् प्रत्यय से निष्पन्न होता है । सांख्य के अनुसार अध्यवसाय निश्चयात्मक वृत्ति वाली बुद्धि है …..
7	अनु उपसर्गपूर्वक मा माने धातु से ल्युट्प्रत्यय भावार्थ में होकर अनुमान शब्द सिद्ध होता है

	। जिसका अर्थ होता अनुमीयते येन तदनुमानम् अर्थात् जिससे अनुमान किया जाये….
8	अभिमान शब्द 'अभि' उपसर्ग पूर्वक 'मनु अवबोधने' धातु से 'घञ्' प्रत्यय द्वारा निष्पन्न होता है जिसका अर्थ ज्ञान विशेष है । प्रत्येक दर्शन में इसका भिन्न अर्थों में प्रयोग हुआ है….
9	किसी भी ग्रन्थ को पढने का एक अधिकारी होता है । वेदान्तसार में भी कहा गया है कि अधिकारी साधनचतुष्टयसम्पन्न होना चाहिये । सांख्य में एक प्रश्न उपस्थित होता है कि ज्ञान एवं मोक्ष का अधिकारी कौन है …
10	किसी भी वस्तु को प्रमाणित करने के लिए किसी न किसी प्रमाण की आवश्यकता होती है । सामान्य भाषा में शब्द का अर्थ एक सार्थक ध्वनि है ….

तालिका 5.5: साङ्ख्य दर्शन विश्लेषण डेटाबेस

SR	**विश्लेषण**
1	योगदर्शन में विवेकज ज्ञान (लक्ष्य) को चार लक्षणों (विशेषणों) के माध्यम से सिद्ध किया गया हैं, जिनमें से अक्रम चौथा लक्षण है । सामान्य भाषा में जो क्रम बद्ध नहीं है वह अक्रम है ….
2	यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि ये आठ योग के अङ्ग माने जाते हैं । जिनका विवरण पृथक-पृथक रूप से क्रमानुसार किया गया है …..
3	भूतजय से प्राप्त होने वाली अणिमादि आठ सिद्धियों में से अणिमा प्रथम सिद्धि है । व्यास तथा भोज के अनुसार अणु के सदृश सूक्ष्मता को प्राप्त कर लेना अणिमा है । जिसे वाचस्पति मिश्र कुछ इस प्रकार व्यक्त करते हैं ..
4	जो विभूति संयम से साध्य होती हैं उनमें प्रथम विभूति 'अतीतानागतज्ञान' है । सूत्रकार पतञ्जलि के अनुसार 'पदार्थ या धर्मी के परिणामत्रय (धर्म, लक्षण और अवस्था परिणाम) में संयम (ध्यान, धारणा और समाधि) करने से योगी को उस धर्मी के अतीत (भूत) एवं अनागत

	(भविष्य) का ज्ञान हो जाता है …..
5	'तीव्रसंवेगानामासन्नः (1.21)' तथा समाधिलाभः समाधिफलं च भवतीति । के अनुसार अधिमात्र उपाय तीव्रसंवेग संपन्न योगियों को समाधिसिद्धि और समाधिसिद्धि का फल बहुत शीघ्र होता है ….
6	अध्यात्मनः प्रसादः इति अध्यात्मप्रसादः । षष्ठी तत्पुरुषसमासः । जिसका सामान्यतः शाब्दिक अर्थ होता है - अध्यात्म का प्रसाद अथवा बुद्धि का प्रकाश । पातञ्जलयोग सूत्र के अनुसार निर्विचार सम्प्रज्ञात समाधि के परिपक्व एवं निर्मल होने पर अध्यात्मप्रसाद प्राप्त होता है …..
7	समस्त शारीरिक चेष्टाओं को रोकने से और अनन्त नामक शेषनाग (जिन्होंने अपने फण पर पृथ्वी को धारण किया हुआ है) में चित्त को एकरूप करने से आसन की सिद्धि होती है ……
8	योग साधना में बाधा उत्पन्न करने वाले विघ्न ही चित्तविक्षेप कहलाते हैं । चित्तविक्षेपों के नौ अन्तरायों में 'अनवस्थितत्व' नौवाँ अन्तराय है ….
9	योग दर्शन में चित्त की पाँच वृत्तियों में से प्रमाण प्रथम वृत्ति है । प्रमाण के तीन भेद हैं जिनमें से अनुमान द्वितीय प्रमाण है । अनुमान प्रत्यक्ष पर आधारित होता है इसलिये इसका वर्णन प्रत्यक्ष के पश्चात ही किया गया है …..
10	संयम से प्राप्त होने वाली पाँचवे प्रकार की सिद्धि का कथन किया गया है जिसमें शरीर के रूप में संयम करने से उस रूप की ग्राह्यशक्ति के स्तम्भित होने पर अन्य पुरुष के चक्षुः प्रकाश अर्थात् चक्षुरिन्द्रिय से योगी के शरीर का संयोग न हो पाने के कारण योगी अंतर्हित (अंतर्द्धान) रहता है ……

तालिका 5.6: योगदर्शन विश्लेषण डेटाबेस

3. सूचना निष्कर्षण पद्धति (Information Extraction Techniques)

सूचना निष्कर्षण के लिए सबसे पहले इन्पुट का सत्यापन किया जाता है । अगर इन्पुट सही पाया जाता है तो सबसे पहले प्रत्येक शब्द की अनुक्रमणिका स्वतः निर्मित की जाती है । इसी

अनुक्रमणिका की सहायता से सूचनाएं अन्य डेटाबेस में सर्च की जाती है । प्राप्त सूचनाओं को प्रदर्शित करने के लिए भेजा जाता है। अनुकमणिका निर्मित करने के लिए वरीयता (Ranking) ऐसे शब्दों को दी जाती है जो पूर्ण शब्द के रूप में प्रस्तुत ग्रन्थों के सूत्रों में प्राप्त होते हैं। दूसरी वरीयता खोजे गए शब्द से प्रारम्भ होने वाले शब्दों को दी जाती है। इसी प्रकार तीसरे क्रम में खोजे गए शब्द से अन्त होने वाले शब्द एवं अन्त में खोजा गया शब्द मध्य में प्राप्त शब्दों के क्रम में परिणाम को श्रेणीबद्ध किया जाता है। साथ ही साथ खोजे गए शब्द पारिभाषिक शब्दों के लिए डेटाबेस के आधार पर पूर्ण विश्लेषण भी निर्मित किया जाता है।

4. साङ्ख्य-योग दर्शन के लिए वेब आधारित सिस्टम का विकास (Development of Web Based System for Sāṅkhya-Yoga philosophy)

जैसा कि पहले स्पष्ट किया जा चुका है इस शोध का एक उद्देश्य साङ्ख्य-योग दर्शन के पारिभाषिक शब्दों के लिए वेब आधारित सिस्टम का विकास करना है । अतः इसके विकास में मुख्यरूप से दो प्रकार की सामग्री की आवश्यकता पड़ती है। पहली है साङ्ख्य-योग के पारिभाषिक शब्दों का डेटा जहां से सूचनाएं एकत्र करनी है। दूसरी है वेब तकनीक जहां पर यूजर इन्पुट दे सके, आउटपुट प्राप्त कर सकें एवं इसके लिए प्रयुक्त की जाने वाली तकनीक जैसे एचटीएमएल पेज, सर्वर, कम्प्यूटर प्रोग्राम आदि जिसके माध्यम से साङ्ख्य-योग पारिभाषिक शब्दों के डेटा से सूचनाएं खोजकर निकालनी है। साङ्ख्य-योग पारिभाषिक शब्दों के डेटा का विवरण प्रस्तुत किया जा चुका है। वेब तकनीक में मुख्यरूप से दो मुख्य सङ्घटक होते हैं। प्रथम फ्रण्ट एंड **(Front end)** एवं द्वितीय बैक एंड **(Back end)** ये दोनों ही वेब विकास में बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। वे एक ही सिक्के के दो पहलू की तरह हैं। फ्रंट-एंड वेबसाइट के सभी दृश्य पहलुओं को कहा जा सकता है जिसे उपयोगकर्ता देख और अनुभव कर सकता है । तकनीकी भाषा में फ्रंट-एंड को "क्लाइंट-साइड" के रूप में भी जाना जाता है। इसके विपरीत बैकग्राउंड में होने वाली हर चीज को बैक-एंड वेब डेवलपमेंट के लिए मुख्य संघटक माना जाता है। इसी से सूचनाएं कैसे और कब प्रस्तुत करनी है सबका निर्णय होता है। इनका विस्तृत विवरण अग्रलिखित है-

4.1 फ्रण्ट एंड (Front end)

फ्रंट-एंड का विकास एचटीएमएल (**HTML**) में किया जाता है। इसी एचटीएमएल पेज को और आकर्षक एवं उपयोगी बनाने के लिए इसमें सीएसएस (**CSS**) एवं जावास्क्रिप्ट (**JavaScript**) के कोड शामिल किए जाते हैं।

एचटीएमएल (HTML)

वेब पेज का दूसरा नाम एचटीएमएल (HTML) जिसका विस्तृतरूप HyperText Markup Language है। इसका मुख्य कार्य है लिखे हुए निर्देशों के आधार पर वेब-ब्राउजर पर पृष्ठ को प्रस्तुत करना। यह 1991 के अंत में बर्नर्स-ली (Berners-Lee) द्वारा विकसित किया गया था। यह वेब पन्नों और वेब आधारित एप बनाने में इस्तेमाल होने वाली एक मार्कअप भाषा है। वेब ब्राउज़र द्वारा किसी वेबसाइट के पन्ने को खोलने पर उसके वेब सर्वर से एचटीएमएल के रूप में दस्तावेज (डॉक्युमेंट) प्राप्त होता है, जिसे वेब ब्राउज़र मल्टीमीडिया वेब पन्ने में बदल देता है। अभी तक इसके कुल 5 संस्करण आ चुके हैं इसका सबसे नवीनतम संस्करण एचटीएमल 5 है। एचटीएमएल पेज में सीएसएस (CSS) एवं जावास्क्रिप्ट (JS) का प्रयोग कर इसे और भी अधिक उपयोगी बनाया जाता है। एचटीएमएल और सीएसएस के मानक का रखरखाव वर्ल्ड वाइड वेब कॉन्सोर्शियम (W3C) करती है। एक सामान्य एचटीएमएल पेज की कोडिंग को चित्रसंख्या 5.1 में प्रस्तुत किया गया है।

```
<!DOCTYPE html>
<html>
  <head>
    <title>This is a title</title>
  </head>
  <body>
    <h1>Hello world!</h1>
       <h2>Hello world!</h2>
  </body>
</html>
```

चित्र 5.1: एचटीएमएल पेज कोडिंग

एचटीएमएल को सरल टेक्स्ट (Plain Text) जैसे notepad में सम्पादित किया जाता है एवं फिर .html के रूप में सेव (save) किया जाता है । इसके लिए किसी विशेष सम्पादन टूल की आवश्यकता नहीं पड़ती है।

सीएसएस (CSS)

CSS अर्थात् कास्केडिंग स्टाइल शीट्स (cascading style sheet) जिसका प्रयोग HTML पेज के विभिन्न तत्वों जैसे स्क्रीन, पृष्ठ या अन्य मीडिया आदि को प्रदर्शित करने के लिए किया जाता है । प्रायः इसका प्रयोग हम तब करते हैं जब एक किसी वेबसाइट में बहुत सारे पेज होते हैं और उसकी स्टाइल समान होती है तब सभी पेज पर एचटीएमएल के कोड को लिखने के बजाय हम इसे सीएसएस में लिख लेते हैं। बस एचटीएमएल में इसी सीएसएस पेज को कॉल कर लेते हैं। CSS से समय की बचत होती है। यह एक-साथ कई वेब पेजों के लेआउट को नियंत्रित कर सकता है। CSS का प्रयोग किसी भी प्लेटफॉर्म पर कर सकते हैं, जैसे - Window, linux, mancintosh आदि । इसका निर्माण Håkon Wium Lie द्वारा 10 अक्टूबर 1994 में किया गया था। सीएसएस का रख-रखाव (maintain) W3C का ही CSS working group द्वारा किया जाता है । सीएसएस मुख्य तीन प्रकार से कार्य करता है।

a. **Inline:** इसका प्रयोग web pages में वहीं किया जाता है जहाँ इसकी जरूरत होती है। इसका उपयोग आप किसी विशेष html element को आकार देने के लिए कर सकते है।
b. **Internal:** इसका कोड पेज के ऊपर head section के मध्य <style> element के भीतर लिखा जाता है एवं इसका उपयोग उसी एचटीएमएल के पेज में id अथवा class से कहीं भी कॉल करके किया जाता है।
c. **External:** इसका उपयोग सबसे अधिक किया जाता है । यह स्टाइल किसी अन्य स्थान पर .css फाइल में लिखी जाती है एवं आवश्यकता पड़ने पर किसी भी एचटीएमएल पेज में <link> element के भीतर पूरे पाथ के साथ लिंक करते हैं एवं उस फाइल में कहीं भी id अथवा class से कॉल करके उपयोग में लाते हैं।

सीएसएस को भी सरल टेक्स्ट (Plain Text) जैसे Notepad में सम्पादित किया जाता है एवं फिर .css के रूप में सेव किया जाता है। इसके लिए किसी विशेष सम्पादन टूल की आवश्यकता नहीं पड़ती है।

जावास्क्रिप्ट (Java Script)

जावा स्क्रिप्ट एचटीएमएल एवं वेब की प्रोग्रामिंग लैंग्वेज है। इसे डायनामिक कम्प्यूटर प्रोग्रामिंग भाषा (Dynamic Computer Programming Language) भी कहते है। यह एक स्क्रिप्टिंग भाषा है। स्क्रिप्ट को सरल टेक्स्ट (Plain Text) के रूप में कुछ विशेष Syntax के रूप में सम्पादित किया जाता है। जावा स्क्रिप्ट का आविष्कार केवल दस दिन के भीतर ही सन् 1995 में Brendan Eich ने किया था। जो नेट कम्यूनिकेशन कॉर्पोरेशन में प्रोग्रामर (Netscape Communication Corporation Programmer) थे। प्रारम्भ में इसका नाम Mocha रखा गया था। बाद में बदलकर लाइव स्क्रिप्ट (LiveScript) और अंत मे जावास्क्रिप्ट कर दिया गया। जावास्क्रिप्ट, एचटीएमएल पृष्ठों में गतिशील टेक्स्ट (Dynamic Text) डालने की सुविधा देती है। यद्यपि इसके नाम में जावा शब्द आया हुआ है तथापि इसका जावा नामक प्रोग्रामिंग भाषा से कोई सम्बन्ध नहीं है। लेकिन जावा तथा जावास्क्रिप्ट दोनों का सिन्टैक्स सी लैंग्वेज के सिन्टैक्स से प्रभावित है।

4.2 बैक एंड (Back end)

बैकग्राउंड में चलने वाली विभिन्न प्रक्रियाओं को बैक-एंड कहा जाता है। किसी भी वेब आधारित सिस्टम में बैक-एंड में मुख्यरूप से कम्प्यूटर प्रोग्राम, डेटाबेस एवं वेबपेज को कनेक्ट करने के लिए किसी भी वेब सर्वर जैसे अपाची टॉमकैट (**Apache Tomcat**), अपाची(**Apache**), फ्लास्क (**Flask**), डैन्गो (**Django**) आदि का प्रयोग किया जाता है। वेब आधारित सिस्टम के लिए किसी भी प्रोग्रामिंग भाषा जैसे **C++, JAVA, Python** आदि एवं डेटाबेस का प्रयोग किया जा सकता है। वेबसर्वर का चयन प्रोग्रामिंग भाषा के अनुसार किया जाता है। प्रस्तुत शोध के माध्यम से विकसित वेब आधारित सिस्टम के लिए प्रोग्रामिंग भाषा के रूप में पाइथॉन (**Python**), डेटाबेस के लिए **MySQL** एवं पाइथॉन को सपोर्ट करने के लिए फ्लास्क (**Flask**) सर्वर का प्रयोग किया गया है। जिसका सामान्य परिचय निम्नलिखित है-

जावास्क्रिप्ट (Java Script)

जावा स्क्रिप्ट का प्रयोग एचटीएमएल (**HTML**) में किया जाता है। इसी एचटीएमएल पेज को और आकर्षक एवं उपयोगी बनाने के लिए इसमें सीएसएस (**CSS**) एवं जावास्क्रिप्ट (**JavaScript**) के कोड शामिल किए जाते हैं।

प्रोगामिंग भाषा: पाइथॉन (Python)

सीखने एवं प्रयोग करने में सबसे सरल एवं शक्तिशाली प्रोग्रामिंग लेंग्वेज पाइथॉन है। यह सामान्य कार्यों के लिए उपयुक्त, उच्च स्तरीय प्रोग्रामिंग भाषा (General Purpose and High Level Programming language), इन्टरैक्टिव, ऑब्जेक्ट ओरिएन्टेड, स्क्रिप्टिंग भाषा है। इस प्रोग्रामिंग भाषा को Guido van Rossum ने 1991 में बनाया था। यह वस्तुतः एक प्रोग्रामिंग लिपि है, जिसमें प्रोग्राम चलाने के लिए कोड को कंपाईल अर्थात् पूर्व-संयोजित करने की आवश्यकता नहीं होती है। इस भाषा की डिजाइन-दर्शन में कूट-पठनीयता (code readability) पर जोर दिया गया है। पाइथॉन का दावा है कि इसका सिन्टैक्स बहुत स्पष्ट है; इसकी मानक लाइब्रेरी विशाल और सर्वसमाहित (comprehensive) है। कई लिनक्स सिस्टमों के साथ पाइथॉन प्रायः जुड़ा हुआ (pre-installed) आता है। इसका बडे पैमाने पर उपयोग करने वाले संस्थानों में से Google, न्यूयॉर्क स्टॉक एक्सचेंज (New York Stock Exchange), जादू, कोरल (Coral), डी-लिंक (D-Link), ईव–ऑनलाइन (Eve-Online), गेमिंग (Gaming), हैकिंग (Hacking), MMORPG, हनीवेल Honeywell, एचपी (HP), औद्योगिक प्रकाश और संगीत, फिलिप्स (Philips) और यूनाइटेड अंतरिक्ष गठबंधन (United Space Alliance) आदि भी हैं। यह एक फ्री (ओपन सोर्स सॉफ्टवेयर) प्रोग्रामिंग लेंग्वेज है। पाइथॉन सीखने की दृष्टि से बहुत आसान है। आप लिनक्स (Linux), विंडोज (Windows), लबादा (Macintosh), सोलारिस (Solaris), ओएस (OS) /2, Amiga, AROS, के रूप में 400, BeOS, ओएस/390, Z/ओएस (OS), पाम

ओएस, QNX, वीएमएस पर पाइथॉन का उपयोग कर सकते हैं। पाइथॉन को www.python.org पर निःशुल्क डाउनलोड किया जा सकता है।

वेब सर्वर - फ्लास्क (Flask)

फ्लास्क एक माइक्रो वेब फ्रेमवर्क है जिसे पाइथॉन में लिखा गया है। इसे किसी विशेष लाइब्रेरी अथवा टूल की आवश्यकता नहीं होती है। यह किसी भी वेब साइट का Back-end Program होता है। Pinterest और LinkedIn नामक एप्लिकेशन भी फ़्लास्क फ्रेमवर्क का उपयोग करते हैं। फ़्लास्क को आर्मिन रोनाचेर (Armin Ronacher) ने बनाया था। आर्मिन रोनाचेर पोकू (Pocoo), एक अन्तर्राष्ट्रीय पाइथॉन उत्साही संगठन के सदस्य थे। फ़्लास्क शीघ्र ही पाइथॉन प्रोग्रामर के मध्य प्रचलित हो गया और Python Developers Survey 2018 में इसे सर्वाधिक प्रचलित वेब फ्रेमवर्क के रूप में नामित किया गया। यह Micro Web Framework दो कम्पोनेन्ट पर आधारित है – Werkzeug और Jinja। Werkzeug पाइथॉन प्रोग्रामिंग भाषा के लिए एक उपयोगी पुस्तकालय है। दूसरे शब्दों में वेब सर्वर गेटवे इंटरफ़ेस (WSGI) एप्लिकेशन्स के लिए एक टूलकिट है एवं BSD Licence के तहत प्रमाणित है। यह पाइथॉन 2.7, 3.5 और बाद के संस्करण को को सपोर्ट करता है। Jinja भी Ronacher द्वारा निर्मित किया गया है। यह पाइथॉन प्रोग्रामिंग भाषा के लिए एक Template Engine है। फ्लास्क के कोड को निम्न उदाहरण के माध्यम से समझा जा सकता है जोकि सामान्य वेब एप्लिकेशन के द्वारा "Hello World!" प्रिंट करता है –

```
from flask import Flask
app = Flask(__name__)
@app.route("/")
def hello():
  return "Hello World!"
if __name__ == "__main__":
  app.run()
```

5. साङ्ख्य-योग दर्शन के पारिभाषिक शब्दों के लिए वेब आधारित सिस्टम का परिचय (Introduction to Web Based System for Technical Terms of Sāṅkhya-Yoga Philosophy)

ऊपर स्पष्ट किया जा चुका है कि विभिन्न वेब तकनीक का प्रयोग करके साङ्ख्य-योग दर्शन के पारिभाषिक शब्दों के लिए वेब आधारित सिस्टम का का विकास किया गया है। यह सिस्टम कैसे कार्य करता है, इसमें कितने संघटक हैं, इसका प्रयोग कैसे किया जाता है आदि का परिचय प्रस्तुत किया जा रहा है-

5.1 फ्रन्ट एण्ड (Front End)

इस सिस्टम का फ्रन्ट एण्ड एचटीएमएल, सीएसएस एवं जावा स्क्रिप्ट के साथ फ्लास्क द्वारा समर्थित पाइथॉन के कोड को सम्मिलित करके विकसित किया गया है। जिसके निम्नलिखित अवयव है।

5.1.1 यूजर इन्टरफेस (User Interface)

यूजर इंटरफेस (यूआई) वह बिंदु है जिसके माध्यम से उपयोगकर्ता कंप्यूटर, वेबसाइट या किसी एप्लिकेशन के साथ परस्पर संवाद (Interact) करता है। एक प्रभावशाली यूआई का लक्ष्य उपयोगकर्ता के अनुभव को आसान और सहज बनाना है, जिससे अधिकतम वांछित परिणाम प्राप्त करने के लिए उपयोगकर्ता की ओर से न्यूनतम प्रयास की आवश्यकता होती है। प्रस्तुत सिस्टम का यूजर इन्टरफेस Form-based user interface: तकनीक का प्रयोग करके विकसित किया गया है। जहाँ पर उपयोगकर्ता टेक्स्ट एरिया एवं ड्रॉपडाउन मेनू के माध्यम से इन्पुट प्रदान कर सकता है। उपयोगकर्ता यूजर इन्टरफेस में उपलब्ध एक टेक्स्ट एरिया में देवनागरी यूनीकोड (Unicode) में अपना इन्पुट प्रविष्ट करके अथवा ड्रॉपडाउन लिस्ट से शब्द चुनकर सब्मिट कर सकता है। इसी इन्टरफेस पर परिणाम भी ऑउटपुट के रूप में उपयोगकर्ता को प्राप्त होता है। यूजर इन्टरफेस का प्रारूप चित्र सङ्ख्या 5.1 में प्रदर्शित किया गया है।

5.1.2 टेक्स्ट एरिया (Text Area)

इस सिस्टम के यूजर इन्टरफेस पर एक टेक्स्ट एरिया उपलब्ध है जिसमें उपयोगकर्ता यूनीकोड देवनागरी में इन्पुट के रूप में साङ्ख्य-योग दर्शन के पारिभाषिक शब्दों को टंकित (Type) कर सकता है । वर्तमान समय में यह सिस्टम यूनीकोड देवनागरी में ही टंकित (Type) किए हुये शब्दों को ही स्वीकार करता है । अतः इन्पुट केवल यूनीकोड में देवनागरी लिपि में ही दिया जा सकता है। अन्यथा कोई परिणाम प्राप्त नहीं होगा । टेक्स्ट एरिया (Text Area) चित्र सङ्ख्या 5.2 में दिखाया गया है । यदि कोई व्यक्ति एक साथ एक से अधिक पारिभाषिक शब्द के विषय में जानकारी प्राप्त करना चाहता है तो यह भी सम्भव है । इस टेक्स्ट एरिया में एक साथ एक से अधिक शब्दों के नाम स्पेस (" "), टैब या नई लाइन के साथ दिए जा सकते हैं ।

5.1.3 ड्रॉपडाउन मेनू (Dropdown Menu)

इन्पुट को और अधिक सुगम बनाने के लिए साङ्ख्य योग दर्शन के पारिभाषिक शब्दों की खोजने योग्य सूची भी ड्रॉपडाउन मेनू के रूप में प्रदान की गई है । यूजर इन्टरफेस पर दाँई तरफ "साङ्ख्य के पारिभाषिक शब्द की सूची" तथा "योग के पारिभाषिक शब्द की सूची" नामक अकारादि क्रम से दो ड्रॉपडाउन मेनू (Dropdown menu) दिए गए हैं । जिस पर क्लिक करने पर साङ्ख्य तथा योग दर्शन के पारिभाषिक शब्दों की सूची प्रकट हो जाती है, जिसका उपयोग कर उपयोगकर्ता सरलतापूर्वक पारिभाषिक शब्दों का चयन कर सकता है । जो व्यक्ति साङ्ख्य-योग दर्शन के पारिभाषिक शब्दों के विषय में जानते नहीं है तथा जो देवनागरी लिपि में यूनीकोड में टाईप करने में असमर्थ है, ऐसे उपयोगकर्ता के लिए यह ड्रॉपडाउन मेनू अत्यंत लाभकारी है ।

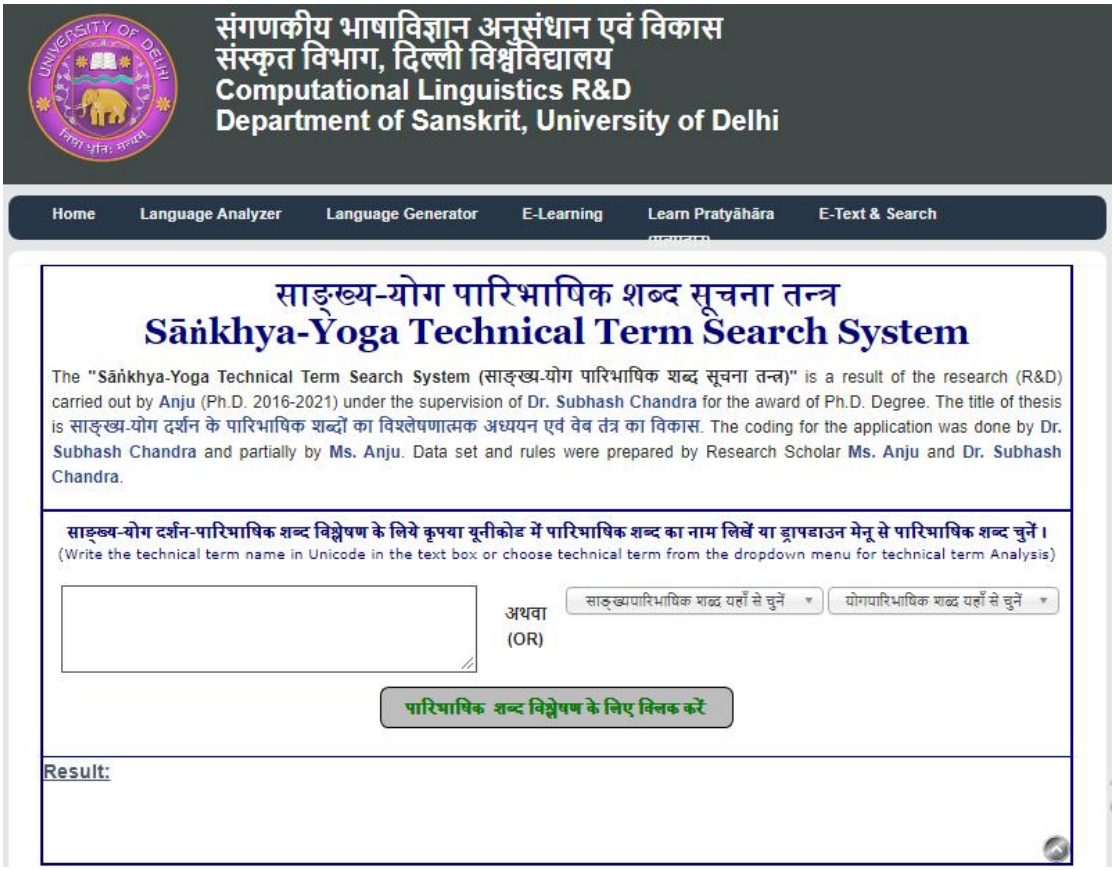

चित्र 5.2: टेक्स्ट एरिया (Text Area)

5.1.4 सब्मिट बटन (Submit Button)

उपयोगकर्ता द्वारा प्रदत्त इन्पुट को अगली प्रक्रिया हेतु भेजने के लिए सब्मिट बटन का प्रयोग किया जाता है। सब्मिट बटन पर क्लिक करके उपयोगकर्ता से प्राप्त इन्पुट अग्रिम प्रक्रिया के लिए बैक एण्ड प्रोग्राम को प्रेषित किया जाता है। सब्मिट बटन चित्र सङ्ख्या 5.2 में **"पारिभाषिक शब्द के विश्लेषण के लिए क्लिक करें"** से दिखाया गया है।

5.2 बैक एण्ड (Back End)

प्रस्तुत सिस्टम में बैक-एंड में पाइथॉन प्रोग्रामिंग का प्रयोग किया गया है। डेटा को टेक्स्ट फाइल में रखा गया है। सर्वर के लिए फ्लास्क सर्वर का प्रयोग किया गया है। यूजर इंटरफेस से प्राप्त इन्पुट से सूचनाएं विकसित करने के लिए कई सारे पाइथॉन आधारित फंकशन विकसित किए हैं। जिनका विवरण अग्रलिखित है -

5.2.1 प्रीप्रोसेसर (Preprocessor)

उपयोगकर्ता द्वारा प्रविष्ट पारिभाषिक शब्द को यह संघटक रिक्तस्थानों, नई पङ्क्तियों आदि से पृथक् करके अगले चरण को सम्प्रेषित करता है । अर्थात् उपयोगकर्ता द्वारा पारिभाषिक शब्द को लिखते समय, नई लाइन एवं स्पेस आदि को दूर करके अगली प्रक्रिया के लिए भेज देता है। इसका प्रारूप नीचे देखा जा सकता है-

```
def PrePro(inp):
    inpWrdLst = []
    inp = inp.strip()
    inp = inp.replace("\t"," ").replace("\r\n"," ")
    inpFn = inp.replace(" + ","+")\
    .replace("+ ","+").replace(" +","+").strip()
    lst = inpFn.strip().split(" ")
    for i in lst:
        if len(i)<1: continue
            inpWrdLst.append(i.strip())
    return inpWrdLst
```

5.2.2 पारिभाषिक शब्द वैलिडेटर (Technical Term Validator)

यह संघटक उपयोगकर्ता द्वारा प्रदत्त पारिभाषिक शब्द (इन्पुट) का सत्यापन करता है कि प्रस्तुत शब्द साङ्ख्य-योग दर्शन से सम्बन्धित पारिभाषिक शब्द है या नहीं । यह प्रक्रिया पारिभाषिक शब्दों के डेटाबेस की सहायता से की जाती है । इन्पुट टेक्स्ट के सफल सत्यापन उपरान्त यह घटक पारिभाषिक शब्द को उसकी अद्वितीय आईडी के साथ अगले घटक को सम्प्रेषित करता है । अन्यथा यूजर इन्टरफेस पर **"यह साङ्ख्य-योग का पारिभाषिक शब्द नहीं है"** टैग के साथ सन्देश प्रदर्शित करता है ।

5.2.3 पारिभाषिक शब्द सूचना जेनरेटर (Technical Term Info Generator)

पूर्व घटक से सत्यापित पारिभाषिक शब्द से सम्बन्धित पारिभाषिक शब्द सूचना डेटाबेस से अद्वितीय आईडी से मिलान करके सामान्य जानकारी निर्मित करता है । जानकारी के रूप में प्राप्त लक्षण को एवं पारिभाषिक शब्द को Term Analyzer को भेजता है । अन्यथा **"जानकारी अभी तक उपलब्ध नहीं है"** इस टैग के साथ यूजर इंटरफेस पर सन्देश प्रदर्शित करता है ।

5.2.4 पारिभाषिक शब्द विश्लेषक (Technical Term Analyser)

पारिभाषिक शब्द सूचना जेनरेटर (Technical Term Info Generator) नामक घटक से प्राप्त हुई जानकारी को विश्लेषित कर यह घटक इन्फो डेटाबेस की सहायता से पारिभाषिक शब्द, लक्षण एवं विश्लेषण सहित सम्पूर्ण जानकारी को आगे की प्रक्रिया के लिए आउटपुट जेनरेटर के पास भेजता है। अगर किसी शब्द का विश्लेषण नही प्राप्त होता है तो **"विश्लेषण अभी तक उपलब्ध नहीं है"** टैग के साथ यूजर इंटरफेस पर सन्देश प्रदर्शित करता है।

5.2.5 आउटपुट जेनरेटर (Output Generator)

पारिभाषिक शब्द विश्लेषक (Technical Term Analyser) से प्राप्त विश्लेषण के रूप में प्राप्त सूचनाओं को एक विशेष प्रारूप में निष्पादित करता है। और अन्ततः यूजर इन्टरफेस को भेजता है जहां पर पारिभाषिक शब्द की सम्पूर्ण जानकारी परिणाम के रूप में प्रदर्शित की जाती है।

6. प्रयुक्त संगणकीय प्लेटफॉर्म एवं तकनीक (Used Computational Platform and Techniques)

प्रस्तुत सिस्टम का फ्रंट एंड HTML, CSS and JS में विकसित किया गया है। बैक-एंड के लिये प्रोग्रामिंग पाइथॉन (Python) की गई है। सर्वर के लिए पाइथॉन समर्थित फ्लास्क (Flask) का प्रयोग किया गया है। डेटाबेस के लिए MySQL एवं टेक्स्ट फाइल का प्रयोग किया गया है।

7. साङ्ख्य-योग दर्शन के पारिभाषिक शब्दों के लिए वेब आधारित सिस्टम द्वारा विकसित परिणाम का विवरण (Description of the result developed by the Web Based System for the Technical Terms of Sāṅkhya-Yoga Philosophy)

परिणाम की प्राप्ति के लिए उपयोगकर्ता यूजर इन्टरफेस में उपलब्ध टेक्स्ट एरिया में इन्पुट को टाइप करता है। यदि इन्पुट साङ्ख्य-योग दर्शन का पारिभाषिक शब्द है तो उसका सम्पूर्ण

विश्लेषण लक्षण सहित प्रदान करता है । प्रस्तुत सिस्टम का परिणाम यूजर इंटरफेस के परिणाम बटन से नीचे प्रस्तुत होता है । उदाहरण स्वरूप परिणाम का प्रारूप चित्र सङ्ख्या 5.3 में देखा जा सकता है । सिस्टम द्वारा विकसित का विस्तृत परिचय निम्नलिखित है-

7. 1 पारिभाषिक शब्द सूचना (Technical Term Information)

परिणाम में सर्वप्रथम पारिभाषिक शब्द की सूचना होती है । यथा – पारिभाषिक शब्द = अध्यवसाय । इसके अतिरिक्त सम्बन्धित दर्शन का भी उल्लेख किया जाता है । जैसाकि चित्रसंख्या 5.3 दिया गया है ।

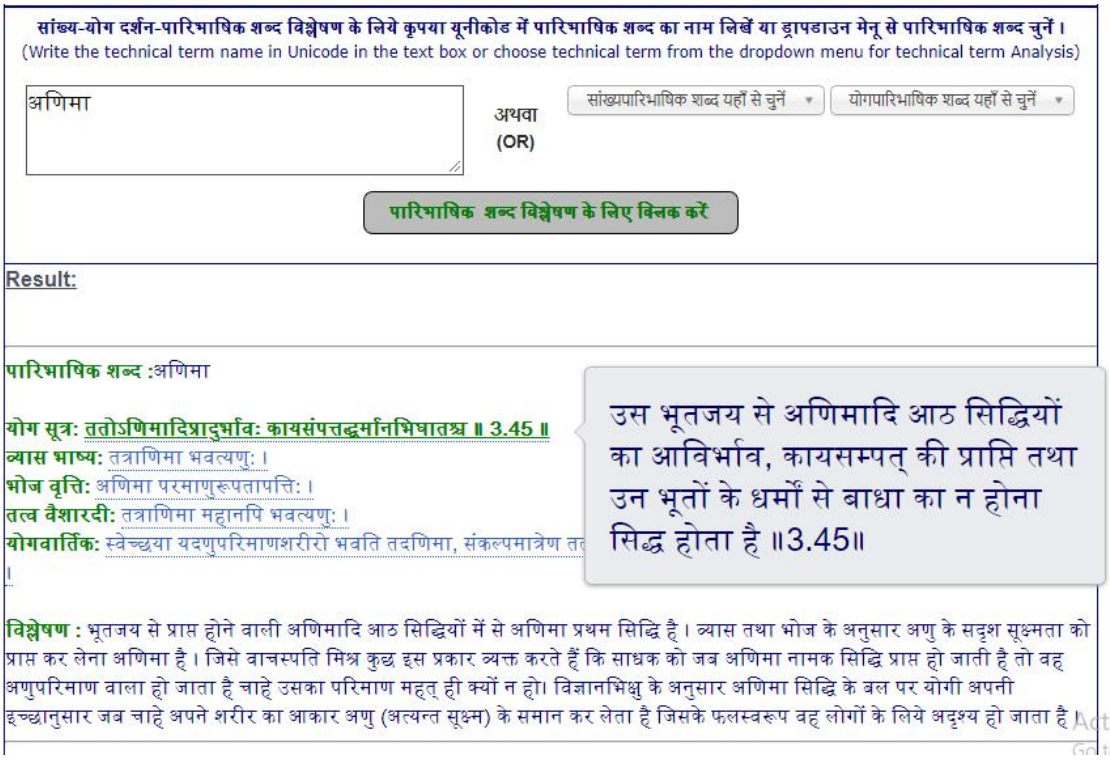

चित्र 5.3: आउटपुट (Output)

7.2 लक्षण एवं लक्षणग्रन्थ सूचना (Information of Definition and Reference)

पारिभाषिक शब्द की सूचना के पश्चात् सम्बन्धित मूलग्रन्थ तथा प्रकरण ग्रन्थ के अनुसार उस पारिभाषिक शब्द के लक्षण प्राप्त होते हैं । एवं सन्दर्भ के लिए उस ग्रन्थ का भी नाम प्राप्त होता है । इसमें खोजे गए शब्द का लक्षण अलग-अलग स्रोतग्रन्थों जैसे - योगसूत्र, व्यासभाष्य, भोजवृत्ति,

तत्त्ववैशारदी, योगवार्तिक और साङ्ख्यसूत्र, साङ्ख्यप्रवचनभाष्य, साङ्ख्यकारिका के अनुसार रखा गया है । परिणाम में प्रदत्त लक्षण हाइपरलिंक्ड होते हैं । जिन पर कर्सर (curser) ले जाने पर इसका हिन्दी अर्थ स्वतः प्रकट हो जाता है ।

7.3 पारिभाषिक शब्द का विश्लेषण (Analysis of Technical Term)

सिस्टम परिणाम के इस तृतीय चरण में उपयोगकर्ता द्वारा प्रविष्ट पारिभाषिक शब्द का सम्पूर्ण विश्लेषण प्रदर्शित होता है । इसमें खोजे गए शब्द के विषय में विशेष जानकारी सम्मिलित की गई है। इसमें किसी शब्द का सामान्य अर्थ क्या होता है और किसी दर्शन में उसका अर्थ कैसे परिवर्तित हो जाता है । इन सबका विशद विवरण विश्लेषणात्मक अध्ययन में दिया गया है ।

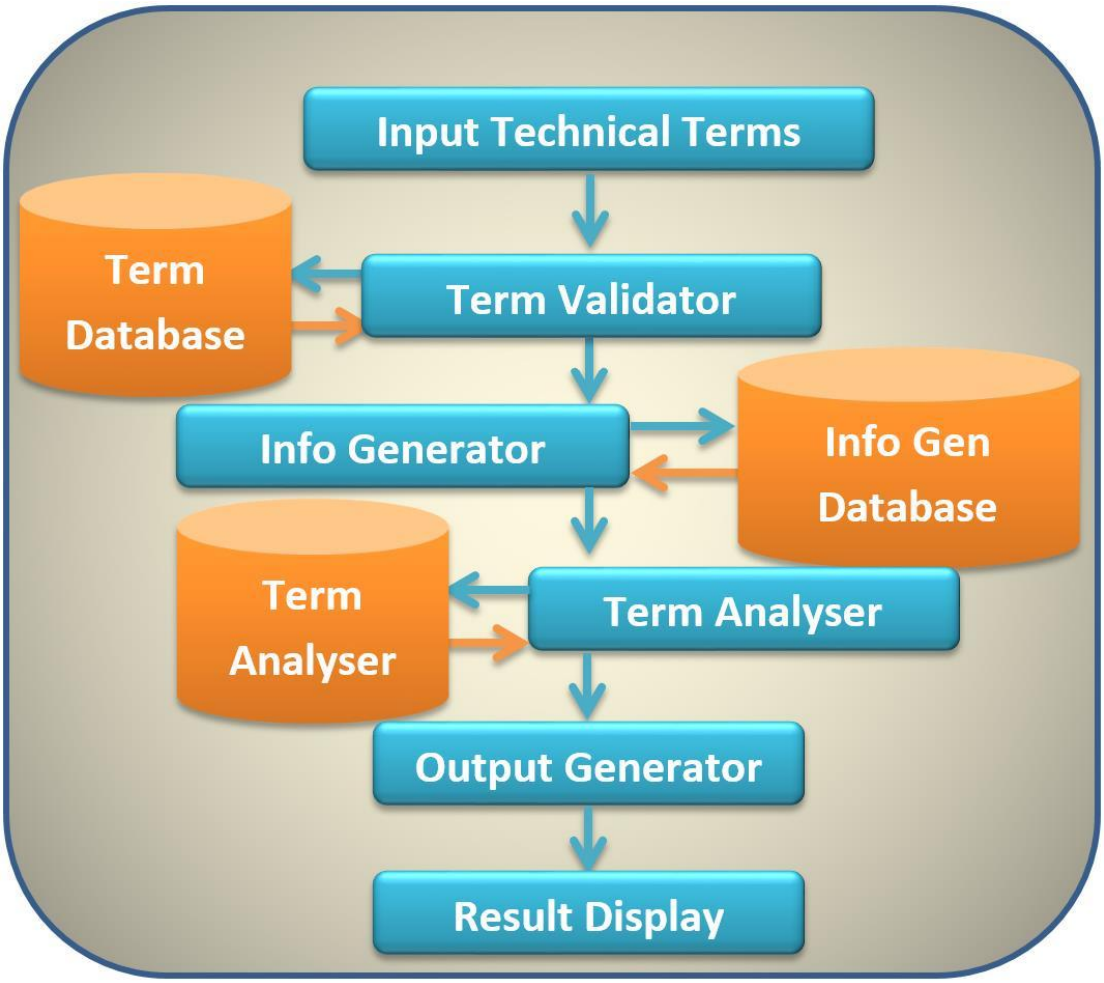

चित्र 5.3: सिस्टम का फ्लोचार्ट (Flowchart of the system)

8. साङ्ख्य-योग दर्शन के पारिभाषिक शब्दों के विश्लेषक तन्त्र की विशेषता (Features of Analyser System of Technical Terms of Sāṅkhya-Yoga Philosophy)

वेब आधारित साङ्ख्य-योग दर्शन के पारिभाषिक शब्दों के विश्लेषक तन्त्र एक ऑनलाइन सूचना तंत्र है। उपयोगकर्ता साङ्ख्य-योग दर्शन में उपलब्ध पारिभाषिक शब्द को खोज सकता है। उस पारिभाषिक शब्द का पूरा विश्लेषण इस सिस्टम के माध्यम से प्राप्त कर सकता है और वह परिणाम देवनागरी लिपि में UTF -8 प्रारूप में पूर्ण विवरण के साथ प्राप्त होता है। यह सिस्टम एक इन्टेलिजेंट सिस्टम है। इस सिस्टम में यूजर को मात्र शब्द इन्पुट के रूप में प्रविष्ट करना होता है। शेष सभी कार्य यथा – पारिभाषिक शब्द की पहचान, उसके लक्षणों का संयोजन तथा विश्लेषण स्वयं करता है। पारिभाषिक शब्द, लक्षण तथा विश्लेषण इनके अलग-अलग डेटाबेस से यह सिस्टम सूचना एकत्रित कर सम्पूर्ण प्रकिया स्वतः ही करके हमारे समक्ष परिणाम के रूप में सम्पूर्ण जानकारी प्रकट कर देता है। भविष्य में इस प्रकार का कार्य अन्य दर्शनों के लिए भी किया जा सकता है। इस सिस्टम की विशेषताएं निम्नलिखित है -

8.1 उपयोगकर्ता केन्द्रित (User Centered)

इस सिस्टम में यूजर को मात्र साङ्ख्य–योग दर्शन से सम्बन्धित कोई भी पारिभाषिक शब्द देवनागरी यूनीकोड में प्रदान करना होता है। यदि कोई साङ्ख्य-योग दर्शन के पारिभाषिक शब्दों से परिचित नही तो वह ड्रॉपडाउन मेनू से भी शब्दों का चयन कर सकता है। इसके अतिरिक्त अन्य कार्य जैसे पहचान, लक्षण एवं विश्लेषण सिस्टम डेटाबेस के माध्यम से स्वयं करता है। अतः यह सिस्टम सामान्य यूजर को दृष्टि में रख कर निर्मित किया गया है। इसलिए इसे हम प्रबुद्ध सिस्टम कह सकते हैं। जिसका निर्माण एक सामान्य विद्यार्थी की समस्याओं को ध्यान में रख कर किया गया है।

8.2 सन्दर्भ के साथ पारिभाषिक शब्दों का लक्षण (Definition of Technical Terms with Reference)

यह सिस्टम किसी भी प्रदत्त पारिभाषिक शब्द का लक्षण उससे सम्बन्धित मूल, प्रकरण, भाष्य एवं टीका ग्रन्थों से लक्षण एवं उसका पूर्ण सन्दर्भ हिन्दी अनुवाद के साथ प्रस्तुत करता है। जिससे उपयोगकर्त्ता किसी भी तकनीकी शब्द को आसानी से समझ सकता है एवं उस सन्दर्भ में जाकर अन्य उपयोगी जानकारी भी प्राप्त कर सकता है।

8.3 पारिभाषिक शब्दों का सरल एवं विस्तृत विश्लेषण (Easy and Detailed Analysis of Technical Terms)

यह सिस्टम किसी भी प्रदत्त पारिभाषिक शब्द का सरल, सुगम, सुस्पष्ट एवं विस्तृत विश्लेषण भी प्रदान करता है। जिससे जिज्ञासुओं के लिए साङ्ख्य-योग दर्शन को समझना आसान हो जाता है। अभी यह विश्लेषण हिन्दी भाषा में ही उपलब्ध है परन्तु बाद में इसे संस्कृत, अंग्रेजी एवं अन्य भाषाओं में भी उपलब्ध कराया जा सकता है। किसी भी विश्लेषण में अगर कोई तकनीकी शब्द आता है तो उसपर क्लिक करने से उस शब्द के विषय में भी जानकारी भी प्राप्त की जा सकती है।

8.4 साङ्ख्य-योग दर्शन ई-शिक्षण में उपयोगी (Usefull in E-Learning for Sāṅkhya-Yoga Philosophy)

भारतीय दर्शन के अन्तर्गत साङ्ख्य-योग दर्शन विभिन्न प्रकार के पारिभाषिक शब्दों का प्रयोग करता है। जिसका तात्पर्य दर्शन शास्त्र के किसी विशिष्ट अवधारणा को स्थापित करना होता है। परन्तु सामान्य रूप से वही शब्द किसी अन्य अर्थ में प्रयुक्त होता है। भारतीय दर्शन से सम्बन्धित मुद्रित रूप में अनेक पारिभाषिक कोश उपलब्ध हैं। सूचना प्रौद्योगिकी के इस दौर में प्रत्येक व्यक्ति कम से कम समय में ऑनलाइन सूचनाएं प्राप्त करना चाहता है। इसी उद्देश्य से साङ्ख्य-योग दर्शन में प्रयुक्त पारिभाषिक शब्दों के लिए इस ऑनलाइन खोज सिस्टम का विकास किया गया है। जिसके माध्यम से इस प्रकार की ज्ञानार्जन सामग्री इंटरनेट के माध्यम से बस एक ही क्लिक में उपलब्ध हो सकती है। जिससे कम्प्यूटर एवं ई-लर्निंग के इस वर्तमान परिवेश में संस्कृत

के छात्र एवं शिक्षक तथा संस्कृत से इतर लोग भी सरलता पूर्वक साङ्ख्य-योग दर्शन को समझने में समर्थ हो सकें । यह सिस्टम परिणाम स्वरूप पारिभाषिक शब्द, विभिन्न मूल ग्रन्थों एवं प्रकरण ग्रन्थों के अनुसार उस शब्द का लक्षण एवं सम्पूर्ण विश्लेषण प्रदर्शित करता है । इस सिस्टम के ऑनलाइन होने के कारण इसका प्रयोग कभी भी किसी भी समय किया जा सकता है । इस सिस्टम में कुल 385 तकनीकी शब्दों को शामिल किया गया हैं । इनका संकलन साङ्ख्य एवं योग दर्शन के मूल एवं भाष्य ग्रन्थों के आधार पर किया गया है । यह सिस्टम http://cl.sanskrit.du.ac.in/sy पर ऑनलाइन उपलब्ध है । भारत सरकार ने भी डिजिटल इण्डिया के सन्देश के फलस्वरूप ऑनलाइन सेवाओं का वर्द्धन किया है । अतः इस सिस्टम ले द्वारा इस उद्देश्य को भी पूरा करने का प्रयास किया गया है ।

9. दर्शन से सम्बन्धित अन्य उपलब्ध सिस्टम से प्रस्तुत सिस्टम की तुलना (Comparison of this System with other available Systems Related to Philosophy)

प्रस्तुत शोध के द्वितीय अध्याय में साङ्ख्य-योग दर्शन से सम्बन्धित हुए शोधकार्यों के विषय में विस्तार से बताया जा चुका है । अब इस अध्याय में इस शोधकार्य द्वारा विकसित सिस्टम का तुलनात्मक अध्ययन इस क्षेत्र में विकसित हुए चार अन्य सिस्टमों के साथ किया गया है । सिस्टम के मूल्यांकन करने के लिये मैनुअल विधि का प्रयोग किया गया है । यह सिस्टम साङ्ख्य-योग दर्शन में प्रयुक्त पारिभाषिक शब्दों के विश्लेषण के लिये विकसित किया गया है । अतः विषय विस्तार अधिक न होने की दृष्टि से मूल्यांकन करने के लिये साङ्ख्य-योग दर्शन के 50 पारिभाषिक शब्दों का चयन किया गया है । जिसमें से 25 पारिभाषिक शब्द साङ्ख्यदर्शन से तथा 25 पारिभाषिक शब्द योगदर्शन से चुने गए हैं । यहाँ पर उन्हीं शब्दों का चयन किया गया है जो एकपद में प्राप्त होते हैं । इन शब्दों की सूची तालिका संख्या 5.7 में दी गई है ।

क्रम.स.	पारिभाषिक शब्द	दर्शन	क्रम.स.	पारिभाषिक शब्द	दर्शन
1	अक्रमः	योग	26	अध्यवसायः	साङ्ख्य
2	अणिमा	योग	27	अपवर्गः	साङ्ख्य
3	अनुमानम्	योग	28	अपानः	साङ्ख्य

4	अपरिग्रहः	योग	29	अभिमानः	साङ्ख्य
5	अभिनिवेशः	योग	30	अमूलम्	साङ्ख्य
6	अभ्यासः	योग	31	अविवेकः	साङ्ख्य
7	अविद्या	योग	32	अविशेषः	साङ्ख्य
8	असम्प्रज्ञातः	योग	33	अव्यक्तम्	साङ्ख्य
9	आसनम्	योग	34	अहङ्कारः	साङ्ख्य
10	कर्मः	योग	35	आसनम्	साङ्ख्य
11	स्वाध्याय:	योग	36	करणम्	साङ्ख्य
12	समापत्तिः	योग	37	तुष्टिः	साङ्ख्य
13	संयमः	योग	38	दुःखम्	साङ्ख्य
14	लघिमा	योग	39	पुरुषः	साङ्ख्य
15	प्रातिभज्ञान	योग	40	पुरुषबहुत्वम्	साङ्ख्य
16	हेयहेतुः	योग	41	प्रकृतिः	साङ्ख्य
17	संयोग	योग	42	प्रमा	साङ्ख्य
18	विघ्न	योग	43	बन्धः	साङ्ख्य
19	प्रणवः	योग	44	बुद्धिः	साङ्ख्य
20	चित्तम्	योग	45	मनः	साङ्ख्य
21	अविशेषाः	योग	46	मुक्तिः	साङ्ख्य
22	ईश्वरः	योग	47	विपर्यय	साङ्ख्य
23	क्लेशाः	योग	48	व्यक्तम्	साङ्ख्य
24	चित्तभूमयः	योग	49	व्याप्तिः	साङ्ख्य
25	द्रष्टा	योग	50	शब्दः	साङ्ख्य

तालिका 5.7: मूल्यांकन के लिए चयनित पारिभाषिक शब्द

9.1 तुलना के लिए सिस्टम का चयन (Selection for Comparison of Systems)

प्रस्तुत साङ्ख्य-योग दर्शन के पारिभाषिक शब्दों के विश्लेषण के लिए वेब आधारित सिस्टम से समानता रखने वाले चार अन्य सिस्टम उपलब्ध हैं। जिनके नाम क्रमशः योगसूत्रानुक्रमणिका[1] (Yogasutra Index), साङ्ख्य-योग एवं वेदान्त डिक्शनरी[2] (Dictionary of Sankhya Yoga and Vedant), योगशब्दकोश (Yoga index) एवं वेदांत-अनुक्रमणी (Vedanta Search) हैं। ये चारों सिस्टम संस्कृत एवं प्राच्यविद्या अध्ययन संस्थान (School of Sanskrit and Indic Studies), जवाहरलाल नेहरु विश्वविद्यालय द्वारा निर्मित किए गए हैं। जो http://sanskrit.jnu.ac.in वेबसाइट के Lexical Resources नामक Tab के अन्तर्गत उपलब्ध हैं। इन चारों सिस्टम में उपयोगकर्ता एक बार में एक ही शब्द की खोज कर परिणाम प्राप्त कर सकता है।

1. योगसूत्रानुक्रमणिका (Yogasutra Index)

जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय के संस्कृत एवं प्राच्यविद्या अध्ययन केन्द्र द्वारा विकसित योगदर्शन के सूत्रों पर आधारित 'योगसूत्रानुक्रमणिका' नामक एक सिस्टम प्राप्त होता है। जिसमें योग दर्शन के सभी सूत्रों पर एक अनुक्रमणिका निर्मित की गई है। इसके अन्तर्गत खोजे गए शब्द के परिणामस्वरूप केवल योगसूत्र की सूत्रसङ्ख्या, सूत्र, सूत्रविच्छेद एवं सूत्र का अर्थ दिया गया है। योगसूत्र में उपलब्ध किसी भी शब्द को खोजने पर वह शब्द जितने सूत्रों, सूत्रविच्छेदों एवं सूत्र के अर्थों में प्राप्त होता है उन सभी को परिणाम के रूप में प्रकट कर देता है तथा उस खोजे गये शब्द को लाल रंग से चिन्हित कर देता है। यह सिस्टम केवल सामान्य जानकारी प्रस्तुत करता है एवं किसी भी प्रकार का विश्लेषण नहीं करता है। इस सिस्टम से प्राप्त परिणाम का प्रारूप चित्र सङ्ख्या 5.5 में देखा जा सकता है।

[1] http://sanskrit.jnu.ac.in/student_projects/lexicon.jsp?lexicon=yogasutra
[2] http://sanskrit.jnu.ac.in/student_projects/lexicon.jsp?lexicon=sankhya

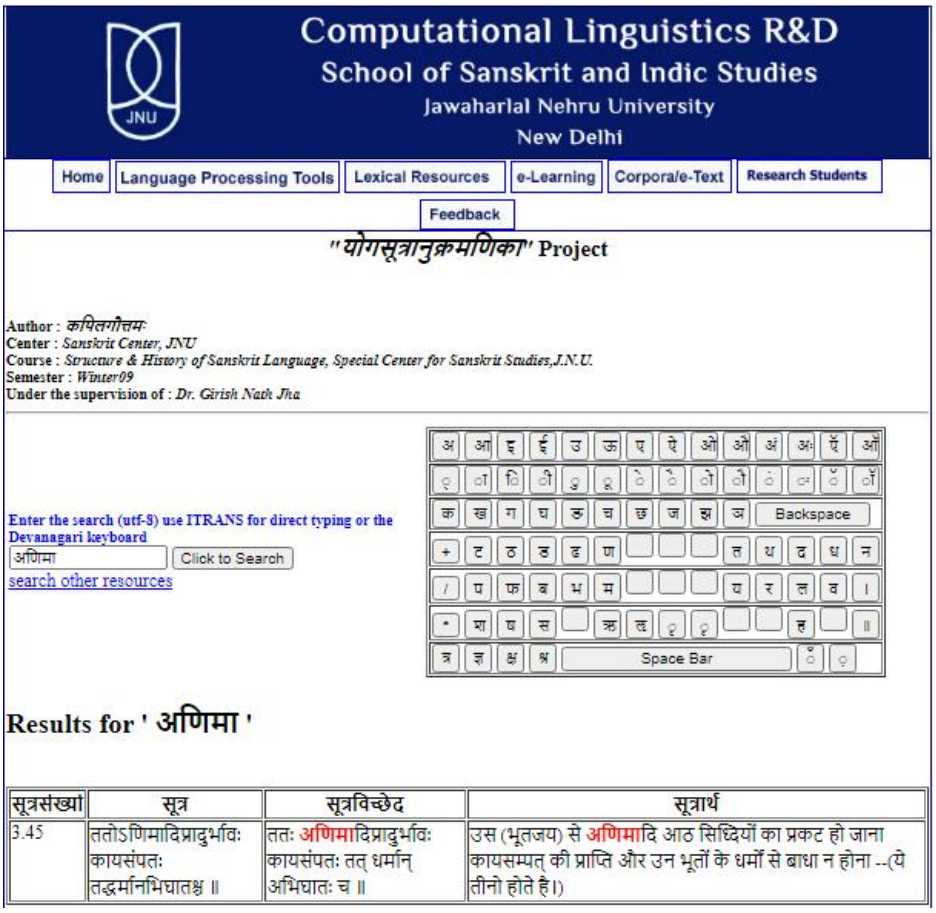

चित्र 5.5: योगसूत्रानुक्रमणिका खोज परिणाम

2. साङ्ख्य-योग एवं वेदान्त डिक्शनरी (Dictionary of Sankhya Yoga and Vedant)

प्रस्तुत साङ्ख्य-योग एवं वेदान्त डिक्शनरी नामक सिस्टम साङ्ख्य, योग एवं वेदान्त दर्शन से सम्बन्धित शब्दों की सूचना देता है। इस सूचना में खोजे गए शब्द, उस शब्द से सम्बन्धित दर्शन एवं अर्थ प्रकट होता है। खोजे गए शब्द को लाल रंग से दर्शाया जाता है। जैसा कि इसके नाम से विदित है कि यह एक डिक्शनरी है। अतः केवल खोजे गए शब्द का अर्थ एक वाक्य में प्रस्तुत करता है। उदाहरण के लिए इस सिस्टम में खोजे गए शब्द (अणिमा) के परिणाम को चित्र सङ्ख्या 5.6 में दिखाया गया है।

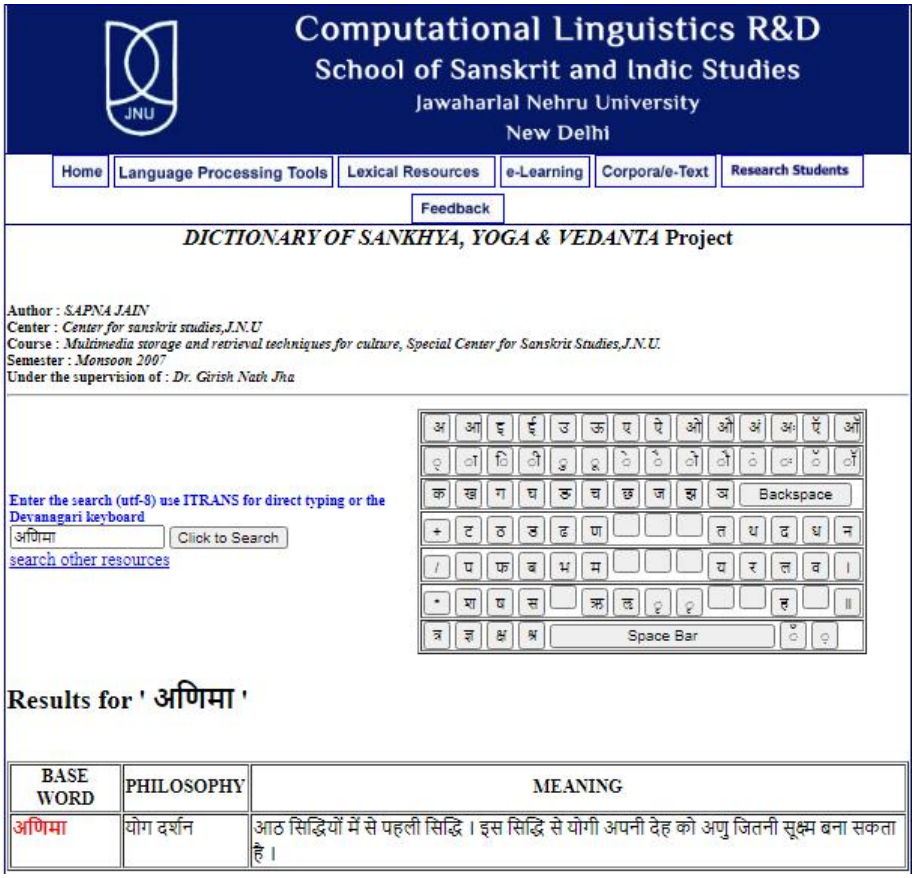

चित्र 5.6: साङ्ख्य-योग एवं वेदान्त डिक्शनरी खोज परिणाम

3. योगशब्दकोश (Yoga index)

पूर्वोक्त साङ्ख्य-योग एवं वेदान्त डिक्शनरी सिस्टम के सदृश ही 'योगशब्दकोश'[3] नामक सिस्टम भी केवल शब्दकोश खोजतन्त्र है जो योगदर्शन के शब्दों पर आधारित है । इसमें योग दर्शन से सम्बन्धित शब्द को खोजा जा सकता है । परिणाम स्वरूप यह सिस्टम खोजे गए शब्द का प्रायः संक्षेप में अर्थ प्रदर्शित करता है । जिसका प्रारूप चित्र सङ्ख्या 5.7 में प्रदर्शित किया गया है ।

[3] http://sanskrit.jnu.ac.in/student_projects/lexicon.jsp?lexicon=yoga

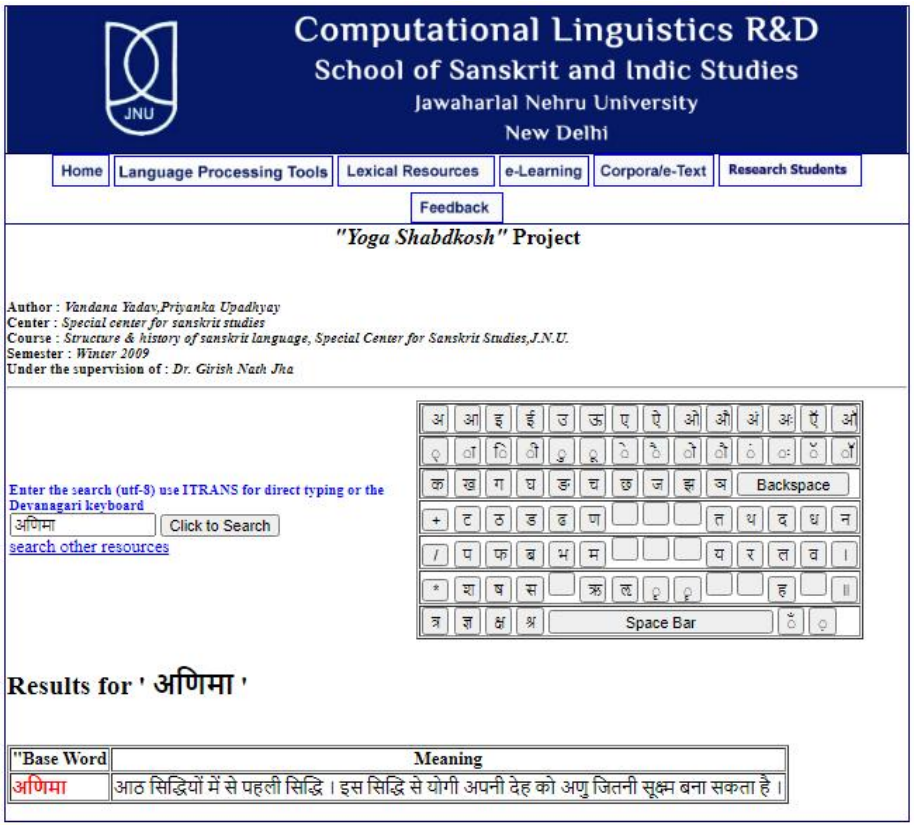

चित्र 5.4: योगशब्दकोश खोज परिणाम

4. वेदांत-अनुक्रमणी (Vedanta Search)

वेदान्त-अनुक्रमणी[4] के अन्तर्गत शास्त्र, महाकाव्य, कालिदास के ग्रन्थ, कोषग्रन्थ, साङ्ख्यकारिका आदि को सम्मिलित किया है । अर्थात् कोई भी उपयोगकर्ता वेदान्त दर्शन से सम्बन्धित किसी भी शब्द को इन सब ग्रन्थों में भी खोज सकता है । परिणाम के रूप में उस शब्द से सम्बन्धित सूत्र प्रदर्शित होते हैं । जिसका विवरण चित्र सङ्ख्या 5.7 के माध्यम से देखा जा सकता है ।

[4] http://sanskrit.jnu.ac.in/vedanta/index.jsp

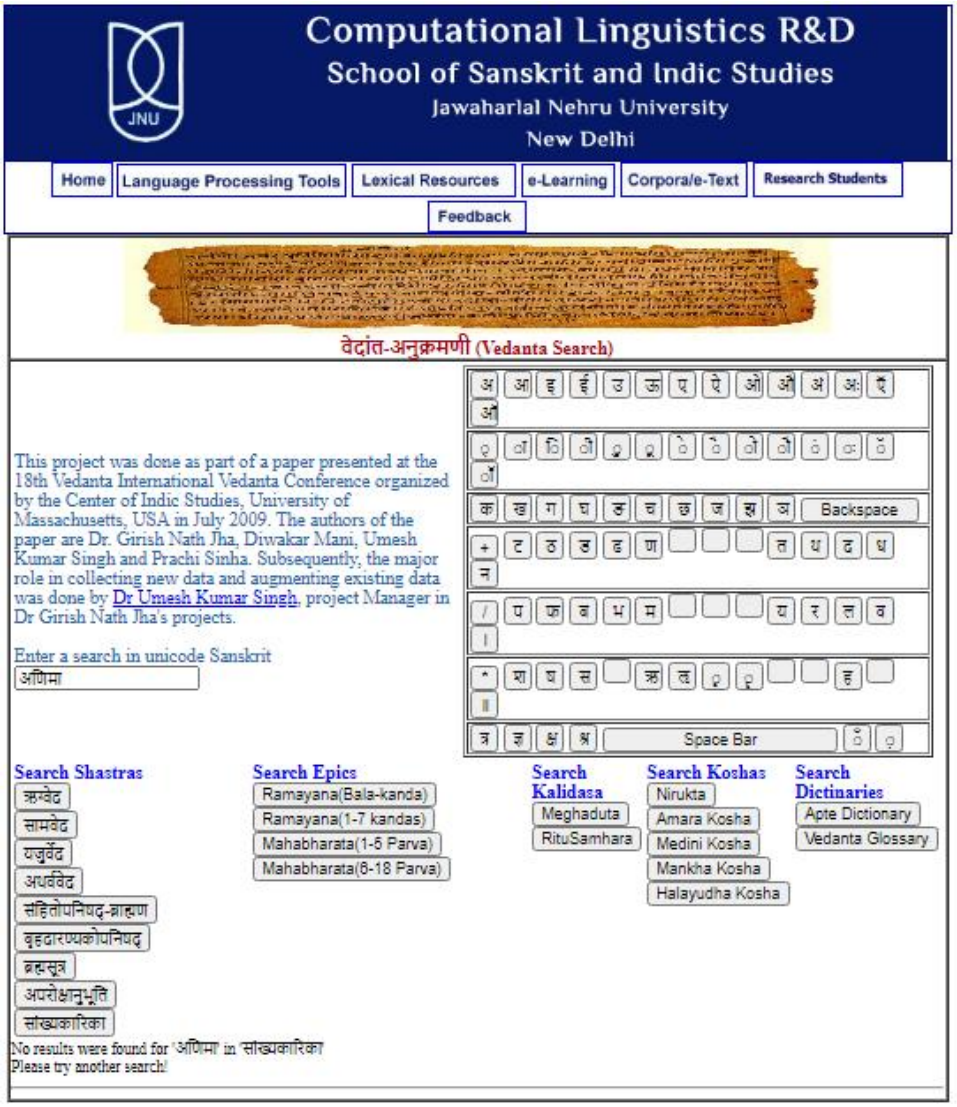

चित्र 5.8: वेदान्त-अनुक्रमणी खोज परिणाम

प्रस्तुत शोध द्वारा विकसित साङ्ख्य-योग पारिभाषिक शब्द सूचना तन्त्र (Sāṅkhya-Yoga Technical Term Search System developed under this Research)

प्रस्तुत शोध साङ्ख्य-योग दर्शन के पारिभाषिक शब्दों पर आधारित है। जिसमें मुख्य रूप से साङ्ख्य एवं योग दोनों दर्शनों के कुल 385 पारिभाषिक शब्दों का विश्लेषणात्मक अध्ययन किया गया है। इस अध्ययन में साङ्ख्य दर्शन के साङ्ख्यसूत्र, सांख्यकारिका, सांख्यप्रवचनभाष्य तथा योगदर्शन के योगसूत्र, व्यासभाष्य, भोजवृत्ति, तत्त्ववैशारदी एवं योगवार्त्तिक को आधार बनाया गया है। चूंकि प्रस्तुत शोधकार्य के सैद्धान्तिक एवं संगणकीय दो पक्ष हैं। इसलिए सैद्धान्तिक पक्ष में

शोधप्रबन्ध (Thesis) का निर्माण एवं संगणकीय पक्ष में वेब आधारित सिस्टम का निर्माण प्रमुख है। इस सिस्टम के निर्माण हेतु पारिभाषिक शब्दों का एक डेटाबेस तैयार किया गया है, जिसमें पारिभाषिक शब्द, सम्बन्धित दर्शन, आधारित ग्रन्थों के अनुसार पारिभाषिक शब्द का लक्षण तथा विश्लेषण रखा गया है।

योगदर्शन के पारिभाषिक शब्दों का तुलनात्मक मूल्यांकन					
		योगसूत्रानु क्रमणिका	**Yoga Shabdkosh**	**Dictionary of Sankhya, Yoga & Vedanta**	**साङ्ख्य-योग पारिभाषिक शब्द सूचना तन्त्र**
क्रम	**पारिभाषिक शब्द**	**Result**	**Result**	**Result**	**Result**
1.	अक्रमः	No Result	No Result	No Result	Yes
2.	अणिमा	Yes	Yes	Yes	Yes
3.	अनुमानम्	Yes	Wrong Result	No Result	Yes
4.	अपरिग्रहः	Wrong Result	Wrong Result	Wrong Result	Yes
5.	अभिनिवेशः	Yes	Yes	Yes	Yes
6.	अभ्यासः	Yes	Yes	Wrong Result	Yes
7.	अविद्या	Yes	Yes	Yes	Yes
8.	असम्प्रज्ञातः	No Result	Yes	Yes	Yes
9.	आसनम्	Yes	Yes	Yes	Yes
10.	कर्मः	Yes	Yes	Yes	Yes
11.	स्वाध्यायः	Yes	Wrong Result	Yes	Yes
12.	समापत्तिः	Yes	Yes	Wrong Result	Yes
13.	संयमः	Yes	Yes	Yes	Yes
14.	लघिमा	No Result	Yes	Wrong Result	Yes
15.	प्रातिभज्ञान	No Result	Yes	No Result	Yes
16.	हेयहेतुः	Yes	Wrong Result	No Result	Yes

17.	संयोग	Yes	Yes	Yes	Yes
18.	विघ्न	No Result	Wrong Result	Wrong Result	Yes
19.	प्रणवः	Yes	Yes	Yes	Yes
20.	चित्तम्	Yes	Wrong Result	Yes	Yes
21.	अविशेषाः	Wrong Result	Yes	Yes	Yes
22.	ईश्वरः	Yes	Wrong Result	Wrong Result	Yes
23.	क्लेशाः	Yes	Yes	Yes	Yes
24.	चित्तभूमयः	No Result	No Result	Yes	Yes
25.	द्रष्टा	Yes	Wrong Result	Yes	Yes
Total Result		**17**	**15**	**15**	**25**
Total No Result		**06**	**02**	**04**	**00**
Total Wrong Result		**02**	**08**	**06**	**00**

तालिका 5.8: योगदर्शन के पारिभाषिक शब्दों का तुलनात्मक मूल्यांकन

इस सिस्टम के विकास के लिये संगणकीय भाषाविज्ञान एवं सॉफ्टवेयर आभियान्त्रिकी विधि प्रयुक्त की गयी है । यह सिस्टम संस्कृत विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय की वेबसाइट http://cl.sanskrit.du.ac.in पर E-Learning Tab के अन्तर्गत उपलब्ध है । वेबपेज का प्रारूप चित्र सङ्ख्या 5.2 में दिखाया गया है ।

साङ्ख्यदर्शन के पारिभाषिक शब्दों का तुलनात्मक मूल्यांकन			
		Dictionary of Sankhya, Yoga & Vedanta	**साङ्ख्य-योग पारिभाषिक शब्द सूचना तन्त्र**
क्र.सं.	**पारिभाषिक शब्द**	**Result**	**Result**
26	अध्यवसायः	Yes	Yes
27	अपवर्गः	Wrong Result	Yes
28	अभिमानः	Wrong Result	Yes
29	अमूलम्	No Result	Yes
30	अविवेकः	Yes	Yes
31	अविशेषः	No Result	Yes

32	अव्यक्तम्	Wrong Result	Yes
33	अहङ्कारः	Yes	Yes
34	आसनम्	Wrong Result	Yes
35	करणम्	Wrong Result	Yes
36	अपानः	Wrong Result	Yes
37	तुष्टिः	Yes	Yes
38	दुःखम्	Wrong Result	Yes
39	पुरुषः	Yes	Yes
40	पुरुषबहुत्वम्	No Result	Yes
41	प्रकृतिः	Wrong Result	Yes
42	प्रमा	Yes	Yes
43	बन्धः	Wrong Result	Yes
44	बुद्धिः	Wrong Result	Yes
45	मनः	Yes	Yes
46	मुक्तिः	Wrong Result	Yes
47	विपर्यय	Wrong Result	Yes
48	व्यक्तम्	Yes	Yes
49	व्याप्तिः	Wrong Result	Yes
50	शब्दः	Wrong Result	Yes
Total Result		**08**	**25**
Total No Result		**03**	**00**
Total Wrong Result		**14**	**00**

तालिका 5.9: सांख्यदर्शन के पारिभाषिक शब्दों का तुलनात्मक मूल्यांकन

यदि कोई उपयोगकर्ता साङ्ख्य-योग दर्शन के पारिभाषिक शब्दों के विषय में नहीं जानता है तो उसकी सुविधा के लिए यूजर इन्टरफेस पर दाईं तरफ दोनों दर्शनों के पारिभाषिक शब्दों से सम्बन्धित ड्रॉपडाउन लिस्ट (Dropdown List) दी गई है। इस दृष्टि से यह सिस्टम अधिक यूजर फ्रैन्डली (User Friendly) है।

9.2 तुलनात्मक मूल्यांकन

प्रस्तुत साङ्ख्य-योग पारिभाषिक शब्द सूचना तन्त्र नामक सिस्टम तथा अन्य चारों सिस्टम विषय की दृष्टि से भिन्न है। फिर भी इनका तुलनात्मक मूल्यांकन करने के लिए साङ्ख्य-योग के 50 पारिभाषिक शब्दों का खोज-परिणाम परीक्षण किया है। इन 50 शब्दों की सूची तालिका संख्या 5.7 में देखी जा सकती है। इन्हीं के आधार पर तुलनात्मक मूल्यांकन किया गया है। प्रस्तुत सिस्टम साङ्ख्य-योग दर्शन के पारिभाषिक शब्दों का आधारित ग्रन्थों के आधार पर सम्पूर्ण विश्लेषण प्रदर्शित करता है। किन्तु अन्य चार सिस्टम शब्दकोश के सदृश परिणाम देते हैं। इन चार सिस्टम में से केवल योगसूत्रानुक्रमणिका नामक सिस्टम ही संस्कृत में योगसूत्र को प्रदर्शित करता है। ये चार सिस्टम शब्द खोज पर आधारित है न कि पारिभाषिक शब्द खोज पर। परन्तु प्रस्तुत सिस्टम साङ्ख्य-योग दर्शन के पारिभाषिक शब्दों पर ही आधारित है।

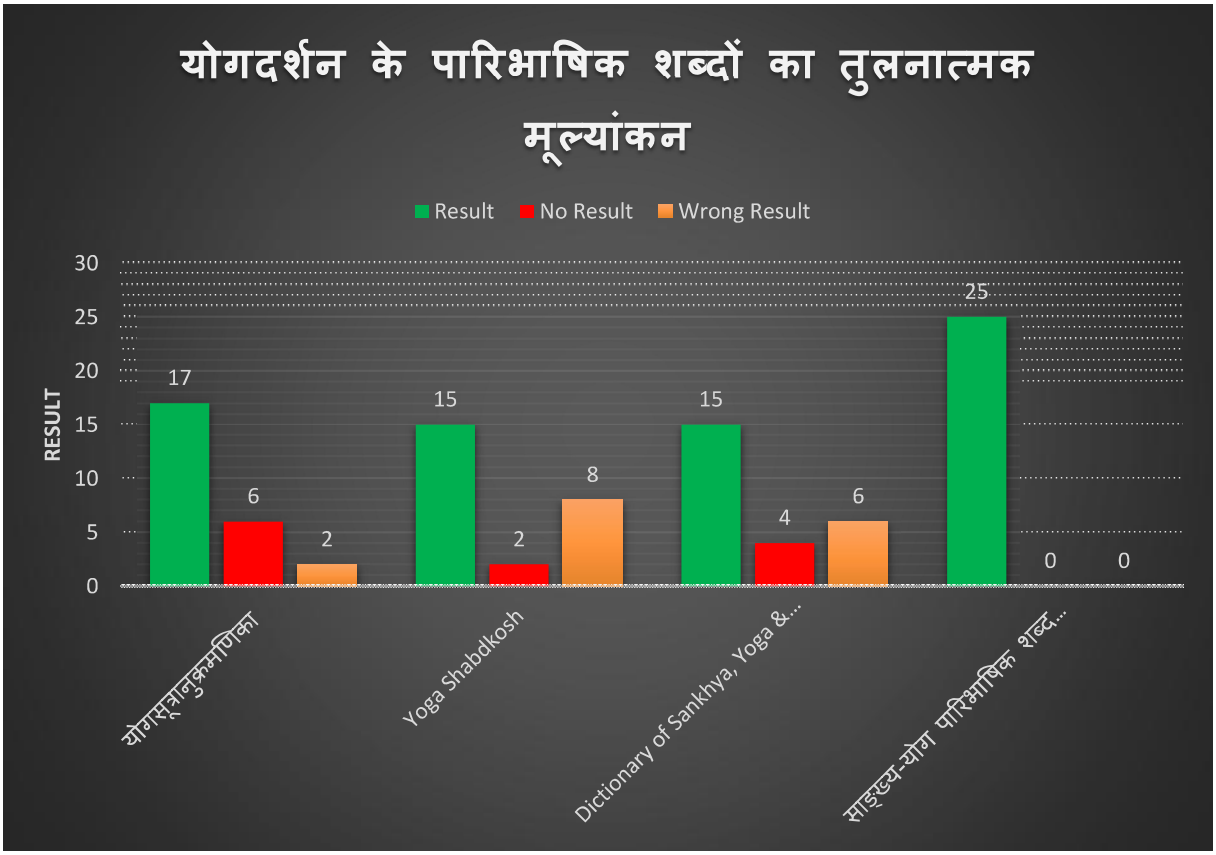

चार्ट 5.1: योगदर्शन के पारिभाषिक शब्दों से संबंधित सिस्टम की मूल्यांकन रिपोर्ट

अतः इस आधार पर कह सकते हैं कि अन्य सिस्टम की तुलना में साङ्ख्य-योग दर्शन का ज्ञान प्राप्त करने में अधिक सहायक है। उदाहरण स्वरूप जिसका प्रारूप चित्र सङ्ख्या 5.3 में देखा जा सकता है। तुलनात्मक मूल्यांकन को पारिभाषिक शब्दों के खोज परिणामों के आधार पर तीन भागों में विभक्त किया गया है –परिणाम (Result), गलत परिणाम (Wrong Result) और अप्राप्त परिणाम (No Result)। इसके अन्तर्गत 50 पारिभाषिक शब्दों को सभी चार सिस्टमों में एक-एक प्रविष्टि कर खोजा गया। जिसका मूल्यांकन परिणाम संख्यानुसार तालिका सङ्ख्या 5.8 एवं 5.9 में देखा जा सकता है।

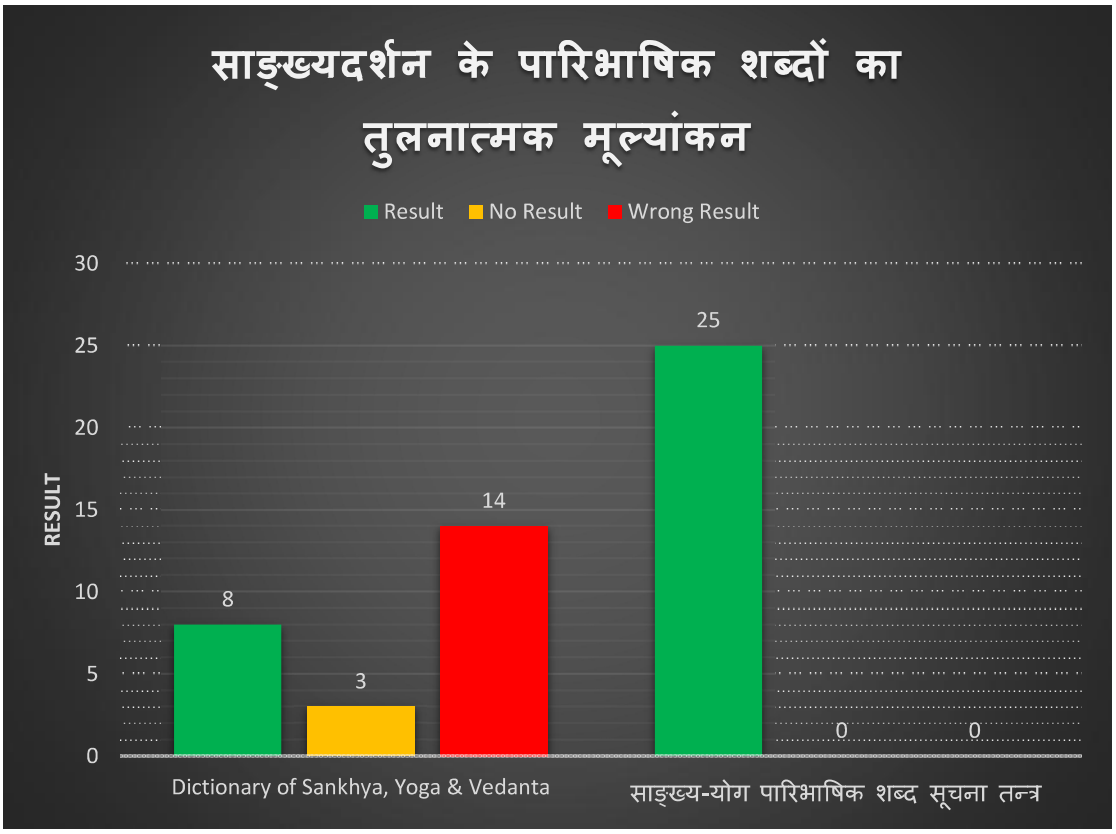

चार्ट 5.2: साङ्ख्यदर्शन के पारिभाषिक शब्दों से संबंधित सिस्टम की मूल्यांकन रिपोर्ट

इस मूल्यांकन में यह स्पष्टतः उल्लेखनीय है कि प्रस्तुत साङ्ख्य-योग पारिभाषिक शब्द सूचना सिस्टम में खोजे गए 50 पारिभाषिक शब्दों का 100% परिणाम प्राप्त हुआ। शेष तीन सिस्टम के मूल्यांकन को तालिका संख्या 5.8 एवं 5.9 में देखा जा सकता है। वेदान्त-अनुक्रमणी के सिस्टम (चित्र संख्या 5.8) को मूल्यांकन हेतु ग्रहण नहीं किया गया है क्योंकि यह सिस्टम सांख्य-योग दर्शन से सम्बन्धित नहीं है एवं इसमें सभी पारिभाषिक शब्दों का कोई भी परिणाम प्राप्त नहीं

हुआ था। योगदर्शन के पारिभाषिक शब्दों से संबंधित सिस्टम की मूल्यांकन रिपोर्ट चार्ट संख्या 5.1 एवं साङ्ख्यदर्शन के पारिभाषिक शब्दों से संबंधित सिस्टम की मूल्यांकन रिपोर्ट चार्ट संख्या 5.2 में देखी जा सकती है।

10. परिणाम एवं परिचर्चा (Result and Discussions)

उपरोक्त मूल्यांकन से ज्ञात होता है कि प्रस्तुत शोध द्वारा विकसित सिस्टम का परिणाम सभी दृष्टियों से बेहतर है। योगदर्शन के पारिभाषिक शब्दों का परीक्षण करने के लिए चार सिस्टम का प्रयोग किया गया जो जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय द्वारा विकसित है। जिसके परिणाम स्वरूप प्रत्येक सिस्टम सिस्टम द्वारा कुल सही परिणाम, कुल गलत परिणाम तथा कुल अप्राप्त परिणाम का विवरण चार्ट सङ्ख्या 5.1 दर्शाया गया है। इसी प्रकार साङ्ख्य दर्शन के पारिभाषिक शब्दों के परीक्षण हेतु 2 सिस्टमों का प्रयोग किया गया है। जिसके अन्तर्गत दोनों सिस्टम के अनुसार कुल सही परीणाम, कुल गलत परिणाम एवं कुल अप्राप्त परिणाम को चार्ट सङ्ख्या 5.2 के माध्यम से प्रदर्शित किया गया है। साथ ही साथ यह सिस्टम बहुत ही कम सूचना विकसित करते हैं। जबकि प्रस्तुत सिस्टम द्वारा कुल 50 शब्दों का विस्तृत विश्लेषण 100% प्राप्त हुआ।

निष्कर्ष

उपर्युक्त सभी सिस्टम के दिए गए विवरण के आधार पर प्रायः स्पष्टतया कहा जा सकता है कि वर्तमान में विकसित 'साङ्ख्य-योग पारिभाषिक शब्द सूचना तन्त्र' उपलब्ध अन्य चारों सिस्टम से अधिक उपयोगी, यूजर फ्रैन्डली एवं शोधकार्य का प्रतिफल है। इस सिस्टम के माध्यम से साङ्ख्य-योग दर्शन में उपलब्ध पारिभाषिक शब्दों का नाम, सूत्ररूप में उनका लक्षण, तथा विस्तृत विश्लेषण प्रकट होता है। जिससे उपयोगकर्ता को सम्बन्धित पारिभाषिक शब्द के रूप में प्रायः सम्पूर्ण जानकारी तत्काल उपलब्ध हो जाती है। विश्लेषण के अन्तर्गत प्रत्येक पारिभाषिक शब्द का सभी आधारित ग्रन्थों में प्राप्त लक्षण के अनुसार विश्लेषण किया गया है और साथ ही साथ यदि वह शब्द अन्य दर्शन में भी प्राप्त होता है तो उसकी चर्चा की गई है। पारिभाषिक शब्द के लक्षण के ऊपर कर्सर ले जाने पर उसका अर्थ प्रकट हो जाता है। अतः साङ्ख्य- योग दर्शन पारिभाषिक शब्द सूचना तन्त्र उपलब्ध सभी सिस्टम से सर्वथा भिन्न, नवीन एवं मौलिक शोधकार्य है।

निष्कर्ष एवं भावी अनुसंधान की संभावनाएँ
Conclusion and Future Directions of Research

1. निष्कर्ष (Conclusions)

साङ्ख्य-योग पारिभाषिक शब्द सूचना तन्त्र नामक वेब आधारित सिस्टम का निर्माण साङ्ख्य-योग दर्शन के पारिभाषिक शब्दों के विश्लेषण के लिए किया गया है। इस सिस्टम का निर्माण प्रस्तुत शोध के माध्यम से हुआ है। इसमें दोनों दर्शनों से कुल मिलाकर 385 पारिभाषिक शब्दों का संकलन किया गया है। साङ्ख्य-योग दर्शन दिल्ली विश्वविद्यालय के लगभग सभी महाविद्यालयों में संस्कृत पाठ्यक्रम के अन्तर्गत पढ़ाया जाता है। इस ऑनलाइन सिस्टम के माध्यम से इन दोनों दर्शनों में प्रवेश पाना अत्यन्त सरल होगा। क्योंकि इस वेब आधारित सिस्टम के माध्यम से साङ्ख्य-योग दर्शन से सम्बन्धित पारिभाषिक शब्दों के विषय में कहीं भी तथा कभी भी ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है। उपयोगकर्ता प्राप्त परिणाम में पारिभाषिक शब्द के विश्लेषण के साथ-साथ किसी भी पारिभाषिक शब्द के लक्षणरूप सूत्र पर कर्सर ले जाने पर उस सूत्र का अर्थ भी प्राप्त कर सकता है। यह शोध शिक्षा के क्षेत्र में ई-शिक्षा एवं डिजिटल भारत के भी लक्ष्य को पूरा करता है। सूचना प्रौद्योगिकी के युग में साङ्ख्य-योग दर्शन के लिए एक ई-लर्निंग प्लेटफॉर्म उपलब्ध कराता है। जिसके माध्यम से छात्र अथवा शिक्षक स्वयं साङ्ख्य-योग दर्शन को बड़ी सरलतापूर्वक सीख व सिखा सकते हैं। यह सिस्टम संस्कृत विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय की वेबसाइट http://cl.sanskrit.du.ac.in पर उपलब्ध है।

पञ्चम अध्याय में बताया जा चुका है कि यह सिस्टम विश्वविद्यालयीय छात्रों एवं अध्यापकों के लिये बहुत ही उपयोगी है। मूल्यांकन करने के पश्चात् ज्ञात हुआ कि यह सिस्टम प्राप्त अन्य सिस्टम से भिन्न तथा 100% परिणाम देने वाला है। साङ्ख्य-योग दर्शन से सम्बन्धित पारिभाषिक शब्दों के विश्लेषण के लिए इतना सटीक एवं उपयोगी सिस्टम अभी तक विकसित नहीं किया गया है। जो छात्र को स्वाध्याय एवं शिक्षकों को पाठन में सुविधा प्रदान करता है। कोई भी छात्र पारिभाषिक शब्द का परिणाम देखने व पढ़ने के बाद इसे प्रिन्ट भी कर सकता है।

अनेक कार्य देश-विदेश में ई-शिक्षण के क्षेत्र में सम्पन्न हो रहे हैं किन्तु संस्कृत के लिये कोई भी कार्य दृष्टिगोचर नहीं होते हैं। अतः निष्कर्ष स्वरूप हम यह कह सकते हैं कि यह एक प्रथम

सफल प्रयास है जिससे हम संस्कृत के ज्ञान को रोचक बनाकर नई पीढ़ी से जोड़ सकते हैं। ताकि छात्रों में संस्कृत को पढ़ने की जिज्ञासा प्रकट की जा सके।

2. भावी अनुसंधान की सम्भावनाएँ (Future Directions of Research)

प्रस्तुत शोध द्वारा अन्य नवीन कार्यों का निर्माण किया जा सकता है। जिनमें से कुछ निम्नलिखित हैं -

2.1 बहुभाषीय सिस्टम का विकास (Development of Multilingual System)

प्रस्तुत शोधकार्य के माध्यम से विकसित वेब आधारित साङ्ख्य-योग पारिभाषिक शब्द सूचना तन्त्र नामक सिस्टम अभी हिन्दी भाषा में उपलब्ध है। भविष्य में इसी सिस्टम को अन्य भाषा माध्यमों जैसे संस्कृत, अंग्रेजी, बांग्ला, पंजाबी आदि प्रमुख भाषाओं में भी विकसित किया जा सकता है।

2.2 भारतीय दर्शन के अन्य दर्शनों के लिये सिस्टम का विकास (Development of the System for other Philosophies)

जिस प्रकार भारतीय दर्शनों में से साङ्ख्य-योग दर्शनों पर सिस्टम का निर्माण किया गया है। ठीक उसी प्रकार अन्य दर्शनों के लिए भी सिस्टम बनाया जा सकता है। प्रस्तुत शोध में प्रयुक्त विधि एवं डेटा संरचना का प्रयोग कर अन्य दर्शनों के लिये भी पारिभाषिक शब्द सूचना सिस्टम का विकास अल्प परिश्रम में ही किया जा सकता है।

सन्दर्भसूची (References)

1. Agrawal, Madan Mohan. *Nyaya Kosh (Encyclopedia of Nyaya): न्यायकोशः*, New Delhi, Chaukhamba Surbharti Prakashan, 2011.
2. Apte, Vaman Shivaram, & Gode, P. K. *The practical Sanskrit-English dictionary*. Delhi, Motilal Banarsidass Publisher Pvt.Ltd, 1998.
3. Apte, Vaman Shivram. *Sanskrit-Hindi Shabdkosh*. Lakshya sahitya, 2017.
4. Biswas, Mukta. Samkhya-Yoga Epistemology. New Delhi, D.K. Printworld, 2007.
5. Chakravarti, Pulinbihari. *Origin and development of the samkhya system of thought*. India, Munshiram Manoharlal Publishers Pvt. Ltd, 1975.
6. Chandra Subhash, Kumar Bhupendra, Kumar Vivek and Sakshi. *लघुसिद्धान्तकौमुदी आधारित कम्प्यूटरकृत सुबन्त-रूप सिद्धि प्रक्रिया.* New Delhi, Vidya Nidhi Prakashana, India, 2015.
7. Chandra, Subhash and Anju. "*Puranic Search: An Instant Search System for Purana*." Language in India, ISSN 1930-2940, Volume 17:5, 2017.
8. Chandra, Subhash, Kumar, Vivek, Kumar, Bhupendra & Sakshi. *"Detection, Analysis & Word Formation Process of Sanskrit Morphology: A Hybrid Approach"*. In Proceedings of the 22nd International Congress of Vedanta at SCSS. New Delhi, JNU, 2015.
9. Chandra, Subhash, Vivek Kumar, and Bhupendra Kumar. *"Innovative Teaching and Learning of Sanskrit Grammar through SWAGATAM (स्वगतम्)*". Language in India 17.1, 2017.
10. Colebrooke, H.T. *The Sankhya Karika or Memorial Verses on the Sankhya Philosophy*. Rarebooksclub.com, 2012.
11. Commission for Scientific & Technical Terminology. *"CSTT: Commission for Scienctific & Technical Terminology*." 12 Sep. 2019, http://csttpublication.mhrd.gov.in/english/result.php?search=glo%20humanities&search55=Submit#.
12. Commission for Scientific & Technical Terminology. *"CSTT: Commission For Scienctific & Technical Terminology."* 10 Sep. 2018, http://csttpublication.mhrd.gov.in/english/overview.php.

13. Dasgupta, Surendranath. *A History of Indian Philosophy*. Vol 1. London, Cambridge University Press, 1922.
14. Dasgupta, Surendranath. *A history of Indian philosophy volume-1*. Motilal Banarsidass publication, 1975.
15. Davies, John. Hindu Philosophy: *The Sankhya Karika of Iswara Krishna*. Routledge Abingdon Oxon, 2000.
16. Deva, Radha Kant. *Shabda-Kalpdrum (vol.1-5).* Varanasi, Chowkhamba Sanskrit Series Office, 1967.
17. Dubey, Manjulika and Pillay, Sb. *The Complete Mahabharata.* Delhi, Rupa and Company, 2010.
18. Fujii, Atsushi, and Tetsuya Ishikawa. *Utilizing the World Wide Web as an encyclopedia: Extracting term descriptions from semi-structured texts*. arXiv preprint cs/0011001, 2000.
19. Ganeri, Jonardon. *Artha: Meaning*. Oxford University Press, 2011.
20. Garbe, Richard. *Samkhya und Yoga*. Trubner, Strassburg: k.j, 1896.
21. Guha, Dinesh Chanira. *Navya Nyaya System of Logic*. Delhi, Motilal Banarsidass, 2016.
22. Haeberlin, John. *Kávya-sangraha: a Sanskrit anthology, being a collection of the best smaller poems in the Sanskrit language*. Calcutta, W. Thacker, 1847.
23. Hasurkar, Shrinath Shripad. *Vachaspati Mishra on Advait Vedanta*. Darbhanga, The director, mahila institute of post-Graduate studies and Research in Sanskrit learning, 1958.
24. Heine, Heinrich. *The poetry and prose of Heinrich Heine*. Citadel Press, 1948.
25. Iyer, S.R. *Tarkabhāṣā*. Varanasi, Chaukhambha Orientalia, 1979.
26. Jain, Sapna. *"Dictionary of Sankhya, Yoga & Vedanta"*. New Delhi, Special Center for Sanskrit Studies, J.N.U., 2007.
27. Jha, Ganga Nath. *Samkhya Tattva Kaumudi*. New Delhi, Chaukhamba Vidya Bhawan, 2011.
28. Keith, Berriedale. *The samkhya system, a history of the samkhya philosophy*. Hardpress publishing, 2012.

29. Khandoliyan, Baldev. *Vanaushaadhi-varga of Amarakosha: A computational study*. New Delhi, School of Sanskrit and Indic Studies, JNU, 2011.
30. Kumar, Vivek. *सिद्धान्तकौमुदी आधारित ऑनलाइन ससूत्रक्रियारूपसिद्धि*. नई दिल्ली, RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary, Volume-04 ISSN: 2455-3085 (Online) Issue-05. 2019.
31. Larson, Gerald James & Bhattacharya, Ram Shankar. *Encyclopedia of Indian philosophy (volume XII) – Yoga: India's philosophy of meditation*. Delhi, Motilal Banarasi Dass, 2008.
32. Larson, Gerald James and Bhattacharya, Ram Shankar. *Encyclopedia of Indian philosophy (volume IV) – Samkhya: A Dualist tradition in Indian philosophy*. Delhi, Motilal Banarasi Dass, 2006.
33. Macdonell. *History of Sanskrit Literature*. University Press of the Pacific; Illustrated, 2004.
34. Mani, Diwakar. *Online Indexing of Mahabharata*. New Delhi, School of Sanskrit and Indic Studies, JNU, 2008.
35. Nair, P K Sasidharan. *The Samkhya System*. India, New Bharatiya Book Corporation, 2005.
36. Panda, Ramesh Chandra. *Vyakaran Darshan Kosh*. Delhi, Pratibha Prakashan, 2017.
37. Pandey, Rajneesh. *Online Indexing Of Sushruta Samhita*. New Delhi, School of Sanskrit and Indic Studies, JNU, 2011.
38. Potter, Karl Harrington. *Encyclopedia of Indian Philosophies*. New Delhi, Motilal Banarsidass, 2009.
39. Radhakrishnan, sarvepalli and Moore. *C.A. A Source Book in Indian Philosophy- ch. XIII, Yoga*. Princeton, New Jersey: Princeton University, 1957.
40. Raghuvira. *A Comprehensive English to Hindi Dictionary: The Supplementary Volume*. Delhi, Aditya Prakashan, 2009.
41. Ranade, Ramchandra Dattatray. *A constructive survey of upanishadic philosophy*. Poona, Oriental book agency, 2016.
42. Rangacarya, M. *The Ganita-sara-sangraha of Mahaviracarya*. Delhi, Cosmo Publications, 2011.

43. Sandal, Mohan Lal. *Mimamsa Sutras of Jaimini*. Delhi, Motilal Banarsidas, 1999.
44. Saraswati, Swami Niranjanananda. *Yoga Darshan: Vision of the Yoga Upanishads*. Bihar, Yoga Publications Trust, 2002.
45. Sharma, Uma Shankar. *Nirukta of Yaska*. Varanasi, Chowkhamba Vidya Bhawan, 1961.
46. Shastri, Bal and Shastri, Prasad. *Mahābhāṣya: with the commentaries Mahabhashya-Pradipodyota of Shree Nagoji Bhatta & Mahabhashya-Pradip by Kaiyat*. India, Vani Vilas Prakashan, 1987.
47. Sheth, Hargovind Das T. *Pāia-sadda-mahaṇṇavo: a comprehensive Prakrit Hindi dictionary, with Sanskrit equivalents, quotations and complete references*. Vol. 1. 1923.
48. Sivananda, Swami. *Yoga Vedanta Dictionary*. Delhi, Motilal Banarasi Dass, 1973.
49. Stewart, Donald E., Levy, Michael and Kent, Christopher Hardy Wise. *"Encyclopædia Britannica"*. 20 Oct. 2020, https://www.britannica.com/topic/Encyclopaedia-Britannica-English-language-reference-work.
50. Swami, Anita. *A conceptual Dictionary of Technical Terms in Yoga philosophy*. Delhi, Vidyanidhi Prakashan, 2015.
51. Tarkavachaspati, Taranath. *Vachaspatyam (A comprehensive Sanskrit Dictionary Vol.1-6)*. Varanasi, Chowkhamba Sanskrit Series Office, 1962.
52. Tiwari, Archana. *Automatic Indexing of Carakasamhita*. New Delhi, School of Sanskrit and Indic Studies, JNU, 2011.
53. Upreti, Bhaskar. *Computational analysis and development of web based system for paninian derivational process of Sanskrit word ending with feminine suffixes*. Diss. Department of Sanskrit, Delhi, University of Delhi, 2019.
54. Velardi, Paola, Roberto Navigli, and Pierluigi D'Amadio. *"Mining the Web to Create Specialized Glossaries*." IEEE Intell. Syst. 23.5 (2008): 18-25.
55. Winternitz, Moriz. *A History of Indian Literature*. Volume-4. Varanasi, Motilal Banarsidass, 1996.

56. Woods, James Haughton (transl.). *The Yoga Sutras of Patañjali*. Harvard University by Ginn & Co, 1914.
57. Woods, James Haughton. *Introduction to Yog system of Patanjali*. Kessinger Publishing, 2010.
58. Yadav, Vandana and Upadhyay, Priyanka. *"Yoga Shabdkosh: Project Yoga Shabdkosh."* Delhi, Special Center for Sanskrit Studies, J.N.U., 2009.
59. अग्रवाल, मनीषा. *संस्कृत के द्विरूपकोशों का समालोचनात्मक अध्ययन.* शोधप्रबन्ध. दिल्ली, संस्कृत विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, 2004.
60. अवस्थी, बच्चूलाल. *भारतीय दर्शन बृहत्कोश.* भाग-1. दिल्ली, शारदा पब्लिशिंग हाउस, 2004.
61. आर्य, सतीश. *पातञ्जल योगदर्शन (व्यासभाष्य एवं भोजवृत्ति सहित).* नई दिल्ली, वेद योग चैरिटेबल ट्रस्ट, 2010.
62. उपाध्याय, बलदेव. *भारतीय दर्शन (प्रथम खण्ड).* वाराणसी, चौखम्बा ओरियण्टालिया, 1984.
63. उपाध्याय, बलदेव. *भारतीय दर्शन की रूपरेखा.* वाराणसी, चौखम्भा ओरियन्टालिया, 1979.
64. उपाध्याय, बलदेव. *भारतीय दर्शन.* वाराणसी, चौखम्बा ओरयन्टालिया, संवत् 1979.
65. उपाध्याय, बलदेव. *भारतीय दर्शन.* वाराणसी, चौखम्बा ओरियन्टालिया, 1976.
66. उपाध्याय, वाचस्पति. *अर्थ-संग्रहः.* दिल्ली, चौखम्भा ओरियन्टालिया, 2014.
67. उपाध्याय, वाचस्पति. *अर्थसंग्रहः.* वाराणसी, चौखम्बा ओरियन्टालिया, 1977.
68. कर्णाटक, विमला. *व्याख्याकारों की दृष्टि से पातञ्जल-योगसूत्र का समीक्षात्मक अध्ययन.* वाराणसी, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, 1974.
69. कर्णाटक, विमला. *पातञ्जलयोगदर्शनम् (तत्त्ववैशारदी-योगवार्त्तिकेतिटीकाद्वयोपेतं व्यासभाष्यम्).* वाराणसी, रत्ना पब्लिकेशन्स, 1992.

70. कर्णाटक, विमला. *व्याख्याकारों की दृष्टि से पातञ्जल-योगसूत्र का समीक्षात्मक अध्ययन.* वाराणसी, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, 1974.

71. कर्णाटक, विमला. *साङ्ख्यकारिका.* वाराणसी, चौखम्भा ओरियन्टालिया, 1996.

72. कीथ, ए.बी. *साङ्ख्यदर्शन का इतिहास.* अनुवा. शिव कुमार, दिल्ली, ईस्टर्न बुक लिंकर्स, 1984.

73. कुमार, अरविन्द एवं कुमार, कुसुम. *अरविंद सहज समांतर कोश: शब्दकोश भी-थिसारस भी.* दिल्ली, राजकमल प्रकाशन, 2006.

74. कुमार, अरविन्द. *मंख-कोश.* दिल्ली, संस्कृत एवं प्राच्यविद्या अध्ययन संस्थान, जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय, 2009.

75. कुमार, अवनीन्द्र एवं आर्य, दोलामणि. *संस्कृतव्याकरण-पारिभाषिककोश.* केरल, न्युलाइट बुक हाऊस, 2013.

76. कुमार, अवनीश एवं अन्य (सम्पा.). *दर्शनशास्त्र परिभाषा कोश (Definitional Dictionary of philosophy)*. भारत सरकार, वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, उच्चतर शिक्षा विभाग, 2003.

77. कुमार, अवनीश एवं अन्य (सम्पा.). *भारतीय दर्शन परिभाषा कोश.* भारत सरकार, वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, उच्चतर शिक्षा विभाग, 1999.

78. कुमार, अवनीश एवं अन्य (सम्पा.). *भाषाविज्ञान शब्दावली (Glossary of Linguistics)*. भारत सरकार, वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, उच्चतर शिक्षा विभाग, 2017.

79. कुमार, कुलदीप. *मेदिनिकोष के सम्भावित स्रोत.* लघुशोधप्रबन्ध. दिल्ली, संस्कृत विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, 2001.

80. कुमार, जलज. *वेब आधारित ऋग्वेदीय खोज एवं अनुक्रमणिका तन्त्र का विकास.* लघुशोधप्रबन्ध. दिल्ली, संस्कृत विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, 2016.

81. कुमार, भूपेन्द्र एवं चन्द्रा, सुभाष. *"वेदान्त ग्रन्थों के अर्थनिर्धारण हेतु नियम एवं उदाहरण संयुक्त विधि का प्रयोग करके संस्कृत सनाद्यन्त क्रियापदों की संगणकीय पहचान एवं विश्लेषण."* प्रस्तुति 22वें वेदान्त काँग्रेस जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय, दिल्ली, 2015.

82. कुमार, भूपेन्द्र. *सनाद्यन्त क्रियापदों के सङ्गणकीय अनुप्रयोग, अभिज्ञान एवं विश्लेषण.* शोधप्रबन्ध. दिल्ली, संस्कृत विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, 2018.

83. कुमार, विवेक. *संस्कृतक्रियापदों का सङ्गणकीय अभिज्ञान, विश्लेषण एवं रूपसिद्धि हेतु वेब आधारित तन्त्र का विकासः सिद्धान्तकौमुदी में विश्लेषित भ्वादिगण के सन्दर्भ में.* शोधप्रबन्ध. दिल्ली, संस्कृत विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, 2019.

84. कुमार, शशिप्रभा, शुक्ल, सन्तोष कुमार और झा, रामनाथ. *दार्शनिक सम्प्रत्य-कोश.* दिल्ली, विशिष्ट संस्कृत अध्ययन केन्द्र जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय एवं डी.के. प्रिण्टवर्ल्ड (प्रा.) लि. 2014.

85. कुमारी, रीना. *न्याय-साङ्ख्य-वेदान्त में वर्णित सृष्टि-प्रक्रिया का समीक्षात्मक अध्ययन.* लघुशोधप्रबन्ध. दिल्ली, संस्कृत विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, 2009.

86. गैरोला, वाचस्पति. *भारतीय दर्शन.* इलाहाबाद, लोकभारती प्रकाशन, 2009.

87. गोयल, प्रीति प्रभा. *भारतीय संस्कृति.* जोधपुर, राजस्थानी ग्रन्थागार, 2008.

88. गौड़, श्री ज्वालाप्रसाद. *सांख्यतत्त्वकौमुदी.* वाराणसी, चौखम्भा सुरभारती प्रकाशन, 2019.

89. गौतम,कपिल. *योगसूत्रानुक्रमणिका.* Proj. Delhi, Special Center for Sanskrit Studies, J.N.U, 2009.
90. चट्टोपाध्याय, देवीप्रसाद. *लोकायत.* दिल्ली, राजकमल प्रकाशन, 2019.
91. जायसवाल, दिलीप कुमार. *योगदर्शन में कर्माशय की अवधारणा: योगसूत्र, व्यासभाष्य तथा वाचस्पति मिश्र, विज्ञानभिक्षु की टीकाओं एवं भोजवृत्ति के आलोक में.* लघुशोधप्रबन्ध. दिल्ली, संस्कृत विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, 2011.
92. जिज्ञासु, ब्रह्मदत्त एवं मीमांसक, युधिष्ठिर. *अष्टाध्यायी-भाष्य-प्रथमावृत्ति.* बहालगढ़, श्री रामलाल कपूर ट्रस्ट, 1964.
93. जोशी, हरी शंकर. *साङ्ख्ययोगदर्शन का जीर्णोद्धार.* वाराणसी, चौखम्भा विद्याभवन, 1965.
94. झलकीकर, भीमाचार्य. *न्यायकोश or Dictionary of Technical Terms of Indian philosophy*. पूना, भण्डारकर ओरियण्टल रिसर्च इंस्टिट्यूट, 1996.
95. झा, आचार्य आनन्द. *चार्वाक दर्शन.* लखनऊ, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, 2013.
96. झा, रामनाथ. *साङ्ख्यदर्शन.* दिल्ली, विद्यानिधि प्रकाशन, 2008.
97. झा, संजय कुमार. *बृहदारण्यकोपनिषद् शाङ्करभाष्य में अद्वैत सम्मत पारिभाषिक शब्दों का अध्ययन.* लघुशोध. दिल्ली, संस्कृत विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, 1997.
98. तिवारी, भोलानाथ. *अंग्रेजी हिन्दी शब्दकोश.* दिल्ली, किताबघर प्रकाशन, 1998.
99. तीर्थ, स्वामी ओमानन्दजी. *पातञ्जलयोगप्रदीपः.* अजमेर, आर्य साहित्य मण्डल लि, 1948.
100. त्रिपाठी, केदारनाथ. *सांख्ययोगकोशः.* वाराणसी, नया संसार प्रेस, 1978.
101. त्रिपाठी, केदारनाथ. *साङ्ख्ययोगकोशः.* वाराणसी, चौखम्भा विश्वभारती, 1974.
102. त्रिपाठी, रमाकांत. *ब्रह्मसूत्र शाङ्करभाष्य (चतुःसूत्री).* लखनऊ, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, 2009.

103. त्रिपाठी, रमाशंकर. *भारतीय दर्शन का परिशीलन.* दिल्ली, भारतीय विद्या संस्थान, 2000.

104. दास, परितोश. *बृहदारण्यकोपनिषद्-अनुक्रमणी.* दिल्ली, संस्कृत एवं प्राच्यविद्या अध्ययन संस्थान, जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय, 2011.

105. दास, भगवान. *योगसूत्रभाष्यकोषः (A concordance Dictionary to the yoga sutras of patanjali and the Bhashya of vyas)*. वाराणसी, काशी विद्यापीठ, 1938.

106. दासगुप्ता, सुरेन्द्रनाथ. *भारतीय दर्शन का इतिहास.* जयपुर, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, 1972.

107. देवराज. *दर्शन धर्म-अध्यात्म और संस्कृति.* दिल्ली, भारतीय ज्ञानपीठ, 2003.

108. द्विवेदी, प्रवीण कुमार. *मेदिनिकोश.* Delhi, Special Center for Sanskrit Studies, J.N.U., 2009.

109. नराले, रत्नाकर. *गीता दर्शन.* दिल्ली, प्रभात प्रकाशन, 2003.

110. नागरी प्रचारणी सभा. *"नागरी प्रचारणी सभा."* 5 Apr. 2021. http://tempweb34.nic.in/xnagari/html/parichay.php.

111. नोगिया, ममता. *योगदर्शन में आचार एवं नीति.* लघुशोधप्रबन्ध. दिल्ली, संस्कृत विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, 2004.

112. पांडेय, रजनीश कुमार. *हलायुध-कोश.* Delhi, Special Center for Sanskrit Studies, J.N.U., 2009.

113. पाठक, सर्वानन्द. *चार्वाक दर्शन की शास्त्रीय समीक्षा.* वाराणसी, चौखम्बा विद्याभवन, 1965.

114. पोद्दार, हनुमान दास. *बृहदारण्यकोपनिषद्.* गोरखपुर, गीताप्रेस गोरखपुर, 1993.

115. पोद्दार, हनुमान दास. *श्रीमद्भगवद्गीता.* गोरखपुर, गीताप्रेस गोरखपुर, 2014.

116. भगवद्दत्त. *वैदिक वाङ्मय का इतिहास.* भाग – 1, https://epustakalay.com/. 1938.

117. भट्टाचार्य, रामशंकर. *सांख्यसूत्रम्*. वाराणसी, प्राच्य भारती प्रकाशन, 1964.

118. भट्टाचार्य, रामशंकर. *सांख्यसूत्रम्*. वाराणसी, प्राच्य भारती प्रकाशन, 1964.

119. भार्गव, दयानन्द. *तर्कसंग्रह*. दिल्ली, मोतीलाल बनारसीदास, 2012.

120. महापात्र, विष्णुपद. *न्याय पारिभाषिक शब्दावली (संस्कृताङ्ग्लसमन्विता)*. नई दिल्ली, मान्यता प्रकाशन, मायापुरी, 2010.

121. माधवाचार्य. *सर्वदर्शनसंग्रह*. पुणे, आनन्द आश्रम, 1999.

122. मिश्र, आद्याप्रसाद. *सांख्यतत्त्वकौमुदी-प्रभा*. प्रयागराज, सत्य प्रकाशन मन्दिर, 1956.

123. मिश्र, आद्याप्रसाद. *साङ्ख्य दर्शन की ऐतिहासिक परम्परा*. इलाहाबाद, अक्षयवट प्रकाशन, 2015.

124. मिश्र, छविनाथ. *न्यायोक्तिकोशः*. इन्डिया, अजन्ता पब्लिकेशन्स, 1978.

125. मिश्र, जगदीश चन्द्र. *भारतीय दर्शन*. भाग 2. वाराणसी, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, 2008.

126. मिश्र, पङ्कजकुमार. *तर्कसंग्रह*. दिल्ली, परिमल पब्लिकेशन्स, 2001.

127. मिश्र, श्रीपार्थसारथि. *मीमांसाश्लोकवार्त्तिकम्*. वाराणसी, चौखम्भा संस्कृत सीरीज, 1867.

128. मीना, रवि कुमार. *संस्कृत छन्द शिक्षण के लिए वेब आधारित सहायक तन्त्र का विकास*. लघुशोधप्रबन्ध. दिल्ली, संस्कृत विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, 2016.

129. मुसलगावकर, गजाननशास्त्री. *साङ्ख्य दर्शन*. वाराणसी, चौखम्बा संस्कृत संस्थान, 1987.

130. मेहता, शोभित. *संस्कृत वाङ्मय में प्रचीन एवं अर्वाचीन चयनित शब्दकोशों का तुलनात्मक अध्ययन*. शोधप्रबन्ध. मध्य प्रदेश, सिन्धिया प्राच्य विद्या-शोध प्रतिष्ठान एवं प्राध्ययन केन्द्र, विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन, 2010.

131. राजाराम. *न्यायसूत्र*. लाहौर, बाम्बे मैशीन प्रैस, 1921.

132. राजाराम. *वैशेषिक-दर्शन*. लाहौर, बाम्बे मैशीन प्रैस, 1919.

133. राधाकृष्णन्, सर्वपल्ली. *भारतीय दर्शन भाग-2*. राजपाल एंड़ सन्स, 2015.

134. रानी, तारा. *योगसूत्र की तत्त्व मीमांसा*. लघुशोधप्रबन्ध. दिल्ली, संस्कृत विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, 1996.

135. रेउ, श्रीयुत विश्वेश्वरनाथ. *राजा भोज*. इलाहाबाद, हिन्दुस्तानी एकेडेमी, 1932.

136. वाजपेयी, किशोरीदास. *हिन्दी- निरुक्त*. दिल्ली, वाणी प्रकाशन, 1981.

137. वेदालंकार, जयदेव. *भारतीय दर्शनशास्त्र का इतिहास*. भाग-3. दिल्ली, न्यू भारतीय बुक कार्पोरेशन, 2004.

138. व्हाइट, डेविड गॉर्डन. *अभ्यास में योग*. न्यू जर्सी, प्रिंसटन यूनिवर्सिटी प्रेस, 2011.

139. शर्मा, उमाशङ्कर. *सर्वदर्शनसंग्रह*. वाराणसी, चौखम्बा विद्याभवन, 2008.

140. शर्मा, देव. *योग में वृत्तियाँ*. लघुशोध. दिल्ली, संस्कृत विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, 1990.

141. शर्मा, धर्मानन्द. *साङ्ख्यप्रवचनभाष्य*. दिल्ली, अमर ग्रन्थ पब्लिकेशन्स, 1999.

142. शर्मा, यादव. *रसहृदयतन्त्रम्-मुग्धावबोधिनी टीका सहित*. दिल्ली, मोतीलाल बनारसी दास, 1927.

143. शर्मा, राममूर्ति. *भारतीय दर्शन की चिन्तनधारा*. चौखम्बा ओरियन्टालिया, 2008.

144. शर्मा, राममूर्ति. *भारतीय दर्शन की चिन्तनधारा*. दिल्ली, मणिद्वीप, 2001.

145. शर्मा, श्रीराम. *सांख्य-दर्शन*. बरेली, संस्कृति संस्थान, 1997.

146. शास्त्री मग्नलाल, शर्मा. *श्रीमद्ब्रह्मसूत्राणुभाष्यम्*. दिल्ली, प्रकाशक बुटाला एन्ड कम्पनी, 1980.

147. शास्त्री, अनन्तराम. *शिशुपालवधम्*. वाराणसी, चौखम्भा संस्कृत सीरिज ऑफिस, 1985.

148. शास्त्री, आचार्य उदयवीर. *वेदान्त दर्शन का इतिहास.* दिल्ली, गोविन्दराम हसानंद (वैदिक बुक्स), 2014.

149. शास्त्री, उदयवीर. *सांख्य दर्शन का इतिहास.* ज्वालापुर, सहारनपुर, उत्तर प्रदेश, विरजानन्द वैदिक संस्थान, 1900.

150. शास्त्री, उदयवीर. *सांख्यदर्शनम्.* भारत, विजयकुमार गोविंदराम हसनंदा, 2017.

151. शास्त्री, उदयवीर. *साङ्ख्य दर्शन का इतिहास.* उत्तर प्रदेश, बिरजानन्द वैदिक संस्थान, ज्वालापुर, 1950.

152. शास्त्री, उदयवीर. *साङ्ख्यदर्शन का इतिहास.* उत्तर प्रदेश, विरजानन्द वैदिक संस्थान, 1900.

153. शास्त्री, जगन्नाथ. *सांख्यकारिकाः.* दिल्ली, मोतीलाल बनारसीदास, 2017.

154. शास्त्री, ज्ञानप्रकाश. *पाणिनि-प्रत्ययार्थ-कोषः तद्धित-प्रकरणम्.* दिल्ली, परिमल प्रकाशन, 2004.

155. शास्त्री, दयाशङ्कर. *उद्योतकर का न्यायवार्तिक एक अध्ययन.* वाराणसी, चौखम्भा विद्याभवन, 2004.

156. शास्त्री, देवर्षि सनाढ्या. *भोज-प्रबन्ध.* वाराणसी, चौखम्भा कृष्णदास अकादमी, 1979.

157. शास्त्री, पण्डित श्री राजेश्वर. *न्यायवार्त्तिक-तात्पर्यटीका.* वाराणसी, चौखम्भा संस्कृत सिरीज ऑफिस, 1925.

158. शास्त्री, बालकृष्ण एवं शास्त्री, सीता राम. *साङ्ख्यकारिका.* वाराणसी, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, 2012.

159. शास्त्री, राकेश. *वेदान्तसार.* दिल्ली, परिमल पब्लिकेशन्स, 2004.

160. शास्त्री, राकेश. *सांख्यकारिका.* दिल्ली, संस्कृत ग्रन्थागार, मौजपुर, 2004.

161. शास्त्री, वेतुरी प्रभाकर. *भगवज्जुकम्.* हैदराबाद, मणिमंजरी पब्लिकेशन्स, 1986.

162. शास्त्री, श्रीनिवास. *तर्कभाषा*. मेरठ, साहित्य भण्डार, 2006.

163. शुक्ल, दीनानाथ. *भारतीय दर्शन परिभाषा कोश*. दिल्ली, प्रतिभा प्रकाशन, 1993.

164. शुक्ल, सूर्यनारायण, सम्पादक. *न्यायमञ्जरी*. वाराणसी, चौखम्बा संस्कृत सीरीज, 1986.

165. श्री कृष्णदास, खेमराज. *वेदान्तसार*. मुम्बई, खेमराज श्रीकृष्णदास प्रकाशन, 2015.

166. श्रीनिवास. *साङ्ख्य-योग दर्शन में प्रत्यय-सर्ग*. लघुशोधप्रबन्ध. दिल्ली, संस्कृत विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, 1984.

167. श्रीमन्नालाल. *अमरकोषः*. वाराणसी, चौखम्बा विद्याभवन, 2008.

168. श्रीवास्तव, सुरेशचन्द्र. *पातञ्जलयोगदर्शनम्*. वाराणसी, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, 2011.

169. श्रीवास्तव्य, सुरेशचन्द्र. *आचार्य विज्ञानभिक्षु और भारतीय दर्शन में उनका स्थान*. इलाहाबाद, लोकभारती प्रकाशन, 1969.

170. संजय. *ब्रह्मसूत्र अनुक्रमणिका*. दिल्ली, संस्कृत एवं प्राच्यविद्या अध्ययन संस्थान, जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय, 2008.

171. सरस्वती, केवलानन्द. *मीमांसाकोष*. दिल्ली, सतगुरु पब्लिकेशन्स, 1992.

172. सर्वपल्ली, राधाकृष्णन. *भारतीय दर्शन भाग-2*. राजपाल एंड सन्स, 2015.

173. साक्षी. *यान्त्रिक अनुवाद के लिए तद्धितान्त पदों की पहचान एवं विश्लेषण*. शोधप्रबन्ध, दिल्ली, संस्कृत विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, 2018.

174. सिंह, बद्री नाथ. *भारतीय दर्शन ग्रन्थमाला: वैशेषिक दर्शन-तुलनात्मक अध्ययन*. वाराणसी, आशा प्रकाशन, गोदौलिया, 2000.

175. सिंह, रघुनाथ. *राजतरंगिणी: कल्हणकृत (Kindle इंटरैक्टिव संस्करण)*. saptarshee.in, 2019.

176. सिन्हा, हरेन्द्र प्रसाद. *भारतीय दर्शन की रूपरेखा.* दिल्ली, मोतीलाल बनारसी दास, 2006.

177. सिन्हा, हरेन्द्र प्रसाद. *भारतीय दर्शन की रूपरेखा.* दिल्ली, मोतीलाल बनारसीदास, 2012.

178. स्वामी, तुलसीराम. *मनुस्मृति.* दिल्ली, जवाहर बुक डिपो, 1969.

सहायक ग्रन्थसूची (Bibliography)

हिन्दी सहायक ग्रन्थसूची (Hindi Bibliography)

1. आचार्य, श्रीराम शर्मा. *स्कन्दपुराण.* संस्कृति संस्थान. उत्तर प्रदेश, बरेली, 1970.
2. क्षेमेन्द्र. *सांख्य-संग्रह.* वाराणसी, चौखम्बा संस्करण, 1920.
3. गोयन्दका, हरिकृष्णदास. *योग-दर्शन.* गोरखपुर, गीता प्रैस, 2015.
4. गोविन्दानन्द, आचार्य शंकर. *ब्रह्मसूत्र शाङ्करभाष्य.* वाराणसी, चौखम्बा संस्कृत सीरिज, 1997.
5. झा, राम नाथ. *सांख्यदर्शन.* दिल्ली, विद्यानिधि प्रकाशन, 2008.
6. दौलतराम जी. *पद्मपुराण.* दरियागंज, दिल्ली, वीर सेवामन्दिर-सस्ती ग्रन्थमाला, 1950.
7. भट्टाचार्य, रमाशंकर. *सांख्य-सूत्र.* बनारस, प्राच्य भारती, 1964.
8. माधवाचार्य. *सर्वदर्शन संग्रह.* पूना, भण्डारकर रिसर्च इन्स्टीट्यूड, 1966.
9. मिश्र, पङ्कज कुमार. *तर्कसङ्ग्रहः.* शक्ति नगर, परिमल पब्लिकेशन्स, 2001.
10. मिश्र, उमेश. *सांख्य-योग-दर्शन.* इलाहाबाद, तीरमुक्ति-प्रकाशन, 1958.
11. मिश्र, उमेश. *भारतीयदर्शन.* लखनऊ, हिन्दी समिति, सूचना विभाग, 1964.
12. मिश्र, वाचस्पति. *तत्त्ववैशारदी (पातञ्जल योगदर्शनम्).* वाराणसी, भारतीय विद्या प्रकाशन, 1971.
13. राजाराम. *न्याय-भाष्य.* लाहौर, बाम्बे मैशनि प्रैस, 1921.
14. वाचस्पति. *तर्कसंग्रह.* वाराणसी,चौखम्बा प्रकाशन, 1973.
15. वेदव्यास. *श्रीमद्भगवद् गीता.* गोरखपुर, गीता प्रैस, 2019.

16. व्यासदेव. *व्यासभाष्य (पातञ्जल योगदर्शनम्).* वाराणसी, भारतीय विद्या प्रकाशन, 1971.

17. शंकराचार्य. *श्वेताश्वतरोपनिषद्.* गोरखपुर, गीता प्रेस, 2009.

18. शर्मा, श्याम सुन्दर. *मीमांसाश्लोकवार्तिकम्.* वाराणसी, भारतीय विद्या संस्थान, 2002.

19. शास्त्री, उदयवीर. *सांख्यदर्शन.* गाजियाबाद, विरजानन्द वैदिक संस्थान, 2017.

20. शास्त्री, रामप्रताप त्रिपाठी. *वायुपुराणम्.* इलाहाबाद, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग, 1987.

21. शास्त्री, हरिदत्त. *सांख्यकारिका.* मेरठ, साहित्य भण्डार, 1960.

22. शुक्ला, श्रद्धा. *श्रीविष्णु महापुराण.* दिल्ली, नाग प्रकाशक, जवाहर नगर, 1998.

23. श्रीवास्तव, सुरेशचन्द्र. *पातञ्जलयोगदर्शनम्.* वाराणसी, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, 2011.

24. श्रीवास्तव्य, सुरेशचन्द्र. *विज्ञानभिक्षु और भारतीय दर्शन में उनका स्थान.* इलाहाबाद, लोकभारती प्रकाशन, 1969.

25. सातवलेकर, श्रीपाद दामोदर. *महाभारत वनपर्व.* स्वाध्याय मंडल, औंघ, जि. सातारा, 1925.

26. हिरियन्ना, मैसूर. *भारतीय-दर्शन की रूपरेखा.* दिल्ली, राजकमल प्रकाशन, 1969.

27. आर्य, सतीश. *पातञ्जल योगदर्शन (व्यासभाष्य एवं भोजवृत्ति सहित).* नई दिल्ली, वेद योग चैरिटेबल ट्रस्ट, 2010.

28. उपाध्याय, बलदेव. *भारतीय दर्शन.* वाराणसी, चौखम्बा ओरियन्टालिया, 1976.

29. कर्णाटक, विमला. *साङ्ख्यकारिका.* वाराणसी, चौखम्भा ओरियन्टालिया, 1996.

30. कीथ, ए.बी. *साङ्ख्यदर्शन का इतिहास.* अनुवा. शिव कुमार, दिल्ली, ईस्टर्न बुक लिंकर्स, 1984.

31. कुमार, शशिप्रभा, शुक्ल, सन्तोष कुमार और झा, रामनाथ. *दार्शनिक सम्प्रत्य-कोश.* दिल्ली, विशिष्ट संस्कृत अध्ययन केन्द्र जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय एवं डी.के. प्रिण्टवर्ल्ड (प्रा.) लि. 2014.
32. गौड़, श्री ज्वालाप्रसाद. *सांख्यतत्त्वकौमुदी.* वाराणसी, चौखम्भा सुरभारती प्रकाशन, 2019.
33. जोशी, हरी शंकर. *साङ्ख्ययोगदर्शन का जीर्णोद्धार.* वाराणसी, चौखम्भा विद्याभवन, 1965.
34. झा, रामनाथ. *साङ्ख्यदर्शन.* दिल्ली, विद्यानिधि प्रकाशन, 2008.

अंग्रेजी सहायक ग्रन्थसूची (English Bibliography)

1. Ayyangar, C R Sreenivasa, 2013, *The Ramayan of Valmiki*, LIFCO Publishers Pvt. Ltd.
2. Colebrooke, H.T. *The Sankhya Karika or Memorial Verses on the Sankhya Philosophy*. Rarebooksclub.com, 2012.
3. Dasgupta, Surendranath. *A History of Indian Philosophy*. Vol 1. London, Cambridge University Press, 1922.
4. Dasgupta, Surendranath. *A history of Indian philosophy volume-1*. Motilal Banarsidass publication, 1975.
5. Davies, John. Hindu Philosophy: *The Sankhya Karika of Iswara Krishna*. Routledge Abingdon Oxon, 2000.
6. Deva, Radha Kant. *Shabda-Kalpdrum (vol.1-5).* Varanasi, Chowkhamba Sanskrit Series Office, 1967.
7. Jha, Ganga Nath. *Samkhya Tattva Kaumudi*. New Delhi, Chaukhamba Vidya Bhawan, 2011.
8. Keith, Berriedale. *The samkhya system, a history of the samkhya philosophy*. Hardpress publishing, 2012.
9. Keith, Berriedale. *The samkhya system, a history of the samkhya philosophy*. Hardpress publishing, 2012.
10. Khandoliyan, Baldev. *Vanaushaadhi-varga of Amarakosha: A computational study*. New Delhi, School of Sanskrit and Indic Studies, JNU, 2011.
11. Larson, Gerald James & Bhattacharya, Ram Shankar. *Encyclopedia of Indian philosophy (volume XII) – Yoga: India's philosophy of meditation*. Delhi, Motilal banarasi dass, 2008.
12. Nair, P K Sasidharan. *The Samkhya System*. India, New Bharatiya Book Corporation, 2005.
13. Saraswati, Swami Niranjanananda. *Yoga Darshan: Vision of the Yoga Upanishads*. Bihar, Yoga Publications Trust, 2002.

वेब सहायक ग्रन्थसूची (Web Bibliography)

1. Commission for Scientific & Technical Terminology. *"CSTT: Commission For Scienctific & Technical Terminology*." 12 Sep. 2019, http://csttpublication.mhrd.gov.in/english/result.php?search=glo%20humanities&search55=Submit#.
2. Commission for Scientific & Technical Terminology. *"CSTT:: Commission For Scienctific & Technical Terminology."* 10 Sep. 2018, http://csttpublication.mhrd.gov.in/english/overview.php.
3. Stewart, Donald E., Levy, Michael and Kent, Christopher Hardy Wise. *"Encyclopædia Britannica"*. 20 Oct. 2020, https://www.britannica.com/topic/Encyclopaedia-Britannica-English-language-reference-work.
4. नागरी प्रचारणी सभा. *"नागरी प्रचारणी सभा."* 5 Apr. 2021. http://tempweb34.nic.in/xnagari/html/parichay.php.
5. भगवद्दत्त. *वैदिक वाङ्मय का इतिहास*. भाग – 1, https://epustakalay.com/. 1938.

प्रथम परिशिष्ट

साङ्ख्यदर्शन के पारिभाषिक शब्दों की लक्षण सहित सूची

क्रम	पारिभाषिक शब्द	सांख्यसूत्र	ग्रन्थ
1	अत्यन्तपुरुषार्थः	अथ त्रिविधदुःखात्यन्तनिवृत्तिरत्यन्तपुरुषार्थः॥1.1॥	सांख्यसूत्र
2	अदृष्टम्	पुरुषार्थं करणोद्भवोऽप्यदृष्टोल्लासात् ॥2.36॥	सांख्यसूत्र
3	अधिकारि	अधिकारित्रैविध्यान्न नियमः ॥1.70.॥, अधिकारिप्रभेदान्न नियमः ॥3.76॥, अधिकारित्रैविध्यान्न नियमः ॥6.22॥	सांख्यसूत्र
4	अधिष्ठानशरीरम्	तदधिष्ठानाश्रये देहे तद्वादत्तद्वादः ॥ 3.11॥	सांख्यसूत्र
5	अध्यवसायः	अध्यवसायो बुद्धिः॥2.13॥	सांख्यसूत्र
6	अनुमानम्	प्रतिबन्धदृशः प्रतिबद्धज्ञानमनुमानम्॥1.100.॥	सांख्यसूत्र
7	अन्तःकरणम्	तेनान्तःकरणस्य॥1.64॥	सांख्यसूत्र
8	अपवर्गः	इतरैतरवत्तद्दोषात्॥3.64॥	सांख्यसूत्र
9	अपुरुषार्थत्वम्	अपुरुषार्थत्वमन्यथा ॥6.18 ॥	सांख्यसूत्र
10	अभिमानः	जपास्फटिकयोरिव नोपरागः किन्त्वभिमानः ॥6.28॥	सांख्यसूत्र
11	अमूलम्	मूले मूलाभावादमूलं मूलम्॥1.67॥	सांख्यसूत्र
12	अविवेकः	अनादिरविवेकोऽन्यथा दोषद्वयप्रसक्तेः ॥6.12 ॥	सांख्यसूत्र
13	अविवेकनिमित्तः	अविवेकनिमित्तो वा पञ्चशिखः ॥6.68॥	सांख्यसूत्र
14	अविशेषः	अविशेषाद्विशेषारम्भः॥3.1॥	सांख्यसूत्र
15	अविशेषापत्तिः	अविशेषापत्तिरुभयोः ॥6.19 ॥	सांख्यसूत्र
16	अव्यक्तम्	अव्यक्तं त्रिगुणाल्लिङ्गात् ॥1.136॥	सांख्यसूत्र
17	अशक्तिः	अशक्तिरष्टाविंशतिधा तु॥3.38॥	सांख्यसूत्र
18	अहङ्कारः	अभिमानोऽहङ्कारः ॥2.16॥	सांख्यसूत्र
19	अहङ्कारधर्माः	निर्गुणत्वात् तदसम्भवादहङ्कारधर्मा ह्येते ॥6.62 ॥	सांख्यसूत्र

20	आतिवाहिकशरीरम्	न स्थूलमिति नियम आतिवाहिकस्यापि विद्यमानत्वात् ॥ 5.103॥	सांख्यसूत्र
21	आत्मलाभः	श्रुतिविरोधान्न कुतर्कापसदस्यात्मलाभः ॥6.34 ॥	सांख्यसूत्र
22	आधिदैविकम्	अथ त्रिविधदुःखात्यन्तनिवृत्तिरत्यन्तपुरुषार्थः ॥1.1॥	सांख्यसूत्र
23	आधिभौतिकम्	अथ त्रिविधदुःखात्यन्तनिवृत्तिरत्यन्तपुरुषार्थः ॥1.1॥	सांख्यसूत्र
24	आध्यात्मिकम्	अथ त्रिविधदुःखात्यन्तनिवृत्तिरत्यन्तपुरुषार्थः ॥1.1॥	सांख्यसूत्र
25	आप्तवचनम्	आप्तोपदेशः शब्दः॥1.101॥	सांख्यसूत्र
26	आवृत्तिः	चन्द्रादिलोकेप्यावृत्तिः निमित्तसद्भावात् ॥6.56॥	सांख्यसूत्र
27	आसनम्	स्थिरसुखमासनम्॥3.34॥	सांख्यसूत्र
28	इन्द्रियवृत्तिः	क्रमशोऽक्रमशश्चेन्द्रियवृत्तिः॥2.32॥	सांख्यसूत्र
29	उपरागः	निस्सङ्गे ऽप्युपरागो ऽविवेकात् ॥6.27॥	सांख्यसूत्र
30	ऐकभौतिक	ऐकभौतिकमित्यपरे ॥3.19॥	सांख्यसूत्र
31	करणम्	करणं त्रयोदशाविधमवान्तरभेदात्॥2.38॥	सांख्यसूत्र
32	कर्मकर्तृविरोधः	प्रकाशतस्तत्सिद्धौ कर्मकर्तृविरोधः ॥6.49 ॥	सांख्यसूत्र
33	कर्मनिमित्तः	कर्मनिमित्तः प्रकृतेः स्वस्वामिभावो ऽप्यनादिः बीजाङ्कुरवत् ॥6.67॥	सांख्यसूत्र
34	कर्मेन्द्रियः	कर्मेन्द्रियबुद्धीन्द्रियैरान्तरमेकादशकम् ॥2.19॥	सांख्यसूत्र
35	कार्यद्वयम्	साम्यवैषम्याभ्यां कार्यद्वयं ॥6.42॥	सांख्यसूत्र
36	कृतकृत्यता	विवेकान्निःशेषदुःखनिवृत्तौ कृतकृत्यो नेतरान्नेतरात् ॥ 3.84॥, अत्यन्तदुःखनिवृत्त्या कृतकृत्यता ॥6.5॥	सांख्यसूत्र
37	गुणाः	प्रीत्येप्रीतिविषादात्मैर्गुणानामन्योऽन्यं वैधर्म्यम् ॥1.127॥	सांख्यसूत्र
38	चातुभौतिकम्	चातुर्भौतिकमित्येके ॥3.18॥	सांख्यसूत्र
39	चिद्रूपः	जडव्यावृत्तो जडं प्रकाशयति चिद्रूपः ॥6.50॥	सांख्यसूत्र
40	जगत्	जगत्सत्यत्वमदुष्टकरणजन्यत्वम् बाधकाभावात् ॥6.52॥	सांख्यसूत्र

41	जडव्यावृतः	जडव्यावृत्तो जडं प्रकाशयति चिद्रूपः ॥6.50॥	सांख्यसूत्र
42	जीवत्वम्	विशिष्टस्य जीवत्वमन्वयव्यतिरेकात् ॥6.63॥	सांख्यसूत्र
43	ज्ञानमीमांसा	द्वयोरेकतरस्य वाऽप्यसन्निकृष्टार्थपरिच्छित्तिः प्रमा तत्साधकतमं यत्तत् त्रिविधं प्रमाणम् ॥1.87॥	सांख्यसूत्र
44	तमस्	प्रीत्यप्रीतिविषादात्मैर्गुणानामन्योन्यं वैधर्म्यम् ॥1.127॥	सांख्यसूत्र
45	तमोविशाला	तमोविशाला मूलतः॥3.49॥	सांख्यसूत्र
46	तुष्टिः	आध्यात्मिकादि भेदान्नवधा तुष्टिः ॥3.43॥	सांख्यसूत्र
47	दार्ढ्यार्थम्	दार्ढ्यार्थमुत्तरेषां ॥6.23॥	सांख्यसूत्र
48	दिक्कालः	हेतुमदनित्यमव्यापि सक्रियमनेकमाश्रितं लिङ्गम् ॥1.124॥	सांख्यसूत्र
49	दुःखम्	समानं जरामरणादिजं दुःखम् ॥3.53॥	सांख्यसूत्र
50	दृष्टम्	न दृष्टात्तत्सिद्धिर्निवृत्तेऽप्यनुवृत्तिदर्शनात् ॥1.2॥	सांख्यसूत्र
51	देहः	पाञ्चभौतिको देहः ॥3.17॥	सांख्यसूत्र
52	ध्यानम्	ध्यानं निर्विषयं मनः ॥6.25॥ , रागोपहतिः ध्यानं ॥ 3. ॥	सांख्यसूत्र
53	ध्यानसिद्धिः	वृत्तिनिरोधात्तत्सिद्धिः॥3.1॥	सांख्यसूत्र
54	नाशः	नाशः कारणलयः॥1.121॥	सांख्यसूत्र
55	निरोधः	ध्यानधारणाभ्यास वैराग्यादिभिः तन्निरोधः ॥6.29॥	सांख्यसूत्र
56	निर्गुणत्वम्	निर्गुणत्वमात्मनो ऽसङ्गत्वादिश्रुतेः ॥6.10॥	सांख्यसूत्र
57	पंचतन्मात्रम्	स्थूलात्पञ्चतन्मात्रस्य ॥1.62॥, एकादश पञ्चतन्मात्रं तत्कार्यम् ॥2.17॥	सांख्यसूत्र
58	पञ्चपर्वाविद्या	अप्राप्त	सांख्यकारिका
59	पञ्चवायु	सामान्यकरणवृत्तिः प्राणाद्या वायवः पञ्च ॥2.1॥	सांख्यसूत्र
60	पार	आध्यात्मिकादि भेदान्नवधा तुष्टिः ॥3.43॥	सांख्यसूत्र
61	पुरुषः	असङ्गोऽयं पुरुष इति ॥1.15॥	सांख्यसूत्र

62	पुरुषबहुत्वम्	जन्मादिव्यवस्थातः पुरुषबहुत्वम् ॥1.149॥, पुरुषबहुत्वं व्यवस्थातः ॥6.45॥	सांख्यसूत्र
63	पुरुषार्थः	यद्वा तद्वा तदुच्छित्तिः पुरुषार्थस्तदुच्छित्तिः पुरुषार्थः ॥ 6.70॥	सांख्यसूत्र
64	पुरुषार्थत्वम्	प्रात्यहिकक्षुत्प्रतीकारवत्तत्प्रतीकारचेष्टनात् पुरुषार्थत्वम् ॥1.3॥	सांख्यसूत्र
65	प्रकृतिः	सत्वरजस्तमसां साम्यावस्था प्रकृतिः प्रकृतेर्महान् महातोऽहङ्कारोऽहङ्कारात् पञ्चतन्मात्राण्युभयमिन्द्रियं तन्मात्रेभ्यः स्थूलभूतानि पुरुष इति पञ्चविंशतिर्गणः ॥1.61॥	सांख्यसूत्र
66	प्रत्यक्षम्	यत्सम्बन्धसिद्धं तदाकारोल्लेखि विज्ञानं तत् प्रत्यक्षम् ॥1.89॥	सांख्यसूत्र
67	प्रत्ययसर्गः	पङ्ग्वन्धवदुभयोरपि संयोगस्तत्कृतः सर्गः ॥21॥	सांख्यकारिका
68	प्रमा	द्वयोरेकतरस्य वाऽप्यसन्निकृष्टार्थपरिच्छित्तिः प्रमा तत्साधकतमं यत्तत् त्रिविधं प्रमाणम् ॥1.87॥	सांख्यसूत्र
69	प्रमाणम्	द्वयोरेकतरस्य वाऽप्यसन्निकृष्टार्थपरिच्छित्तिः प्रमा तत्साधकतमं यत्तत् त्रिविधं प्रमाणम् ॥1.87॥	सांख्यसूत्र
70	प्रलयावस्था	न कारणलयात् कृतकृत्यता मग्नवदुत्थानात् ॥3.54॥	सांख्यसूत्र
71	बन्धः	बन्धो विपर्ययात् ॥3.24॥	सांख्यसूत्र
72	बाह्यकरणम्	रूपादिरसमलान्त उभयोः ॥2.28॥	सांख्यसूत्र
73	बुद्धिः	अध्यवसायो बुद्धिः ॥2.13॥	सांख्यसूत्र
74	बुद्धीन्द्रियः	कर्मेन्द्रियबुद्धीन्द्रियैरान्तरमेकादशकम् ॥2.19॥	सांख्यसूत्र
75	भोगदेशकाललाभः	गतिश्रुतेश्च व्यापकत्वे ऽपि उपाधियोगात् भोगदेशकाललाभः व्योमवत् ॥6.59 ॥	सांख्यसूत्र
76	भौतिकसर्गः	अष्टविकल्पो दैवस्तइर्यग्योनश्च- पञ्चधा भवति । मानुष्यश्चैकविधः समासतो भौतिकः सर्गः ॥53॥	सांख्यकारिका

77	मनः	उभयात्मकं मनः॥2.26॥	सांख्यसूत्र
78	मुक्तिः	ज्ञानान्मुक्तिः ॥3.23॥, मुक्तिरन्तराय ध्वस्तेर्न परः ॥6.20॥	सांख्यसूत्र
79	मुक्तोपभोगः	नान्योपसर्पणे ऽपि मुक्तोपभोगः निमित्ताभावात् ॥6.44॥	सांख्यसूत्र
80	रजस्	प्रीत्येप्रीतिविषादात्मैर्गुणानामन्योऽन्यं वैधर्म्यम् ॥1.127॥	सांख्यसूत्र
81	रजोविशाला	मध्ये रजोविशाला ॥3.50॥	सांख्यसूत्र
82	लिङ्गम्	दिक्कालावाकाशादिभ्यः ॥2.12॥	सांख्यसूत्र
83	लिङ्गशरीरम्	सप्तदशैकं लिङ्गम् ॥3.9॥	सांख्यसूत्र
84	विपर्यय	बन्धो विपर्ययात् ॥3.24॥	सांख्यसूत्र
85	विपर्ययभेदाः	विपर्ययभेदाः पञ्च ॥3.37॥	सांख्यसूत्र
86	विमुक्तिश्रुतिः	पाराम्पर्येण तत्सिद्धौ विमुक्तिश्रुतिः ॥6.58॥	सांख्यसूत्र
87	विवेकसिद्धिः	तत्वाभ्यासान्नेति नेतीति त्यागाद्विवेकसिद्धिः ॥3.75॥	सांख्यसूत्र
88	व्यक्तम्	अव्यक्तं त्रिगुणाल्लिङ्गात् ॥1.136॥	सांख्यसूत्र
89	व्याप्तिः	नियतधर्मसाहित्यमुभयोरेकतरस्य वा व्याप्तिः ॥5.29॥	सांख्यसूत्र
90	शब्दः	आप्तोपदेशः शब्दः ॥1.101॥	सांख्यसूत्र
91	सत्कार्यवाद	उपादाननियमात् ॥1.115॥ , सर्वत्र सर्वदा सर्वासम्भवात् ॥1.116॥, शक्तस्य शक्यकरणात् ॥1.117॥, कारणभावाच्च ॥1.118॥	सांख्यसूत्र
92	सत्त्वम्	प्रीत्येप्रीतिविषादात्मैर्गुणानामन्योऽन्यं वैधर्म्यम् ॥1.127॥	सांख्यसूत्र
93	सत्त्वविशाला	ऊर्ध्वं सत्वविशाला ॥3.48॥	सांख्यसूत्र
94	सदसत्ख्यातिवाद	सदसत्ख्यातिर्बाधाबाधात् ॥5.56॥	सांख्यसूत्र
95	सदुत्पत्तिः	प्रकारान्तरासंभवात्सदुत्पत्तिः ॥6.53॥	सांख्यसूत्र

96	साक्षित्वम्	साक्षात्सम्बन्धात् साक्षित्वम् ॥1.161॥	सांख्यसूत्र
97	सिद्धिः	सिद्धिरष्टधा ॥3.40॥, ऊहादिभिः सिद्धिः ॥3.44॥	सांख्यसूत्र
98	सृष्टिवैचित्र्यम्	कर्मवैचित्र्यात्सृष्टिवैचित्र्यम् ॥6.41॥	सांख्यसूत्र
99	स्थूलशरीरम्	मातापितृजं स्थूलं प्रायशः इतरन्न तथा ॥3.7॥	सांख्यसूत्र
100	स्वस्थः	तन्निवृत्तावुपशान्तोपरागः स्वस्थः॥2.34॥	सांख्यसूत्र

द्वितीय परिशिष्ट

योगदर्शन के पारिभाषिक शब्दों की लक्षण सहित सूची

क्रम	पारिभाषिक शब्द	योग सूत्र	ग्रन्थ
1	अक्रमः	तारकं सर्वविषयं सर्वथाविषयमक्रमं चेति विवेकजं ज्ञानम् ॥3.54॥	योगसूत्र
2	अक्लिष्टाः-वृत्तिजातिः	वृत्तयः पञ्चतय्यः क्लिष्टाक्लिष्टाः ॥1.5॥	योगसूत्र
3	अङ्गमेजयत्वम्	दुःखदौर्मनस्याङ्गमेजयत्वश्वासप्रश्वासा विक्षेपसहभुवः ॥1.31॥	भाष्य
4	अङ्गानि	यमनियमासनप्राणायामप्रत्याहारधारणाध्यानसमाधयोऽष्टावङ्गानि ॥2.29॥	योगसूत्र
5	अणिमा	ततोऽणिमादिप्रादुर्भावः कायसंपत्तद्धर्मानभिघातश्च ॥3.45॥	योगसूत्र
6	अतीतानागतज्ञानम्	परिणामत्रयसंयमादतीतानागतज्ञानम् ॥3.16॥	योगसूत्र
7	अदृष्टजन्मवेदनीयः कर्माशयः	क्लेशमूलः कर्माशयो दृष्टादृष्टजन्मवेदनीयः ॥2.12॥	भाष्य
8	अधिमात्रतीव्रः-(संवेगः)	तीव्रसंवेगानाम् आसन्नः ॥1.21॥, मृदुमध्याधिमात्रत्वात् ततोऽपि विशेषः ॥1.22॥	भाष्य
9	अधिमात्रोपायः	तीव्रसंवेगानाम् आसन्नः ॥1.21॥, मृदुमध्याधिमात्रत्वात् ततोऽपि विशेषः ॥1.22॥	योगसूत्र
10	अध्यात्मप्रसादः	निर्विचारवैशारद्येऽध्यात्मप्रसादः ॥1.47॥	योगसूत्र
11	अनन्तसमापत्तिः	प्रयत्नशैथिल्यानन्तसमापत्तिभ्याम् ॥2.47॥	योगसूत्र
12	अनवस्थितत्वम्	व्याधिस्त्यानसंशयप्रमादालस्याविरतिभ्रान्तिदर्शनालब्धभूमिकत्वानवस्थितत्वानि चित्तविक्षेपास् तेऽन्तरायाः ॥1.30॥	योगसूत्र

13	अनियतविपाकः कर्माशयः	सति मूले तद्विपाको जात्यायुर्भोगाः ॥2.13॥	योगसूत्र
14	अनुमानम्	प्रत्यक्षानुमानागमाः प्रमाणानि ॥1.7॥	योगसूत्र
15	अन्तरङ्ग साधनम्	त्रयम् अन्तरङ्गं पूर्वेभ्यः ॥3.7॥	भाष्य
16	अन्तर्द्धानम्	कायरूपसंयमात् तद्ग्राह्यशक्तिस्तम्भे चक्षुःप्रकाशासंप्रयोगेऽन्तर्धानम् ॥3.21॥	योगसूत्र
17	अन्वयः-इन्द्रियजय	ग्रहणस्वरूपास्मितान्वयार्थवत्त्वसंयमादिन्द्रियजयः ॥3.47॥	योगसूत्र
18	अन्वयः-भूतजय	स्थूलस्वरूपसूक्ष्मान्वयार्थवत्त्वसंयमाद् भूतजयः ॥3.44॥	योगसूत्र
19	अपरवैराग्यम्	दृष्टानुश्रविकविषयवितृष्णस्य वशीकारसंज्ञा वैराग्यम् ॥1.15॥	योगसूत्र
20	अपरान्तज्ञानम्	सोपक्रमं निरुपक्रमं च कर्म तत्संयमाद् अपरान्तज्ञानम् अरिष्टेभ्यो वा ॥3.22॥	योगसूत्र
21	अपरिग्रहः	अहिंसासत्यास्तेयब्रह्मचर्यापरिग्रहा यमाः ॥2.30॥	योगसूत्र
22	अपरिग्रहफलम्	अपरिग्रहस्थैर्ये जन्मकथंतासंबोधः ॥2.39॥	योगसूत्र
23	अपरिदृष्टा धर्माः	क्रमान्यत्वं परिणामान्यत्वे हेतुः ॥3.15॥	योगसूत्र
24	अपानः	उदानजयाज्जलपङ्ककण्टकादिष्वसङ्ग उत्क्रान्तिश्च ॥3.39॥	योगसूत्र
25	अभिनिवेशः	स्वरसवाही विदुषोऽपि तथा रूढोऽभिनिवेशः ॥2.9॥	योगसूत्र
26	अभ्यासः	अभ्यासवैराग्याभ्यां तन्निरोधः ॥1.12॥, तत्र स्थितौ यत्नोऽभ्यास: ॥1.13॥	योगसूत्र
27	अरिष्टानि	सोपक्रमं निरुपक्रमं च कर्म तत्संयमाद् अपरान्तज्ञानम् अरिष्टेभ्यो वा ॥3.22॥	योगसूत्र
28	अर्थवत्वम् इन्द्रियजयः	ग्रहणस्वरूपास्मितान्वयार्थवत्त्वसंयमाद् इन्द्रियजयः ॥3.47॥	योगसूत्र
29	अर्थवत्वं भूतजयः	स्थूलस्वरूपसूक्ष्मान्वयार्थवत्त्वसंयमाद् भूतजयः ॥3.44॥	योगसूत्र
30	अलब्धभूमिकत्वम्	व्याधिस्त्यानसंशयप्रमादालस्याविरतिभ्रान्तिदर्शनालब्ध	भाष्य

		भूमिकत्वानवस्थितत्वानि चित्तविक्षेपास् तेऽन्तरायाः ॥1.30॥	
31	अलिङ्गं गुणपर्वः	विशेषाविशेषलिङ्गमात्रालिङ्गानि गुणपर्वाणि ॥2.19॥	भाष्य
32	अवस्थापरिणामः	एतेन भूतेन्द्रियेषु धर्मलक्षणावस्थापरिणामा व्याख्याताः ॥3.13॥	योगसूत्र
33	अविद्या	अनित्याशुचिदुःखानात्मसु नित्यशुचिसुखात्मख्यातिरविद्या ॥2.5॥, 2.3, 2.4	योगसूत्र
34	अविरतिः	व्याधिस्त्यानसंशयप्रमादालस्याविरतिभ्रान्तिदर्शनालब्ध भूमिकत्वानवस्थितत्वानि चित्तविक्षेपास्तेऽन्तरायाः ॥1.30॥	योगसूत्र
35	अविशेषाः गुणपर्वः	विशेषाविशेषलिङ्गमात्रालिङ्गानि गुणपर्वाणि ॥2.19॥	योगसूत्र
36	असम्प्रज्ञातः	विरामप्रत्ययाभ्यासपूर्वः संस्कारशेषोऽन्यः ॥1.18॥	योगसूत्र
37	अस्तेयफलम्	अस्तेयप्रतिष्ठायां सर्वरत्नोपस्थानम् ॥2.37॥	योगसूत्र
38	अस्तेयम्	अहिंसासत्यास्तेयब्रह्मचर्यापरिग्रहा यमाः ॥2.30॥	योगसूत्र
39	अस्मिता 1	वितर्कविचारानन्दास्मितारूपानुगमात् संप्रज्ञातः ॥1.17॥	योगसूत्र
40	अस्मिता 2-3	अविद्याऽस्मितारागद्वेषाभिनिवेशाः पञ्च क्लेशाः ॥2.3॥, दृग्दर्शनशक्त्योरेकात्मतेवास्मिता ॥2.6॥	योगसूत्र
41	अस्मिता 4	ग्रहणस्वरूपास्मितान्वयार्थवत्त्वसंयमादिन्द्रियजयः ॥3.47॥	योगसूत्र
42	अहिंसा	अहिंसासत्यास्तेयब्रह्मचर्यापरिग्रहा यमाः ॥2.30॥	भाष्य
43	अहिंसाफलम्	अहिंसाप्रतिष्ठायां तत्संनिधौ वैरत्यागः ॥2.35॥	भाष्य
44	आकाशगमनम्	कायाकाशयोः संबन्धसंयमाल्लघुतूलसमापत्तेश्चाकाशगमनम् ॥3.42॥	भाष्य
45	आगमः	प्रत्यक्षानुमानागमाः प्रमाणानि ॥1.7॥	योगसूत्र
46	आत्मख्यातिः	अनित्याशुचिदुःखानात्मसु नित्यशुचिसुखात्मख्यातिरविद्या ॥2.5॥	भाष्य
47	आत्मदर्शनयोगत्वम्	सत्त्वशुद्धिसौमनस्यैकाग्र्येन्द्रियजयात्मदर्शनयोग्यत्वानि च	योगसूत्र

		॥2.41॥	
48	आत्मभावभावना	विशेषदर्शिन आत्मभावभावनानिवृत्तिः ॥4.25॥	योगसूत्र
49	आदर्श	ततः प्रातिभश्रावणवेदनादर्शास्वादवार्ता जायन्ते ॥3.36॥	योगसूत्र
50	आनन्दः	वितर्कविचारानन्दास्मितारूपानुगमात् संप्रज्ञातः ॥1.17॥	भाष्य
51	आभ्यान्तरशौचसिद्धिः	सत्त्वशुद्धिसौमनस्यैकाग्र्येन्द्रियजयात्मदर्शनयोग्यत्वानि च ॥2.41॥	योगसूत्र
52	आलस्यम्	व्याधिस्त्यानसंशयप्रमादालस्याविरतिभ्रान्तिदर्शनालब्ध भूमिकत्वानवस्थितत्वानि चित्तविक्षेपास्तेऽन्तरायाः ॥1.30॥	योगसूत्र
53	आशयः	क्लेशकर्मविपाकाशयैर्परामृष्टः पुरुषविशेष ईश्वरः ॥1.24॥	योगसूत्र
54	आसनम्	यमनियमासनप्राणायामप्रत्याहारधारणाध्यान ॥2.29॥, स्थिरसुखम् आसनम् ॥2.46॥	योगसूत्र
55	आसनसिद्धिः	प्रयत्नशैथिल्यानन्तसमापत्तिभ्याम् ॥2.47॥	योगसूत्र
56	आसनसिद्धिः फलम्	ततो द्वन्द्वानभिघातः ॥2.48॥	योगसूत्र
57	आस्वादः	ततः प्रातिभश्रावणवेदनादर्शास्वादवार्ता जायन्ते ॥3.36॥	योगसूत्र
58	इन्द्रियजयः	सत्त्वशुद्धिसौमनस्यैकाग्र्येन्द्रियजयात्मदर्शनयोग्यत्वानि च ॥2.41॥	योगसूत्र
59	इन्द्रियजयसिद्धिः	ग्रहणस्वरूपास्मितान्वयार्थवत्त्वसंयमाद् इन्द्रियजयः ॥3.47॥	भाष्य
60	इन्द्रियसिद्धिः	कायेन्द्रियसिद्धिरशुद्धिक्षयात्तपसः ॥2.43॥	योगसूत्र
61	ईशितृत्वम्	ततोऽणिमादिप्रादुर्भावः कायसंपत् तद्धर्मानभिघातश्च ॥3.45॥	भाष्य
62	ईश्वरः	क्लेशकर्मविपाकाशयैरपरामृष्टः पुरुषविशेष ईश्वरः ॥1.24॥	योगसूत्र
63	ईश्वरप्रणिधानफलम्	समाधिसिद्धिरीश्वरप्रणिधानात् ॥2.45॥	योगसूत्र

64	ईश्वरप्रणिधानम् 1	ईश्वरप्रणिधानाद् वा ॥1.23॥, 2.1 ||,	भाष्य
65	ईश्वरप्रणिधानम् 2	तपः स्वाध्यायेश्वरप्रणिधानानि क्रियायोगः ॥2.1॥	योगसूत्र
66	उत्क्रान्तिः	उदानजयाज्जलपङ्ककण्टकादिष्वसङ्ग उत्क्रान्तिश्च ॥3.39॥	भाष्य
67	उदानः	उदानजयाज्जलपङ्ककण्टकादिष्वसङ्ग उत्क्रान्तिश्च ॥3.39॥	योगसूत्र
68	उदानजयः	उदानजयाज्जलपङ्ककण्टकादिष्वसङ्ग उत्क्रान्तिश्च ॥3.39॥	योगसूत्र
69	उदारः	अविद्या क्षेत्रम् उत्तरेषां प्रसुप्ततनुविच्छिन्नोदाराणाम् ॥2.4॥	योगसूत्र
70	उपायप्रत्ययः	श्रद्धावीर्यस्मृतिसमाधिप्रज्ञापूर्वक इतरेषाम् ॥1.20॥	भाष्य
71	उपेक्षाभावना	मैत्रीकरुणामुदितोपेक्षाणां सुखदुःखपुण्यापुण्यविषयाणां भावनातश्चित्तप्रसादनम् ॥1.33॥	भाष्य
72	ऋतम्भरा प्रज्ञा	ऋतंभरा तत्र प्रज्ञा ॥1.48॥	योगसूत्र
73	एकतत्वाभ्यासः	तत्प्रतिषेधार्थम् एकतत्त्वाभ्यासः ॥1.32॥	योगसूत्र
74	एकभविकः कर्माशयः	सति मूले तद्विपाको जात्यायुर्भोगाः ॥2.13॥	योगसूत्र
75	एकाग्रता	सर्वार्थतैकाग्रतयोः क्षयोदयौ चित्तस्य समाधिपरिणामः ॥3.11॥	योगसूत्र
76	एकाग्रता-परिणामः	ततः पुनः शान्तोदितौ तुल्यप्रत्ययौ चित्तस्यैकाग्रतापरिणामः ॥3.12॥	योगसूत्र
77	ऐकाग्र्यम्	सत्त्वशुद्धिसौमनस्यैकाग्र्येन्द्रियजयात्मदर्शनयोग्यत्वानि च ॥2.41॥	योगसूत्र
78	औषधिसिद्धिः	जन्मौषधिमन्त्रतपःसमाधिजाः सिद्धयः ॥4.1॥	भाष्य
79	करुणाबलम्	मैत्र्यादिषु बलानि ॥3.23॥	योगसूत्र
80	करुणाभावना	मैत्रीकरुणामुदितोपेक्षाणां सुखदुःखपुण्यापुण्यविषयाणां भावनातश् चित्तप्रसादनम् ॥1.33॥	योगसूत्र

81	कर्मः	कर्माशुक्लाकृष्णं योगिनस् त्रिविधम् इतरेषाम् ॥4.7॥	योगसूत्र
82	कायधर्मानभिघातः	ततोऽणिमादिप्रादुर्भावः कायसंपत् तद्धर्मानभिघातश्च ॥3.45॥	योगसूत्र
83	कायव्यूहज्ञानम्	नाभिचक्रे कायव्यूहज्ञानम् ॥3.29॥	योगसूत्र
84	कायसम्पत्	ततोऽणिमादिप्रादुर्भावः कायसंपत्तद्धर्मानभिघातश्च ॥3.45॥, रूपलावण्यबलवज्रसंहननत्वानि कायसंपत् ॥3.46॥	योगसूत्र
85	कायसिद्धिः	कायेन्द्रियसिद्धिरशुद्धिक्षयात्तपसः ॥2.43॥	योगसूत्र
86	कायेन्द्रियसिद्धि:	कायेन्द्रियसिद्धिरशुद्धिक्षयात्तपसः ॥2.43॥	योगसूत्र
87	कारणानि	योगाङ्गानुष्ठानाद् अशुद्धिक्षये ज्ञानदीप्तिराविवेकख्यातेः ॥2.28॥	भाष्य
88	कार्यविमुक्तिप्रज्ञा	तस्य सप्तधा प्रान्तभूमिः प्रज्ञा ॥2.27॥	योगसूत्र
89	कैवल्यम् दृशेः1	तदभावात् संयोगाभावो हानं तद्दृशेः कैवल्यम् ॥2.25॥	योगसूत्र
90	कैवल्यम् 2	तद्वैराग्याद् अपि दोषबीजक्षये कैवल्यम् ॥3.50॥, 3.55 ॥4.34॥	योगसूत्र
91	कैवल्यम् 3	सत्त्वपुरुषयोः शुद्धिसाम्ये कैवल्यमिति ॥3.55॥	योगसूत्र
92	कैवल्यम् 4	पुरुषार्थ शून्यानां गुणानां प्रतिप्रसवः कैवल्यं, स्वरूप-प्रतिष्ठा वा चितिशक्तिरिति ॥4.34॥	योगसूत्र
93	क्रियायोगः	तपःस्वाध्यायेश्वरप्रणिधानानि क्रियायोगः ॥2.1॥	योगसूत्र
94	क्लिष्टवृत्तिः	वृत्तयः पञ्चतय्यः क्लिष्टाक्लिष्टाः ॥1.5॥	योगसूत्र
95	क्लेशकर्मनिवृत्तिः	ततः क्लेशकर्मनिवृत्तिः ॥4.30॥	योगसूत्र
96	क्लेशाः	अविद्यास्मितारागद्वेषाभिनिवेशाः क्लेशाः ॥2.3॥	योगसूत्र
97	क्षणस्तत्क्रमश्च	क्षणतत्क्रमयोः संयमाद् विवेकजं ज्ञानम् ॥3.52॥	योगसूत्र
98	क्षिप्तम्	अथ योगानुशासनम् ॥1.1॥, योगश्चित्तवृत्तिनिरोधः ॥1.2॥	योगसूत्र
99	क्षुत्पिपासानिवृत्तिः	कण्ठकूपे क्षुत्पिपासानिवृत्तिः ॥3.30॥	योगसूत्र
100	गुणपर्वः	विशेषाविशेषलिङ्गमात्रालिङ्गानि गुणपर्वाणि ॥2.19॥	भाष्य

101	गुणवृत्तिविरोधः	परिणामतापसंस्कारदुःखैर् गुणवृत्तिविरोधाच् च दुःखम् एव सर्वं विवेकिनः ॥2.15॥	भाष्य
102	गुणाः	प्रकाशक्रियास्थितिशीलं भूतेन्द्रियात्मकं भोगापवर्गार्थं दृश्यम् ॥2.18॥	भाष्य
103	गुणात्मा	ते व्यक्तसूक्ष्मा गुणात्मानः ॥4.13॥	भाष्य
104	ग्रहणं रूपम्	ग्रहणस्वरूपास्मितान्वयार्थवत्त्वसंयमाद् इन्द्रियजयः ॥3.47॥	योगसूत्र
105	ग्रहण-समापत्तिः	क्षीणवृत्तेरभिजातस्येव मणेर्ग्रहीतृग्रहणग्राह्येषु तत्स्थतदञ्जनता समापत्तिः ॥1.41॥	योगसूत्र
106	ग्रहीतृ-समापत्तिः	क्षीणवृत्तेरभिजातस्येव मणेर्ग्रहीतृग्रहणग्राह्येषु तत्स्थतदञ्जनता समापत्तिः ॥1.41॥	योगसूत्र
107	ग्राह्य-समापत्तिः	क्षीणवृत्तेरभिजातस्येव मणेर्ग्रहीतृग्रहणग्राह्येषु तत्स्थतदञ्जनता समापत्तिः ॥1.41॥	योगसूत्र
108	चितिशक्तिः	योगश्चित्तवृत्तिनिरोधः ॥1.2॥	योगसूत्र
109	चित्तं परार्थम्	तदसंख्येयवासनाभिश्चित्रमपि परार्थं संहत्यकारित्वात् ॥4.24॥	योगसूत्र
110	चित्तं सर्वार्थम्	द्रष्टृदृश्योपरक्तं चित्तं सर्वार्थम् ॥4.23॥	भाष्य
111	चित्तधर्माः	क्रमान्यत्वं परिणामान्यत्वे हेतुः ॥3.15॥	योगसूत्र
112	चित्तप्रसादनम्	मैत्रीकरुणामुदितोपेक्षाणां सुखदुःखपुण्यापुण्यविषयाणां भावनातश् चित्तप्रसादनम् ॥1.33॥	योगसूत्र
113	चित्तभूमयः	अथ योगानुशासनम् ॥1.1॥, 1.2 ||	योगसूत्र
114	चित्तम्	योगश्चित्तवृत्तिनिरोधः ॥1.2॥	योगसूत्र
115	चित्तम् त्रिगुणम्	योगश्चित्तवृत्तिनिरोधः ॥1.2॥	योगसूत्र
116	चित्तविक्षेपाः	व्याधिस्त्यानसंशयप्रमादालस्याविरतिभ्रान्तिदर्शनालब्ध भूमिकत्वानवस्थितत्वानि चित्तविक्षेपास्तेऽन्तरायाः ॥1.30॥	योगसूत्र

117	चित्तविमुक्तिप्रज्ञाः	तस्य सप्तधा प्रान्तभूमिः प्रज्ञा ॥2.27॥	योगसूत्र
118	चित्तसंवित्	हृदये चित्तसंवित् ॥3.34॥	योगसूत्र
119	जन्मजासिद्धिः	जन्मौषधिमन्त्रतपःसमाधिजाः सिद्धयः ॥4.1॥	योगसूत्र
120	ज्ञानदीप्तिः	योगाङ्गानुष्ठानाद् अशुद्धिक्षये ज्ञानदीप्तिराविवेकख्यातेः ॥2.28॥	योगसूत्र
121	ज्योतिष्मतीप्रवृत्तिः	विशोका वा ज्योतिष्मती ॥1.36॥	योगसूत्र
122	ज्योतिष्मतीप्रवृत्तिफलम्	प्रवृत्त्यालोकन्यासात् सूक्ष्मव्यवहितविप्रकृष्टज्ञानम् ॥3.25॥	भाष्य
123	तनुक्लेशः	अविद्या क्षेत्रम् उत्तरेषां प्रसुप्ततनुविच्छिन्नोदाराणाम् ॥2.4॥	भाष्य
124	तपः 1	तपःस्वाध्यायेश्वरप्रणिधानानि क्रियायोगः ॥2.1॥, 2.43	योगसूत्र
125	तपः 2	शौचसन्तोषतपः स्वाध्यायेश्वरप्रणिधानानि नियमाः ॥2.32॥	योगसूत्र
126	तपोजासिद्धिः	जन्मौषधिमन्त्रतपःसमाधिजाः सिद्धयः ॥4.1॥	भाष्य
127	तापदुःखता	परिणामतापसंस्कारदुःखैर्गुणवृत्तिविरोधाच्च दुःखमेव सर्वं विवेकिनः ॥2.15॥	योगसूत्र
128	तारकम्	तारकं सर्वविषयं सर्वथाविषयम् अक्रमं चेति विवेकजं ज्ञानम् ॥3.54॥	योगसूत्र
129	तारागतिज्ञानम्	ध्रुवे तद्गतिज्ञानम् ॥3.28॥	योगसूत्र
130	ताराव्यूहज्ञानम्	चन्द्रे ताराव्यूहज्ञानम् ॥3.27॥	योगसूत्र
131	दिव्यश्रोत्रम्	श्रोत्राकाशयोः संबन्धसंयमाद् दिव्यं श्रोत्रम् ॥3.41॥	योगसूत्र
132	दुःखम्	दुःखदौर्मनस्याङ्गमेजयत्वश्वासप्रश्वासा विक्षेपसहभुवः ॥1.31॥	योगसूत्र
133	दृश्यम्	प्रकाशक्रियास्थितिशीलं भूतेन्द्रियात्मकं भोगापवर्गार्थं दृश्यम् ॥2.18॥	योगसूत्र
134	दृष्टजन्मवेदनीयः कर्माशयः	क्लेशमूलः कर्माशयो दृष्टादृष्टजन्मवेदनीयः ॥2.12॥	योगसूत्र

135	दौर्मनस्यम्	दुःखदौर्मनस्याङ्गमेजयत्वश्वासप्रश्वासा विक्षेपसहभुवः ॥1.31॥	योगसूत्र
136	द्रव्यम्	स्थूलस्वरूपसूक्ष्मान्वयार्थवत्त्वसंयमाद् भूतजयः ॥3.44॥	योगसूत्र
137	द्रष्टा	द्रष्टृदृश्ययोः संयोगो हेयहेतुः ॥2.17॥, द्रष्टा दृशिमात्रः शुद्धोऽपि प्रत्ययानुपश्यः ॥2.20॥	योगसूत्र
138	द्वेषः	दुःखानुशयी द्वेषः ॥2.8॥	योगसूत्र
139	धर्म:	शान्तोदिताव्यपदेश्यधर्मानुपाती धर्मी ॥3.14॥	योगसूत्र
140	धर्मपरिणामः	एतेन भूतेन्द्रियेषु धर्मलक्षणावस्थापरिणामा व्याख्याताः ॥3.13॥	योगसूत्र
141	धर्मपरिणामक्रमः	क्रमान्यत्वं परिणामान्यत्वे हेतुः ॥3.15॥	भाष्य
142	धर्ममेघः समाधिः	प्रसंख्यानेऽप्यकुसीदस्य सर्वथा विवेकख्यातेर्धर्ममेघः समाधिः ॥4.29॥	योगसूत्र
143	धर्मिधर्माः	शान्तोदिताव्यपदेश्यधर्मानुपाती धर्मी ॥3.14॥	योगसूत्र
144	धर्मी	शान्तोदिताव्यपदेश्यधर्मानुपाती धर्मी ॥3.14॥	योगसूत्र
145	धारणा	देशबन्धश्चित्तस्य धारणा ॥3.1॥	योगसूत्र
146	ध्यानजचित्तम्	तत्र ध्यानजमनाशयम् ॥4.6॥	योगसूत्र
147	ध्यानम्	तत्र प्रत्ययैकतानता ध्यानम् ॥3.2॥	योगसूत्र
148	नित्यख्यातिः	अनित्याशुचिदुःखानात्मसु नित्यशुचिसुखात्मख्यातिरविद्या ॥2.5॥	योगसूत्र
149	निद्रा	अभावप्रत्ययालम्बना वृत्तिर्निद्रा ॥1.10॥	योगसूत्र
150	नियमाः	शौचसंतोषतपःस्वाध्यायेश्वरप्रणिधानानि नियमाः ॥2.32॥	योगसूत्र
151	निरुद्धम्	अथ योगानुशासनम् ॥1.1॥	योगसूत्र
152	निरोधपरिणामः	व्युत्थाननिरोधसंस्कारयोरभिभवप्रादुर्भावौ निरोधक्षणचित्तान्वयो निरोधपरिणामः ॥3.9॥	योगसूत्र
153	निर्बीजसमाधिः	तस्यापि निरोधे सर्वनिरोधान्निर्बीजः समाधिः ॥1.51॥	योगसूत्र
154	निर्विचारासमापत्तिः	एतयैव सविचारा निर्विचारा च सूक्ष्मविषया व्याख्याता	योगसूत्र

		॥1.44॥	
155	निर्वितर्का समापत्तिः	स्मृतिपरिशुद्धौ स्वरूपशून्येवार्थमात्रनिर्भासा निर्वितर्का ॥1.43॥	योगसूत्र
156	परचितज्ञानम्	प्रत्ययस्य परचित्तज्ञानम् ॥3.19॥	योगसूत्र
157	परवैराग्यम्	तत्परं पुरुषख्यातेर्गुणवैतृष्ण्यम् ॥1.16॥	योगसूत्र
158	परशरीरावेशः	बन्धकारणशैथिल्यात् प्रचारसंवेदनाच्च चित्तस्य परशरीरावेशः ॥3.38॥	योगसूत्र
159	पुरुषज्ञानम्	सत्त्वपुरुषयोरत्यन्तासंकीर्णयोः प्रत्ययाविशेषो भोगः परार्थात् स्वार्थसंयमात् पुरुषज्ञानम् ॥3.35॥	योगसूत्र
160	पूर्वजातिज्ञानम्	संस्कारसाक्षात्करणात् पूर्वजातिज्ञानम् ॥3.18॥	योगसूत्र
161	प्रकृतिलयः	भवप्रत्ययो विदेहप्रकृतिलयानाम् ॥1.19॥	योगसूत्र
162	प्रकृत्यापूरः	जात्यन्तरपरिणामः प्रकृत्यापूरात् ॥4.2॥	योगसूत्र
163	प्रच्छर्दनम्	प्रच्छर्दनविधारणाभ्यां वा प्राणस्य ॥1.34॥	योगसूत्र
164	प्रज्ञा1	श्रद्धावीर्यस्मृतिसमाधिप्रज्ञापूर्वक इतरेषाम् ॥1.20॥	योगसूत्र
165	प्रणवः	तस्य वाचकः प्रणवः ॥1.27॥	योगसूत्र
166	प्रत्यक्षम्	प्रत्यक्षानुमानागमाः प्रमाणानि ॥1.7॥	योगसूत्र
167	प्रत्ययः	प्रत्ययस्य परचित्तज्ञानम् ॥3.19॥	योगसूत्र
168	प्रत्याहार:	स्वविषयासंप्रयोगे चित्तस्वरूपानुकार इवेन्द्रियाणां प्रत्याहारः ॥2.54॥	योगसूत्र
169	प्रधानजयः	ततो मनोजवित्वं विकरणभावः प्रधानजयश्च ॥3.48॥	योगसूत्र
170	प्रमाणम्	प्रत्यक्षानुमानागमाः प्रमाणानि ॥1.7॥	योगसूत्र
171	प्रमादः	व्याधिस्त्यानसंशयप्रमादालस्याविरतिभ्रान्तिदर्शनालब्ध भूमिकत्वानवस्थितत्वानि चित्तविक्षेपास्तेऽन्तरायाः ॥1.30॥	योगसूत्र
172	प्रवृत्यालोकन्यासः सिद्धिः	प्रवृत्त्यालोकन्यासात् सूक्ष्मव्यवहितविप्रकृष्टज्ञानम् ॥3.25॥	योगसूत्र

173	प्रशान्तवाहिता	तस्य प्रशान्तवाहिता संस्कारात् ॥3.10॥	योगसूत्र
174	प्रश्वासः	दुःखदौर्मनस्याङ्गमेजयत्वश्वासप्रश्वासा विक्षेपसहभुवः ॥1.31॥	योगसूत्र
175	प्रसुप्तक्लेशः	अविद्या क्षेत्रम् उत्तरेषां प्रसुप्ततनुविच्छिन्नोदाराणाम् ॥2.4॥	योगसूत्र
176	प्राकाम्यम्	ततोऽणिमादिप्रादुर्भावः कायसंपत् तद्धर्मानभिघातश्च ॥3.45॥	भाष्य
177	प्राणः	उदानजयाज्जलपङ्ककण्टकादिष्वसङ्ग उत्क्रान्तिश्च ॥3.39॥	भाष्य
178	प्राणायाम:	तस्मिन् सति श्वासप्रश्वासयोर्गतिविच्छेदः प्राणायामः ॥2.49॥	योगसूत्र
179	प्राणायामफलम्	ततः क्षीयते प्रकाशावरणम् ॥2.52॥	योगसूत्र
180	प्राणायामभेदाः	बाह्याभ्यन्तरस्तम्भवृत्तिर्देशकालसंख्याभिः परिदृष्टो दीर्घसूक्ष्मः ॥2.50॥	योगसूत्र
181	प्रातिभज्ञानम्	प्रातिभाद्वा सर्वम् ॥3.33॥, ततः प्रातिभश्रावणवेदनादर्शास्वादवार्ता जायन्ते ॥3.36॥	योगसूत्र
182	प्रान्तभूमिप्रज्ञा	तस्य सप्तधा प्रान्तभूमिः प्रज्ञा ॥2.27॥	योगसूत्र
183	प्राप्तिः	ततोऽणिमादिप्रादुर्भावः कायसंपत् तद्धर्मानभिघातश्च ॥3.45॥	योगसूत्र
184	बन्धनानि	क्लेशकर्मविपाकाशयैरपरामृष्टः पुरुषविशेष ईश्वरः ॥1.24॥	भाष्य
185	बहिरङ्गम्	तद् अपि बहिरङ्गं निर्बीजस्य ॥3.8॥	योगसूत्र
186	बाह्यवृत्तिप्राणायाम्	बाह्याभ्यन्तरस्तम्भवृत्तिर्देशकालसंख्याभिः परिदृष्टो दीर्घसूक्ष्मः ॥2.50॥	योगसूत्र
187	ब्रह्मचर्यम्	ब्रह्मचर्यप्रतिष्ठायां वीर्यलाभः ॥2.38॥	योगसूत्र
188	भवप्रत्ययः	भवप्रत्ययो विदेहप्रकृतिलयानाम् ॥1.19॥	योगसूत्र
189	भुवनज्ञानम्	भुवनज्ञानं सूर्ये संयमात् ॥3.26॥	योगसूत्र

190	भूतजय:	स्थूलस्वरूपसूक्ष्मान्वयार्थवत्त्वसंयमाद् भूतजयः ॥3.44॥	योगसूत्र
191	भ्रान्तिदर्शनम्	व्याधिस्त्यानसंशयप्रमादालस्याविरतिभ्रान्तिदर्शनालब्ध भूमिकत्वानवस्थितत्वानि चित्तविक्षेपास्तेऽन्तरायाः ॥1.30॥	योगसूत्र
192	मधुप्रतीका सिद्धिः	ततो मनोजवित्वं विकरणभावः प्रधानजयश्च ॥3.48॥	भाष्य
193	मधुमतीसिद्धिः	तारकं सर्वविषयं सर्वथाविषयम् अक्रमं चेति विवेकजं ज्ञानम् ॥3.54॥	भाष्य
194	मनोजवित्वम्	ततो मनोजवित्वं विकरणभावः प्रधानजयश्च ॥3.48॥	योगसूत्र
195	मन्त्रजासिद्धिः	जन्मौषधिमन्त्रतपःसमाधिजाः सिद्धयः ॥4.1॥	योगसूत्र
196	महाविदेहाधारणा	बहिरकल्पिता वृत्तिर्महाविदेहा, ततः प्रकाशावरणक्षयः ॥3.43॥	योगसूत्र
197	महाव्रतम्	जातिदेशकालसमयानवच्छिन्नाः सार्वभौमा महाव्रतम् ॥2.31॥	योगसूत्र
198	महिमा	ततोऽणिमादिप्रादुर्भावः कायसंपत्तद्धर्मानभिघातश्च ॥3.45॥	योगसूत्र
199	मुदिताभावना	मैत्रीकरुणामुदितोपेक्षाणां सुखदुःखपुण्यापुण्यविषयानां भावनातश्चित्तप्रसादनम् ॥1.33॥	योगसूत्र
200	मुदिताबलम्	मैत्र्यादिषु बलानि ॥3.23॥	योगसूत्र
201	मूढम्	अथ योगानुशासनम् ॥1.1॥, योगश्चत्तवृत्तिनिरोधः ॥1.2॥	योगसूत्र
202	मैत्री	मैत्रीकरुणामुदितोपेक्षाणां सुखदुःखपुण्यापुण्यविषयाणां भावनातश् चित्तप्रसादनम् ॥1.33॥	योगसूत्र
203	मैत्रीबलम्	मैत्र्यादिषु बलानि ॥3.23॥	भाष्य
204	यत्रकामावसायित्वम्	ततोऽणिमादिप्रादुर्भावः कायसंपत् तद्धर्मानभिघातश्च ॥3.45॥	योगसूत्र
205	यमा:	अहिंसासत्यास्तेयब्रह्मचर्यापरिग्रहा यमाः ॥2.30॥	योगसूत्र
206	योगः	अथ योगानुशासनम् ॥1.1॥, योगश्चित्तवृत्तिनिरोधः ॥1.2॥	योगसूत्र

207	योगिनः	स्थान्युपनिमन्त्रणे सङ्गस्मयाकरणं पुनरनिष्टप्रसङ्गात् ॥3.51॥	भाष्य
208	रजसः	प्रकाशक्रियास्थितिशीलं भूतेन्द्रियात्मकं भोगापवर्गार्थं दृश्यम् ॥2.18॥	योगसूत्र
209	राग:	सुखानुशयी रागः ॥2.7॥	योगसूत्र
210	लघिमा	ततोऽणिमादिप्रादुर्भावः कायसंपत्तद्धर्मानभिघातश्च ॥3.45॥	योगसूत्र
211	वशित्वम्	ततोऽणिमादिप्रादुर्भावः कायसंपत् तद्धर्मानभिघातश्च ॥3.45॥	भाष्य
212	वशीकारः	परमाणुपरममहत्त्वान्तोऽस्य वशीकारः ॥1.40॥	योगसूत्र
213	वार्ता	ततः प्रातिभश्रावणवेदनादर्शास्वादवार्ता जायन्ते ॥3.36॥	योगसूत्र
214	विकरणभावः	ततो मनोजवित्वं विकरणभावः प्रधानजयश्च ॥3.48॥	योगसूत्र
215	विकल्पः	शब्दज्ञानानुपाती वस्तुशून्यो विकल्पः ॥1.9॥	योगसूत्र
216	विक्षिप्तम्	अथ योगानुशासनम् ॥1.1॥, योगश्चित्तवृत्तिनिरोधः ॥1.2॥	योगसूत्र
217	विघ्नाः	व्याधिस्त्यानसंशयप्रमादालस्याविरतिभ्रान्तिदर्शनालब्ध भूमिकत्वानवस्थितत्वानि चित्तविक्षेपास्तेऽन्तरायाः ॥1.30॥, दुःखदौर्मनस्याङ्गमेजयत्वश्वासप्रश्वासा विक्षेपसहभुवः ॥1.31॥	योगसूत्र
218	वितर्काः	वितर्का हिंसादयः कृतकारितानुमोदिता लोभक्रोधमोहपूर्वका मृदुमध्याधिमात्रा दुःखाज्ञानानन्तफला इति प्रतिपक्षभावनम् ॥2.34॥	योगसूत्र
219	विदेहाः	भवप्रत्ययो विदेहप्रकृतिलयानाम् ॥1.19॥	योगसूत्र
220	विधारणम्	प्रच्छर्दनविधारणाभ्यां वा प्राणस्य ॥1.34॥	योगसूत्र
221	विपर्ययः	विपर्ययो मिथ्याज्ञानम् अतद्रूपप्रतिष्ठम् ॥1.8॥	योगसूत्र
222	विरामप्रत्ययः	विरामप्रत्ययाभ्यासपूर्वः संस्कारशेषोऽन्यः ॥1.18॥	योगसूत्र
223	विवेकज्ञानम् 1	क्षणतत्क्रमयोः संयमाद् विवेकजं ज्ञानम् ॥3.52॥,	योगसूत्र

		सत्त्वपुरुषान्यताख्यातिमात्रस्य सर्वभावाधिष्ठातृत्वं सर्वज्ञातृत्वं च ॥3.49॥	
224	विवेकज्ञानम् 2	तारकं सर्वविषयं सर्वथाविषयम् अक्रमं चेति विवेकजं ज्ञानम् ॥3.54॥	योगसूत्र
225	विशेष-गुणपर्वः	विशेषाविशेषलिङ्गमात्रालिङ्गानि गुणपर्वाणि ॥2.19॥	योगसूत्र
226	विशोका	विशोका वा ज्योतिष्मती ॥1.36॥	योगसूत्र
227	विशोकासिद्धिः	सत्त्वपुरुषान्यताख्यातिमात्रस्य सर्वभावाधिष्ठातृत्वं सर्वज्ञातृत्वं च ॥3.49॥	भाष्य
228	विषयवतीप्रवृत्तिः	विषयवती वा प्रवृत्तिरुत्पन्ना मनसः स्थितिनिबन्धनी ॥1.35॥	योगसूत्र
229	वीतरागविषयं चित्तम्	वीतरागविषयं वा चित्तम् ॥1.37॥	योगसूत्र
230	वीर्यम्	श्रद्धावीर्यस्मृतिसमाधिप्रज्ञापूर्वक इतरेषाम् ॥1.20॥	योगसूत्र
231	वीर्यलाभः	ब्रह्मचर्यप्रतिष्ठायां वीर्यलाभः ॥2.38॥	योगसूत्र
232	वृत्तयः	वृत्तयः पञ्चतय्यः क्लिष्टाक्लिष्टाः ॥1.5॥, प्रमाणविपर्ययविकल्पनिद्रास्मृतयः ॥1.6॥	योगसूत्र
233	वेदना	ततः प्रातिभश्रावणवेदनादर्शास्वादवार्ता जायन्ते ॥3.36॥	योगसूत्र
234	वैशारद्यम्	निर्विचारवैशारद्येऽध्यात्मप्रसादः ॥1.47॥	योगसूत्र
235	व्याधिः	व्याधिस्त्यानसंशयप्रमादालस्याविरतिभ्रान्तिदर्शनालब्ध भूमिकत्वानवस्थितत्वानि चित्तविक्षेपास्तेऽन्तरायाः ॥1.30॥	योगसूत्र
236	व्यानः	उदानजयाज् जलपङ्ककण्टकादिष्वसङ्ग उत्क्रान्तिश्च ॥3.39॥	भाष्य
237	शुचिख्यातिः	अनित्याशुचिदुःखानात्मसु नित्यशुचिसुखात्मख्यातिरविद्या ॥2.5॥	योगसूत्र
238	शौचफलम्	शौचात् स्वाङ्गजुगुप्सा परैरसंसर्गः ॥2.40॥	योगसूत्र
239	शौचम्	शौचात् स्वाङ्गजुगुप्सा परैरसंसर्गः ॥2.40॥,	योगसूत्र

240	श्रद्धा	श्रद्धावीर्यस्मृतिसमाधिप्रज्ञापूर्वक इतरेषाम् ॥1.20॥	योगसूत्र
241	श्रावणम्	ततः प्रातिभश्रावणवेदनादर्शास्वादवार्ता जायन्ते ॥3.36॥	योगसूत्र
242	श्वासः	दुःखदौर्मनस्याङ्गमेजयत्वश्वासप्रश्वासा विक्षेपसहभुवः ॥1.31॥	योगसूत्र
243	संयमः	त्रयम् एकत्र संयमः ॥3.4॥	योगसूत्र
244	संयमफलम्	तज्जयात्प्रज्ञालोकः ॥3.5॥	योगसूत्र
245	संयोगः	स्वस्वामिशक्त्योः स्वरूपोपलब्धिहेतुः संयोगः ॥2.23॥	योगसूत्र
246	संशयम्	व्याधिस्त्यानसंशयप्रमादालस्याविरतिभ्रान्तिदर्शनालब्ध भूमिकत्वानवस्थितत्वानि चित्तविक्षेपास्तेऽन्तरायाः ॥1.30॥	योगसूत्र
247	संस्कारदुःखता	परिणामतापसंस्कारदुःखैर्गुणवृत्तिविरोधाच्च दुःखमेव सर्वं विवेकिनः ॥2.15॥	योगसूत्र
248	सत्त्वशुद्धिः	सत्त्वशुद्धिसौमनस्यैकाग्र्येन्द्रियजयात्मदर्शनयोग्यत्वानि च ॥2.41॥	योगसूत्र
249	सत्यफलम्	सत्यप्रतिष्ठायां क्रियाफलाश्रयत्वम् ॥2.36॥	योगसूत्र
250	सत्यम्	अहिंसासत्यास्तेयब्रह्मचर्यापरिग्रहा यमाः ॥2.30॥	योगसूत्र
251	सन्तोषः	शौचसन्तोषतपःस्वाध्यायेश्वरप्रणिधानानि नियमाः ॥2.32॥	योगसूत्र
252	सन्तोषफलम्	संतोषादनुत्तमः सुखलाभः ॥2.42॥	योगसूत्र
253	सबीजसमाधिः	ता एव सबीजः समाधिः ॥1.46॥	योगसूत्र
254	उपायरूपसमाधिः	श्रद्धावीर्यस्मृतिसमाधिप्रज्ञापूर्वक इतरेषाम् ॥1.20॥	योगसूत्र
255	समाधिः	तदेवार्थमात्रनिर्भासं स्वरूपशून्यमिव समाधिः ॥3.3॥	योगसूत्र
256	समाधिपरिणामः	सर्वार्थतैकाग्रतयोः क्षयोदयौ चित्तस्य समाधिपरिणामः ॥3.11॥	योगसूत्र
257	समाधिसिद्धिः	समाधिसिद्धिरीश्वरप्रणिधानात् ॥2.45॥	योगसूत्र
258	समानः	उदानजयाज् जलपङ्ककण्टकादिष्वसङ्ग उत्क्रान्तिश्च ॥3.39॥	योगसूत्र

259	समानजयः	समानजयाज् ज्वलनम् ॥3.40॥	भाष्य
260	समापत्तिः	क्षीणवृत्तेभिजातस्येव मणेर्ग्रहीतृग्रहणग्राह्येषु तत्स्थतदञ्जनता समापत्तिः ॥1.41॥	योगसूत्र
261	सम्प्रज्ञातसमाधिः	ता एव सबीजः समाधिः ॥1.46॥	योगसूत्र
262	सर्वज्ञातृत्वम्	सत्त्वपुरुषान्यताख्यातिमात्रस्य सर्वभावाधिष्ठातृत्वं सर्वज्ञातृत्वं च ॥3.49॥	योगसूत्र
263	सर्वथाविषयम्-विवेकजज्ञानम्	तारकं सर्वविषयं सर्वथाविषयम् अक्रमं चेति विवेकजं ज्ञानम् ॥3.54॥	योगसूत्र
264	सर्वभावाधिष्ठातृत्वम्	सत्त्वपुरुषान्यताख्यातिमात्रस्य सर्वभावाधिष्ठातृत्वं सर्वज्ञातृत्वञ्च ॥3.49॥	योगसूत्र
265	सर्वरत्नोपस्थानम्	अस्तेयप्रतिष्ठायां सर्वरत्नोपस्थानम् ॥2.37॥	योगसूत्र
266	सर्वविषयम्-विवेकजज्ञानम्	तारकं सर्वविषयं सर्वथाविषयम् अक्रमं चेति विवेकजं ज्ञानम् ॥3.54॥	योगसूत्र
267	सर्वार्थता	सर्वार्थतैकाग्रतयोः क्षयोदयौ चित्तस्य समाधिपरिणामः ॥3.11॥	योगसूत्र
268	सविचारा समापत्तिः	एतयैव सविचारा निर्विचारा च सूक्ष्मविषया व्याख्याता ॥1.44॥	योगसूत्र
269	सवितर्का समापत्तिः	तत्र शब्दार्थज्ञानविकल्पैः संकीर्णा सवितर्का समापत्तिः ॥1.42॥	योगसूत्र
270	सिद्धदर्शनम्	मूर्धज्योतिषि सिद्धदर्शनम् ॥3.32॥	योगसूत्र
271	सुखख्यातिः अविद्या	अनित्याशुचिदुःखानात्मसु नित्यशुचिसुखात्मख्यातिरविद्या ॥2.5॥	योगसूत्र
272	सूक्ष्मविषयत्वम्	सूक्ष्मविषयत्वं चालिङ्गपर्यवसानम् ॥1.45॥	योगसूत्र
273	सौमनस्यम्	सत्त्वशुद्धिसौमनस्यैकाग्र्येन्द्रियजयात्मदर्शनयोग्यत्वानि च ॥2.41॥	योगसूत्र
274	स्त्यानम्	व्याधिस्त्यानसंशयप्रमादालस्याविरतिभ्रान्तिदर्शनालब्ध भूमिकत्वानवस्थितत्वानि चित्तविक्षेपास्तेऽन्तरायाः	योगसूत्र

		॥1.30॥	
275	स्थैर्यम्	कूर्मनाड्यां स्थैर्यम् ॥3.31॥	योगसूत्र
276	स्मृतिः 2	श्रद्धावीर्यस्मृतिसमाधिप्रज्ञापूर्वक इतरेषाम् ॥1.20॥	योगसूत्र
277	स्मृतिवृत्तिः	अनुभूतविषयासंप्रमोषः स्मृतिः ॥1.11॥	भाष्य
278	स्वाध्याय:	तपःस्वाध्यायेश्वरप्रणिधानानि क्रियायोगः ॥2.1॥, स्वाध्यायादिष्टदेवतासंप्रयोगः ॥2.44॥	भाष्य
279	स्वाध्यायफलम्	स्वाध्यायादिष्टदेवतासंप्रयोगः ॥2.44॥	योगसूत्र
280	हस्तिबलादीनि सिद्धिः	बलेषु हस्तिबलादीनि ॥3.24॥	भाष्य
281	हानम्	तदभावात् संयोगाभावो हानं तद्दृशेः कैवल्यम् ॥2.25॥	योगसूत्र
282	हानोपायः	विवेकख्यातिरविप्लवा हानोपायः ॥2.26॥	योगसूत्र
283	हेतुः	क्रमान्यत्वं परिणामान्यत्वे हेतुः ॥3.15॥	योगसूत्र
284	हेयम्	हेयं दुःखमनागतम् ॥2.16॥	भाष्य
285	हेयहेतुः	द्रष्टृदृश्ययोः संयोगो हेयहेतुः ॥2.17॥	योगसूत्र

तृतीय परिशिष्ट

साङ्ख्यसूत्र के सम्पूर्ण सूत्र

प्रथमोऽध्यायः (विषयाध्यायः)		
1	अथ त्रिविधदुःखात्यन्तनिवृत्तिरत्यन्तपुरुषार्थः	1.1
2	न दृष्टात्तत्सिद्धिर्निवृत्तेऽप्यनुवृत्तिदर्शनात्	1.2
3	प्रात्यहिकक्षुत्प्रतीकारवत्तत्प्रतीकारचेष्टनात् पुरुषार्थत्वम्	1.3
4	सर्वासम्भवात् सम्भवेऽपि सत्तासम्भवाद्धेयः प्रमाणकुशलैः	1.4
5	उत्कर्षादपि मोक्षस्य सर्वोत्कर्षश्रुतेः	1.5
6	अविशेषश्चोभयोः	1.6
7	न स्वभावतो बद्धस्य मोक्षसाधनोपदेशविधिः	1.7
8	स्वभावस्याऽनपायित्वादननुष्ठानलक्षणमप्रामाण्यम्	1.8
9	नाशक्योपदेशविधिरुपदिष्टेऽप्यनुपदेशः	1.9
10	शुक्लपटवद् बीजवच्चेत्	1.10
11	शक्त्युद्भवानुद्भवाभ्यां नाशक्योपदेशः	1.11
12	न कालयोगतो व्यापिनो नित्यस्य सर्वसम्बन्धात्	1.12
13	न देशयोगतोऽप्यस्मात्	1.13
14	नावस्थातो देहधर्मत्वात्तस्याः	1.14
15	असङ्गोऽयं पुरुष इति	1.15
16	न कर्मणाऽन्यधर्मत्वादतिप्रसक्तेश्च	1.16
17	विचित्रभोगानुपपत्तिरन्यधर्मत्वे	1.17
18	प्रकृतिनिबन्धनाच्चेन्न तस्या अपि पारतन्त्र्यम्	1.18
19	न नित्यशुद्धबुद्धमुक्तस्वभावस्य तद्योगस्तद्योगादृते	1.19
20	नाविद्यातोऽप्यवस्तुना बन्धायोगात्	1.20
21	वस्तुत्वे सिद्धान्तहानिः	1.21

22	विजातीयद्वैतापत्तिश्च	1.22
23	विरुद्धोभयरूपा चेत्	1.23
24	न तादृक्पदार्थाप्रतीतेः	1.24
25	न वयं षट्पदार्थवादिनो वैशेषिकादिवत्	1.25
26	अनित्यतत्वेऽपि नायौक्तिकस्य संग्रहोऽन्यथा बालोन्मत्तादिसमत्वम्	1.26
27	नानादिविषयोपरागनिमित्तकोऽप्यस्य	1.27
28	न बाह्याभ्यन्तरयोरुपरज्योपरञ्जकभावोऽपि देशव्यवधानात् स्रुघ्नस्थपाटलिपुत्रस्थयोरिव	1.28
29	द्वयोरेकदेशलब्धोपरागान्न व्यवस्था	1.29
30	अदृष्टवशाच्चेत्	1.30
31	न द्वयोरेककालाऽयोगादुपकार्योपकारकभावः	1.31
32	पुत्रकर्मवदिति चेत्	1.32
33	नास्ति हि तत्र स्थिर एकात्मा यो गर्भाधानादिना संस्क्रियते	1.33
34	स्थिरकार्यासिद्धेः क्षणिकत्वम्	1.34
35	न प्रत्यभिज्ञाबाधात्	1.35
36	श्रुतिन्यायविरोधाच्च	1.36
37	दृष्टान्तासिद्धेश्च	1.37
38	युगपज्जायमानयोर्न कार्यकारणभावः	1.38
39	पूर्वापाये उत्तरायोगात्	1.39
40	तद्भावे तदयोगादुभयव्यभिचारादपि न	1.40
41	पूर्वभावमात्रे न नियमः	1.41
42	न विज्ञानमात्रं बाह्यप्रतीतेः	1.42
43	तदभावे तदभावाच्छून्यं तर्हि	1.43
44	शून्यं तत्त्वं भावो विनश्यति वस्तुधर्मत्वाद्विनाशस्य	1.44
45	अपवादमात्रमबुद्धानाम्	1.45
46	उभयपक्षसमानक्षेमत्वादयमपि	1.46

47	अपुरुषार्थत्वमुभयथा	1.47
48	न गतिविशेषात्	1.48
49	निष्क्रियस्य तदसम्भवात्	1.49
50	मूर्तत्वाद् घटादिवत् समानधर्मापत्तावपसिद्धान्तः	1.50
51	गतिश्रुतिरप्युपाधियोगादाकाशवत्	1.51
52	न कर्मणाऽप्यतद्धर्मत्वात्	1.52
53	अतिप्रसक्तिरन्यधर्मत्वे	1.53
54	निर्गुणादिश्रुतिविरोधश्चेति	1.54
55	तद्योगोऽप्यविवेकान्न समानत्वम्	1.55
56	नियतकारणात्तदुच्छितिर्ध्वान्तवत्	1.56
57	प्रधानाविवेकादन्याविवेकस्य तद्धाने हानम्	1.57
58	वाङ्मात्रं न तु तत्त्वञ्चित्तस्थितेः	1.58
59	युक्तितोऽपि न बाध्यते दिङ्मूढवदपरोक्षादृते	1.59
60	अचाक्षुषाणामनुमानेन बोधो धूमादिभिरिव वह्नेः	1.60
61	सत्वरजस्तमसां साम्यावस्था प्रकृतिः प्रकृतेर्महान् महतोऽहङ्कारोऽहङ्कारात् पञ्चतन्मात्राण्युभयमिन्द्रियं तन्मात्रेभ्यः स्थूलभूतानि पुरुष इति पञ्चविंशतिर्गणः	1.61
62	स्थूलात्पञ्चतन्मात्रस्य	1.62
63	बाह्याभ्यन्तराभ्यां तैश्चाहङ्कारस्य	1.63
64	तेनान्तःकरणस्य	1.64
65	ततः प्रकृतेः	1.65
66	संहतपरार्थत्वात् पुरुषस्य	1.66
67	मूले मूलाभावादमूलं मूलम्	1.67
68	पारम्पर्य्येऽप्येकत्र परिनिष्ठेति संज्ञामात्रम्	1.68
69	समानः प्रकृतेर्द्वयोः	1.69
70	अधिकारित्रैविध्यान्न नियमः	1.70
71	महदाख्यमाद्यं कार्यं तन्मनः	1.71

72	चरमोऽहङ्कारः	1.72
73	तत्कार्यत्वमुत्तरेषाम्	1.73
74	आद्यहेतुता तद्द्वारा पारम्पर्येऽप्यणुवत्	1.74
75	पूर्वभावित्वे द्वयोरेकतरस्य हानेऽन्यतरयोगः	1.75
76	परिच्छिन्नत्वान्न सर्वोपादानम्	1.76
77	तदुत्पत्तिश्रुतेश्च	1.77
78	नावस्तुनो वस्तुसिद्धिः	1.78
79	अबाधाददुष्टकारणजन्यत्वाच्च नावस्तुत्वम्	1.79
80	भावे तद्योगेन तत्सिद्धिरभावे तदभावात् कुतस्तत्सिद्धिः	1.80
81	न कर्मण उपादानत्वायोगात्	1.81
82	नानुश्रविकादपि तत्सिद्धिः साध्यत्वेनाऽवृत्तियोगादपुरुषार्थत्वम्	1.82
83	तत्र प्राप्तिविवेकस्यानावृत्तिश्रुतिः	1.83
84	दुःखाद्दुःखं जलाभिषेकवन्न जाड्यविमोकः	1.84
85	काम्येऽकाम्येऽपि साध्यत्वाविशेषात्	1.85
86	निजमुक्तस्य बन्धध्वंसमात्रं परं न समानत्वम्	1.86
87	द्वयोरेकतरस्य वाऽप्यसन्निकृष्टार्थपरिच्छित्तिः प्रमा तत्साधकतमं यत्तत् त्रिविधं प्रमाणम्	1.87
88	तत्सिद्धौ सर्वसिद्धेर्नाधिक्यसिद्धिः	1.88
89	यत्सम्बन्धसिद्धं तदाकारोल्लेखि विज्ञानं तत् प्रत्यक्षम्	1.89
90	योगिनामबाह्यप्रत्यक्षत्वान्न दोषः	1.90
91	लीनवस्तुलब्धातिशयसम्बन्धान्न दोषः	1.91
92	ईश्वरासिद्धेः	1.92
93	मुक्तबद्धयोरन्यतराभावान्न तत्सिद्धिः	1.93
94	उभयथाप्यसत्करत्वम्	1.94
95	मुक्तात्मनः प्रशंसोपासासिद्धस्य वा	1.95
96	तत्सन्निधानादधिष्ठातृत्वं मणिवत्	1.96

97	विशेषकार्येष्वपि जीवानाम्	1.97
98	सिद्धरूपबोद्धृत्वाद्वाक्यार्थोपदेशः	1.98
99	अन्तःकरणस्य तदुज्ज्वलितत्वाल्लोहवदधिष्ठातृत्वम्	1.99
100	प्रतिबन्धदृशः प्रतिबद्धज्ञानमनुमानम्	1.100
101	आप्तोपदेशः शब्दः	1.101
102	उभयसिद्धिः प्रमाणात्तदुपदेशः	1.102
103	सामान्यतो दृष्टादुभयसिद्धिः	1.103
104	चिदवसानो भोगः	1.104
105	अकर्तुरपि फलोपभोगोऽन्नाद्यवत्	1.105
106	अविवेकाद्वा तत्सिद्धेः कर्तुः फलावगमः	1.106
107	नोभयश्च तत्वाख्याने	1.107
108	विषयोऽविषयोऽप्यतिदूरादेर्हानोपादानाभ्यामिन्द्रियस्य	1.108
109	सौक्ष्म्यात्तदनुपलब्धिः	1.109
110	कार्यदर्शनात्तदुपलब्धेः	1.110
111	वादिविप्रतिपत्तेस्तदसिद्धिरिति चेत्	1.111
112	तथाप्येकतरदृष्ट्यैकतरसिद्धेर्नापलापः	1.112
113	त्रिविधविरोधापत्तेश्च	1.113
114	नासदुत्पादो नृशृङ्गवत्	1.114
115	उपादाननियमात्	1.115
116	सर्वत्र सर्वदा सर्वासम्भवात्	1.116
117	शक्तस्य शक्यकरणात्	1.117
118	कारणभावाच्च	1.118
119	न भावे भावयोगश्चेत्	1.119
120	नाभिव्यक्तिनिबन्धनौ व्यवहाराव्यवहारौ	1.120
121	नाशः कारणलयः	1.121
122	पारम्पर्यतोऽन्वेषणाद्बीजाङ्कुरवत्	1.122

123	उत्पत्तिवद्वाऽदोषः	1.123
124	हेतुमदनित्यमव्यापि सक्रियमनेकमाश्रितं लिङ्गम्	1.124
125	आञ्जस्यादभेदतो वा गुणसामान्यादेस्तत्सिद्धिः प्रधानव्यपदेशाद्वा	1.125
126	त्रिगुणाचेतनत्वादि द्वयोः	1.126
127	प्रीत्यप्रीतिविषादाद्यैर्गुणानामन्योऽन्यं वैधर्म्यम्	1.127
128	लघ्वादिधर्मैः साधर्म्यं वैधर्म्यं च गुणानाम्	1.128
129	उभयान्यत्वात् कार्यत्वं महदादेर्घटादिवत्	1.129
130	परिमाणात्	1.130
131	समन्वयात्	1.131
132	शक्तितश्चेति	1.132
133	तद्धानेः प्रकृतिर्पुरुषो वा	1.133
134	तयोरन्यत्वे तुच्छत्वम्	1.134
135	कार्यात्कारणानुमानं तत्साहित्यात्	1.135
136	अव्यक्तं त्रिगुणाल्लिङ्गात्	1.136
137	तत्कार्यतस्तत्सिद्धेर्नापलापः	1.137
138	सामान्येन विवादाभावाद्धर्मवन्न साधनम्	1.138
139	शरीरादिव्यतिरिक्तः पुमान्	1.139
140	संहतपरार्थत्वात्	1.140
141	त्रिगुणादिविपर्ययात्	1.141
142	अधिष्ठानाच्चेति	1.142
143	भोक्तृभावात्	1.143
144	कैवल्यार्थं प्रवृत्तेश्च	1.144
145	जडप्रकाशायोगात्प्रकाशः	1.145
146	निर्गुणत्वान्न चिद्धर्मा	1.146
147	श्रुत्या सिद्धस्य नापलापस्तत्प्रत्यक्षबाधात्	1.147
148	सुषुप्त्याद्यसाक्षित्वम्	1.148

149	जन्मादिव्यवस्थातः पुरुषबहुत्वम्	1.149
150	उपाधिभेदेऽप्येकस्य नानायोगः आकाशस्येव घटादिभिः	1.150
151	उपाधिर्भिद्यते न तु तद्वान्	1.151
152	एवमेकत्वेन परिवर्तमानस्य न विरुद्धधर्माध्यासः	1.152
153	अन्यधर्मत्वेऽपि नारोपात्तत्सिद्धिरेकत्वात्	1.153
154	नाद्वैतश्रुतिविरोधो जातिपरत्वात्	1.154
155	विदितबन्धकारणस्य दृष्ट्यातद्रूपम्	1.155
156	नान्धादृष्ट्या चक्षुष्मतामनुपलम्भः	1.156
157	वामदेवादिर्मुक्तो नाद्वैतम्	1.157
158	अनादावद्ययावदभावाद्भविष्यदप्येवम्	1.158
159	इदीनीमिव सर्वत्र नात्यन्तोच्छेदः	1.159
160	व्यावृत्तोभयरूपः	1.160
161	साक्षात्सम्बन्धात्साक्षित्वम्	1.161
162	नित्यमुक्तत्वम्	1.162
163	औदासीन्यञ्चेति	1.163
164	उपरागात्कर्तृत्वञ्चित्सान्निध्याच्चित्सान्निध्यात्	1.164
द्वितीयोऽध्यायः		
165	विमुक्तमोक्षार्थं स्वार्थं वा प्रधानस्य	2.1
166	विरक्तस्य तत्सिद्धेः	2.2
167	न श्रवणमात्रात्तत्सिद्धिरनादिवासनायाः बलवत्त्वात्	2.3
168	बहुभृत्यवद्वा प्रत्येकम्	2.4
169	प्रकृतिवास्तवे च पुरुषस्याध्याससिद्धिः	2.5
170	कार्यतस्तत्सिद्धेः	2.6
171	चेतनोद्देशान्नियमः कण्टकमोक्षवत्	2.7
172	अन्ययोगेऽपि तत्सिद्धिर्नाञ्जस्येनायोदाहवत्	2.8
173	रागविरागयोर्योगः सृष्टिः	2.9

174	महदादिक्रमेण पञ्चभूतानाम्	2.10
175	आत्मार्थत्वात्सृष्टेर्नैषामात्मार्थ आरम्भः	2.11
176	दिक्कालावाकाशादिभ्यः	2.12
177	अध्यवसायो बुद्धिः	2.13
178	तत्कार्यं धर्मादिः	2.14
179	महदुपरागाद्विपरीतम्	2.15
180	अभिमानोऽहङ्कारः	2.16
181	एकादश पञ्चतन्मात्रं तत्कार्यम्	2.17
182	सात्विकमेकादशकं प्रवर्तते वैकृतादहङ्कारात्	2.18
183	कर्मेन्द्रियबुद्धीन्द्रियैरान्तरमेकादशकम्	2.19
184	आहङ्कारिकत्वश्रुतेर्न भौतिकानि	2.20
185	देवतालयश्रुतिर्नारम्भकस्य	2.21
186	तदुत्पत्तिश्रुतेर्विनाशदर्शनाच्च	2.22
187	अतीन्द्रियमिन्द्रियं भ्रान्तानामधिष्ठाने	2.23
188	शक्तिभेदेऽपि भेदसिद्धौ नैकत्वम्	2.24
189	न कल्पनाविरोधः प्रमाणदृष्टस्य	2.25
190	उभयात्मकं मनः	2.26
191	गुणपरिणामभेदान्नानात्वमवस्थावत्	2.27
192	रूपादिरसमलान्त उभयोः	2.28
193	द्रष्टृत्वादिरात्मनः करणत्वमिन्द्रियाणाम्	2.29
194	त्रयाणां स्वालक्षण्यम्	2.30
195	सामान्यकरणवृत्तिः प्राणाद्या वायवः पञ्च	2.31
196	क्रमशोऽक्रमशश्चेन्द्रियवृत्तिः	2.32
197	वृत्तयः पञ्चतय्यः क्लिष्टा अक्लिष्टाश्च	2.33
198	तन्निवृत्तावुपशान्तोपरागः स्वस्थः	2.34
199	कुसुमवच्च मणिः	2.35

200	पुरुषार्थं करणोद्भवोऽप्यदृष्टोल्लासात्	2.36
201	धेनुवद्वत्साय	2.37
202	करणं त्रयोदशाविधमवान्तरभेदात्	2.38
203	इन्द्रियेषु साधकतमत्वगुणयोगात् कुठारवत्	2.39
204	द्वयोः प्रधानं मनो लोकवत् भृत्यवर्गेषु	2.40
205	अव्यभिचारात्	2.41
206	तथाऽशेषसंस्काराधारत्वात्	2.42
207	स्मृत्याऽनुमानाच्च	2.43
208	सम्भवेन्न स्वतः	2.44
209	आपेक्षिको गुणप्रधानभावः क्रियाविशेषात्	2.45
210	तत्कर्मार्जितत्वात् तदर्थमभिचेष्टा लोकवत्	2.46
211	समानकर्मयोगे बुद्धेः प्राधान्यं लोकवल्लोकवत्	2.47
तृतीयोऽध्यायः		
212	अविशेषाद्विशेषारम्भः	3.1
213	तस्माच्छरीरस्य	3.2
214	तद्बीजात्संसृतिः	3.3
215	आविवेकाच्च प्रवर्तनमविशेषाणाम्	3.4
216	उपभोगादितरस्य	3.5
217	सम्प्रति परिष्वक्तो द्वाभ्याम्	3.6
218	मातापितृजं स्थूलं प्रायश इतरन्न तथा	3.7
219	पूर्वोत्पत्तेस्तत्कार्यत्वं भोगादेकस्य नेतरस्य	3.8
220	सप्तदशैकं लिङ्गम्	3.9
221	व्यक्तिभेदः कर्मविशेषात्	3.10
222	तदधिष्ठानाश्रये देहे तद्वादत्तद्वादः	3.11
223	न स्वातन्त्र्यात्तदृते छायावच्चित्रवच्च	3.12
224	मूर्तत्वेऽपि न सङ्घातयोगात् तरणिवत्	3.13

225	अणुपरिमाणं तत्कृतिश्रुतेः	3.14
226	तदन्नमयत्वश्रुतेश्च	3.15
227	पुरुषार्थं संसृतिर्लिङ्गानां सूपकारवद्राज्ञः	3.16
228	पाञ्चभौतिको देहः	3.17
229	चातुर्भौतिकमित्येके	3.18
230	ऐकभौतिकमित्यपरे	3.19
231	न सांसिद्धिकश्चैतन्यं प्रत्येकादृष्टेः	3.20
232	प्रपञ्चमरणाद्यभावश्च	3.21
233	मदशक्तिवच्चेत् प्रत्येकपरिदृष्टे सौक्ष्म्यात्सांहत्ये तदुद्भवः	3.22
234	ज्ञानान्मुक्तिः	3.23
235	बन्धो विपर्ययात्	3.24
236	नियतकारणत्वान्न समुच्चयविकल्पौ	3.25
237	स्वप्नजागराभ्यामिव मायिकामायिकाभ्यां नोभयोर्मुक्तिः पुरुषस्य	3.26
238	इतरस्याऽपि नात्यन्तिकम्	3.27
239	सङ्कल्पितेऽप्येवम्	3.28
240	भावनोपचयात् शुद्धस्य सर्वं प्रकृतिवत्	3.29
241	रागोपहतिर्ध्यानम्	3.30
242	वृत्तिनिरोधात्तत्सिद्धिः	3.31
243	धारणासनस्वकर्मणा तत्सिद्धिः	3.32
244	निरोधश्छर्दिविधारणाभ्याम्	3.33
245	स्थिरसुखमासनम्	3.34
246	स्वकर्म स्वाश्रमविहितकर्मानुष्ठानम्	3.35
247	वैराग्यादभ्यासाच्च	3.36
248	विपर्ययभेदाः पञ्च	3.37
249	अशक्तिरष्टाविंशतिधा तु	3.38
250	तुष्टिर्नवधा	3.39

251	सिद्धिरष्टधा	3.40
252	अवान्तरभेदाः पूर्ववत्	3.41
253	एवमितरस्याः	3.42
254	आध्यात्मिकादिभेदान्नवधा तुष्टिः	3.43
255	ऊहादिभिः सिद्धिरष्टधा	3.44
256	नेतरादितरहानेन विना	3.45
257	दैवादिप्रभेदाः	3.46
258	आब्रह्मस्तम्बपर्यन्तं तत्कृते सृष्टिराविवेकात्	3.47
259	ऊर्ध्वं सत्वविशाला	3.48
260	तमोविशाला मूलतः	3.49
261	मध्ये रजोविशाला	3.50
262	कर्मवैचित्र्यात् प्रधानचेष्टा गर्भदासवत्	3.51
263	आवृत्तिस्तत्राप्युत्तरोत्तरयोगाद्धेयः	3.52
264	समानं जरामरणादिजं दुःखम्	3.53
265	न कारणलयात् कृतकृत्यता मग्नवदुत्थानात्	3.54
266	अकार्यत्वेऽपि तद्योगः पारवश्यात्	3.55
267	स हि सर्ववित् सर्वकर्ता	3.56
268	ईदृशेश्वरसिद्धिः सिद्धा	3.57
269	प्रधानसृष्टिः परार्थं स्वतोऽप्यभोक्तृत्वात् उष्ट्रकुङ्कुमवहनवत्	3.58
270	अचेतनत्वेऽपि क्षीरवच्चेष्टितं प्रधानस्य	3.59
271	कर्मवद्दृष्टेर्वा कालादेः	3.60
272	स्वभावाच्चेष्टितमनभिसन्धानाद् भृत्यवत्	3.61
273	कर्माकृष्टेर्वाप्यनादितः	3.62
274	विविक्तबोधात् सृष्टिनिवृत्तिः प्रधानस्य सूदवत्पाके	3.63
275	इतर इतरवत्तदोषात्	3.64
276	द्वयोरेकतस्य वौदासीन्यमपवर्गः	3.65

277	अन्यसृष्ट्युपरागेऽपि न विरज्यते, प्रबुद्धरज्जुतत्त्वस्येवोरगः	3.66
278	कर्मनिमित्तयोगाच्च	3.67
279	नैरपेक्ष्येऽपि प्रकृत्युपकारेऽविवेको निमित्तम्	3.68
280	नर्तकीवत् प्रवृत्तस्यापि निवृत्तिश्चारितार्थ्यात्	3.69
281	दोषबोधेऽपि नोपसर्पणं प्रधानस्य कुलवधूवत्	3.70
282	नैकान्ततो बन्धमोक्षौ पुरुषस्याविवेकादृते	3.71
283	प्रकृतेराञ्जस्यात् ससङ्गत्वात्पशुवत्	3.72
284	रूपैः सप्तभिरात्मानं बध्नाति प्रधानं कोशकारवद्विमोचयेत्येकेन रूपेण	3.73
285	निमित्तत्वमविवेकस्य न दृष्टहानिः	3.74
286	तत्वाभ्यासान्नेति नेतीति त्यागाद्विवेकसिद्धिः	3.75
287	अधिकारिप्रभेदान्न नियमः	3.76
288	बाधितानुवृत्त्या मध्यविवेकतोऽप्युपभोगः	3.77
289	जीवन्मुक्तश्च	3.78
290	उपदेश्योपदेष्टृत्वात्तत्सिद्धिः	3.79
291	श्रुतिश्च	3.80
292	इतरथाऽन्धपरम्परा	3.81
293	चक्रभ्रमणवद् धृतशरीरः	3.82
294	संस्कारलेशतस्तत्सिद्धिः	3.83
295	विवेकान्निःशेषदुःखनिवृत्तौ कृतकृत्यो नेतरान्नेतरात्	3.84
	चतुर्थोऽध्यायः	
296	राजपुत्रवत्तत्वोपदेशात्	4.1
297	पिशाचवदन्यार्थोपदेशेऽपि	4.2
298	आवृत्तिरसकृदुपदेशात्	4.3
299	पितापुत्रवदुभयोर्दृष्टत्वात्	4.4
300	श्येनवत् सुखदुःखी त्यागवियोगाभ्याम्	4.5
301	अहिनिर्ल्वयिनीवत्	4.6

302	छिन्नहस्तवद्वा	4.7
303	असाधनानुचिन्तनं बन्धाय भरतवत्	4.8
304	बहुभिर्योगविरोधो रागादिभिः कुमारीशङ्खवत्	4.9
305	द्वाभ्यामपि तथैव	4.10
306	निराशः सुखी पिङ्गलावत्	4.11
307	अनारम्भेऽपि परगृहे सुखी सर्पवत्	4.12
308	बहुशास्त्रगुरूपासनेऽपि सारादानं षट्पदवत्	4.13
309	इषुकारवन्नैकचित्तस्य समाधिहानिः	4.14
310	कृतनियमलङ्घनादानर्थक्यं लोकवत्	4.15
311	तद्विस्मरणेऽपि भेकीवत्	4.16
312	नोपदेशश्रवणेऽपि कृतकृत्यता परामर्शादृते विरोचनवत्	4.17
313	दृष्टस्तयोरिन्द्रस्य	4.18
314	प्रणतिब्रह्मचर्योपसर्पणानि कृत्वा सिद्धिर्बहुकालात्तद्वत्	4.19
315	न कालनियमो वामदेववत्	4.20
316	अध्यस्तरूपोपासनात् पारम्पर्येण यज्ञोपासकानामिव	4.21
317	इतरलाभेऽप्यावृत्तिः पञ्चाग्नियोगतो जन्मश्रुतेः	4.22
318	विरक्तस्य हेयहानमुपादेयोपादानं हंसक्षीरवत्	4.23
319	लब्धातिशययोगाद्वा तद्वत्	4.24
320	न कामचारित्वं रागोपहते शुकवत्	4.25
321	गुणयोगाद्बद्धः शुकवत्	4.26
322	न भोगाद्रागशान्तिर्मुनिवत्	4.27
323	दोषदर्शनादुभयोः	4.28
324	न मलिनचेतस्युपदेशबीजप्ररोहोऽजवत्	4.29
325	नाभासमात्रमपि मलिनदर्पणवत्	4.30
326	न तज्जस्यापि तद्रूपता पङ्कजवत्	4.31
327	न भूतियोगेऽपि कृतकृत्यतोपास्यसिद्धिवदुपास्यसिद्धिवत्	4.32

पञ्चमोऽध्यायः		
328	मङ्गलाचरणं शिष्टाचारात् फलदर्शनाच्छ्रुतितश्चेति	5.1
329	नेश्वराधिष्ठिते फलनिष्पत्तिः कर्मणा तत्सिद्धेः	5.2
330	स्वोपकारादधिष्ठानं लोकवत्	5.3
331	लौकिकेश्वरवदितरथा	5.4
332	पारिभाषिको वा	5.5
333	न रागादृते तत्सिद्धिः प्रतिनियतकारणत्वात्	5.6
334	तद्योगेऽपि न नित्यमुक्तः	5.7
335	प्रधानशक्तियोगाच्चेत् सङ्गापत्तिः	5.8
336	सत्तामात्राच्चेत्सर्वैश्वर्यम्	5.9
337	प्रमाणाभावान्न तत्सिद्धिः	5.10
338	सम्बन्धाभावान्नानुमानम्	5.11
339	श्रुतिरपि प्रधानकार्यत्वस्य	5.12
340	नाविद्याशक्तियोगो निस्सङ्गस्य	5.13
341	तद्योगे तत्सिद्धावन्योऽन्याश्रयत्वम्	5.14
342	न बीजाङ्कुरवत् सादिसंसारश्रुतेः	5.15
343	विद्यातोऽन्यत्वे ब्रह्मबाधप्रसङ्गः	5.16
344	अबाधे नैष्फल्यम्	5.17
345	विद्याबाध्यत्वे जगतोऽप्येवम्	5.18
346	तद्रूपत्वे सादित्वम्	5.19
347	न धर्मापलापः प्रकृतिकार्यवैचित्र्यात्	5.20
348	श्रुतिलिङ्गादिभिस्तत्सिद्धिः	5.21
349	न नियमः प्रमाणान्तरावकाशात्	5.22
350	उभयत्राप्येवम्	5.23
351	अर्थात् सिद्धिश्चेत्समानमुभयोः	5.24
352	अन्तःकरणधर्मत्वं धर्मादीनाम्	5.25

353	गुणादीनाञ्च नात्यन्तबाधः	5.26
354	पञ्चावयवयोगात् सुखसंवित्तिः	5.27
355	न सकृद्ग्रहणात्सम्बन्धसिद्धिः	5.28
356	नियतधर्मसाहित्यमुभयोरेकतरस्य वा व्याप्तिः	5.29
357	न तत्वान्तरं वस्तुकल्पनाप्रसक्तेः	5.30
358	निजशक्त्युद्भवमित्याचार्याः	5.31
359	आधेयशक्तियोग इति पञ्चशिखः	5.32
360	न स्वरूपशक्तिर्नियमः पुनर्वादप्रसक्तेः	5.33
361	विशेषेणानर्थक्यप्रसक्तेः	5.34
362	पल्लवादिष्वनुपपत्तेश्च	5.35
363	आधेयशक्तिसिद्धौ निजशक्तियोगः समानन्यायात्	5.36
364	वाच्यवाचकभावः सम्बन्धः शब्दार्थयोः	5.37
365	त्रिभिस्सम्बन्धसिद्धिः	5.38
366	न कार्ये नियम उभयथा दर्शनात्	5.39
367	लोके व्युत्पन्नस्य वेदार्थप्रतीतिः	5.40
368	न त्रिभिरपौरुषेयत्वाद्वेदस्य तदर्थस्याप्यतीन्द्रियत्वात्	5.41
369	न यज्ञादेः स्वरूपतो धर्मत्वं वैशिष्ट्यात्	5.42
370	निजशक्तिर्व्युत्पत्त्या व्यवच्छिद्यते	5.43
371	योग्यायोग्येषु प्रतीतिजनकत्वात्तत्सिद्धिः	5.44
372	न नित्यत्वं वेदानां कार्यत्वश्रुतेः	5.45
373	न पौरुषेयत्वं तत्कर्तुः पुरुषस्याभावात्	5.46
374	मुक्तामुक्तयोरयोग्यत्वात्	5.47
375	नाऽपौरुषेयत्वान्नित्यत्वमङ्कुरादिवत्	5.48
376	तेषामपि तद्योगे दृष्टबाधादिप्रसक्तिः	5.49
377	यस्मिन्नदृष्टेऽपि कृतबुद्धिरुपजायते तत्पौरुषेयम्	5.50
378	निजशक्त्यभिव्यक्तेः स्वतः प्रामाण्यम्	5.51

379	नासतः ख्यानं नृशृङ्गवत्	5.52
380	न सतो बाधदर्शनात्	5.53
381	नानिर्वचनीयस्य तदभावात्	5.54
382	नान्यथाख्यातिः स्ववचोव्याघातात्	5.55
383	सदसत्ख्यातिर्बाधाबाधात्	5.56
384	प्रतीत्यप्रतीतिभ्यां न स्फोटात्मकः शब्दः	5.57
385	न शब्दनित्यत्वं कार्यताप्रतीतेः	5.58
386	पूर्वसिद्धसत्त्वस्याभिव्यक्तिर्दीपेनेव घटस्य	5.59
387	सत्कार्यसिद्धान्तश्चेत् सिद्धसाधनम्	5.60
388	नाद्वैतमात्मनो लिङ्गात् तद्भेदप्रतीतेः	5.61
389	नानात्मनाऽपिप्रत्यक्षबाधात्	5.62
390	नोभाभ्यां तेनैव	5.63
391	अन्यपरत्वमविवेकानां तत्र	5.64
392	नात्माविद्यानोभयं जगदुपादानकारणं निस्सङ्गत्वात्	5.65
393	नैकस्यानन्दचिद्रूपत्वे द्वयोर्भेदात्	5.66
394	दुःखनिवृत्तेर्गौणः	5.67
395	विमुक्तिप्रशंसा मन्दानाम्	5.68
396	न व्यापकत्वं मनसः करणत्वादिन्द्रियत्वाद्वा वास्यादिवच्चक्षुरादिवच्च	5.69
397	सक्रियत्वात् गतिश्रुतेः	5.70
398	न निर्भागत्वं तद्योगाद् घटवत्	5.71
399	प्रकृतिपुरुषयोरन्यत्सर्वमनित्यम्	5.72
400	न भागलाभो भोगिनो निर्भागत्वश्रुतेः	5.73
401	नानन्दाभिव्यक्तिर्मुक्तिर्निर्धर्मत्वात्	5.74
402	न विशेषगुणोच्छित्तिस्तद्वत्	5.75
403	न विशेषगतिः निष्क्रियस्य	5.76
404	नाकारोपरागोच्छित्तिः क्षणिकत्वादिदोषात्	5.77

405	न सर्वोच्छित्तिरपुरुषार्थत्वादिदोषात्	5.78
406	एवं शून्यमपि	5.79
407	संयोगाश्च विभागान्ता इति न देशादिलाभोऽपि	5.80
408	न भागियोगोऽभागस्य	5.81
409	नाणिमादियोगोऽप्यवश्यं भावित्वात्तदुच्छित्तेरितरयोगवत्	5.82
410	नेन्द्रादिपदयोगोऽपि तद्वत्	5.83
411	न भूतप्रकृतिकत्वमिन्द्रियाणामाहङ्कारिकत्वश्रुतेः	5.84
412	न षट्पदार्थनियमस्तद्बोधान्मुक्तिः	5.85
413	षोडशादिष्वप्येवम्	5.86
414	नाणुनित्यता तत्कार्यत्वश्रुतेः	5.87
415	न निर्भागत्वं कार्यत्वात्	5.88
416	न रूपनिबन्धनात्प्रत्यक्षनियमः	5.89
417	न परिमाणचातुर्विध्यं द्वाभ्यां तद्योगात्	5.90
418	अनित्यत्वेऽपि स्थिरतायोगात् प्रत्यभिज्ञानं सामान्यस्य	5.91
419	न तदपलापस्तस्मात्	5.92
420	नान्यनिवृत्तिरूपत्वं भावप्रतीतेः	5.93
421	न तत्त्वान्तरं सादृश्य प्रत्यक्षोपलब्धेः	5.94
422	निजशक्त्यभिव्यक्तिर्वा वैशिष्ट्यात्तदुपलब्धेः	5.95
423	न संज्ञासंज्ञिसम्बन्धोऽपि	5.96
424	न सम्बन्धनित्यतोभयानित्यत्वात्	5.97
425	नाजः सम्बन्धो धर्मिग्राहकप्रमाणबाधात्	5.98
426	न समवायोऽस्ति प्रमाणाभावात्	5.99
427	उभयत्राप्यन्यथासिद्धेर्न प्रत्यक्षमनुमानं वा	5.100
428	नानुमेयत्वमेव क्रियाया नेदिष्ठस्य तत्तद्व्यतोरेवाऽपरोक्षप्रतीतेः	5.101
429	न पाञ्चभौतिकं शरीरं बहूनामुपादानायोगात्	5.102
430	न स्थूलमिति नियमः आतिवाहिकस्यापि विद्यामानत्वात्	5.103

431	नाप्राप्तप्रकाशकत्वमिन्द्रियाणामप्राप्तेः सर्वप्राप्तेर्वा	5.104
432	न तेजोऽपसर्पणात्तैजसं चक्षुर्वृत्तितस्तत्सिद्धेः	5.105
433	प्राप्तार्थप्रकाशलिङ्गाद् वृत्तिसिद्धिः	5.106
434	भागगुणाभ्यां तत्वान्तरं वृत्तिः सम्बन्धार्थं सर्पतीति	5.107
435	न द्रव्यनियमस्तद्योगात्	5.108
436	न देशभेदेऽप्यन्योपादानतास्मदादिवन्नियमः	5.109
437	निमित्तव्यपदेशात्तद्व्यपदेशः	5.110
438	ऊष्मजाण्डजजरायुजोद्भिज्जसाङ्कल्पिकसांसिद्धिकश्चेति न नियमः	5.111
439	सर्वेषु पृथिव्युपादानमसाधारण्यात्तद्व्यपदेशः पूर्ववत्	5.112
440	न देहारम्भकस्य प्राणत्वमिन्द्रियशक्तितस्तत्सिद्धेः	5.113
441	भोक्तुरधिष्ठानाद्भोगायतननिर्माणमन्यथा पूतिभावप्रसङ्गात्	5.114
442	भृत्यद्वारा स्वाम्यधिष्ठितिर्नैकान्तात्	5.115
443	समाधिसुषुप्तिमोक्षेषु ब्रह्मरूपता	5.116
444	द्वयोः सबीजमन्यत्र तद्धतिः	5.117
445	द्वयोरिव त्रयस्यापि दृष्टत्वान्न तु द्वौ	5.118
446	वासनयाऽनर्थख्यापनं दोषयोगेऽपि न निमित्तस्य प्रधानबाधकत्वम्	5.119
447	एकः संस्कारः क्रियानिवर्तको न तु प्रतिक्रियं संस्कारभेदा बहुकल्पनाप्रसक्तेः	5.120
448	न बाह्यबुद्धिनियमः	5.121
449	वृक्षगुल्मलतौषधिवनस्पतितृणवीरूधादीनामपि भोक्तृभोगायतनत्वं पूर्ववत्	5.122
450	स्मृतेश्च	5.123
451	न देहमात्रतः कर्माधिकारित्वं वैशिष्ट्यश्रुतेः	5.124
452	त्रिधा त्रयाणां व्यवस्था कर्मदेहोपभोगदेहोभयदेहाः	5.125
453	न किञ्चिदप्यनुशयिनः	5.126
454	न बुद्ध्यादिनित्यत्वमाश्रयाविशेषेऽपि वह्निवत्	5.127
455	आश्रयासिद्धेश्च	5.128
456	योगसिद्धयोऽप्यौषधादिसिद्धिवन्नापलापनीयाः	5.129

457	न भूतचैतन्यं प्रत्येकादृष्टेः सांहत्येऽपि च सांहत्येऽपि च	5.130
षष्ठोऽध्यायः		
458	अस्त्यात्मा नास्तित्वसाधनाभावात्	6.1
459	देहादिव्यतिरिक्तोऽसौ वैचित्र्यात्	6.2
460	षष्ठीव्यपदेशादपि	6.3
461	न शिलापुत्रवत् धर्मिग्राहकमानबाधात्	6.4
462	अत्यन्तदुःखनिवृत्त्या कृतकृत्यता	6.5
463	यथा दुःखात् क्लेशः पुरुषस्य न तथा सुखाभिलाषः	6.6
464	कुत्रापि कोऽपि सुखीति	6.7
465	तदपि दुःखशबलमिति दुःखपक्षे निःक्षिपन्ते विवेचकाः	6.8
466	सुखलाभाभावादपुरुषार्थत्वमिति चेन्नैवं द्वैविध्यात्	6.9
467	निर्गुणत्वमात्मनोऽसङ्गत्वादिश्रुतेः	6.10
468	परधर्मत्वेऽपि तत्सिद्धिरविवेकात्	6.11
469	अनादिरविवेकोऽन्यथा दोषद्वयप्रसक्तेः	6.12
470	न नित्यः स्यादात्मवदन्यथानुच्छित्तिः	6.13
471	प्रतिनियतकारणनाश्यत्वमस्य ध्वान्तवत्	6.14
472	अत्रापि प्रतिनियमोऽन्वयव्यतिरेकात्	6.15
473	प्रकारान्तरासम्भवादविवेक एव बन्धः	6.16
474	न मुक्तस्य पुनर्बन्धयोगोऽप्यनावृत्तिश्रुतेः	6.17
475	अपुरुषार्थत्वमन्यथा	6.18
476	अविशेषापत्तिरुभयोः	6.19
477	मुक्तिरन्तरायध्वंस्तेर्न परः	6.20
478	तत्राऽप्यविरोधः	6.21
479	अधिकारित्रैविध्यान्न नियमः	6.22
480	दार्ढ्यार्थमुत्तरेषाम्	6.23
481	स्थिरसुखमासनमिति न नियमः	6.24

482	ध्यानं निर्विषयं मनः	6.25
483	उभयथाप्यविशेषश्चेन्नैवमुपरागनिरोधाद्विशेषः	6.26
484	निस्सङ्गेऽप्युपरागोऽविवेकात्	6.27
485	जपास्फटिकयोरिव नोपरागः किन्त्वभिमानः	6.28
486	ध्यानधारणाभ्यासवैराग्यादिभिस्तन्निरोधः	6.29
487	लयविक्षेपयोर्व्यावृत्त्येत्याचार्याः	6.30
488	न स्थाननियमश्चित्तप्रसादात्	6.31
489	प्रकृतेराद्योपादानताऽन्येषां कार्यत्वश्रुतेः	6.32
490	नित्यत्वेऽपि नात्मनो योग्यत्वाभावात्	6.33
491	श्रुतिविरोधान्न कुतर्कापसदस्यात्मलाभः	6.34
492	पारम्पर्येऽपि प्रधानानुवृत्तिरणुवत्	6.35
493	सर्वत्र कार्यदर्शनाद्विभुत्वम्	6.36
494	गतियोगेऽप्याद्यकारणताऽहानिरणुवत्	6.37
495	प्रसिद्धाधिक्यं प्रधानस्य न नियमः	6.38
496	सत्त्वादीनामतद्धर्मत्वं तद्रूपत्वात्	6.39
497	अनुपभोगेऽपि पुमर्थं सृष्टिः प्रधानस्योष्ट्रकुङ्कुमवहनवत्	6.40
498	कर्मवैचित्र्यात्सृष्टिवैचित्र्यम्	6.41
499	साम्यवैषम्याभ्यां कार्यद्वयम्	6.42
500	विमुक्तबोधान्न सृष्टिः प्रधानस्य लोकवत्	6.43
501	नान्योपसर्पणेऽपि मुक्तोपभोगो निमित्ताभावात्	6.44
502	पुरुषबहुत्वं व्यवस्थातः	6.45
503	उपाधिश्चेत्तत्सिद्धौ पुनर्द्वैतम्	6.46
504	द्वाभ्यामपि प्रमाणविरोधः	6.47
505	द्वाभ्यामप्यविरोधान्नपूर्वमुत्तरञ्च साधाकाभावात्	6.48
506	प्रकाशतस्तत्सिद्धौ कर्मकर्तृविरोधः	6.49
507	जडव्यावृत्तो जडं प्रकाशयति चिद्रूपः	6.50

508	न श्रुतिविरोधो रागिणां वैराग्याय तत्सिद्धेः	**6.51**
509	जगत्सत्यत्वमदुष्टकरणजन्यत्वाद्बाधकाभावात्	6.52
510	प्रकारान्तरासंभवात्सदुत्पत्तिः	6.53
511	अहङ्कारः कर्ता न पुरुषः	6.54
512	चिदवसाना भुक्तिस्तत्कर्मार्जितत्वात्	6.55
513	चन्द्रादिलोकेऽप्यावृत्तिर्निमित्तसद्भावात्	6.56
514	लोकस्य नोपदेशात् सिद्धिः पूर्ववत्	6.57
515	पाराम्पर्येण तत्सिद्धौ विमुक्तिश्रुतिः	6.58
516	गतिश्रुतेश्च व्यापकत्वेऽप्युपाधियोगाद्भोगदेशकालादिलाभो व्योमवत्	6.59
517	अनधिष्ठितस्य पूतिभावप्रसङ्गान्न तत्सिद्धिः	6.60
518	अदृष्टद्वारा चेदसम्बद्धस्य तदसम्भवाज्जलादिवदङ्कुरे	6.61
519	निर्गुणत्वात्तदसम्भवादहङ्कारधर्मा ह्येते	6.62
520	विशिष्टस्य जीवत्वमन्वयव्यतिरेकात्	6.63
521	अहङ्कारकर्त्रधीना कार्यसिद्धिर्नेश्वराधीना प्रमाणाभावात्	6.64
522	अदृष्टोद्भूतिवत्समानत्वम्	6.65
523	महतोऽन्यत्	6.66
524	कर्मनिमित्तः प्रकृतेः स्वस्वामिभावोऽप्यनादिर्बीजाङ्कुरवत्	6.67
525	अविवेकनिमित्तो वा पञ्चशिखः	6.68
526	लिङ्गशरीरनिमित्तक इति सनन्दनाचार्यः	6.69
527	यद्वा तद्वा तदुच्छित्तिः पुरुषार्थस्तदुच्छित्तिः पुरुषार्थः	6.70

चतुर्थ परिशिष्ट

योगसूत्र के सम्पूर्ण सूत्र

समाधिपादः		
1	अथ योगानुशासनम्	1.1
2	योगश्चित्तवृत्तिनिरोधः	1.2
3	तदा द्रष्टुः स्वरूपेऽवस्थानम्	1.3
4	वृत्तिसारुप्यमितरत्र	1.4
5	वृत्तयः पञ्चतय्यः क्लिष्टाक्लिष्टाः	1.5
6	प्रमाणविपर्ययविकल्पनिद्रास्मृतय	1.6
7	प्रत्यक्षानुमानागमाः प्रमाणानि	1.7
8	विपर्ययो मिथ्याज्ञानमतद्रूपप्रतिष्ठम्	1.8
9	शब्दज्ञानानुपाती वस्तुशून्यो विकल्पः	1.9
10	अभावप्रययालम्बना वृत्तिर्निद्रा	1.10
11	अनुभूतविषयासंप्रमोषः स्मृतिः	1.11
12	अभ्यासवैराग्याभ्यां तन्निरोधः	1.12
13	तत्र स्थितौ यत्नाऽभ्यासः	1.13
14	स तु दीर्घकालनैरन्तर्यसत्कारासेवितो दृढभूमिः	1.14
15	दृष्टानुश्रविकविषयवितृष्णस्य वशीकारसंज्ञा वैराग्यम्	1.15
16	तत्परं पुरुषख्यातेर्गुणवेतृष्ण्यम्	1.16
17	वितर्कविचारानन्दास्मितारूपानुगमात्संप्रज्ञातः	1.17
18	विरामप्रत्ययाभ्यासपूर्वः संस्कारशेषोऽन्यः	1.18
19	भवप्रययो विदेहप्रकृतिलयानाम्	1.19
20	श्रद्धावीर्यस्मृतिसमाधिप्रज्ञापूर्वक इतरेषाम्	1.20
21	तीव्रसंवेगानामासन्नः	1.21

22	मृदुमध्याधिमात्रत्वात्ततोऽपि विशेषः	1.22
23	ईश्वरप्रणिधानाद्वा	1.23
24	क्लेशकर्मविपाकाशयैरपरामृष्टः पुरुषविशेष ईश्वरः	1.24
25	तत्र निरतिशयं सर्वज्ञबीजम्	1.25
26	पूर्वेषामपि गुरुः कालेनानवच्छेदात्	1.26
27	तस्य वाचकः प्रणवः	1.27
28	तज्जपस्तदर्थभावनम्	1.28
29	ततः प्रत्यक्त्चेतनाधिगमोऽप्यन्तरायाभावश्च	1.29
30	व्याधिस्त्यानसंशयप्रमादालस्याविरतिभ्रान्तिदर्शनालब्धभूमिकत्वानवस्थितत्वानि चितविक्षेपास्तेऽन्तरायाः	1.30
31	दुःखदौर्मनस्याङ्गमेजयत्वश्वासप्रश्वासा विक्षेपसहभुवः	1.31
32	तत्प्रतिषेधार्थमेकतत्त्वाभ्यासः	1.32
33	मैत्रीकरुणामुदितोपेक्षाणां सुखदुःखपुण्यापुण्यविषयाणां भावनातश्चितप्रसादनम्	1.33
34	प्रच्छर्दनविधारणाभ्यां वा प्राणस्य	1.34
35	विषयवती वा प्रवृत्तिरुत्पन्ना मनसः स्थितिनिबन्धनी	1.35
36	विशोका वा ज्योतिष्मती	1.36
37	वीतरागविषयं वा चित्तम्	1.37
38	स्वप्ननिद्राज्ञानालम्बनं वा	1.38
39	यथाभिमतध्यानाद्वा	1.39
40	परमाणुपरममहत्त्वान्तोऽस्य वशीकारः	1.40
41	क्षीणवृत्तेरभिजातस्येव मणेर्ग्रहीतृग्रहणग्राह्येषु तत्स्थतदञ्जनता समापत्तिः	1.41
42	तत्र शब्दार्थज्ञानविकल्पैः संकीर्णा सवितर्का समापत्तिः	1.42
43	स्मृतिपरिशुद्धौ स्वरूपशून्येवार्थमात्रनिर्भासा निर्वितर्का	1.43
44	एतयैव सविचारा निर्विचारा च सूक्ष्मविषया व्याख्याता	1.44
45	सूक्ष्मविषयत्वं चालिङ्गपर्यवसानम्	1.45
46	ता एव सबीजः समाधिः	1.46

47	निर्विचारवैशारद्येऽध्यात्मप्रसादः	1.47
48	ऋतंभरा तत्र प्रज्ञा	1.48
49	श्रुतानुमानप्रज्ञाभ्यामन्यविषया विशेषार्थत्वात्	1.49
50	तज्जः संस्कारोऽन्यसंस्कारप्रतिबन्धी	1.50
51	तस्यापि निरोधे सर्वनिरोधान्निर्बीजः समाधिः	1.51
साधनपादः		
52	तपःस्वाध्यायेश्वरप्रणिधानानि क्रियायोगः	2.1
53	समाधिभावनार्थः क्लेशतनूकरणार्थश्च	2.2
54	अविद्यास्मितारागद्वेषाभिनिवेशाः क्लेशाः	2.3
55	अविद्या क्षेत्रमुत्तरेषां प्रसुप्ततनुविच्छिन्नोदाराणाम्	2.4
56	अनित्याशुचिदुःखानात्मसु नित्यशुचिसुखात्मख्यातिरविद्या	2.5
57	दृग्दर्शनशक्त्योरेकात्मतेवास्मिता	2.6
58	सुखानुशयी रागः	2.7
59	दुःखानुशयी द्वेषः	2.8
60	स्वरसवाही विदुषोऽपि तथा रूढोऽभिनिवेशः	2.9
61	ते प्रतिप्रसवहेयाः सूक्ष्माः	2.10
62	ध्यानहेयास्तद्वृत्तयः	2.11
63	क्लेशमूलः कर्माशयो दृष्टादृष्टजन्मवेदनीयः	2.12
64	सति मूले तद्विपाको जात्यायुर्भोगाः	2.13
65	ते ह्लादपरितापफलाः पुण्यापुण्यहेतुत्वात्	2.14
66	परिणामतापसंस्कारदुःखैर्गुणवृत्तिविरोधाच्च दुःखमेव सर्वं विवेकिनः	2.15
67	हेयं दुःखमनागतम्	2.16
68	द्रष्टृदृश्ययोः संयोगो हेयहेतुः	2.17
69	प्रकाशक्रियास्थितिशीलं भूतेन्द्रियात्मकं भोगापवर्गार्थं दृश्यम्	2.18
70	विशेषाविशेषलिङ्गमात्रालिङ्गानि गुणपर्वाणि	2.19
71	द्रष्टा दृशिमात्रः शुद्धोऽपि प्रत्ययानुपश्यः	2.20

72	तदर्थ एव दृश्यस्याऽऽत्मा	2.21
73	कृतार्थं प्रति नष्टमप्यनष्टं तदन्यसाधारणत्वात्	2.22
74	स्वस्वामिशक्त्योः स्वरूपोपलब्धिहेतुः संयोगः	2.23
75	तस्य हेतुरविद्या	2.24
76	तदभावात्संयोगाभावो हानं तद्दृशेः कैवल्यम्	2.25
77	विवेकख्यातिरविप्लवा हानोपायः	2.26
78	तस्य सप्तधा प्रान्तभूमिः प्रज्ञा	2.27
79	योगाङ्गानुष्ठानादशुद्धिक्षये ज्ञानदीप्तिराविवेकख्यातेः	2.28
80	यमनियमासनप्राणायामप्रत्याहारधारणाध्यानसमाधयोऽष्टावङ्गानि	2.29
81	अहिंसासत्यस्तेयब्रह्मचर्यापरिग्रहा यमाः	2.30
82	जातिदेशकालसमयानवच्छिन्नाः सार्वभौमा महाव्रतम्	2.31
83	शौचसंतोषतपःस्वाध्यायेश्वरप्रणिधानानि नियमाः	2.32
84	वितर्कबाधने प्रतिपक्षभावनम्	2.33
85	वितर्का हिंसादयः कृतकारितानुमोदिता लोभक्रोधमोहपूर्वका मृदुमध्याधिमात्रा दुःखाज्ञानानन्तफला इति प्रतिपक्षभावनम्	2.34
86	अहिंसाप्रतिष्ठायां तत्सन्निधा वैरत्यागः	2.35
87	सत्यप्रतिष्ठायां क्रियाफलाश्रयत्वम्	2.36
88	अस्तेयप्रतिष्ठायां सर्वरत्नोपस्थानम्	2.37
89	ब्रह्मचर्यप्रतिष्ठायां वीर्यलाभः	2.38
90	अपरिग्रहस्थैर्ये जन्मकथंतासंबोधः	2.39
91	शौचात्स्वाङ्गजुगुप्सा परैरसंसर्गः	2.40
92	सत्त्वशुद्धिसौमनस्यैकाग्र्येन्द्रियजयात्मदर्शनयोग्यत्वानि च	2.41
93	संतोषादनुत्तमः सुखलाभः	2.42
94	कायेन्द्रियसिद्धिरशुद्धिक्षयात्तपसः	2.43
95	स्वाध्यायादिष्टदेवतासंप्रयोगः	2.44
96	समाधिसिद्धिरीश्वरप्रणिधानात्	2.45

97	स्थिरसुखमासनम्	2.46
98	प्रयत्नशैथिल्यानन्तसमापत्तिभ्याम्	2.47
99	ततो द्वन्द्वानभिघातः	2.48
100	तस्मिन्सति श्वासप्रश्वासयोर्गतिविच्छेदः प्राणायामः	2.49
101	बाह्याभ्यन्तरस्तम्भवृत्तिर्देशकालसंख्याभिः परिदृष्टो दीर्घसूक्ष्मः	2.50
102	बाह्याभ्यन्तरविषयाक्षेपी चतुर्थः	2.51
103	ततः क्षीयते प्रकाशावरणम्	2.52
104	धारणासु च योग्यता मनसः	2.53
105	स्वविषयासंप्रयोगे चितस्वरूपानुकार इवेन्द्रियाणां प्रत्याहारः	2.54
106	ततः परमा वश्यतेन्द्रियाणाम्	2.55
विभूतिपादः		
107	देशबन्धश्चित्तस्य धारणा	3.1
108	तत्र प्रत्ययैकतानता ध्यानम्	3.2
109	तदेवार्थमात्रनिर्भासं स्वरूपशून्यमिव समाधिः	3.3
110	त्रयमेकत्र संयमः	3.4
111	तज्जयात्प्रज्ञालोकः	3.5
112	तस्य भूमिषु विनियोगः	3.6
113	त्रयमन्तरङ्गं पूर्वेभ्यः	3.7
114	तदपि बहिरङ्गं निर्बीजस्य	3.8
115	व्युत्थाननिरोधसंस्कारयोरभिभवप्रादुर्भावौ निरोधक्षणचितान्वयो निरोधपरिणामः	3.9
116	तस्य प्रशान्तवाहिता संस्कारात्	3.10
117	सर्वार्थतैकाग्रतयोः क्षयोदयौ चित्तस्य समाधिपरिणामः	3.11
118	ततः पुनः शान्तोदितौ तुल्यप्रत्ययौ चित्तस्यैकाग्रतापरिणामः	3.12
119	एतेन भूतेन्द्रियेषु धर्मलक्षणावस्थापरिणामा व्याख्याताः	3.13
120	शान्तोदिताव्यपदेश्यधर्मानुपाती धर्मी	3.14
121	क्रमान्यत्वं परिणामान्यत्वे हेतुः	3.15

122	परिणामत्रयसंयमादतीतानागतज्ञानम्	3.16
123	शब्दार्थप्रत्ययानामितरेतराध्यासात्संकरस्तत्प्रविभागसंयमात्सर्वभूतरुतज्ञानम्	3.17
124	संस्कारसाक्षात्करणात्पूर्वजातिज्ञानम्	3.18
125	प्रत्ययस्य परचित्तज्ञानम्	3.19
126	न च तत्सालम्बनं तस्याविषयीभूतत्वात्	3.20
127	कायरूपसंयमात्तद्ग्राह्यशक्तिस्तम्भे चक्षुष्प्रकाशासंप्रयोगेऽन्तर्धानम्	3.21
128	सोपक्रमं निरुपक्रमं च कर्म तत्संयमादपरान्तज्ञानमरिष्टेभ्यो वा	3.22
129	मैत्र्यादिषु बलानि	3.23
130	बलेषु हस्तिबलादीनि	3.24
131	प्रवृत्त्यालोकन्यासात्सूक्ष्मव्यवहितविप्रकृष्टज्ञानम्	3.25
132	भुवनज्ञानं सूर्ये संयमात्	3.26
133	चन्द्रे ताराव्यूहज्ञानम्	3.27
134	ध्रुवे तद्गतिज्ञानम्	3.28
135	नाभिचक्रे कायव्यूहज्ञानम्	3.29
136	कण्ठकूपे क्षुत्पिपासानिवृत्तिः	3.30
137	कूर्मनाड्यां स्थैर्यम्	3.31
138	मूर्धज्योतिषि सिद्धदर्शनम्	3.32
139	प्रातिभाद्वा सर्वम्	3.33
140	हृदये चित्तसंवित्	3.34
141	सत्त्वपुरुषयोरत्यन्तासंकीर्णयोः प्रत्ययाविशेषो भोगः परार्थात्स्वार्थसंयमात्पुरुषज्ञानम्	3.35
142	ततः प्रातिभश्रावणवेदनादर्शास्वादवार्ता जायन्ते	3.36
143	ते समाधावुपसर्गा व्युत्थाने सिद्धयः	3.37
144	बन्धकारणशैथिल्यात्प्रचारसंवेदनाच्च चित्तस्य परशरीरावेशः	3.38
145	उदानजयाज्जलपङ्ककण्टकादिष्वसङ्ग उत्क्रान्तिश्च	3.39
146	समानजयाज्ज्वलनम्	3.40

147	श्रोत्राकाशयोः संबन्धसंयमाद्दिव्यं श्रोत्रम्	3.41
148	कायाकाशयोः संबन्धसंयमाल्लघुतूलसमापत्तेश्चाऽऽकाशगमनम्	3.42
149	बहिरकल्पिता वृत्तिर्महाविदेहा ततः प्रकाशावरणक्षयः	3.43
150	स्थूलस्वरूपसूक्ष्मान्वयार्थवत्त्वसंयमाद्भूतजयः	3.44
151	ततोऽणिमादिप्रादुर्भावः कायसंपत्तद्धर्मानभिघातश्च	3.45
152	रूपलावण्यबलवज्रसंहननत्वानि कायसंपत्	3.46
153	ग्रहणस्वरूपास्मितान्वयार्थवत्त्वसंयमादिन्द्रियजयः	3.47
154	ततो मनोजवित्वं विकरणभावः प्रधानजयश्च	3.48
155	सत्त्वपुरुषान्यताख्यातिमात्रस्य सर्वभावाधिष्ठातृत्वं सर्वज्ञातृत्वं च	3.49
156	तद्वैराग्यादपि दोषबीजक्षये कैवल्यम्	3.50
157	स्थान्युपनिमन्त्रणे सङ्गस्मयाकरणं पुनरनिष्टप्रसङ्गात्	3.51
158	क्षणतत्क्रमयोः संयमाद्विवेकजं ज्ञानम्	3.52
159	जातिलक्षणदेशैरन्यतानवच्छेदात्तुल्ययोस्ततः प्रतिपत्तिः	3.53
160	तारकं सर्वविषयं सर्वथाविषयमक्रमं चेति विवेकजं ज्ञानम्	3.54
161	सत्त्वपुरुषयोः शुद्धिसाम्ये कैवल्यमिति	3.55
कैवल्यपादः		
162	जन्मौषधिमन्त्रतपःसमाधिजाः सिद्धयः	4.1
163	जात्यन्तरपरिणामः प्रकृत्यापूरात्	4.2
164	निमित्तमप्रयोजकं प्रकृतीनां वरणभेदस्तु ततः क्षेत्रिकवत्	4.3
165	निर्माणचित्तान्यस्मितामात्रात्	4.4
166	प्रवृत्तिभेदे प्रयोजकं चित्तमेकमनेकेषाम्	4.5
167	तत्र ध्यानजमनाशयम्	4.6
168	कर्माशुक्लाकृष्णं योगिनस्त्रिविधमितरेषाम्	4.7
169	ततस्तद्विपाकानुगुणानामेवाभिव्यक्तिर्वासनानाम्	4.8
170	जातिदेशकालव्यवहितानामप्यानन्तर्यं स्मृतिसंस्कारयोरेकरूपत्वात्	4.9
171	तासामनादित्वं चाऽऽशिषो नित्यत्वात्	4.10

172	हेतुफलाश्रयालम्बनैः संगृहीतत्वादेषामभावे तदभावः	4.11
173	अतीतानागतं स्वरूपतोऽस्त्यध्वभेदाद्धर्माणाम्	4.12
174	ते व्यक्तसूक्ष्मा गुणात्मानः	4.13
175	परिणामैकत्वाद्वस्तुतत्त्वम्	4.14
176	वस्तुसाम्ये चित्तभेदात्तयोर्विभक्तः पन्थाः	4.15
177	न चैकचित्ततन्त्रं वस्तु तदप्रमाणकं तदा किं स्यात्	4.16
178	तदुपरागापेक्षित्वाच्चित्तस्य वस्तु ज्ञाताज्ञातम्	4.17
179	सदा ज्ञाताश्चित्तवृत्तयस्तत्प्रभोः पुरुषस्यापरिणामित्वात्	4.18
180	न तत्स्वाभासं दृश्यत्वात्	4.19
181	एकसमये चोभयानवधारणम्	4.20
182	चित्तान्तरदृश्ये बुद्धिबुद्धेरतिप्रसङ्गः स्मृतिसंकरश्च	4.21
183	चितेरप्रतिसंक्रमायास्तदाकारापत्तौ स्वबुद्धिसंवेदनम्	4.22
184	द्रष्टृदृश्योपरक्तं चित्तं सर्वार्थम्	4.23
185	तदसंख्येयवासनाभिश्चित्रमपि परार्थं संहत्यकारित्वात्	4.24
186	विशेषदर्शिन आत्मभावभावनानिवृत्तिः	4.25
187	तदा विवेकनिम्नं कैवल्यप्राग्भारं चित्तम्	4.26
188	तच्छिद्रेषु प्रत्ययान्तराणि संस्कारेभ्यः	4.27
189	हानमेषां क्लेशवदुक्तम्	4.28
190	प्रसंख्यानेऽप्यकुसीदस्य सर्वथा विवेकख्यातेर्धर्ममेघः समाधिः	4.29
191	ततः क्लेशकर्मनिवृत्तिः	4.30
192	तदा सर्वावरणमलापेतस्य ज्ञानस्याऽऽनन्त्याज्ज्ञेयमल्पम्	4.31
193	ततः कृतार्थानां परिणामक्रमसमाप्तिर्गुणानाम्	4.32
194	क्षणप्रतियोगी परिणामापरान्तनिर्ग्राह्यः क्रमः	4.33
195	पुरुषार्थशून्यानां गुणानां प्रतिप्रसवः कैवल्यं स्वरूपप्रतिष्ठा वा चितिशक्तिरिति	4.34

List of Publications

RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-04
Issue-06
June-2019

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com[UGC Listed Journal]

सांख्य-योग दर्शन में प्रयुक्त परिभाषिक शब्दों के लिये ऑनलाइन सूचना निष्कर्षण तन्त्र

[1]अन्जू, [*2]चन्द्र, सुभाष

[1] पीएच.डी. (शोधार्थी), संस्कृत विभाग, कला संकाय, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, भारत
*[*2] सहायक आचार्य, संस्कृत विभाग, कला संकाय, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, भारत*

ARTICLE DETAILS

Article History
Published Online: 12 June 2019

Keywords
दर्शन परिभाषाकोश, परिभाषाकोश, सांख्य-योग दर्शन, सांख्यकोश, योगकोश आदि।

***Corresponding Author**
Email: subhash.jnu[at]gmail.com

ABSTRACT

संस्कृत जगत में प्रारम्भ से ही पारिभाषिक शब्दों के निर्माण और उपयोग का प्रचलन रहा है। ज्ञान की किसी विशेष विधा (कार्य क्षेत्र) में प्रयोग किये जाने वाले शब्दों की उनकी परिभाषा सहित सूची पारिभाषिक शब्दावली (glossary) या पारिभाषाकोश कहलाती है। पारिभाषिक शब्दों का प्रयोग जटिल तथ्यों की अभिव्यक्ति को सहज एवं सुगम बनाने के लिये किया जाता है। जिससे किसी भी शास्त्र को सरलतापूर्वक समझा जा सकता है। संस्कृत में कोश परम्परा के अन्तर्गत सर्वप्रथम शब्दावली के रूप में निघंटु प्राप्त होता है। जिसमें वैदिक शब्दों का संग्रह किया गया है। इस प्रकार के परिभाषाकोश किसी भी ग्रन्थ या शास्त्र को समझने में सहायक होते हैं। भारतीय दर्शन भी विभिन्न प्रकार के पारिभाषिक शब्दों का प्रयोग करता है। जिसका तात्पर्य दर्शन शास्त्र के किसी विशिष्ट अवधारणा को स्थापित करना होता है। परन्तु सामान्य रूप से वही शब्द किसी अन्य अर्थ को बताता है। भारतीय दर्शन से सम्बन्धित मुद्रित रूप में अनेक पारिभाषिक कोश उपलब्ध हैं। सूचना प्रौद्योगिकी के इस दौर में प्रत्येक व्यक्ति कम समय में ऑनलाइन सूचनाएं प्राप्त करना चाहता है। इसी उद्देश्य से सांख्य-योग दर्शन के पारिभाषिक शब्दों के लिये ऑनलाइन सूचना तंत्र विकास किया जा रहा है। जिसके माध्यम से इस प्रकार की ज्ञानार्जन सामग्री इंटरनेट के माध्यम से बस एक ही क्लिक में उपलब्ध हो सकती है। इस शोधपत्र का मुख्य उद्देश्य इस सिस्टम का प्रदर्शन करना है। जिससे कम्प्यूटर एवं ई-लर्निंग के इस वर्तमान परिवेश में संस्कृत के छात्र एवं शिक्षक तथा संस्कृत से इतर लोग भी सरलता पूर्वक सांख्य-योग दर्शन को समझने में समर्थ हो सकें। यह ऑनलाइन सर्च सिस्टम संस्कृत विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय की वेबसाइट http://cl.sanskrit.du.ac.in पर उपलब्ध है। यह सिस्टम अभी विकासाधीन है। अभी तक इस सिस्टम में कुल 50 पारिभाषिक शब्द शामिल हैं। यह सिस्टम मुद्रित एवं ऑनलाइन रूप में उपलब्ध सभी पारिभाषिक कोशों से बिल्कुल भिन्न है। क्योंकि इस सिस्टम द्वारा प्रदत्त पारिभाषिक शब्दों से सम्बन्धित सूचनाएं विस्तार में होती हैं साथ ही साथ प्रत्येक शब्दों के विभिन्न अर्थों की भी सूचनाएं विश्लेषण के रूप में प्राप्त होती हैं।

1. पृष्ठभूमि (Background)

प्रत्येक शब्द का विभिन्न विषयों में अलग-अलग अर्थ होता है। कभी कभी तो किसी विशिष्ट शब्द का प्रयोग किसी अवधारणा के लिये किया जाता है। जिसको समझने लिये अनेक वाक्यों या पूरा-पूरा पैराग्राफ की अवश्यकता पड़ती है। जिन्हें परिभाषाओं का निर्माण किया जाता है। बिना इन परिभाषाओं के ज्ञान के उस विषय को नहीं समझा जा सकता है। अतः किसी भी विषय को की पारिभाषिक शब्दावली का बड़ा ही महत्त्व है। सहज भाषा (Natural Language) की तुलना में किसी वैज्ञानिक, तकनीकी या आर्थिक विषय के वर्णन में यह विशेषता होती है कि उसमें संज्ञाओं (नाम) की भरमार होती है। किसी विशिष्ट विषय (Specialized Subject) को समझने-समझाने का काम पारिभाषिक शब्दावली के बिना कठिन ही नहीं, असम्भव भी हो जाता है। पारिभाषिक शब्दों के माध्यम से विचार-विनिमय आसान होने के साथ ही साथ है विचार-विनिमय दक्षतापूर्वक हो पाता है। दर्शन एक विशाल एवं गूढ़ विषय है। इसको समझने के लिये इससे सम्बन्धित परिभाषाओं का ज्ञान होना अवश्यक है। भारतीय दर्शन के अनेक शाखाएं हैं जिनमें एक शब्द अलग-अलग शाखाओं में अलग-अलग अवधारणा को समाहित करता है। अतः इनका ज्ञान होना अत्यावश्यक होता है।

सृष्टि के प्रारम्भ से ही मनुष्य विचारवान् रहा है। वह सदैव सत्य के अन्वेषण में व्यस्त रहता है। हम कौन हैं? कहाँ से आये हैं? जीवन का लक्ष्य क्या है? आदि इस प्रकार के प्रश्न मस्तिष्क में विद्यमान रहे हैं। कालान्तर से इन विचारों की विशाल परम्परा दर्शन रूप में प्रकट हुई। जिसमें प्रत्येक दर्शन के सिद्धान्त तत्त्व भिन्न हैं किन्तु इन सभी भारतीय दर्शनों का एक ही मूल उद्देश्य रहा है मनुष्य जीवन का उद्धार करना। ये सभी दर्शन मूल रूप से सूत्र शैली में निबद्ध है। इन सूत्रों के अर्थों को स्पष्ट करने की दृष्टि से अनेक प्रकरण ग्रन्थों का निर्माण हुआ जिसके फलस्वरूप अनेक क्लिष्ट शब्दों का समावेश होता चला गया। अब इन शब्दों के ज्ञान के बिना सभी दर्शनों को समझना कठिन सा हो गया। इस समस्या को भी दूर करने के लिये अनेक विद्वानों ने लगभग सभी भारतीय दर्शनों के लिये परिभाषाकोश एवं शब्दकोशों का निर्माण किया। ज्ञान की किसी विशेष विधा (कार्य क्षेत्र) में प्रयोग किये जाने वाले शब्दों की उनकी परिभाषा सहित सूची पारिभाषिक शब्दावली (glossary) या पारिभाषाकोश कहलाती है। पारिभाषिक शब्दों का प्रयोग जटिल

RRIJM 2015, All Rights Reserved

तथ्यों की अभिव्यक्ति को सहज एवं सुगम बनाने के लिये किया जाता है । इन पारिभाषिक शब्दों के ज्ञान के बिना सम्बन्धित दर्शन को समझना कठिन हो जाता है । भारत में आधुनिक पद्धति पर बने संस्कृत कोशों को दो वर्गों में विभक्त किया जा सकता है । इनमें एक विधा वह है जिसमें अंग्रेजी अथवा जर्मन आदि भाषाओं के माध्यम से संस्कृत के कोशग्रन्थों का निर्माण हुआ । इस पद्धति के प्रवर्तक अथवा आदि निर्माता पाश्चात्य विद्वान् थे । दूसरे नवीन पद्धति के अनुसार नूतन प्रेरणाओं को लेकर संस्कृत में ऐसे कोश बने जिसका माध्यम भी संस्कृत ही था । इस प्रकार के कोशों में विशेष रूप से वाचस्पत्यम् (तारानाथ, 1812-85), शब्दकल्पद्रुमः (वसु, 1967), कविकल्पद्रुमः, अमरकोशः (बालशास्त्री, 2012) आदि मुख्य कोशग्रन्थ की श्रेणी में आते हैं ।

इसी संदर्भ में सांख्य-योग दर्शन में प्रयुक्त पारिभाषिक शब्दों के लिए कोश का निर्माण किया जा रहा है । यह कोश मुद्रित रूप में तथा ऑनलाइन भी उपलब्ध होगा । आज के इस नवीनयुग में जीवन के लगभग प्रत्येक कार्य इन्टरनेट पर ही निर्भर है । बात ज्ञान प्राप्त करने की हो या दैनिक जीवन में उपयोग सम्बन्धि कार्यों जैसे- गूगल मैप द्वारा किसी भी स्थान पर अन्य व्यक्ति की सहायता बिना जाया जा सकता है । किसी वस्तु विशेष के इतिहास विशेष की जानकारी आदि प्राप्त करनी हो, दोनों ही परिस्थिति में लोग इन्टरनेट का अधिक प्रयोग करना पसन्द करते हैं । प्रत्येक मानव कम समय में अधिक ज्ञान प्राप्त करना चाहते हैं । ऐसे में यदि किसी छात्र या शिक्षक को सांख्य-योग दर्शन को जानना हो तो इसके पारिभाषिक शब्दों का ज्ञान ऑनलाइन कभी भी कहीं भी प्राप्त कर सकता है । भारतीय दर्शनों का एक ही लक्ष्य निर्धारित है अज्ञान से मानव को मुक्त कर उसे ज्ञान तथा मोक्ष प्राप्त करवाना है । समस्त दर्शनों का उत्पत्ति स्थल वेद ही है परन्तु फिर भी समस्त भारतीय दार्शनिक परम्परा को आस्तिक एवं नास्तिक के रूप में दो भागों में विभक्त किया गया है (उपाध्याय, 1979) । आस्तिक दर्शन परम्परा के दर्शन वेदों को प्रामाणिक रूप में स्वीकार करते हैं जबकि नास्तिक दर्शन वेदों का प्रामाण्य स्वीकार नहीं करते । आस्तिक एवं नास्तिक दर्शनों के वर्गीकरण को चित्र संख्या - 1 से समझा जा सकता है-

Figure 1: दर्शन वर्गीकरण

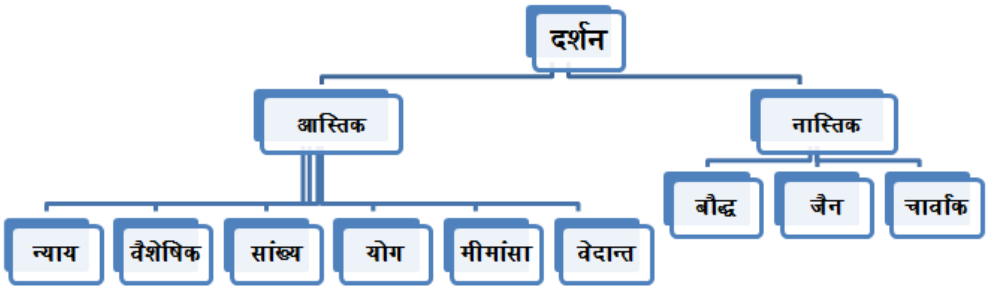

हिन्दू दार्शनिक परम्परा में विभिन्न प्रकार के आस्तिक दर्शनों के अलावा अनीश्वरवादी और भौतिकवादी दार्शनिक परम्पराएँ भी विद्यमान रहीं हैं । दर्शनों में षड्दर्शन अधिक प्रसिद्ध और प्राचीन हैं । षडदर्शनों को 'आस्तिक दर्शन' कहा जाता है । वे वेद की सत्ता को मानते हैं । आस्तिक दर्शन को विचारों की दृष्टि से दो भागो में विभक्त किया जा सकता है, प्रथमतः जो साक्षात् वेदों को ही अपना आधार बनाते हैं । जैसे- मीमांसा दर्शन वैदिक कर्मकाण्ड और वेदान्त दर्शन वैदिक ज्ञानकाण्ड पर आधारित है । द्वितीय जो वेदों की प्रमाणिकता को स्वीकार करते हुये नये विचारों को भी सम्मिलित करते हैं वे दर्शन है – सांख्य, योग, न्याय एवं वैशेषिक । नास्तिक दर्शन के अन्तर्गत आने वाले दर्शनों की विचारधारा के अनुसार दो भागों में बांटा जा सकता है । प्रथम चार्वाक; जो कि नास्तिक दर्शन में अग्रणी हैं । ये वेदों और उनके अनुयायियों की घोर निन्दा करते हैं। दूसरे बौद्ध और जैन दर्शन; जो संयत रूप से वेदों के मतों से अस्वीकृति व्यक्त करते हैं (उपाध्याय, 1984) ।

2. उद्देश्य (Objectives)

इस शोधपत्र का उद्देश्य सांख्य-योग दर्शन के पारिभाषिक शब्दों के लिये ऑनलाइन सूचना तंत्र का निर्माण करना है । जिसकी सहायता से कोई भी जिज्ञासु इन पारिभाषिक शब्दों का ज्ञान प्राप्त करके सम्बंधित दर्शनों में प्रवेश कर सकता है । इस सिस्टम के माध्यम से अन्य दार्शनिक ग्रन्थों के लिये भी ऑनलाइन सूचना तंत्र का निर्माण करने में सहायता मिल सकती है ।

3. सांख्य-योग ई-कोश की उपयोगिता (Utility of Samkhya-yoga E-Glossary)

विश्व अनेक प्रकार के कोशों का भण्डार है । अलग-अलग क्षेत्रों में विभिन्न कोशों का निर्माण हुआ है । उपर्युक्त सभी कोशग्रन्थ मुद्रित रूप में प्राप्त होते हैं । किन्तु प्रस्तुत सांख्य-योग कोश मुद्रित तथा ऑनलाइन दोनों रूपो में विकसित किया जा रहा है । जो लोग इन्टरनेट का प्रयोग नहीं कर पाते तथा कुछ इन्टरनेट के माध्यम से

RRIJM 2015, All Rights Reserved

==========
Language in India www.languageinindia.com **ISSN 1930-2940 Vol. 19:5 May 2019**
India's Higher Education Authority UGC Approved List of Journals Serial Number 49042
==========

साङ्ख्य-योग दर्शन ई-परिभाषाकोश

E-Glossary for Samkhya-Yoga Philosophy

Anju, Ph.D. Candidate
Subhash Chandra, M.Phil., Ph.D.

Abstract

Modern generation wants to get information and knowledge promptly over the smart phones, tablets and computer through the Internet. Enormous learning contents are available over the Web in English language, but very limited in Indian languages. In order to improve upon this situation and to make description, knowledge and analysis of contents in ancient classics, etc., the authors of this article have initiated the development of knowledge and complete information system of technical terms of Indian philosophical traditions described in Sanskrit language. The objective of this paper is to demonstrate and describe an online information search system for the technical terms of Samkhy-Yoga Philosophy (SYP). A Samkhya Yoga Darshan e-Paribhasha Kosh has been developed. This helps seeking proper knowledge of these philosophies through the technical terms of the SYP. The information of any technical terms of SYP can be obtained on a single click. The information includes the definition of the technical terms in Sanskrit language as per the source text. Hindi meaning of each definition, its characteristic as per the various original texts, and complete analysis (including interpretation) interlinked with other technical terms appear in analysis part. The system is available online at http://cl.sanskrit.du.ac.in of the Department of Sanskrit, Faculty of Arts and University of Delhi.

Keywords: Sāṃkhya Yoga Philosophy, Technical terms in Sāṃkhya Yoga philosophy

संक्षेप

आधुनिक परिवेश में कोई भी व्यक्ति इंटरनेट के माध्यम से सूचना एवं ज्ञानार्जन करना चाहता है । कम्प्यूटर, स्मार्ट मोबाइल एवं आईटी के माध्यम से किसी भी समय अध्ययन एवं ज्ञानार्जन संभव हो पाया है। कोई भी सूचना बस एक क्लिक में उपलब्ध हो जाती है । संस्कृतशास्त्रों के लिये ऑनलाइन सिस्टम एवं डेटा की अनुपलब्धता के कारण लोगों को पुस्तकों पर ही निर्भर रहना पड़ता है । संस्कृत भाषा में सन्निहित ज्ञान का अर्जन भी इस प्रकार से प्राप्त हो, इसके लिये अनेकों प्रयास किए जा रहे हैं । भारतीय दर्शन के सम्यक ज्ञान के लिये इसके विशिष्ट पारिभाषिक शब्दावली का ज्ञान होना अत्यावश्यक होता है । इनके ज्ञान के आधार पर ही किसी भी दर्शन में प्रवेश पाना सरल हो जाता है । इसी उद्देश्य से सांख्य-योग दर्शन ई-पारिभाषा कोश का विकास कार्य प्रारम्भ किया गया है । इस शोधपत्र का उद्देश्य प्रस्तुत सांख्य-योग दर्शन के तकनीकी शब्दों के माध्यम से इन दर्शनों का सम्यक ज्ञान कराना है, जिससे कि किसी भी इच्छुक व्यक्ति के लिये ई-परिभाषा कोश सरलता पूर्वक इन दशर्नों को समझने सहायक हो सके । यह सिस्टम परिणाम स्वरूप पारिभाषिक शब्द, उसका लक्षण विभिन्न मूल ग्रन्थों के अनुसार एवं सम्पूर्ण विश्लेषण (व्याख्या सहित) प्रदर्शित करता है । यह सिस्टम ऑनलाइन होने के कारण इसका प्रयोग कभी भी किसी भी समय किया जा सकता है । यह सिस्टम संस्कृत विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय की वेबसाइट http://cl.sanskrit.du.ac.in पर उपलब्ध है ।

खोजशब्द (Keywords): दर्शन पारिभाषिक शब्द, ई-परिभाषाकोश, सांख्य-योग परिभाषाकोश ।

1. पृष्ठभूमि (Background)

भारतीय वाङ्मय के अन्तर्गत कोश साहित्य का पर्याप्त विस्तार हुआ है । प्राचीन काल का प्रथम शब्द संग्रह निघण्टु है । इसमें वैदिक शब्दों का संग्रह पाँच अध्यायों में विभक्त है । निघण्टु को कोश साहित्य का प्रथम ग्रन्थ माना जाता है । इसके बाद अनेकों कोशों की रचना भारतीय वाङ्मय में हुई, यथा – वाचस्पत्यम् (तारानाथ, 1812-85), शब्दकल्पद्रुमः(वसु, 1967), कविकल्पद्रुमः, अमरकोशः (बालशास्त्री, 2012) आदि। प्रसिद्ध कोशकार श्री वामन आप्टे ने कोश शब्द के 'म्यान आवरण, भण्डार ढेर, पात्र, शब्दावली, शब्दार्थ संग्रह, वेदान्तानुसार अन्नमय आदि पञ्चकोश अर्थ दिये हैं । प्रकृत अनुसन्धान में कोश शब्द शब्दकोश, शब्दार्थ

E-Glossary and Search for Technical Terms of Sāṃkhya and Yoga Philosophy

[*]Anju, [#]Subhash Chandra

[*]Research Scholar, [#]Assistant Professor, [*,#]Department of Sanskrit, University of Delhi, Delhi & India. [*]anjusingh5710@gmail.com, [#]subhash.jnu@gmail.com

Abstract: In this era everyone wants to acquire information and increase the knowledge over the internet. Due to lack of the matters over the internet related to ancient Indian traditional knowledge system, people are unable to search and obtain the information. Therefore, an initiative has been taken to digitalize the technical terms of Samkhya-yoga philosophy. An E-Glossary and Search for Technical Terms of *Sāṃkhya* and *Yoga* Philosophy (SYP) system is also developed. Where anyone can acquire the knowledge of Technical Terms of SYP on a click. Without the knowledge of the technical terms of any discipline, it is very problematic to cognize. The developed system of technical terminology used in SYP will be very helpful to the researcher and students. The aim of the article is to create a complete information system of the technical terms of SYP. As a result, this system displays the technical terms and its definition with complete analysis. Developed system is available online on the departmental website at "http://cl.sanskrit.du.ac.in." and can be accessed 24*7 from anytime and anywhere.

Keywords — Online Glossary, Sāṃkhya-Yoga Philosophy, Technical Terms, Online Search, Glossary etc.

I. INTRODUCTION

Glossary is also known as a vocabulary. An alphabetically prepared list of the definitional words in a specific field of information with the explanations for those definitional words is called Glossary. In a simple word, a glossary covers descriptions of thoughts, related to a specific domain of learning. In this paper glossary referees to the SYP technical terms and knowledge. The concept of the glossary is broadly discussed in the Sanskrit tradition. *nighaṇṭu* by *Yaska* (around 4th c. BCE) is the first word collection of the ancient period. *Nighaṇṭu* is one of the oldest repository of the words that is classified into thematic classifications, often with brief explanations. Particular collections are also called *nighaṇṭava*. In this, the collection of Vedic words has been divided into five chapters. It is considered as the first volume of glossary literature. After this many dictionaries were developed in Sanskrit literature, such as "*Vachaspatyam* by Taranath Bhattacharya: A Comprehensive Sanskrit Dictionary" [8], "*Shabda Kalpadruma* by Sir Raja Radhakanta Deb Bahadur: A Comprehensive Sanskrit Dictionary" [7], "The practical Sanskrit-English dictionary" [10]. *Amarakośaḥ* by Amar Singh [9] etc. These dictionaries are available in the book form need to be digitalized. In online glossary, it is easy to search any words and obtain the information on a click. An e-Glossary of SYP is being created in view of the same objective. The SYP are two important orthodox schools of Indian Philosophy. Their principles could be traced to the earliest available literary sources, the Vedas, which are not only repositories of ancient Indian wisdom, but also constitute a store house of all orthodox schools of Indian Philosophy. The primary function of the SYP, like other systems of Indian Philosophy, is to find a way out of World, the three-fold pain (*trividhaduḥkha*) and restore *puruṣa* to its original condition of isolation from *prakṛti*. This cannot be achieved in the absence in insight in to the factors that bind *puruṣa* to *prakṛti* and those which contribute to its release [26]. *Sāṃkhyasūtra* is the key text of *Sāṃkhya* philosophy. It has 6 chapters and 527 Sutras. The present collection of the 100 technical terms of *Sāṃkhya* has been collected from the *Sāṃkhyasūtra*. *Patanjayyogadasrhan*, *vyāsabhāṣya*, *tattavavaishardi*, *yogavartika* and *bhojvritti* are the key text of yoga philosophy. The best interpretation of *yogasutra* is obtained in *vyāsabhāṣya* written by *vyāsmuni*. *yogasutra* has 4 chapters and 195 sutras. The 295 technical terms are collected from this text related to yoga philosophy.

Table 1: Data of Technical Terms

Philosophy	Chapters	Formulas	Technical terms
sāṃkhya	6 chapters	527	100
Yoga	4 (*pād*)	195	295

 DOI : 10.18231/2454-9150.2019.0351 © 2019, IJREAM All Rights Reserved.

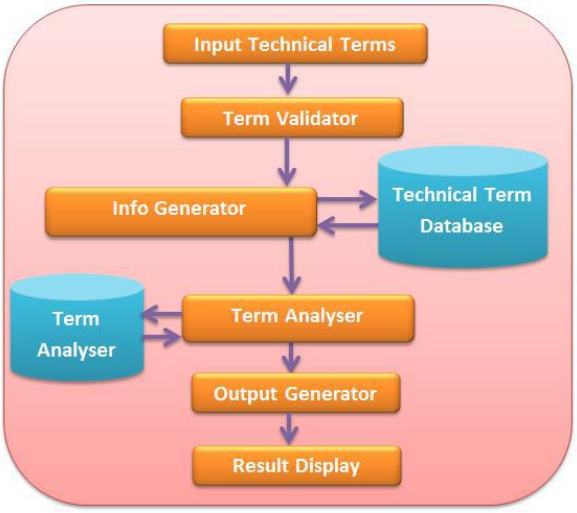

Figure 1: Methodology

There are 395 technical terms are collected from SYP and currently information can be mined for 60 terms and other are being developed. The System accepts the input through an interface. The input may be given in Devanagari Unicode in a text area or may be selected from a given list. After submitting on the button, system prints the result on same page with the detailed reference and analysis as per the key texts. Sample of the input mechanism and result shown in fig 2 and 3.

The paper is divided in to six sections. Section one talk about the brief introduction of the system, glossary, SYP and result. Section two provides brief survey of related researches. Section third elaborate the material used for research and also talk about methodology used for mining the information. Section four explain the features and technical details of the system. Section five describe result and discuss the result. Finally section six give the direction for future research.

II. Review of Literature

Today, the demand of technology is enhancing day by day, everyone desires prompt material through the internet even over the smart phone as well. In India the work on Computational linguistics has started in 1980s. But for Sanskrit language, many organizations are working to development such types of system to preserve, digitalize and analyze the Sanskrit texts. The quality in outdated teaching and learning in the field of education is being supported by the E-learning and online learning because of high demand of the information technology. Numerous scholars and organizations have started working on E-learning to demonstrate and teach Sanskrit language. The School of Sanskrit and Indic Studies of Jawaharlal Nehru University, New Delhi, Department of Sanskrit, University of Hyderabad, Hyderabad, IIT Mumbai and Department of Sanskrit, University of Delhi are the key educational organizations for investigation on computational Sanskrit. The School of Sanskrit and Indic Studies of Jawaharlal Nehru University has been started working in the field of Sanskrit Computational linguistic since 2002. Indian Institute of Technology, Centre for Development of Advanced Computing (CDAC), University of Hyderabad and University of Delhi are the main research institutes which are doing research and development in the filed. Jawaharlal Nehru University has worked on Dictionary of Sāṁkhya, Yoga & Vedanta [15], Yoga-sūtra index [17], Yoga Shabadkosh [20], Medinikosh [16]. These systems are available online. They are also focusing on Sanskrit language analysers [9-10], e-text creation and Sanskrit literature search [11], online indexing for Sanskrit text [12], language generation tools, multimedia based E-learning tools etc. Sanskrit Studies,

Department of Sanskrit, University of Delhi has been also started the work in the field of Computational Sanskrit since 2014. Main highlights of this department are *Swagatam* [21]. Swagatam includes various tools *Taddhita* [16] and *Sanādyanta* Analyzer [17], Sanskrit Meter Information System [18], Vedic Literature Search, *Pauranic* Search System [19]. *Sāṃkhya*-yoga online indexing [20] and Verb Formation System [27] etc.

University of Hyderabad, Hyderabad has also initiated research and development in the field [13-15].

Above review of research works clarified that there is no enough development is dine related to online system for analysis of the philosophical terms. However the lexical databases of the each branch of the philosophy are available in printed forms as *paribhāṣā koṣas* (dictionaries) text [10-14]. A list of the philosophical terms is also available for few terms of philosophy [18]. The History and Literature of *Sāṃkhya* of the Encyclopedia of Indian Philosophies is also available [19]. But the online search system for the technical terms of SYP is not available.

III. Material and Methods

Sāṁkhya-sūtra [1] and *Sāṁkhyakārikā* [2], *Yogasūtra* [3], *Vyāsabhāṣya* [4], *Bhojavṛtti* [5] and *Yogavārtika* [6] are selected as primary source data and text for creation of database to produce the information. These texts has also used as prime resources of the research.

Generally data mining methodology has been used for analysis and interpretation mechanism of terminology. Information of the SYP are kept in a database with broad features in UTF-8 Devanagari script. The searching process begins with listing of technical terms stored in the concern database. Module Info_generator access the database to retrieve the information of given input text. The data stored in dictionary format. Where system search in keys, if match with any key then returns with the corresponding value. The information are stored as a value. Here the keyword matching methods are applied to search information in SYP database.

 DOI : 10.18231/2454-9150.2019.0351 © 2019, IJREAM All Rights Reserved.

VEDA AS GLOBAL HERITAGE
SCIENTIFIC PERSPECTIVES

Editors

Girish Nath Jha

Sudhir Kumar Arya

Abhijit Dixit

Atul Kumar Ojha

VIDYANIDHI PRAKASHAN

DELHI

9. सांख्य योगदर्शन के पारिभाषिक शब्दों के विश्लेषण हेतु वेबतन्त्र का विकास
अञ्जु एवं सुभाष चन्द्र 123

10. संस्कृत सनाद्यन्त विश्लेषक
भूपेन्द्र कुमार एवं सुभाष चन्द्र 131

11. वैदिक ब्रह्मचारी और लोकाचार विज्ञान
गजेन्द्र कुमार 141

12. आयुर्वेद में उपशय चिकित्सा एवं व्याधिक्षमत्व : आधुनिक विज्ञान के सन्दर्भ में
ईवाना वशिष्ठ 148

13. श्रीमद्भगवद्गीता का दार्शनिक सिद्धान्त एवं उसका गहन पारिस्थितिकीय महत्त्व
मनीषा कुमारी 155

14. वाक्पारुष्य एवं मानहानि
निधि त्रिपाठी 161

15. वैदिक देवताओं का वैज्ञानिकत्व
प्रवीण कुमार द्विवेदी 171

16. संस्कृत साहित्य में प्रयुक्त तद्धितान्त पदों की पहचान एवं विश्लेषण
साक्षी एवं सुभाष चन्द्र 187

17. भारतीय एवं पाश्चात्य काव्यशास्त्र में स्वच्छन्दतावाद
वशिष्ठ बहुगुणा 197

18. अथर्ववेदीय तक्मनाशन सूक्त का आधुनिक सन्दर्भ में विमर्श
वेदांशु 216

19. ई-शिक्षण हेतु संस्कृत क्रियापदों की रूपसिद्धि के लिए वेब तन्त्र का विकास
विवेक कुमार एवं सुभाष चन्द्र 224

20. वैदिकव्याकरणे निर्दिष्टसन्धीनां चिन्तनम्
अभिजित दीक्षितः 234

21. पुनर्जन्मविज्ञानम्
अमित कुमार डे 248

9

सांख्य-योगदर्शन के पारिभाषिक शब्दों के विश्लेषण हेतु वेबतन्त्र का विकास

अञ्जु एवं सुभाष चन्द्र

संक्षेप (Abstract)

संस्कृत वाङ्मय में प्राचीनतम ग्रन्थ वेद हैं। वेदों के अर्थावबोध हेतु ब्राह्मण, उपनिषदादि और दर्शन शास्त्र के रूप में दो प्रयास हुए। वेद ज्ञान को तर्क से समझने के लिए छः दर्शन शास्त्र लिखे गए। सभी दर्शन मूल वेदज्ञान को तर्क से सिद्ध करते हैं। प्रत्येक दर्शनशास्त्र का अपना-अपना विषय है। दर्शन शब्द 'दृश्' धातु से निष्पन्न होता जिसका अर्थ होता है, सम्यक्तया देखना अथवा किसी गूढ विषय पर विचार करना। भारतीय दर्शन संख्या में 9 हैं जिनमें से छः आस्तिक और तीन नास्तिक दर्शन हैं। आस्तिक दर्शन हैं – पूर्वमीमांसा, वेदान्त, सांख्य, योग, न्याय एवं वैशेषिक। षड्दर्शन उन भारतीय दार्शनिक एवं धार्मिक विचारों के मंथन का परिपक्व परिणाम है, जो हजारों वर्षों के चिन्तन से उभरा और हिन्दू (वैदिक) दर्शन के नाम से प्रचलित हुआ। नास्तिक दर्शन के रूप में बौद्ध, जैन तथा चार्वाक परिगणित हैं। मेरे शोधपत्र का उद्देश्य सांख्य-योग दर्शन के पारिभाषिक शब्दों के विश्लेषणात्मक अध्ययन के लिए वेब तन्त्र का विकास करना है। इस शोध के माध्यम से सांख्य-योग दर्शन के पारिभाषिक शब्दों का विश्लेषण कर ज्ञान सामग्री ऑनलाइन उपलब्ध हो सकेगी। जिससे सांख्य-योग दर्शन को समझने के इच्छुक व्यक्तियों को सहायता मिल सकेगी क्योंकि व्याकरण में ई-शिक्षण हेतु कई प्रकार के टूल प्राप्त होते हैं, परन्तु दर्शन क्षेत्र में इस तरह का प्रयास सर्वथा नवीन है, और आशा है कि संस्कृत जगत् के लिए यह प्रयास लाभकारी सिद्ध होगा।

खोजशब्द (Keywords) : सांख्य-योग दर्शन, सांख्य-योग दर्शन के पारिभाषिक शब्द, पारिभाषिक शब्द, Technical terms in Sankhyayoga philosophy etc.

पृष्ठभूमि (Background)

दर्शन का मानव जीवन के साथ अत्यन्त घनिष्ठ सम्बन्ध रहा है, क्योंकि जीवन का कोई भी पक्ष दर्शन की परिधि के बाहर नहीं हो सकता। सृष्टि के आरम्भ में जब से मानव ने विचार करना प्रारम्भ किया, तभी से उसके कुछ अनुभव स्थायी आकार लेने लगे, वे ही स्थायी आकार से आकारित अनुभव कालान्तर में उसके दर्शन रूप में परिवर्तित हो गए। समस्त दर्शनों की उत्पत्ति वेदों से ही हुई है, फिर भी समस्त भारतीय दर्शन को आस्तिक एवं नास्तिक दो भागों में विभक्त किया गया है (उपाध्याय, 1979)। जो ईश्वर तथा वेदोक्त सिद्धान्तों पर विश्वास करता है, उसे आस्तिक माना जाता है; जो नहीं करता वह नास्तिक है। आस्तिक या वैदिक परम्परा के 6 दर्शन हैं : (1) मीमांसा (2) न्याय (3) वैशेषिक (4) सांख्य (5) योग (6) वेदान्त। नास्तिक या अवैदिक दर्शन 3 हैं: (1) चार्वाक दर्शन (2) बौद्ध दर्शन (3) जैन दर्शन। प्रायः लोग समझते हैं कि जो ईश्वर को नहीं मानता वह नास्तिक है पर यहाँ नास्तिक का अर्थ वेदों को न मानने से है इसलिए ऊपर दिए गए तीनों दर्शन नास्तिक दर्शन में आते हैं।

वेद ज्ञान को समझने व समझाने के लिए दो प्रयास हुए: प्रथम दर्शनशास्त्र तथा अन्य ब्राह्मण और उपनिषदादि ग्रन्थ। वेद ज्ञान को तर्क से समझाने के लिए छः दर्शन शास्त्र लिखे गये। सभी दर्शन मूल वेद ज्ञान को तर्क से सिद्ध करते हैं।

प्रत्येक दर्शन शास्त्र का अपना-अपना विषय है। दर्शनशास्त्र सूत्र रूप में लिखे गये हैं। प्रत्येक दर्शन अपने लिखने का उद्देश्य अपने प्रथम सूत्र में ही लिखता है, तथा अन्त में अपने उद्देश्य की पूर्ति का सूत्र देता है।

सम् उपसर्ग पूर्वक √ ख्या प्रकथ ने अर्थ में प्रयुक्त √ ख्या धातु से अङ् प्रत्यय करने के बाद टाप् करके संख्यापद की निर्मिति होती है (शास्त्री एवं शास्त्री, 2012)। जिसका अभिप्राय है – गणना। पुनः संख्या पद से 'तस्येदम्' (अष्टाध्यायी - 4.3.120) सूत्र द्वारा अण्प्रत्यय करने पर सांख्यपद निष्पन्न होता है, जिसका अर्थ है – गणना से सम्बन्धित अथवा गणना से जानने योग्य, क्योंकि सांख्य दर्शन में प्रकृति से लेकर स्थूल-भूतपर्यन्त 25 तत्वों की संख्या की गणना की गयी है, इसीलिए इस दर्शन का नाम सांख्य पडा। सांख्य सृष्टि रचना की व्याख्या एवं प्रकृति और पुरुष की पृथक्-पृथक् व्याख्या करता है।[1] सांख्य सर्वाधिक पौराणिक दर्शन माना जाता है।

---

1. प्रकृतेर्महाँस्ततोऽहङ्कारस्तस्माद्गणश्च षोडशकः।

DS-IASTConvert: An Automatic Script Converter between Devanagari and International Alphabet of Sanskrit Transliteration

[1]Subhash Chandra, [2]Vivek Kumar, [3]Anju

[1]Assistant Professor, [2]Doctoral Research Scholar, [3]Doctoral Research Scholar
[1]Department of Sanskrit,
[1]University of Delhi, New Delhi, India

Abstract: Sanskrit is considered as one of the oldest language in the world and belongs to Indo-Aryan language family. Ancient Sanskrit texts are typically written, interpreted and available in Devanagari Script (DS). Most of cases it is also being written in DS only in India. Not only the Sanskrit language, even most of the Indian languages also write in the DS. The DS is an abugida (alphasyllabary) used in India and Nepal. It writes from left to right, has a strong preference for symmetrical rounded shapes within squared outlines and is recognizable by a horizontal line that runs along the top of full letters. It is also originally very different from other Indic scripts. Deeply it is very similar except for angles and structural emphasis. Due to very strong knowledge system in the field of Science and Technology in Ancient India, western scholars had taken the interest to study the Sanskrit language. But they were unable to read and understand DS easily therefore, an effort were initiated by the scholars to map the DS in Roman Scripts. Finally, in 19th century the International Alphabet of Sanskrit Transliteration (IAST) was proposed by Charles Trevelyan, William Jones, Monier Monier-Williams and other scholars. It is presented and formalized in the Transliteration Committee of the Geneva Oriental Congress in September, 1894. The committee has approved IAST for use. This paper presents DS-IASTConvert: An Automatic Script Converter between Devanagari Script and International Alphabet of Sanskrit Transliteration. It is an online tool to convert Unicode DS text to IAST and IAST to Unicode DS text. The transliteration is based on an algorithm with the set of rules developed and stored in text file in tabular format. The innovation of this tool is the speed of conversion, online 24*7 availability, simplicity, easy to use, user friendly, automatically detection of script and also helps to learn the conversion scheme for manual conversion. This tool is very useful for Sanskrit researchers. It is available online for public use at no cost on http://cl.sanskrit.du.ac.in/ transliteration.

IndexTerms: **Devanagari to IAST, IAST, Devanagari, Transliteration, Diacritical Marks, DS-IASTConvert, Devanagari to Roman.**

I. BACKGROUND

Transliteration is a system that convey the same or as nearly as possible by means of one set of letters or characters the pronunciation of the words in languages written and printed in a totally different script (Karakos, 2003). Most of major Indian languages are written DS, it includes Hindi, Sanskrit, Marathi, Konkani, Nepali, Maithili, Sindhi, Bodo, Dogri, Santhali, Bhojapuri, Awadhi etc. (Bright, 1996). There are several methods of transliterations from DS to the Roman Script (RS). The process of transliterations from DS to theRS is known as Romanization of DS. It shares similarities, although no single system of transliteration has emerged as the standard (Sharma, 1972). IAST is a subset of the ISO 15919 standard, used for the transliteration of Sanskrit, Prakrit and Pāḷi into Roman script using diacritics. It is widely used standard for Romanization of Sanskrit, Prakrit and Pāḷi. It uses diacritics to disambiguate phonetically similar but not identical Sanskrit glyphs. Dental and retroflex consonants are disambiguated with an under dot symbol. An important feature of IAST is that it is reversible without any loss. IAST transliteration may be converted to DS without any ambiguity and with correct DS spelling. Many Unicode fonts fully support IAST display and printing. IAST is a transliteration scheme that allows the lossless Romanization of Indic scripts as employed by Sanskrit and related Indic languages.

IAST makes it possible for the reader to read the Indic text unambiguously, exactly as if it were in the original Indic script. It is this faithfulness to the original scripts that accounts for its continuing popularity amongst scholars. University scholars commonly use IAST for publications that cite textual material in Sanskrit, Pāḷi and other classical Indian languages. IAST is also used for major e-text repositories such as SARIT, Muktabodha, GRETIL, and sanskritdocuments.org. The IAST scheme represents more than a century of scholarly usage in books and journals on classical Indian studies. By contrast, the ISO 15919 standard for transliterating Indic scripts emerged in 2001 from the standards and library worlds; it includes solutions to problems such as representing Old Indo-Aryan and New Indo-Aryan languages side by side in library catalogues, etc. In IAST letters are modified with diacritics: long vowels are marked with an over line, vocalic (syllabic) consonants and retroflexes have an under dot.

A list of the letters in DS and IAST with phonetic values in International Phonetic Alphabet (IPA), an alphabetic system of phonetic notation based primarily on the Latin alphabet is shown in table 1. The list is valid for Sanskrit but can be fit for Hindi and other modern languages that use Devanagari script, with few phonological changes. This tool allows you to easily change the transliteration of single words or even entire texts. This is particularly very helpful when you want to produce Devanagari script or Roman script with diacritical marks. With the copy & paste function, you can then enter the generated words or texts in a word processing program of your choice.

II. OTHER ROMAN TRANSLITERATION METHODS

There are several other transliteration schemes from Devanāgarī scripts to the Roman script are available and being used for transliteration from DS to RS. Two major schemes are very popular for Indic script transliteration other than IAST. First schemes with diacritics that uses diacritics to map the letters. And other scheme is Indian languages TRANSliteration (ITRANS) which is an American Standard Code for Information Interchange (ASCII) transliteration scheme for Indic scripts and widely uses for DS. ASCII is a character encoding standard for electronic communication. ASCII codes represent text in computers, telecommunications equipment, and other devices. Most modern character-encoding schemes are based on ASCII, although they support many additional

characters. Under the schemes with diacritics includes two schemes first the National Library at Kolkata Romanization and second ISO 15919 schemes. And under ASCII schemes there are Harvard-Kyoto (HK), ITRANS scheme, Velthuis, Sanskrit Library Phonetic (SLP1), WX Notation are included.

Table 1 Mapping Alphabet List in DS and IAST

Vowels				
DS	**IAST**	**DS**	**IAST**	
अ	a	ऌ	ḹ	
आ	ā	ए	e	
इ	i	ऐ	ai	
ई	ī	ओ	o	
उ	u	औ	au	
ऊ	ū	अं	ṃ	
ऋ	ṛ	अः	ḥ	
ॠ	ṝ	ऽ	'	
ऌ	ḷ			

Consonants									
Velars		**Palatals**		**Retroflexes**		**Dentals**		**Labials**	
DS	**IAST**	**DS**	**IAST**	**DS**	**IAST**	**DS**	**IAST**	**DS**	**IAST**
क	ka	च	ca	ट	ṭa	त	ta	प	pa
ख	kha	छ	cha	ठ	ṭha	थ	tha	फ	pha
ग	ga	ज	ja	ड	ḍa	द	da	ब	ba
घ	gha	झ	jha	ढ	ḍha	ध	dha	भ	bha
ङ	ṅa	ञ	ña	ण	ṇa	न	na	म	ma
ह	ha	य	ya	र	Ra	ल	la	व	va
		श	śa	ष	ṣa	स	sa		

The National Library at Kolkata Romanization, intended for the Romanization of all Indic scripts, is an extension of IAST. It differs from IAST in the use of the symbols ē and ō for ए and ओ. A List of DS to National Library at Kolkata Romanization scheme is shown in table 2. ISO 15919 is a standard transliteration convention not only for Devanagari but for all South-Asian languages was codified in the ISO 15919 standard of 2001, providing the basis for modern digital libraries that conform to International Organization for Standardization (ISO) norms (Stone, 1998). ISO 15919 defines the common Unicode basis for Roman transliteration of South-Asian texts in a wide variety of languages/scripts. ISO 15919 uses diacritics to map the much larger set of Brahmic graphemes to the Latin script. The Devanagari-specific portion is very near to IAST. A List of DS to ISO 15919 transliteration scheme is shown in table 2.

Harvard-Kyoto (HK) is very similar to IAST. It does not contain any of the diacritic marks. Instead of diacritics, Harvard-Kyoto uses capital letters to represent the long vowel. The list of DS to HK transliteration scheme is shown in table 2. The Indian languages TRANSliteration (ITRANS) is an ASCII transliteration scheme for Indic scripts, particularly for DS. ITRANS scheme is an extension of Harvard-Kyoto (Chopde, 2009). ITRANS transliteration scheme for DS is shown table 2. The Velthuis system of transliteration is an ASCII transliteration scheme for the Sanskrit language from and to the Devanagari script. It was developed by Frans Velthuis, a scholar living in Groningen, Netherlands, who created a popular, high-quality software package in Latex for typesetting Devanāgarī. It does not use capital letters as compared to Harvard-Kyoto or ITRANS schemes (Velthuis & Pandey, 1991 and Pandey, 1998). The list of DS to Velthuis transliteration scheme is shown in table 2. The Sanskrit Library Phonetic Basic encoding scheme (SLP1) is an ASCII transliteration scheme for the Sanskrit language from and to the Devanagari script. It always uses a single character (Scharf, & Hyman, 2009). The list of DS to SLP transliteration scheme is shown in table 2.

WX notation is a transliteration scheme for representing Indian languages in ASCII is another scheme. This scheme originated at IIT Kanpur for computational processing of Indian languages, and is widely used among the natural language processing (NLP) community in India (Bharati, Chaitanya, Sangal & Ramakrishnamacharyulu, 1995). The list of DS to WX notation transliteration scheme is shown in table 2.

Table 2 Other Roman Transliteration Methods

Vowels							
DS	**IAST**	**ISO15919**	**HK**	**ITRANS**	**Velthuis**	**SLP1**	**WX**
अ	a	A	a	a	a	a	a
आ	ā	Ā	A	A/aa	aa	A	A
इ	i	I	i	i	i	i	i
ई	ī	ī	I	I/ii	ii	I	I
उ	u	u	u	u	u	u	u
ऊ	ū	ū	U	U/uu	uu	U	U
ए	e	ē	e	e	e	e	e

Automatic Morphological Derivational Process for Sanskrit using Rule and Example Based Hybrid Approach

Subhash Chandra, Assistant Professor, Department of Sanskrit, University of Delhi, Delhi & India,
Email: subhash.jnu@gmail.com
Vivek Kumar, Research Scholar, Department of Sanskrit, University of Delhi, Delhi & India
Email: vishnorapatyam@gmail.com
Anju, Research Scholar, Department of Sanskrit, University of Delhi, Delhi & India
Email: anjusingh5710@gmail.com

Abstract: In linguistics morphological derivational is the process of the generation new words from a stem or root. There are a number of methods of word formation such as derivation, compounding, blending in Grammar of the particular language to forming new words from an existing root word by adding prefix, suffix or infix. Sanskrit is morphologically very rich language. There are two types of Sanskrit morphology Nominal and Verbal. Therefore, unlimited numbers of forms can be generated from a single root or stem. Learning of derivational process of Sanskrit is challenging and essential to understand the text. Morphological derivation process is generally teaching in all Indian university offering Sanskrit courses at Under Graduate (UG) and Post Graduate (PG) level. Information Technology (IT) has fundamentally changed the methods of teaching and learning. E-learning is playing very important role in classroom teaching and boosting teaching and learning process. Objective of the paper is to demonstrate online tools for automatic derivational process for Sanskrit morphology based on Pāṇinian *Aṣṭādhyāyi* (AD) rules described in *Siddhāntkaumudī* (SK) by *Bhaṭṭoji Dīkṣita*. Tools are able to generate and compile whole derivational process automatically using combining rule and example based hybrid approach based on Pāṇinian AD. System accepts Sanskrit word in Devanagari UTF-8 Unicode and produces the recognition, analysis and derivational process based on rules developed and stored in the database. The system is available online at http://cl.sanskrit.du.ac.in.

Keywords — Sanskrit Derivational Process, Sanskrit Morphology, E-learning tools for Sanskrit, Innovative Learning, Online Learning, Word Formation Process etc.

I. INTRODUCTION

The paper is divided in to five sections. Section one introduces the paper, section two describe the review of literature in the field, section three talk about the materials and methods used in the research. The section four talk about the features and components of the system. Section five discussed the result and discussion.

Sanskrit is considered one of the oldest language in the world, with a continuous production of literature in all fields of human attempt over the development of four millennia. Sanskrit has very powerful linguistics tradition is proposed and compiled by Pāṇini in AD [1] around the fourth century B.C.E. There are huge number of commentaries were written on AD. SK [2] is a notable Sanskrit commentary by Bhaṭṭoji Dīkṣita around early 17th century on the AD and is believed to be more popular than Pāṇini's AD. It is a rearrangement of the AD's sutras under proper heads and as per the word formation process needs. It also offers description that is orderly and easy to follow and learn the Sanskrit Grammar. In SK the sutras of AD are arranged in such manners that deals with the all parts of Sanskrit Grammar e.g. rules of interpretation, *sandhis*, declensions, formation of feminine, case endings, compounds, secondary derivations, conjugation, primary suffixes, Vedic grammar and accents etc.

Sanskrit grammar based on *laghusiddhāntkaumudī* (LSK) by *Varadarāj* [3] and SK are being taught in all universities offering Sanskrit courses at UG and PG level. Learning the derivational process of Sanskrit morphology is very

 © 2018, IJREAM All Rights Reserved.

complicated and challenging task. Information Technology (IT) has fundamentally changed the methods of teaching and learning. In the age of IT everything is transforming into Digital. Everyone wants to access information over the computer and smart phones via Internet. The development E-learning tools for Sanskrit are very essential and demand of the age. E-learning education research and development now focuses on the inclusion of new technological features and the exploration of software standards [4]. With the development of the Internet, online learning has attracted the attention of educators. Fundamentally, E-learning is an alternative way to teach and learn the various course contents [5]. Web based teaching over the Internet using computer or a smart phone has completely transformed the teaching model. Computer is the possible liberators of the teaching and learning system because it can be used to personalize teaching and learning. It may design for learning according to knowledge and requirements and record the achieved improvement [4].

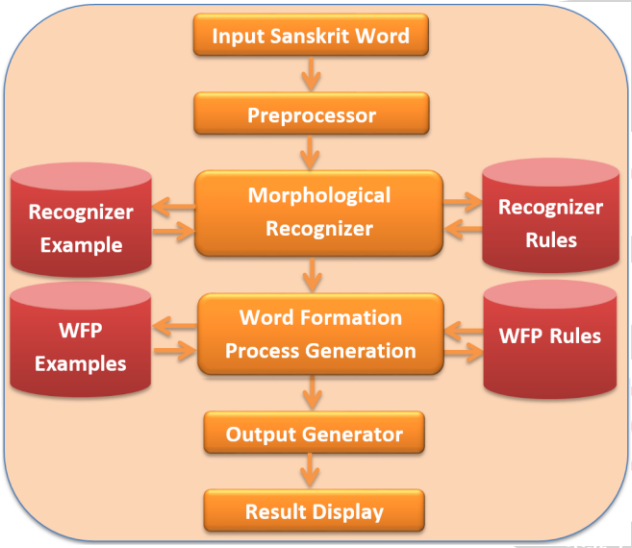

Fig. 1 Architecture of the system and methodology of Nominal Derivational Process

It is a primary effort towards developing computational tools for Sanskrit grammar teaching in higher education. Part of this initiative a collection of online tools for automatic derivational process in Sanskrit language based on AD rules described in SK is demonstrated in this paper. Tools include Sanskrit Derivational (*rūpa siddhi prakriyā*) process of Nominal (*subanta*) and Verbal (*tiṅanta*) Morphology. The tools have been developed and tested with good accuracy. As the developed system is based on Pāṇinian AD therefore the accuracy of the system is good. It is also using by the Sanskrit students and teachers for classroom teaching and learning derivational process of Sanskrit. The system is also very useful for self-teaching, learning and practicing derivational process of Sanskrit noun and verb forms.

In Sanskrit there are two types of morphological category nominal (*subanta*) and verbal (*tiṅanta*) [6-7]. These forms are derived by inflecting the stems with suffixes. Nominal morphology can be primary forms (*kṛdanta*) and secondary forms (*taddhitānta*), compounds (*samāsa*), feminine forms (*strīpratyayānta*) etc. According to Pāṇini, there are 21 nominal suffixes (seven *vibhaktis* and combination of three numbers = 21), which are attached to the nominal bases called *prātipadika* according to syntactic category, gender and ending of the character of the base word [7]. Sanskrit nominal forms are very complex [1]. Verbal morphology contains all verbal forms. It can be primary derived from approximately 2014 verb roots with 18 suffixes in 10 *lakāras* and 3 numbers. There verb roots classified in 10 groups (*gaṇas*) based on the structure of the particular verb forms. The verb roots can also have 12 secondary (*sanādyanta*) derivational suffixes [1, 8]. A single verb root may have approximately unlimited numbers of forms may be generated based on tense, aspect, number, addition of prefixes (*upasargas*) etc.

The main objective of this paper is to demonstrate developed system for automatic derivational process for Sanskrit morphology.

II. REVIEW OF LITERATURE

There are no enough advancement has been done in this field of building useful E-learning tools in higher education in Sanskrit language. Now due to advancement of technology there are huge demands of the online tools and field has become more applied and researchers are becoming more interested in E-learning focusing in higher education. Due to increasing demand of the information technology the quality in traditional teaching in the field of education is being supported by the E-learning.

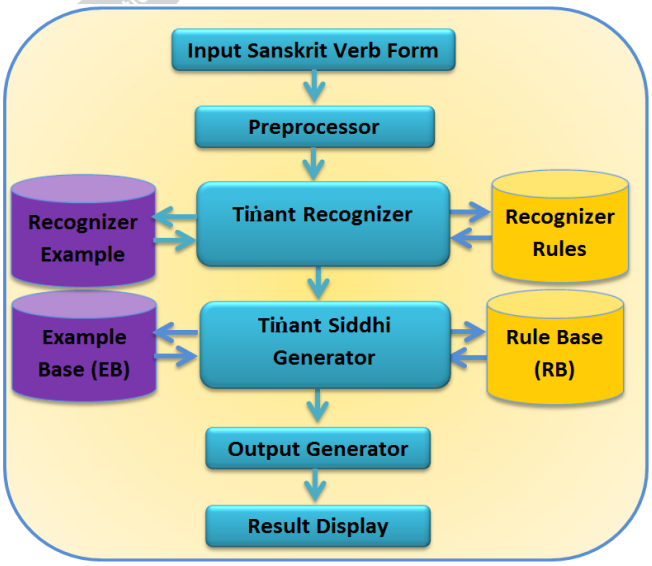

Fig. 2 Architecture of the system and methodology of Verb Derivational Process

Many researchers and institutes have started working on E-learning to teaching Sanskrit language. In the field of Computational linguistics and language technology Jawaharlal Nehru University has started working since

© 2018, IJREAM All Rights Reserved.

RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-03
Issue-11
November -2018

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com [UGC Listed Journal]

सांख्य-योग दर्शन परिभाषा डेटाबेस एवं ऑनलाइन खोज

[1]अञ्जु, [*2]चन्द्र, सुभाष

[1] *पीएच.डी. (शोधार्थी), संस्कृत विभाग, कला संकाय, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, भारत*

[*2] *सहायक आचार्य, संस्कृत विभाग, कला संकाय, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, भारत*

ARTICLE DETAILS

Article History
Published Online: 10 November 2018

Keywords
सांख्य-योग दर्शन, सांख्य-योग दर्शन के पारिभाषिक शब्द, परिभाषा कोश, ऑनलाइन सर्च, ई-ग्लॉसरी।

[*]Corresponding Author
Email: subhash.jnu[at]gmail.com

ABSTRACT

ऑनलाइन सांख्य-योग दर्शन परिभाषा डेटाबेस विकास एक शोध के रूप में प्रारम्भ किया गया जिसका उद्देश्य हिंदी माध्यम से सांख्य-योग दर्शन परिभाषा डेटाबेस एवं खोज सिस्टम का विकास करना है। क्योंकि सांख्य-योग दर्शन परिभाषा के लिये कोई भी ऑनलाइन डेटाबेस अभी तक उपलब्ध नही है। जिससे प्रयोगकर्ता ऑनलाइन पारिभाषिक शब्दों को खोज सकें। अभी तक इस डेटाबेस में सांख्य दर्शन के कुल 100 तथा योग के कुल 295 तकनीकी शब्दों को शामिल किया गया हैं। इनमें वृद्धि भी की जा रही है। इनका संकलन सांख्य एवं योग दर्शन के मूल एवं भाष्य ग्रन्थों के आधार पर किया गया है। यह सिस्टम http://cl.sanskrit.du.ac.in/SankhyaYoga पर ऑनलाइन उपलब्ध है। भारतीय दार्शनिक परंपरा को सिद्धान्तवादी आस्तिक और नास्तिक दो रूपों में विभाजित करते हैं। जिनमें से वेद को आधार स्वीकार करने वाले छः आस्तिक दर्शन हैं – पूर्वमीमांसा, वेदान्त, सांख्य, योग, न्याय एवं वैशेषिक। इनके विपरीत बौद्ध, जैन तथा चार्वाक नास्तिक दर्शन की श्रेणी में आते हैं। विभिन्न दर्शनों की अपनी एक विशिष्ट पारिभाषिक शब्दावली होती हैं। इनके सम्यक् ज्ञान के बिना इनमें प्रवेश पाना कठिन होता है। अतः इन पारिभाषिक शब्दों के ज्ञान हेतु विद्वानों ने विभिन्न दर्शनों से सम्बन्धित पारिभाषिक शब्दों पर बहुशः कार्य किये हैं। सूचना प्रौद्योगिकी के आधुनिक युग में स्मार्ट फोन तथा इन्टरनेट के कारण आज जनसामान्य तत्काल सूचनायें प्राप्त करने का इच्छुक है। भारत सरकार ने भी डिजिटल इण्डिया के सन्देश के फलस्वरूप ऑनलाइन सेवाओं का वर्द्धन किया है। यह सिस्टम इस उद्देश्य को भी पूरा करता है। इस शोधपत्र का उद्देश्य सांख्य-योग दर्शन के पारिभाषिक शब्दों के लिये वेब आधारित ई-सिस्टम का प्रदर्शन करना है।

1. पृष्ठभूमि एवं प्रेरणा (Background and Motivation)

वेदों का अन्तिम भाग उपनिषद् को माना जाता है। जिन्हें वेदों का सार अथवा वेदों का दार्शनिक भाग भी कहा जाता है। संस्कृत भाषा में निबद्ध उपनिषद् ही समस्त भारतीय दर्शन के मूल स्त्रोत हैं (Banerji, 1989)। भारत में दर्शन का जन्म मानव जीवन को दुखों से निवृत दिलाने के लिए तथा तत्व साक्षात्कार कराने के उद्देश्य के फलस्वरूप हुआ है। पाणिनि व्याकरण के अनुसार 'दर्शन' शब्द 'दृशिर् प्रेक्षणे' धातु से ल्युट् प्रत्यय होकर व्युत्पन्न हुआ है। दर्शन शब्द का शब्दार्थ केवल देखना मात्र नहीं है अपितु प्रकृष्ट ईक्षण, जिसमें अन्तःचक्षुओं द्वारा वह देखना है जो सामान्य चक्षुओं से देखा नहीं जा सकता है। भारतीय दर्शन में महर्षि कपिल द्वारा रचित सांख्य द्वैतवादी दर्शन है जो प्राचीन समय में अतीव लोकप्रिय एवं प्रचलित हुआ था (Bhattacharya & Larson, 1987)। द्वैतवादी होने के कारण यह अद्वैतवेदान्त से विपरीत माना जाता है। इस दर्शन में प्रकृति तथा पुरुष नामक दो तत्व स्वीकृत हैं। सांख्यसूत्र में 6 अध्याय तथा 527 सूत्र हैं; जिनमें प्रायः 100 पारिभाषिक शब्दों का संकलन हुआ है। पतञ्जलि मुनि ने योग दर्शन का निर्माण किया है। योग दर्शन प्रकृति, पुरुष के स्वरुप के साथ ईश्वर के अस्तित्व को मानते हुए मनुष्य जीवन की उन्नति के लिये एक अति व्यावहारिक और मनोवैज्ञानिक रूप से प्रस्तुत करता है। योगसूत्रों की सर्वोत्तम व्याख्या व्यास मुनि द्वारा लिखित व्यासभाष्य में प्राप्त होती है। योगसूत्र में 4 पाद तथा 195 सूत्र हैं जिनमें प्रायः 295 पारिभाषिक शब्द निबद्ध हैं। उदाहरण स्वरूप पारिभाषिक शब्दों का प्रारूप तालिका 1 में प्रदर्शित किया गया है।

सांख्य-योग दर्शन परिभाषा डेटाबेस एवं ऑनलाइन खोज की प्रेरणा आजकल सूचना प्रौद्योगिकी के बढ़ते प्रयोग से मिली है। स्मार्ट फोन के सुलभ पहुंच के कारण हर किसे को सभी क्षेत्र की सूचनाएं तत्काल एवं इंटरनेट के माध्यम से ही चाहिये। भारत सरकार ने भी डिजिटल इण्डिया के सन्देश के फलस्वरूप ऑनलाइन सेवाओं का वर्द्धन किया है। सांख्य-योग के लिये अभी तक ऐसा कोई भी सिस्टम विकसित नहीं किया गया है। जिसके माध्यम से सूचनाएं प्राप्त की जा सके। अतः इस प्रकार के सिस्टम के निर्माण करने का निर्णय लिया गया। यही इसकी प्रेरणा का स्त्रोत है। अभी तक यह सिस्टम मोबाइल प्लेटफॉर्म पर उपलब्ध नहीं है। परन्तु जल्दी ही इसे इसके योग्य बनाने का प्रयास किया जायेगा।

2. उद्देश्य (Objectives)

इस शोधपत्र का उद्देश्य 'सांख्य-योग दर्शन के पारिभाषिक शब्दों के लिये वेब आधारित ई-सिस्टम' का प्रदर्शन करना है। जिसकी सहायता

RRIJM 2015, All Rights Reserved

से कोई भी जिज्ञासु इन दर्शनों से सम्बन्धित पारिभाषिक शब्दों का ज्ञान प्राप्त कर सकेगा।

3. सर्वेक्षण (Review)

समसामयिक युग में सूचना प्रौद्योगिकी का क्षेत्र सम्पूर्ण विश्व में अति तीव्र गति से विस्तृत हो रहा है । इसके फलस्वरूप प्रत्येक व्यक्ति इंटरनेट के माध्यम से तत्काल ज्ञानसामग्री प्राप्त करना चाहता है। संस्कृत भाषा से सम्बन्धित सङ्गणकीय भाषाविज्ञान के क्षेत्र में, अनेक संस्थान इस प्रकार के निर्माण के लिए कार्यरत हैं। जिनमें से जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, सेंटर फॉर डेवलपमेंट ऑफ एडवांस्ड कंप्यूटिंग (सीडैक), हैदराबाद विश्वविद्यालय और दिल्ली विश्वविद्यालय मुख्य संस्थान शोध और विकास कर रहे हैं।

भारत में स्वतंत्रता के पश्चात् भारतीय दर्शन पर विश्वकोशीय लेखन का कार्य प्रारम्भ किया गया। इस पर चार महत्त्वपूर्ण प्रयास किये गये । प्रथम प्रयास अमेरिका के कार्ल एच. पॉट्टर द्वारा 'इनसाइक्लोपीडिया ऑफ़ इण्डियन फिलॉसफ़ी (The Encyclopedia of Indian Philosophies) के रूप में किया गया। इन्होंने इसको 23 भागों में प्रकाशित करने की महत्त्वाकांक्षी योजना 1968 में ही बनायी थी (Potter, 2014 and Potter, 1970)। इस विश्वकोश के कई एक खण्ड प्रकाशित हो चुके हैं और शेष प्रकाशनाधीन हैं। इस क्षेत्र में दूसरा प्रयास इण्डिया हैरिटेज फ़ाउंडेशन द्वारा 1980 के दशक में किया गया और पूर्वी-पश्चिमी विद्वानों के सहयोग से ग्यारह भागों में 'इनसाइक्लोपीडिया ऑफ़ हिन्दूइज़्म (Encyclopedia of Hinduism)' तैयार किया गया है। कैलिफ़ोर्निया के के.एल. शेषगिरि राव इसके प्रधान सम्पादक, दिल्ली के कपिल कपूर इसके सम्पादक हैं (Rao and Kapoor, 2010)। इनसे भिन्न भारतीय दर्शन बृहत्कोश का निर्माण अर्जुन मिश्र के निर्देशन एवं बच्चूलाल अवस्थी के शोध एवं लेखन में इसका निर्माण 1980 के दशक में सागर विश्वविद्यालय द्वारा कराया गया था (अवस्थी, 1997)। यह कुल सात खण्डों में उपलब्ध है। इसी क्षेत्र मे सराहनीय एवं प्रामाणिक प्रयास देवी प्रसाद चट्टोपाध्याय (1931) के नेतृत्व में 'प्रोजेक्ट ऑफ़ हिस्ट्री ऑफ़ साइंस, फ़िलॉसफ़ी ऐंड कल्चर' के तहत किया गया है। यह परियोजना मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा वित्त पोषित एक बड़े पैमाने पर साहित्यिक परियोजना थी (Project of History of Indian Science, Philosophy and Culture) । समस्त भारतीय बौद्धिक सम्पदाओं को एक व्यापक अवधारणात्मक योजना में समाहित करने वाली इस महान परियोजना के 115 खण्डों का प्रकाशन पूर्ण होने की स्थिति में है। इस क्षेत्र में सबसे महत्त्वपूर्ण योगदान भारतीय दर्शन परिभाषा कोश (शुक्ल,1993) है। यह कार्य भारतीय दर्शन से सम्बन्धित तकनीके शब्दों का एक संग्रह है जिसमें दर्शन में प्राप्त सभी शब्दावलियों की परिभाषाएं मूल टेक्ट के साथ-साथ हिन्दी में भी प्रदान की गई है। यह एक पुस्तक के रूप में उपलब्ध है । A concise dictionary of Indian philosophy (Grimes, 1996) भी एक शब्दकोश है जिसमें दर्शन से सम्बन्धित शब्दों का संग्रह किया गया है। इसमें प्रायः प्रयोग किये जाने वाले धार्मिक शब्दों और अनेक व्युत्पत्ति संबंधी व्युत्पन्न शब्दों का 500 से अधिक शब्दों को शामिल किया गया है। यह भारतीय दर्शनशास्त्र के लिये एक संक्षिप्त शब्दकोश अंग्रेजी अनुवाद के साथ देवनागरी और रोमन लिप्यंतरण दोनों में उपलब्ध है । इनके अतिरिक्त Dictionary of Indian Philosophical Concepts (Singh, 1988), Dictionary of philosophy and psychology (James, 2002), A Conceptual Dictionary of Technical Terms in Yoga Philosophy (Swami, 2015), न्यायकोश (शास्त्री, 1928) आदि कार्य भी भारतीय दर्शन से सम्बन्धित हैं।

भारतीय दर्शन से सम्बधित तकनीकी शब्दों के लिये ऑनलाइन डेटाबेस की अवधारणा जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय द्वारा प्रारम्भ की गई। इस केन्द्र द्वारा अनेक कार्य किये जा रहे है इनमें से कतिपय कार्य प्रस्तुत शोधपत्र के विषयक हैं - योग शब्दकोश (Yadav and Upadhyaya, 2009), योगसूत्र अनुक्रमणिका (Gautam, 2009), DICTIONARY OF SANKHYA, YOGA & VEDANTA (Jain, 2007), ब्रह्मसूत्र अनुक्रमणिका (Sanjay, 2008), वेदांत-अनुक्रमणी (Singh, 2009) आदि प्रमुख हैं।

संस्कृत विभाग दिल्ली विश्वविद्यालय ने भी संस्कृत भाषा के लिये तकनीक विकास के क्षेत्र में अपना योगदान दिया है। इनके विभिन्न सङ्गणकीय तन्त्रों में से ऋग्वैदिक सर्च (Kumar, 2016), पौराणिक सर्च (Chandra & Anju, 2017), सांख्य-योग पारिभाषिक शब्द सूचना तंत्र (Anju & Chandra,2018a,b) आदि दो कार्य तत्काल खोज से सम्बन्धित है। इनका उद्देश्य संस्कृत पाठ सर्च बनाना है जिसके माध्यम से किसी भी संस्कृत टेक्स्ट में ऑनलाइन सर्च किया जा सकता है।

Table 1: पारिभाषिक शब्द डेटाबेस का प्रारूप

क्र.स.	योग दर्शन	सांख्य दर्शन
1	अविरति	अपवर्ग
2	अतीतानागतज्ञान	अध्यवसाय
3	दुःख	अनुमान
4	अक्लिष्ट	पुरुषार्थत्व
5	दौर्मनस्य	अधिकारि

अब तक जितने भी कार्य हुए हैं या तो वह पुस्तक के रूप में उपलब्ध है या इंटरनेट पर पीडीएफ के रूप में। इन दोनों ही रूपों में खोज ऑनलाइन संभव नहीं होती है जिससे सबकी पहुंच नहीं हो पाती है। साथ ही साथ तत्काल सूचना निकालना सम्भव नहीं होता है। अतः प्रस्तुत शोध की उपयोगिता बढ़ जाती है। और इस प्रकार का यह

RRIJM 2015, All Rights Reserved

Mining of the Technical Terms of Sāṃkhya-Yoga Philosophy

[1]Anju, [2]Subhash Chandra
[1]Research Scholar, [2]Assistant Professor
[1,2]Department of Sanskrit,
[1,2]University of Delhi, Delhi, India

Abstract: The development of these basic emotions in the Vedas, the Deeds, Worship and Knowledge contained in the Vedas are finally visible in *Brahmanas*, *Aranyakas* and *Upanishadas*, respectively. The deed, Worship and Knowledge have been expanded in Indian philosophy. The word philosophy is related to both Knowledge and Cognition. The origin of all the Indian Philosophies is the Vedas, but still the entire Indian philosophical tradition has been divided into two forms as Theist (*āstika*) and the Atheist (*Nāstika*). The philosophical tradition of the Theist accepts the Vedas as authentic forms while Atheists do not accept the authenticity of the Vedas. The Theist schools include *nyāya*, *vaiśeṣika*, *sāṃkhya*, *yoga*, *mimāṃsā* and *vedānta*, and the Atheist schools are *jaina*, *buddhist* and *cārvāka*. Before reading the texts of these philosophy the basic knowledge of the technical terms of the philosophical texts are very essential. This paper presents a method to mining of the technical terms of *sāṃkhya-yoga* philosophy (SYP). Objective of the paper to develop an online system for technical terms of SYP. This will help scholars who want to understand SYP.

IndexTerms **- Technical terms, Technical terms in Sāṃkhya Yoga philosophy, Sāṃkhya Yoga Philosophy etc.**

I. INTRODUCTION

Philosophy was recommended in India not for the sake of knowledge but for the highest purpose that man can strive after in this life (Muller, 1919). Vedas keep the paramount position in Sanskrit literature. In India, Six philosophical schools were introduced to explain Vedas wisdom. Indian philosophy has ancient philosophical traditions of the Indian subcontinent. Philosophy in India did not take its rise in wonder or curiosity as it seems to have done in the west; rather it originated under the pressure of practical need arising from the presence of moral and physical evil in life. Philosophy endeavor was directed primarily to find a remedy for the ills of life, and the consideration of metaphysical questions came in as a matter of course (Hiriyanna, 2014). The principal schools of Indian philosophy are classified as either orthodox or heterodox – *āstika* or *nāstika* – depending on one of three alternate criteria: whether it believes the Vedas are a valid source of knowledge; whether the school believes in the premises of Brahman and Atman; and whether the school believes in afterlife and Devas. All philosophies prove the original Vedic wisdom by logic except the heterodox school. Philosophy enquires into the nature of the universe in which we live, the nature of the human soul and its destiny and the nature of God or the absolute, and their relation to one another. It is the art of thinking of all things logically, systematically and persistently (Anju and Chandra, 2018). The Hindu classify the systems of philosophy into two major classes, namely, the *nastika* and the *astika.* The *nastika* {'*na asti'* it is not) views are those which neither regard the Vedas as infallible nor try to establish their own validity on their authority. The *astika-mata* or orthodox schools are six in number, *Sāṃkhya*, *Yoga*, *Vedanta*, *Mimamsa*, *Nyaya* and *Vaishesika*, generally known as the six systems (Dasgupta, 1975). *Nyāya, vaiśeṣika, sāṃkhya, yoga, mimāṃsā* and *vedānta* philosophies are considered as Orthodox and Buddhist, *jaina* and *cārvāka* philosophies are considered Heterodox.

The aphorisms of *Patanjali* on the Yoga Sutras are contained in four chapters and nearly one hundred ninety four in number. He was not only a great grammarian, great Philosopher as well as great Physician. He prescribed for the body, mind and spirit all three. The time of Patanjali is now generally fixed at three centuries before Christ (Prasad, 2005). The word Yoga comes from a Sanskrit root which means "to go to trance, to meditate." Others however derive it from a root which means to join; and Yoke in English is said to be the same word as yoga. Both roots are feasible – in the case of the root to join, Yoga would mean the science that teaches the method of joining the human soul with God. The philosophy of Patanjali is essentially Dualistic.

Sāṃkhya is one of the six schools of classical Indian philosophy. Sage Kapila is traditionally considered to be the founder of the Sāṃkhya School. It is regarded as the oldest of the philosophical system in India. Broadly, the Sāṃkhya system classifies all objects as falling into one of the two categories: *Puruṣa* and *Prakriti.* Metaphysically, Sāṃkhya maintains a radical duality between spirit (*Puruṣa*) and matter (*Prakriti*). The Sāṃkhya system is based on *Satkāryavāda.* According to *Satkāryavāda*, the effect pre-exists in the cause (Biswas, 2007). All knowledge is possible through three *pramāṇas* (*Pratyakṣa*, *Anumāna*, *śabda*) (Shastri, 2004).

[2] **Correspondence:** Dr. Subhash Chandra, Assistant Professor, Department of Sanskrit, University of Delhi, Delhi, Email: subhash.jnu@gmail.com

II. Objective

The main purpose of this paper is to build online system for the Mining of the Technical Terms of SYP. So that anyone can understand the technical terms using this system. With the help of this system, any student or teacher can easily read and teach the mysterious subject of SYP.

III. Literature Review

The Information technology field is spreading itself worldwide. The e-learning is supporting to increase the quality in traditional teaching. In the era of the technology everyone wants instant information through the internet even over the smart phone as well. In the field of computational linguistics related to Sanskrit language, many institutes are working to build such types system for Sanskrit texts e.g. online search system for Sanskrit text and indexing. Jawaharlal Nehru University, Indian Institute of Technology, Centre for Development of Advanced Computing (CDAC), University of Hyderabad and University of Delhi are the main research institutes doing researches and developments in this filed.

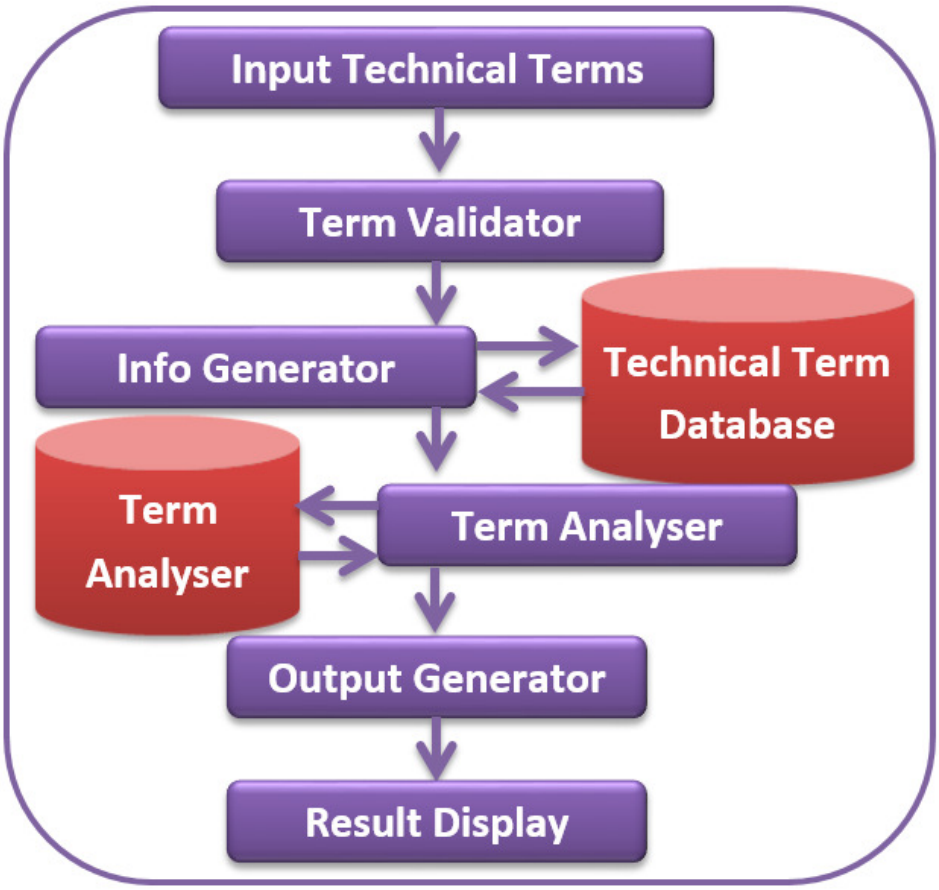

Figure 1 Architecture of the System

Many important works related to Computational Linguistic has been done by School of Sanskrit and Indic Studies, Jawaharlal Nehru University worked on SYP e.g. Dictionary of Sāṁkhya, Yoga & Vedanta (Jain, 2007), Yoga-sūtra index (Gautam, 2009), Yoga ShabdKosh (Yadav & Upadhyay, 2009), Medinikosh (Dwivedi, 2009), Halayudhkosh (Jha et al, 2009) and Mankhkosh (Kumar, 2009) . These system are available online.

Table 1: Sample of Technical Term Database

S.N.	Sāṃkhya Terms	Yoga Terms
1	अत्यन्तपुरुषार्थः (atyantapuruṣārthaḥ)	अक्रमः (Akramaḥ)
2	पुरुषार्थत्वम् (puruṣārthatvam)	अविरतिः (aviratiḥ)
3	पुरुष (puruṣa)	अणिमा (Aṇimā)
4	प्रकृति (pr□kṛTi)	अङ्गमेजयत्वम् (Aṅgamejayatvam)
5	अध्यवसाय (adhyavasāya)	दुःखम् (Duḥkham)
6	अध्यवसाय (adhyavasāya)	दौर्मनस्यम् (daurmanasyam)

Development of Web-Based Dictionary for the Technical Terms of Sankhya-Yoga Philosophy

[1]Anju, [2]Subhash Chandra

[1]Research Scholar, Computational Linguistics, [2]Assistant Professor, Computational Linguistics
Department of Sanskrit,
University of Delhi, Delhi, India

Abstract: The oldest scripture in Sanskrit literature is Veda. There have been two methods to convey the meaning of the Vedas in the form of *brāhmaṇa*, *upaniṣad* etc. and philosophy (*darśana*). Six philosophical texts were written to understand Vedic knowledge by logic. All philosophies prove the original Vedic wisdom by logic. Each philosophy has its own subject matter. The word *darśana* is derived from the verb root '*dṛś*', which means to look well or to consider mystery topic. Traditions of Indian philosophy are generally classified as either Orthodox or Heterodox – *āstika* or *nāstika* – depending on whether they accept the authority of the Vedas and whether they accept the theories of *brahman* and *ātman*. The Orthodox schools generally include *nyāya, vaiśeṣika, sāṃkhya, yoga, mimāṃsā* and *vedānta*, and the common heterodox schools are *jaina*, *buddhist* and *cārvāka*. Orthodox philosophy is a mature result of churning of Indian philosophical and religious ideas that emerged from the thought of thousands of years and became popular under the name of Hindu philosophy. *jaina*, *buddhist* and *cārvāka* are counted as a heterodox philosophy. Before reading the further texts we need to understand used technical terms in these philosophical texts. This paper present a methods to develop online system to recognize and analyze technical terms of *sāṃkhya-yoga* philosophy (SYP). Through this research, knowledge content will be available online by analyzing the technical terms of SYP. This will help scholars who want to understand SYP.

IndexTerms **- Sāṃkhya Yoga Philosophy, Technical terms, Technical terms in Sāṃkhya Yoga philosophy etc.**

I. INTRODUCTION

Philosophy enquires into the nature of the universe in which we live, the nature of the human soul and its destiny and the nature of God or the absolute, and their relation to one another. It is the art of thinking of all things logically, systematically and persistently. Philosophy has three parts: (i) Epistemology, (ii) Ontology and (iii) Axiology (Perrett, 2001; Phillips, 2013 and Sharma, 1982). Epistemology is the theory of knowledge (Lemos, 2007). Ontology is the theory of reality (Carroll, 2010) and Axiology is the theory of values. In Indian literature, philosophy has been denominated as *darśana*. The term *darśana* is derived from the root *dṛś* which means 'vision' and also the 'instrument of vision'. The term also refers to six orthodox schools of Hindu philosophy and their literature on spirituality and soteriology (Klostermaier, 2007). It stands for the direct, immediate and intuitive vision of reality, the actual perception of truth and also includes the means which lead to this realization. Indian philosophy is intensely spiritual and has always emphasized the need for practical realization of truth. It signifies a natural and a necessary urge in human beings to know themselves and the world in which they live and move and have their being. Philosophy has a very close relationship with human life, because no side of life can be outside the perimeter of philosophy. Since the beginning of the Universe, when human started to think since the same time his some experience began to take permanent shape, those same-shaped experiences changed into philosophy by the wide period of time. The schools of Indian philosophy are divided into two broad classes - *āstika* (Orthodox) and *nāstika* (heterodox) (Bowker, 1997; Doniger, 2014 and Nicholson, 2013). In Indian philosophy the terms *āstika* and *nāstika* are used in different senses by different thinkers. In common usage *āstika* means one who believes in the existence of God or the Absolute and *nāstika* means one who does not believe in the existence of God or the Absolute. In the View of the philosophers, the *āstika* is one who believes in the validity of the Vedas and the *nāstika* is one who does not believe in the validity of the Vedas. Thus *āstika* means Orthodox school and *nāstika* means heterodox school. *Nyāya, Vaiśeṣika, Sāṃkhya*, *Yoga*, *Mimāṃsā* and *Vedānta* are the six Orthodox schools whereas Cārvāka, Bauddha and Jaina are the three heterodox systems (Bowker, 1997; Doniger, 2014 and Nicholson, 2013).

There were two attempts has been taken to understand and explain the Vedic knowledge. First philosophy and other *brāhman* and *Upaniṣadas*. *Sāṃkhya* is one of the six *āstika* schools of Hindu philosophy founded by Kapila (Jacobsen, 2005). It is a systematic account of the process of cosmic evolution. It shows that all derived things in this world are produced from two realities, Prakṛti and Puruṣa which are considered as the ultimate realities. It is most related to the Yoga school of Hinduism, and it was influential on other schools of Indian philosophy (Bilimoria et al, 2007). Main text of the *Sāṃkhya darśana* is *Sāṃkhya darśana.* It

[2] **Correspondence:** Dr. Subhash Chandra, Assistant Professor, Department of Sanskrit, University of Delhi, Delhi, Email: subhash.jnu@gmail.com

is divided into six chapters and 451 *sūtras* (Keith, 1984). The first *sūtra* of *sāṃkhya* is: *atha trividhaduḥkhātyantanivṛttiratyantapurūṣārtha* (Musalagaonakar, 1987).

Yoga philosophy is other one of the six major orthodox schools of Hinduism (Jacobsen, 2005 and Phillips, 2013) founded by Patanjali. It is closely related to the Samkhya school of Hinduism. The Yoga school's systematic studies to better oneself physically, mentally and spiritually has influenced all other schools of Indian philosophy (Burley, 2007 and Bilimoria et. al, 2007). The Yoga Sutras of Patanjali is a key text of the Yoga school of Hinduism (Edwin, 2011). It gives an integrated approach in teaching the aspirant to train his body and mind to achieve the goal of existence which is trance or *Samādhi*. Yoga Sutras is divided into four chapters and 194 formulas. *Samādhipāda*, *Sādhanapāda*, *Vibhūtipāda* and *Kaivalyapāda* are the four chapters (Bhattacharya, 1980).

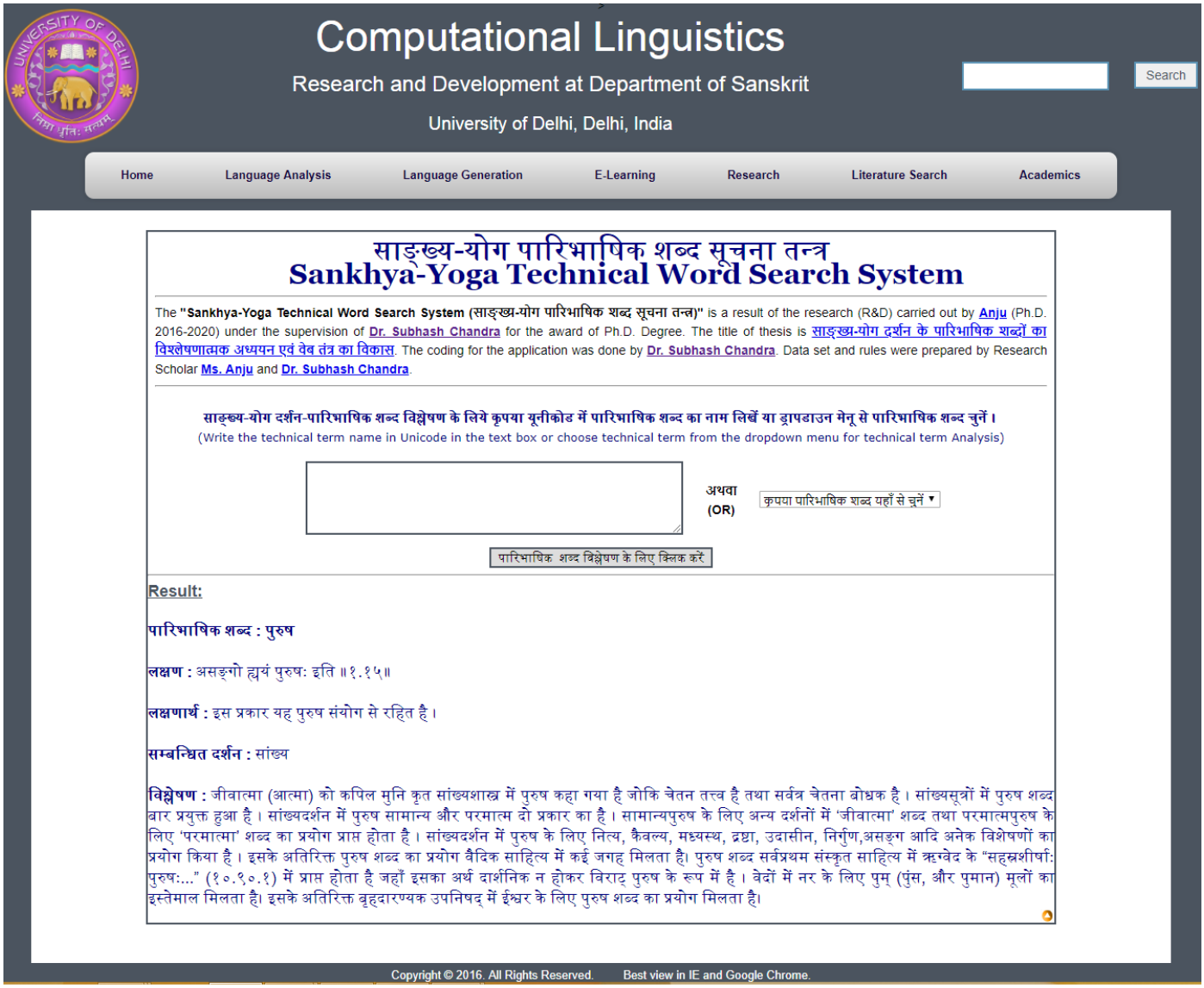

Figure 1: User Interface and Sample of result of the system

II. Objective

The main objective of this paper is to build online system for the analysis of terminology of Sāṃkhya–Yoga philosophy. So that anyone can understand the technical terms using this systems. *Darśana* has been included in the Sanskrit courses of almost all the universities of India. With the help of this system, any student or teacher can easily read and teach the mysterious subject of SYP.

III. Literature Review

The field of information technology is becoming widespread. For increasing the quality in traditional teaching in the field of education is being supported by the e-learning. People want instant information in the era of the technology through the internet. In the field of computational linguistics related to Sanskrit language, many institutes are working to build such types system for Sanskrit text e.g. online indexing and search system for Sanskrit text. Jawaharlal Nehru University, Indian Institute of Technology, Centre for Development of Advanced Computing (CDAC), University of Hyderabad and University of Delhi are the main research institutes engaged in this filed.

==========
Language in India www.languageinindia.com **ISSN 1930-2940 Vol. 17:5 May 2017**
==========

Puranic Search: An Instant Search System for Puranas

Subhash Chandra, M.Phil., Ph.D.
Anju, Ph.D. Candidate

Abstract

Purana is a huge genre of Indian literature about a wide range of topics, particularly myths, legends and other traditional wisdom. It is also source of the science and technology of ancient India. *Puranas* are primarily written in Sanskrit language. The *Puranas* genre of literature is found in both Hinduism and Jainism. *Puranas* includes diverse topics such as cosmogony, cosmology, genealogies of gods, goddesses, kings, heroes, sages, and demigods, folk tales, pilgrimages, temples, medicine, astronomy, grammar, mineralogy, humor, love stories, as well as theology and philosophy. This paper describe a web based information extraction tools from the Puranic texts. Data of the 18 *Puranas* has been collected and digitalized in Devanagari script. Major goal of the paper is to introduce a search engine called *Pauraic* Search.

Keywords: Information Retrieval, Sanskrit Search, Purana, Online Indexing

1. Introduction

The word *Puranas* literally means ancient or old (Webster, 1955 and Oliver, 2006). *Puranas* like Vedic *Samhitas* and Epics form the compendium of fourfold vision of human existence. It was primarily composed in Sanskrit and later translated in various regional languages (Doniger, 1993). *Purana* is define as '*Puranam Pancalakshanam'* it is the correct pre-requisite superimpose on them (Sharma, 2003).

सर्गश्च प्रतिसर्गश्च वंशो मन्वंतराणि च ।
वंशानुचरितं चैव पुराणं पंचलक्षणम् ॥

Every *Purana* fundamentally deals with topics normally coming within the fold of these five *lakshanas*, viz. creation, dissolution and re-creation, genealogy of gods, sages etc., periods called *Manvantaras* and description of Royal dynasties. But this treatment is quite

unique in unraveling the social, political, historical, ethical, linguistic, etymological and allied subjects. This fundamentally forms the basis of Ancient Indian legendary lore and chronicles though anachronism and affords opportunity to make a probe by a comparative study to expose the factual happenings (Webster, 1955, Doniger, 1993 and Oliver, 2006).

S.No.	Purana name	Verses number
1	Agni	15,400 verses
2	Bhagavata	18,000 verses
3	Brahma	10,000 verses
4	Brahmanda	12,000 verses
5	Brahmavaivarta	17,000 verses
6	Garuda	19,000 verses
7	Kurma	17,000 verses
8	Linga	11,000 verses
9	Markandeya	9,000 verses
10	Matsya	14,000 verses
11	Narada	25,000 verses
12	Padma	55,000 verses
13	Shiva	24,000 verses
14	Skanda	81,100 verses
15	Vamana	10,000 verses
16	Varaha	24,000 verses
17	Vayu	24,000 verses
18	Vishnu	23,000 verses

Table 1: Puranas Verses Data

Indeed, the *Purana* is a distinct branch of learning. It is treated as one of the *Vidyas* like the Samkhya and the Vedanta, it has its distinct theory of cosmology. Moreover and besides the Five times (*Sarga-Pratisarga* etc.) mythology is also the special feature of *Puranas*. Cosmology and Mythology are the two main subjects of *Purana-vidya*. Just as the Puranic cosmology can be best understood in the light of the knowledge of cosmology of

List of Presentation’s Certificates

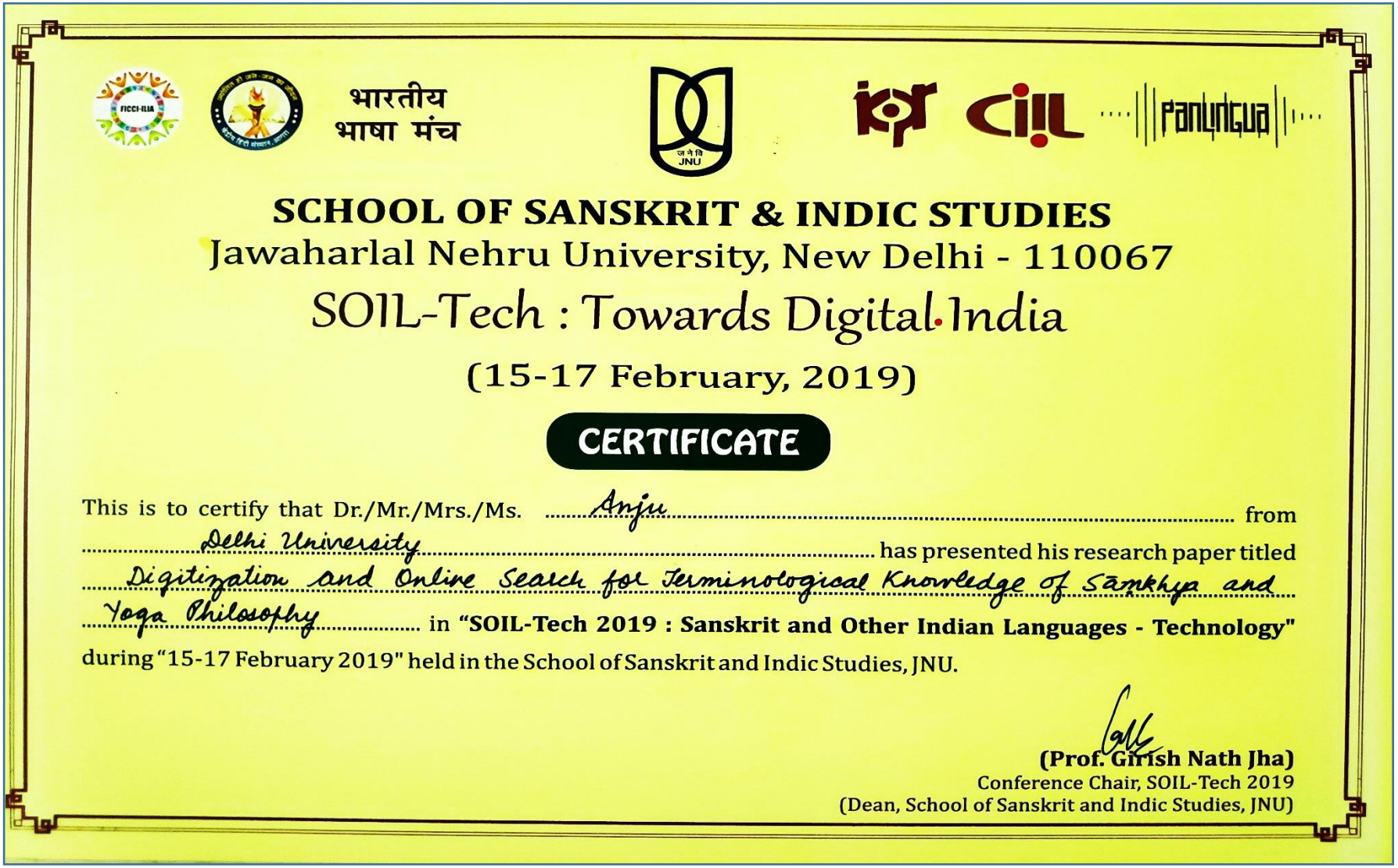

भारतीय
भाषा मंच

SCHOOL OF SANSKRIT & INDIC STUDIES

Jawaharlal Nehru University, New Delhi - 110067

SOIL-Tech : Towards Digital India

(15-17 February, 2019)

CERTIFICATE

This is to certify that Dr./Mr./Mrs./Ms. Anju from Delhi University has presented his research paper titled Digitization and Online Search for Terminological Knowledge of Samkhya and Yoga Philosophy in **"SOIL-Tech 2019 : Sanskrit and Other Indian Languages - Technology"** during "15-17 February 2019" held in the School of Sanskrit and Indic Studies, JNU.

(Prof. Girish Nath Jha)
Conference Chair, SOIL-Tech 2019
(Dean, School of Sanskrit and Indic Studies, JNU)

संस्कृत विभाग, जामिया मिल्लिया इस्लामिया (केन्द्रीय विश्वविद्यालय), नई दिल्ली-११००२५

द्वारा आयोजित

त्रि-दिवसीय राष्ट्रीय सङ्गोष्ठी

१५-१७ फरवरी २०१९

संस्कृत के बहुआयामी पक्ष एवं बृहत्तर विश्व
(Multi Dimensional Aspects of Sanskrit & Larger World)

प्रमाण-पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि प्रो./डॉ./श्री/श्रीमती/सुश्री ..... अंजू .....

.....

ने संस्कृत विभाग, जामिया मिल्लिया इस्लामिया, राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान एवं भारतीय दार्शनिक अनुसन्धान परिषद्, नई दिल्ली के संयुक्त तत्त्वावधान में आयोजित त्रि-दिवसीय राष्ट्रीय सङ्गोष्ठी में सत्राध्यक्ष/विशिष्ट-वक्ता/प्रतिभागी के रूप में सहभागिता की।

व्याख्यान/शोधपत्र का विषय सांख्ययोग दर्शन में प्रयुक्त पारिभाषिक शब्दों के लिए ई-कोश एवं ऑनलाइन खोज

संयोजक
डॉ. धनञ्जय मणि त्रिपाठी

संयोजक
डॉ. अभय कुमार शाण्डिल्य

सङ्गोष्ठी-निदेशक/विभागाध्यक्ष
प्रो. गिरीश चन्द्र पन्त

KALIDASA ACADEMY OF SANSKRIT MUSIC & FINE ARTS, DELHI

&

BHARATI COLLEGE, UNIVERSITY OF DELHI, DELHI

1994 25th YEAR CELEBRATION 2019

23rd KALIDASA MAHOTSAVA - 2019

&

INTERNATIONAL RESEARCH SEMINAR

19th - 20th January, 2019

This is to certify that ....अन्जु.. of .... participated / presented a paper entitled ....सांख्य-योग दर्शन ई-परिभाषाकोश.................... in Kalidasa Mahotsava & International Research Seminar on (i) Kalidasa Sahitya Mein Lokmangal Ki Bhavana (ii) Sciences in Ancient & Modern Sanskrit Literature organised under the joint auspices of Kalidasa Academy of Sanskrit Music & Fine Arts, Delhi & Bharati College, University of Delhi, Delhi at Bharati College, New Delhi.

PROF. ASHA TIWARI
HOD, Deptt. of Sanskrit
Bharati College
University of Delhi

PROF. ILA GHOSH
President
Kalidasa Academy of Sanskrit Music
& Fine Arts, Delhi

DAVC/IS/27

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा और दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा आयोजित

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन 2018, दिल्ली (भारत)

एवं

संस्कृत विभाग, पी.जी.डी.ए.वी. महाविद्यालय (सांध्य)

(दिल्ली विश्वविद्यालय)

के संयुक्त तत्त्वावधान में समायोजित

द्विदिवसीय अन्तर्राष्ट्रीय शोध संगोष्ठी

27–28 अक्टूबर, 2018

विषय–वर्तमान शिक्षा और वेद

प्रमाण–पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि श्री/श्रीमती/कुमारी अन्शू

ने 27–28 अक्टूबर 2018 को समायोजित द्विदिवसीय "वर्तमान शिक्षा और वेद" विषयक अन्तर्राष्ट्रीय शोध संगोष्ठी में प्रथम/द्वितीय/तृतीय/चतुर्थ सत्र में अध्यक्ष/सहाध्यक्ष/विशिष्ट वक्ता/वक्ता/पत्र प्रस्तोता/सत्र संचालक/श्रोता के रूप में सांख्य - योग दर्शन के तकनीकी शब्दों का संगणकीय अनुप्रयोग विषय पर पत्र प्रस्तुत किया/भाग लिया।

सुरेश चन्द्र आर्य	धर्मपाल आर्य	डॉ. सत्यकाम शर्मा	डॉ. रवीन्द्र कुमार गुप्ता
प्रधान	सम्मेलन संयोजक	प्रभारी, संस्कृत विभाग	प्राचार्य एवं निदेशक
सा.आ.प्र.सभा	प्रधान दि.आ.प्र.सभा	शोध संगोष्ठी संचालक	पी.जी.डी.ए.वी.कॉलेज (सां.)

Special Centre for Sanskrit Studies
Jawaharlal Nehru University, New Delhi 110067

International Veda Conference
on

Veda as Global Heritage: Scientific Perspectives

15-18 December 2016

CERTIFICATE

This is to certify that Mr. / Ms. / Mrs. / Dr. / Prof. Anju .... *attended the International Veda Conference on* ***"Veda as Global Heritage : Scientific Perspectives"*** *held at Special Centre for Sanskrit Studies, Jawaharlal Nehru University, New Delhi from 15-18 December 2016 as a Delegate / Keynote Speaker / Chair of the Session / Accompanying Person. He / She also Presented / Conducted Workshop / Symposium on the topic* सांख्य योग दर्शन के पारिभाषिक शब्दों के विश्लेषण हेतु वेब तंत्र का विकास

Prof. Ram Nath Jha
Member, Organising Committee

Prof. Sudhir K. Arya
Member, Organising Committee

Prof. Girish Nath Jha
Chairperson, SCSS, JNU